वंश भास्कर

(षष्टम खण्ड)

[बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि–मंथिनी टीका सहित]

मूल लेखक :

सूर्य मल्ल मिश्रण

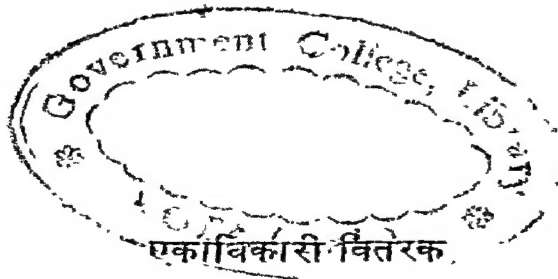
सम्पादक

स्वर्गीय पंडित रामकर्ण आसोपा

भूतपूर्व प्राध्यापक

इतिहास विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता



एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर–३

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

॥ ओ३म् ॥

॥ भूमिका ॥

मूकं करोति वाचालं, पङ्गुं लंघयते गिरीन् ॥
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्दमाधवम् ॥ १ ॥

क्या महिमा है उस जगदाधार, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की कि जो अपनी कृपा से मूक (गूंगे) को वाचाल और पंगु (पांगले) को पर्वत लांघनेवाला कर देता है, उस परमात्मा को नमस्कार करता हूं. अन्य विद्वान् इसके उदाहरण में "वाल्मीकि मुनि" और सूर्य के सारथि "अरुण" को मानते हैं, परन्तु इस स्थान पर मैं तो मुझही को उदाहरण रूप मानता हूं कि जिसकी कृपा से पक्षाघात जैसी असाध्य बीमारी आदि विघ्नों रूपी अमियों को लांघकर, इस वंशभास्कर रूपी समुद्र के पार लगा चाहता हूं, यह उसी सर्वशक्तिमान् दयालु परमेश्वर की दया का फल है कि मेरे जैसा अल्पज्ञ पुरुष ऐसे कठिनतम ग्रन्थ की टीका में पार लगसके, इसीकारण उपरोक्त श्लोक में मैंने मेरे तईं उदाहरण माना है ॥

अभी इस ग्रन्थ के पांच चरित्र, जिनमें डेढ राशि पर टीका बनाना बाकी है, इस अवस्था में अपने को कृतकार्य मान लेना अनुचित है, परन्तु साढे छ राशि पर टीका बन चुकी जिसमें अनेक विद्या विषय और अनेक भ्रमयुक्त गूढ इतिहास आचुके, जिनका यथार्थ विवरण और उचित समालोचना करके यथाशक्ति टीका कर दी गई, अब आगे के पांच चरित्रों में कोई कठिन विषय नहीं है, केवल रामसिंह चरित्र में वेदान्तादि कुछ विद्या विषय अवश्य हैं परन्तु वे अतिगहन नहीं हैं, और इतिहास में भी समीप का समय होने के कारण भ्रम नहीं है, इसकारण से आगे की डेढ राशि को विद्वान् लोग सुगमता से समझ सके हैं, इसीकारण मैंने अपने को कृतकार्य माना है. इसमें इतना कथनीय अवश्य है कि आगे के पांच चरित्रों में "बुधसिंह चरित्र" और "उम्मेदसिंह चरित्र" इन दोनों में शब्दालंकार अधिक होने के कारण शब्दार्थ में कठिनता अवश्य है, इसी शब्दालङ्कार के कारण राजपूताना भर में ये दोनों चरित्र अधिक फैलेहुए हैं, जिनके समझने की सब ही को उत्कंठा है, परन्तु अनेक भाषाओं के अनेक अप्रचलित शब्दों के प्रयोग होने से उनके अर्थ समझने में पाठक फलीभूत नहीं होते, और शब्दों का यमक अत्युत्तम होने के कारण श्रोत्ररसज्ञ होकर छोडना भी नहीं चाहते, इसकारण से हमारा भी विचार है कि स्वास्थ्य ठीक रहा और कोई अन्य बड़ा विघ्न उपस्थित नहीं हुआ तो इस ग्रन्थ के अन्य भागों की अपेक्षा इन दो चरित्रों की टीका विस्तार पूर्वक रचेंगे कि जिसके कारण किसी पाठक को किसी प्रकार

की काठिनता बाकी नहीं रहे, और काव्यरसज्ञों को पूर्णानन्द मिलने के कारण हम भी अपने परिश्रम को फलीभूत मानैं ॥

यहां पर हम को थोड़ी सी टीका स्वयं ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की रचीहुई मिलगई है जिसमें किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करके ज्यों का त्यों यहां पर लिखदेते हैं, इसमें किसी किसी शब्द के अर्थ को ग्रन्थकर्ता ने सुगम समझकर छोडदिया है, जिनके अर्थ लिखने की आवश्यकता दिखाई देती है परन्तु जितने शब्द इसमें रहगये हैं उनके अर्थ ऊपर की टीका में आचुके हैं अथवा फिर आगेकी टीका में आजावेंगे,इस कारण इस टीका में किसीप्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करना ही उचित समझकर " मक्षिकास्थाने मक्षिकां पातयतु " ही किया है. इस टीका के रचेजाने की कई किम्वदन्तियें प्रसिद्ध हैं, जिनमें प्रबल कथा यह मानी जाती है कि, जयपुर राज्य में पीपलिया नामक ग्राम के ठाकुर राजावत फूलसिंह ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) का अत्यन्त कृपापात्र था जिसने एक दिन ग्रंथकर्ता से निवेदन किया कि, कवरासियापन से तो मुझको बुधसिंह चरित्र अत्यन्त प्यारा लगता है, परन्तु अर्थ में समझ नहीं पड़ने के कारण आनन्द नहीं आता, इस कारण आप कृपा करके इस पर टीका बनादेवें, इसीकारण ग्रन्थकर्ता ने यह टीका बनाई है इस प्रसिद्धि का कुछ कारण भी मिलता है, अर्थात् जयपुर राज्य के हणूंत्या नामक ग्राम के पालावत शाखा के चारण बालाबक्स को यह टीका पीपलिया के ठाकुर फूलसिंह राजावत के घर से ही मिली है जो कि स्वयं ग्रन्थकर्ता के घर में भी नहीं है, इस टीका के अपूर्ण रहने का कारण भी यही प्रतीत होता है कि जब तक फूलसिंह की प्रेरणा रही तभी तक ग्रन्थकर्ता ने यह टीका बनाई,और जब फूलसिंह की प्रेरणा मिटी तभी टीका का बनना छूटगया, इसीसे थोड़े से ग्रन्थ पर टीका बनकर अपूर्ण रहगई, यहां पर इतना सन्देह अवश्य होता है कि यदि टीका केवल फूलसिंह के कारण से ही बनती थी तो शब्दों के जितने प्रमाण इसमें दिये गये हैं उनके देने की क्या आवश्यकता थी और संस्कृत श्लोकों के अर्थ संस्कृत भाषा में लिखेगये हैं सो क्यों लिखेजाते क्यों कि फूलसिंह संस्कृत पढाहुआ नहीं था सो हमारे इस सन्देह का समाधान अभी तक नहीं हुआ है इसके उपरान्त यदि संस्कृत में टीका बनाई भी गई थी तो उसके नीचे फूलसिंह के समझाने के लिये उसका भाषानुवाद भी कर देते सो नहीं है ॥

परन्तु इसमें संदेह नहीं कि यह टीका स्वयं ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की बनाईहुई है. इसकारण सर्वथा माननीय है, इसीकारण इसमें किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करके हमारी रचीहुई टीका के बीच में इसको स्थान देते हैं, आगे जहां पर यह टीका समाप्त होयगी वहां लिखादिया जावेगा कि ग्रन्थकर्ता की रची

हुई टीका यहां पर समाप्त होती है, इस बुधसिंह चरित्र के मंगलाचरण के श्लोक की ग्रन्थकर्ता ने संस्कृत में टीका की है परन्तु फिर ग्रन्थकर्ता ने ही मूल श्लोक के शब्दों को बदलदिये इसकारण उक्त श्लोक की वह टीका छोडकर इसका भाषानुवाद हमने किया है बाकी टीका ज्यों की त्यों लिखीजाती है यदि होसका तो संस्कृत श्लोकों की टीका संस्कृत में रचीहुई है जिसका सुगमतार्थ भाषानुवाद करदेवेंगे जिसको हस्ताक्षेप नहीं समझना चाहिये यह टीका हमको हणूंत्या के पालावत चारण बालाबख्स द्वारा मिली उस समय इस ग्रन्थ पर टीका करने का हमारा विचार नहीं था इसकारण उक्त टीका का पुस्तक देख कर पीछा बालाबख्स के पास भेज दिया था परन्तु फिर आवश्यकता होने पर वही पुस्तक सीकरराज्य के चंदपुरा नामक ग्राम के रतनू शाखा के चारण रामनाथ द्वारा पुनः प्राप्त हुआ. इन दोनों महाशयों का अत्यन्त उपकार मानकर धन्यवाद के साथ इस टीका का लिखना प्रारम्भ करते हैं ॥ विक्रमाब्द १९५८ द्वितीय श्रावण वदि २ शुक्रवार तारीख२ अगस्त सन्१९०१ ईसवी को प्रारम्भ किया ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बुधसिंहचरित्रप्रारम्भः ॥

॥ गीर्वाणभाषाशालिनी ॥

वन्देऽथोहं साञ्जलिः प्रीतिपूर्वं चण्डीदानं स्वीयवप्तारमार्यम् ॥
द्वैतारण्यप्रस्फुरद्धोरदावं तीव्राद्वैतं पण्डिताब्जद्युनाथम् ॥ १ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतमिश्रिता भाषा ॥

॥ दोहा ॥

जुगल बान मुनि इंदु१७५२मित, बिक्रम अब्द बिबेक ॥
जराभीरु१३तिथि पोस१० बदि२, बुद्धसिंह अभिसेक ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

तीरथ सलिल समस्त उचित निज मस्तक सिंचिय ॥
औषध बिहित उपेत निगम मंत्रन पवित्र किय ॥
हवन बस्तु हविरसन मध्य आज्यादि उक्त हुत ॥
हुव सु गान गायकन बिबिध बंदीन बिरुद रुत ॥
दिय दान द्विजन भू१भर्म२मुख लखि सु रीति सुरपति लजिय ॥
बुंदिय बजंत प्रतिबादका खलनखंड खुरणाक बजिय ॥३॥

अब मैं हाथ जोड़कर प्रीति पूर्वक मेरे पिता आर्य चंडीदान को नमस्कार करता हूं, जो द्वैत मत रूपी(जीव और परमेश्वर में भेद माननेवाले)वन के प्रज्वलित घोर अग्नि और पंडित रूपी कमलों के सूर्य थे ॥ १ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

युगलेति ॥ युगल है२. बान पंच५. मुनि सप्त७. इन्दु१ एक. तन्मितयासंगतिसों १७५२ सत्रह सो बावन में. विक्रमादित्य के अब्द वर्ष में. जराभीरु काम. "कामो जराभीरुरनंगो मन्मथः" इतिहेमचन्द्रसूरिः॥ ताकी तिथि त्रयोदशी१३. वदि कृष्ण पक्ष में ॥ २ ॥ तीरथेति ॥ उपेत युक्त. फेरि कैसो, निगम. वेद मंत्र. नकार तृतीया के बहुवचन में है॥ हविरसन अग्नि. "धनंजयो हव्यहविर्भुगादानः" इतिहेमचन्द्रसूरिः॥ आज्य घृत. तदादि. बंदी बंदीजन. नकार षष्ठी के बहुवचन में है ॥ विरुद उत्साहवर्द्धनी स्तुति. रुत शब्द. भर्म सुवर्ण "तपनीयचामीकरचन्द्रभर्म" इतिहेमचन्द्रः॥ मुख आदि. प्रतिबादका मंगल बादन. खुरणाक सुरदा के साथ बजने को बादन. 'खुरणकं स्तनयाञ्जायां'मितिहैमः

॥ पज्झटिका ॥

बुधसिंह१९७१भूप किय पंच५व्याह, सुत खट६रु सुता दुव२लहिय लाह ॥

उम्मेदकुमरि१९७१पहिली१उमाहि,जयसिंहरान तनुजा बिबाहि ४
रानी द्वितीय२जु अमरकुमारि१९७२,नृप कूर्म बिष्णुधी दासु धारि
बेघमपति अनुपमसिंह धीय,फुल्लकुमरि१९७३चुंडाउति तृतीय३॥५॥
चंद्रकुमरि१९७४चोथी४पुरभनाय, रट्ठोर जगतनृपजा सुभाय ॥
आहाड़ी पंचम५गुनगरीय, अभिधा गुमानकुमरी१९७५तदीय॥६॥
जो वंसवहालापुर पधारि, क्रम व्यूढ अजबराउल कुमारि ॥
सुत देव१९८१जोहि धौंकल१९८१२दुव२नाम, तिम भावतसिंह१९८१२जु लाल१९८१२ताम ॥ ७ ॥
तीजो३जु भवानीसिंह१९८१३पूत, संदिग्ध जाहि भाखत अभूत ॥
क्रम जेठे ए सुत त्रय३कहात, जे दूजी२रानी जठर जात ॥ ८ ॥
उम्मेदसिंह१९८१४चोथो४कुमार, अरु दीपसिंह१९८१६छठो उदार॥
तिम दीपकुमरि२दूजी२कनीं सु,तिय तीजानैं३त्रितयी३जनी सु॥९॥
सुतपंचम५चंद्र१९८१५जुपद्म१९८१५सोहि,क्रमपंचम५रानीजनितजोहि
कन्या वडी१जु सूरजकुमारि, चोथी४रानी भव जो बिचारि ॥१०॥
व्याही जयसिंहहिं जनक बुद्ध१९७१, आमेर अधीसहि सबिधि सुद्ध
दूजी२कनी सु उम्मेद१९८१४भ्रात, मरुपति विजयहिं दिय महमचात
बुध१९७१अनुज जोध१९७२किय च्यार४व्याह, कन्या दुव२विधिवस लहिय लाह ॥
जयसिंहरानको अनुज भीम, जो भूप बनहड़ा द्रंग सीम ॥ १२ ॥
कन्या तदीय जालमकुमारि, धव जोधसिंह१९७२वामांग धारि ॥
अग्रजके संगहि दुलह आप, परन्यौं सु उदैपुर मह अमाप॥१३॥
गजाउति जमुनाकुमरि१९७२नाम, गजसिंहसुता दूजी२ललाम ॥
तीजी३गनाउति गहप्रताप, उढाकिय आभिजनकुमरि१९७३आप

चोथी४चंद्रावति गमदंग, इम चंद्रकुमारि१९७४परन्यौं अभंग ॥
इन४मैं पहिली१के इक१सुताहि,उम्मेदकुमारि१जग कहत जाहि१५
थूहनिके रनबिच बुल्लि एह, बुधसिंह१९७१दयो जयसिंह गेह ॥
चोथी४तियके दूजी२सुता सु, इह रूपकुमारि२मृत सिसुहि आसु१६
इन चउ४न माँहिँ तीजी३निवारि, पतिसंग जरी पटु निखिल३नारि
अनुजा दुव२दुव२खिल अनुज उक्त,हुव जे चउ४बालहि कालभुक्त

॥ दोहा ॥

अनुजा कुसलकुमारि१९७१अरु, कल्यानादि कुमारि१९७२ ॥
अमर१९७३बिजय१९७४अंतिम नृप अनुज, चवे सिसुहि मृत च्यारि४
भावी सानुज भूपकी, व्याह १ प्रजा२दिकवत्त ॥
वर्तमान२पहुराम२०३४विधि, अब जानहु अनुरत्त ॥ १९ ॥

॥ पद्धतिका॥

इम लियउ बुद्ध पट्टाभिषेक, थपि राज्यअंग बसि हुकम एक ॥
सितरोमगुच्छ ढरि दु२दिस सीस, कनकातपत्र भूषित महीस २०
आवाप१तंत्र२चिंतन उपेत, सुभ बल१विदग्ध२धीसख३समेत ॥
पटुसंधि१यान२विग्रह३विलास, द्वेधा४ऽऽसन५आश्रय६गुनप्रकास
प्रभु१मंत्र२शक्ति उत्साह३पूर, सम चतु४रुपायसामर्थ्य सूर ॥

इमलियउ इति ॥ बुद्ध बुधसिंह. राज्यअंग राज्य के अंग. सित श्वेत. रोमगुच्छ चामर ॥ "चामरो रोमगुच्छप्रकीर्णक" मितिहैमः ॥ द्विदिस दोऊ२ दिशा. भूसित शोभित. महीस मही पृथ्वी ताको ईश ॥२०॥ आवापतंत्रइति ॥ आवाप१शत्रु वश करिबे को चिन्तवन. तन्त्र२अपने देश की वृद्धि को चिन्तवन ॥ "तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तन" मितिहैमः ॥ बल सेना. तामें धीसख मंत्री. तिन सहित. संधि१, यान२, विग्रह३, द्वैध४, आसन५,आश्रय६ ए छ गुण हैं । तिनके प्रकाश के विलास में पटु चतुर ॥२१॥ प्रभु इति॥ प्रभुशक्ति, मंत्रशक्ति, उत्साहशक्ति इनमें पूर पूर्ण. सम सहित । चतुरुपाय-साम१, दाम२, दंड३, भेद४, ए च्यारि उपाय तिन करिके. लुप्त तृतीया है ॥ इन सहित. सामर्थ्य में सूर. सविचार विचार सहित. व्यसन सप्तक७-मृगया१, स्त्रीसंग२, मद्यपान३, वाक्पारुष्य४, अर्थदूषण५, दंडपारुष्य६, द्यूत७

सविचार व्यसन सप्तक७निषेधि, बानैत बान बिन लेत बेधि २२
बिधि च्यारि हेति कोबिद बिनोद, चतु४रंग चक्र साधन समोद ॥
जुत धर्म्म१नीति२अवसर जमाय, लोकानुराग नयरीति लाय २३
इत्यादि रागगुन जोर जग्गि, बुधसिंह बढिय जनु अनिल अग्गि
हुव बिदित कित्ति दिसदिसन हाक, अकिबकि अराति रुकि बद-
न बाक ॥ २४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहबुन्दीपट्टाधिवेशन १ बुधसिंहविवाहतत्संततिकथनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदित एकोनचत्वारिंशदुत्तरद्विशततमः ॥ २३९ ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जयसिंह नृप, रानाँ अर्यमबंस ॥
तास बास तनुजा चतुर, भई इंदिरा अंस ॥ १ ॥

यह सप्त७॥ लुप्त द्वितीया कहता है। बान बाण. लुप्त तृतीया ता करिके. बिन पत्री. तिनकों. द्वितीया बहुवचन में नकार ॥ या प्रकार सर्वत्र बोध्यम् ॥२२॥ बिधि च्यारि इति ॥ विधि च्यारि ४ च्यार विधि के शस्त्र. मुक्त चक्रादि १, अमुक्त खड्गादि२, मुक्तामुक्त कुन्तादि३, यन्त्रमुक्त बाणादि४, ए च्यार विधि के. हेति शस्त्र ॥"हेतिः प्रहरणं शस्त्र" मितिहैमः॥ तिनके विनोद में कोविद चतुर ॥ प्राकृत में प्राय अविभक्तिक शब्द प्रयोग होते हैं। तहां अन्वय योजनी विभक्ति सर्वत्र कर लेनी॥ चतुरंग४-हस्ती१,हय२,रथ३,पदाति४, ए अंग तिनवारी. चक्र सेना ताको साधन रहे. नय न्याय ॥ २३ " राग इति ॥ राज राज्य. जग्गि चमत्कृति व्हैकैं. जनु मानों. अनिल पवन ताकरि. अग्गि अग्नि, कित्ति कीर्त्ति ॥

अराति शत्रु. "अरातिमारातिमथ" द्विरूपकोशे ॥ बाक वाणी ॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह का बुंदी के सिंहासन पर बैठना १ बुधसिंह के विवाह और सन्तानों के कथन का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ उनचालीस २३९ मयूख हुए ॥

नैर नगर. अर्यम सूर्य के वंश में. तास ताके बास. गेह तनुज पुत्री इंदिरा ल-

हुव मंजु सुता रानाँ निकेत, उम्मेदकुमारि सुभ गुनउपेत ॥
बय रंच पंचह्हायन बिधान, सौंदर्य्य रूप गुनगन समान ॥ २ ॥
लखि ताहि भूप जयसिंह आप, उद्वाह करण चिंतामवाप ॥
लगिय वर बिक्खन सब निहारि, बिधिसहित कनी व्याहन बिचारि ॥ ३ ॥
दिय दूत देसदेसन पठाय, जंघाल चतुरमति चउ४उपाय ॥
मरु१मालव२डाहल३शाल्व४अंग५, कट६ केरल७कुंतल८मगध९
बंग१० ॥ ४ ॥
जालंधर११तर्जिक१२कासमीर१३, कर्णाट१४द्रविड़१५मैथिल१६
सुवीर१७ ॥
इत्यादि बिषय उत्तम अपार, तिनमाँहिं रान पठये स्व चार ॥ ५ ॥
कहि हेरहु वर मम बच प्रमानि, जामातृ बर्यपद योग्य जानि ॥
भूपाल१तथा भूपतिकुमार२,इन भूर राजगुनजुत उदार ॥ ६ ॥
दस१०अब्द ताव बय१रूप२देखि, बर बरन खबरि आनहु बिसेखि॥
अनिरुद्ध पट्ट बुंदिय सु थान, बुल्लहिं सुनियत गुन रूपवान ॥ ७ ॥
तासौंहु रूप१गुन२अधिक भूप, कोउ होय ताहि हेरहु अनूप ॥
सुनि बानि चलिय दिसदिसन दूत, खोजिय असेस नृपकुल सपूत॥८॥
कथितादि देस लखि नृप कुमार, बुंदीपुरीहु चरमय चचार ॥

दली ॥१॥ हुवइति ॥ मंजु सुन्दर. निकेत गेह. उपेत युक्त. रंच अल्प. हायन वर्ष. सौन्दर्य सुन्दरता. गन समूह ॥२॥ लखिइति ॥ उद्वाह विवाह. करण करिबेकी. चिंता चिन्ता. अवाप प्राप्त भयो. यहां संधि कर दीनी है. लक्खन देखन. बरहि बरकों. कनी कन्या ॥३॥ दिय दूतइति ॥ जंघाल वेगवान्. चउ उपाय च्यार उपायों में चतुर ॥ ४ ॥ इत्यादि इति ॥ बिषय देश. रान राना नें. स्व अपने. चार दूत ॥ ५ ॥ कहि इति ॥ बच बचन. जामातृ जमाई तिनमें. बर्य श्रेष्ट. ताके पद के योग्य ॥ ६ ॥ दसेति ॥ अब्द वर्ष. ताव तावत् "तावाचौ जावाचौ तावद्यावतौ" इति प्राकृतप्रकाशे ॥ बिसेखि विशेष करिके ॥ ७ ॥ तासौं इति ॥ सपूत पुत्रन सहित ॥ ८ ॥ कथितेति ॥ कथित कहे. तदादि देश देशन में. कुमार राजकुमार. चर दूत. चचार जात भये. प्रकृति राज्य के अङ्ग-स्वामी १ अमात्य २ मंत्री ३ कोश ४ देश ५ दुर्ग ६ सेना ७ ए सप्त अंग,

लखि प्रकृति सप्त७ अति सावधान, बुधसिंह राज्यपति बंसभान९
बुध१धर्म२निपुन१खुरली२बिनोद,हय हत्थि चढन सह वह समोद॥
रनवीर१दान उत्सव उदार२, लावण्य ललित मारावतार ॥ १० ॥
इम बुधसिंह लखि बितर्जि वैर, सानंद गये चर उदयनैर ॥
सब कहि उदंत प्रतिदेस देस, बुधसिंह कित्ति पुनि किय बिसेस ११
कहि हमहु लखिय जनपद अनेक, बुंदीस सम न अन्यत्र एक ॥
कुमरी बरत्व लायक स एव, तत्रैव रचहु संबंध देव ॥ १२ ॥
बुंदींद्र कित्ति सबसौं बिसेस, इग सब्रुख श्रवन सुनि सुनि नरेस॥
संबंध चिंति तत्राहि बिचार, आत्मीय पुरोहित किय तयार ॥१३॥
संतोखराम नामा सु बिप्र, तिहिँ कहिय तत्र गंतव्य छिप्र ॥
दिय संग भर्म लांगलि मढाय, सामज चतुष्क४हय सत१००सुभाय
वर बिबिध वस्त्र१रत्न२न समाज, मृगनाभि१चंद्र२घुसृण३दि साज
इत्यादि तिलक मंगल असेस, द्विज संग दये लखि काल १देस२
श्रीकृष्ण नाम इक१गणक२राज, समधीत त्रिविधज्योतिप समाज

भान भानु (सूर्य) ॥ ९ ॥ बुधेति ॥ खुरली शस्त्राभ्यास. हत्थी हस्ती. लावण्य सुन्दरता आकार. मार मदन. "मदनो मन्मथो मारः" इत्यमरः॥ ताको अवतार ॥ १० ॥ इमेति ॥ नैर नगर. उदयपुर गये यह अर्थ. उदंत वृत्तान्त ॥ ११ ॥ कहीति ॥ जनपद देश. लायक योग्य. स सो. एव ही. यहां संधी करी है. देव संबोधन ॥ १२ ॥ बुन्दीन्द्रेति ॥ सब्रुख सुख सहित. आत्मीय अपनों ॥ १३ ॥ संतोखेति ॥ सु सो (पुरोहित). तिहँ ता प्रति. गंतव्य जावतो. छिप्र त्वरित "लघु क्षिप्रमरं द्रुत" मित्यमरः॥ "क्षस्य च्छहौ" इति प्राकृतसूत्रेण क्षस्य छः॥ "संयोगादेर्लोपः" इति प्राकृतसूत्रेण कलोपः॥ भर्म सुवर्ण तासों. लांगली नालिकेर. "नालिकेरस्तु लांगली" तिहेमचन्द्रः॥ यहां इकारकों विवक्षा वशसों ह्रस्व कियो है. सामज हस्ती. "शुंडालः सामजो नागः" इति धनंजयः॥ चतुष्क च्यारि ४. सुभाय सु [illegible] भाय भावनाधारे ॥ १४ ॥ वरेति ॥ समाज समूह. मृगनाभि कस्तूरी. "मृगनाभिर्मृगमदः" इति हैमः॥ चन्द्र कपूर. "घनसारः सिताभ्रश्च चंद्रः" इतिहैमः ॥ घुसृण केसर. "काश्मीरजन्मा घुसृणः" इतिहैमः ॥ साज सामग्री. तिलक मंगल तिलक संबंधी मंगल वस्तु. असेष संपूर्ण ॥१५॥ श्रीकृष्णेति ॥ गणक ज्योतिषी तिनमें. राज राजा. समधीत सं अधीत. सं स-

दाधीचजनन भव जो द्विजेन, दिय सोहि पुरोहित संग तेन॥१६॥
अरु कहिय उभयरतुम बुद्धिमान, बुंदींद्रनिकट विरचहु पयान ॥
मिलि भाखहु आसिखअस्मदीय,सबिनयउदंतपुनिकहिस्वकीय १७
सब वस्तु सगज१इय२लहि सुबेर५, करि तिलक निवेदहु नालिकेर
स्वीकार कराहिं जो तिलक विप्र, तो लखहु लग्न तत्रैव छिप्र१८
जो लग्न प्रथम आगामि होइ, स्वीकार अत्र लिखिदेहु सोइ ॥
यह सुनि द्विजबुंदिय आजगाम,जाहिरकिय आसिख पद ललाम१९
सुनि सचिव द्विजागम सावधान, सनमानिय साधन खानपान ॥
पुनि तदनु घस्र कतिपय बिहाय, बुंदींद्र रचिय सद बुद्धराय॥२०॥
संतोखराम लिय बुल्लि ताम, दाधीच बहुरि श्रीकृष्णनाम ॥
तिन पूछि अनामय दिय असीस, इन्ह बंदिय दो२ऊ विप्र ईस॥२१॥
लहि मिसल बैठि कहि सवन सार, बिधि सुनहु सभा सगपन बिचार
चीतोर मोर जयसिंहरान, तिन गेह लेह तनया सुजान ॥ २२ ॥

स्यक्, पक्षा. होरा १, गणित २, संहिता३ ऐसे तीन भेद की ज्योतिष को समाज. जनन वंश. "अन्वयो जननं वंशः" इतिहैमः॥ तामें. भव भये. जो वह. द्विजेन द्विजनमें इन स्वामी "स्वराणां स्वरे परे प्राकृतिलोपसंबंधः" इति प्राकृतसूत्रेण संधिः॥ तेन वा राजानें ॥ १६ ॥ अरु कहेति ॥ आशिख वैभव वृद्धि को वचन. अस्मदीय हमारो. सविनय विनय सहित. उदन्त वृत्तांत. स्वकीय अपनों ॥ १७ ॥ सगज गज सहित. स्वीकार अंगीकार. विप्र संबोधन. लखहु देखहु. तत्रैव तहांही. छिप्र त्वरित ॥ १८ ॥ जो लग्नेति ॥ आगामि आयवेवारो. अत्र यहां. सोय सोही. आजगाम आयो. ललाम सुंदर ॥ १९ ॥ सुनेति ॥ तदनु तापीछे. घस्र दिन. कतिपय कितेक. विहाय व्यतीतकरि. सद सभा. "आदावमानुस्वारलोपा व्यञ्जनस्ये" ति प्राकृतसूत्रेण सकारलोपः॥ राय राजा. "क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुगि" ति प्राकृतसूत्रेण जलोपः ॥ ततः "अवर्णपरोद्धतस्वरो यत्वमेति" ति प्राकृतसूत्रेण यकारः ॥ २० ॥ संतोखेति ॥ बुल्लि बुलाय. ताम तहां. अनामय कुशल. असीस आशिष. इन्ह इननें ॥ २१ ॥ लहीति ॥ मिसल बैठवेको स्थान. सवन सबनसों. सार तत्व. सगपन संबंध. लेह लेख. ताकरि कुसवृत्तीयाके. तनया पुत्री. सुजान सुज्ञान ॥ २२॥

बुंदियनरेस कँहँ वह बिवाहि, संबंध रचन सीसोद चाहि ॥
तुरकान सिंधु बिच जे सरोज, तिन गेह उचित संबंध मोज॥२३॥
भट१सचिव२सवन सुनि यह सुमंत, हिय हुलासि कह्यो उचितहि उदंत ॥
लवजनन वहै उज्वल लसात, ज्यौं जनन यहै चंडासि जात।२४।
स्वीकार सबहि बुल्लिय सुबानि, मानस अपुब्ब आल्हाद मानि॥
संतोखराम इम लहि सुवेर, करि तिलक निवेदिय नालिकेर २५
वर बरिय बहुरि निज अनुज जोध२, राणानुज कन्या२कहि सुबोध
दुव१बंधुन करि संबंध एम, देख्यो मुहूर्त्त सुभ प्रथित प्रेम ॥ २६ ॥
संबत द्वि पंच ऋषि इंदु१७५२ मान, मेचक तपस्य नवमी बिधान ॥
गणकन बिचारि सुभ लग्न तत्थ, इक्क१मास अवधि अंतर समत्थ
करि सीख तबहि द्विजबर सुजान, कोटाप्रति सत्वर किय प्रयान ॥
चहुवान राम कोटाधि ईस, भुज भेटि वंदि तिन दिय असीस॥२८॥
अरु कहि लघुपुत्री हत रान, तुमरो सुत मान्यौं संप्रदान ॥
चहुवान राम यह सुनि सचाह, उपयम अपत्य कीनौं उछाह ॥२९॥

बुंदीति ॥ चाहि चाह्यो. सिंधु समुद्र. जे वे(राना).सरोज कमल. वा पानीसों अलिप्त यह अर्थ. मोज रीझ ताकरि ॥ २३ ॥ भटेति ॥ सुमंत सुमंत्र. उदंत वृत्तान्त. लवजनन लव को वंश. सूर्यवंश यह अर्थ. चंडासि चहुवाण. तज्जात तासों भयो ॥ २४ ॥ स्वीकारेति ॥ अपुब्ब अपूर्व. "परस्य द्वित्व" मितिप्राकृतसूत्रेण रलोपः, वद्वित्वञ्च ॥ २५ ॥ वरेति॥ निजनृपको अनुज लघुभ्राता. जोध जोधसिंह नामक. राणाऽनुजकन्या राणा के अनुज की कन्या ताको. दुव बंधुन दोऊ भाईनको. प्रथित प्रत्येक प्रसिद्ध ॥२६॥ संवतेति ॥ ऋषि ७. इंदु १. सत्रहसे बावन१७५२. मान प्रमाण. मेचक कृष्णपक्ष. तपस्य फाल्गुनमास, ताकी. गणकन ज्योतिषीननें. तत्थ तहां. समत्थ समर्थ. कुयोगादि दोष रहित यह अर्थ ॥ २७ ॥ करीति ॥ सत्वर त्वरित. राम रामसिंह नामक. कोटाधिईस कोटापुर को अधिईश स्वामी ताको. भुजभेटि भुजन करिके, भेटि मिलि. वंदि वंदित होयकें. तिन तिननें ॥ २८ ॥ अरुकहीति ॥ हत अर्थ. रान रानानें. संप्रदान दानपात्र. उपयमअपत्य अपत्य पुत्र, ताको उपयम विवाह तामें

इत बुंदिय कोटा धरि उमंग, संतोखराम गय उदयढंग॥
सब कहि उदंत सांगोपअंग, उपयम बिधान निज कृत अभंग३०
बुधसिंह बिवोढा अति उदार, बिक्रांत सुभग पटु सबप्रकार ॥
तिनसौं रचि उपयम नीति बोध,दुव२अनुज वरिय पुनि भीम जोध३१
अब रचहु व्याह बिधि जो अजात, ऐंहैं त्रि३रूच्य सुख साजि बरात
उत हुव बिबाह उपकरन एम, इत साजि बरात परिकर सप्रेम३२

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहोदयपुरसंबन्धवर्णनं द्वितीयो मयूखः ॥२॥
आदितश्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४० ॥

॥ षट्पात् ॥

घमघमंकि घुग्घरन बाजि चल्लिय मग झंपत ॥
धमधमंकि नउबत्ति बजत अतलादिन कंपत ॥
तमतमंकि गजराज सुंडि सुरपथ फटकारत ॥
झमझमंकि भूखनन रोचि रवि रोचि बिगारत ॥
बानैत बिहित छुरली रमत झलत बीर बिरुदन बलिय ॥

॥ २९ ॥ गय गया. उदयढंग उदयपुर. "संयुक्तपूर्वोपि लघु क्वचित्स्यादि" तिवाणीभूषणवचनात् सर्वत्र न छंदोभंगः॥ उदंत वृत्तान्त. सांगोपअंग सांगोपांग. उपयम विवाह ॥ ३० ॥ बुधसिंहेति ॥ बिवोढा वर. लोकमें दुलह. बिक्रांत सूरवीर. सुभग सुन्दर. उपयम विवाह. दुवअनुज बुधसिंह के छोटे भाई. वरिय वर. अंत के इकार-ईकार-एकार देशी प्राकृतमें हय होय. उकार-ऊकार-औकार उव होय. भीम भीमसिंह. कोटा के राजा को पुत्र. जोध जोधसिंह. बुंदी के राजा को पुत्र. ए दोऊ बुधसिंह के अनुज भये ॥३१॥ अबेति ॥ अजात नहींभये ऐसे. ऐहैं आय हैं. त्रि तीन ३. रूच्य दुलहा. "रूच्यो वरयिता धवः" इतिहैमः ॥ उपकरन सामग्री. एम यों ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बून्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के उदयपुर सम्बन्ध होने के वर्णन का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ चालीस २४० मयूख हुए ॥

घमघमंकेति॥ मग मार्ग. नउबत्ति भेरी. अतलादि अतल वितलादि लोक. ति-

बुधसिंह बिदित बुंदिय नृपति सजि सानुज दुल्लह चलिय ॥१॥

॥ दोहा ॥

बुल्लि बिदित कबि बिबुध लिय, भूसुर चारन भट्ट ॥
अगुनहु त्याग उमंग धरि, अनाहूत चलि थट्ट ॥ २ ॥
सेवक जाति सिरोहिया, भाख्यो भट्ट प्रताप ॥
उदयनेर मम देय नृप, लै न चलहु सँग आप ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

कबि प्रताप यह कबहु पत्त कुल भट्ट उदैपुर ॥
राजसिंह१जँहँ रान१हीर१दासहु धीसख२धुर ॥
इक रानी अभिसाप घटकि पट्टप१कुमारपर ॥
तदनु मरायो ताहि कुमति बहिकाइ रान कर ॥
तस अनुज कुमर सरदार२तिम मंतुबिनुहि लै बिष मर्‍यो॥
तिहिँ अघ प्रताप जावन तजि रु पुरहि उदैपुर परिहर्‍यो॥४॥
इक्कसमय यह भट्ट उदयपत्तन संपत्तो ॥
राजसिंह तिन दिनन रान राजत छक्क रत्तो ॥
पट्टप पुत्रहि रान रुट्ठि मारन मन धार्‍यो ॥
मैंहु जनक हनि भूप रहौं यहँ हेतु बिचार्‍यो ॥
अनई न यहँ जान्यो जनक तब कुमार तत्काल भजि ॥
सरनागत भट्ट प्रतापके अभय मंगि हुव प्रनति सजि ॥५॥

नकों. कंपत कंपात. सुरपथ आकाश. रोचि कांति. खुरली शस्त्राभ्यास "खुरली तु श्रमो योग्याभ्यासः" इतिहैमः ॥ क्रमत चलत. बिरुद बिरुदबंदीजन के स्तुति करि ॥ १ ॥ बुल्लिइति ॥ भूसुर विप्र. भट्ट भाट. अनाहूत बिना बुलाये. ॥ २ ॥ सेवकेति ॥ प्रताप प्रताप नामक. देय छोरिबे योग्य. आप तुम ॥ ३ ॥ कबेति ॥ पत्त प्राप्त. धीसख मंत्री. अभिसाप मिथ्यादोष. तदनु तापीछें. मंतु अपराध ॥ ४ ॥ इक्केति ॥ भट्ट भाट. संपत्तो संप्राप्त भयो. रान रानानें. जनक पिता, ताको. हेतु कारन. मैं पिता कों हनि राजा बन्यों ज्यो यहहु राजा बनै

रान जानि यह बत्त आय हुत भट्ट पटालय ॥
जचिय पुत्र तब भट्ट कहिय यह वहु अनामय ॥
अंगीकृत करि भट्ट कथित निज सुत लै आयउ ॥
अनय बिरचि पुनि तनय अनागस मारि गिरायउ ॥
यह सुनि प्रताप अति सोक किय लिय संधा ताही छनक ॥
जो कबहु धरों मुख रानजल तो न भट्ट नामक जनक ॥ ६ ॥

(दोहा)

जलहु उदैपुरको तजन, बंदी जहँ पन बंधि ॥
कह्यो सत्य मम भट्ट कुल, सत्यबचन यह संधि ॥ ७ ॥
वह कथ चिंति प्रताप तँहँ, न चलन अरज उचारि ॥
नृपति कह्यो हम लै चलहि, आपुन देसज वारि ॥ ८ ॥
हठ पूरव यह हुकम करि, लिय निज संग प्रताप ॥
भरि सकटन निज देस भव, रिरी करीरन आप ॥ ९ ॥
कोटाकीहु बरात बनि, खिलि मग संक्रमि संग ॥
पहुँचे दुल्लह उदयपुर, महसह उदित उमंग ॥ १० ॥

(पद्धतिः)

अतिमोद रान सनमुक्ख आइ, विधिजुत जामाता लिय वधाइ ॥
दल उतरि द्रंग ढिग सर समीप, दुति बढिग आरती कलस दीप ॥
पधराय सम्य महलन सप्रेम, तनि सुचित उचित उपहार तेम ॥
बुधसिंह१९७१श्रिँ व्याह्निय रक्खि रीति,बिंदा बय बाल्य सु प्रथित

यह अर्थ., अनई अन्याई ॥ ५ ॥ रानेति ॥ पटालय डेरा. यह याको. अनामय कुशल. अनागस बिना अपराध. संधा प्रतिज्ञा. नामक मेरो ॥ ६ ॥ जलेति ॥ बंदी भाट. संधि प्रतिज्ञा ॥ ७ ॥ वहेति ॥ कथ कथा. आपुनदेसज अपने देश को. वारि जल ॥ ८ ॥ हठेति ॥ रिरी पीतल. "रिरी च रीतिः" इतिहैमः॥ ताके करीर कलस. "कुटः कुम्भः करीरश्च" तिहैमः ॥ तिनमें आप जल ॥ ९ ॥ कोटेति ॥ संक्रमि चलकर. मह उत्सव ॥ १० ॥ अतिमोदेति ॥ जामाता लोके जमाई. दल सेना. द्रंग नगर. सर तडाग. समीप निकट ॥ ११ ॥ पधरायइति ॥

प्रीति ॥ १२ ॥

परिनाइ सोदरहु जोधनाम, पुनि भीम पितृव्यक रामजाम ॥
मुहुकम्मवंस भट बंधुवर्ग, परिनाइ नाम सालम कुसर्ग ॥ १३ ॥
इत्यादि रान वर वरि अनेक, अठ८ रु सत१००याहे लग्न एक ॥
बुंदीन्द्र संग विधि उचित साजि, दुल्लह सप्तोत्तरसत१०७विराजि१४

(दोहा)

छप्पनदेस नरेसकी, तनया व्याही रान ॥
प्रेमरीति अंतरप्रिया, सोही रहिय सुजान ॥१५॥
ताके उर सुंदर सुता, हुव उम्मेदकुमारि ॥
सो दुलहनि वामांग विधि, बुधसिंह अवधारि ॥ १६ ॥

(पद्धपात)

कुमरी जेठो कुमर नाम उम्मेदसिंह१९८।१जिहिं ॥
प्रिय रानिय सुत जानि रान लागि राजदेन तिहिं ॥

उपहार सामग्री. विंदा लोके वींद ॥ १२ ॥ परिनाइ इति ॥ सोदर अपनों सहोदर भाई. लोके सगो भाई. भीम भीम नामक. पितृव्यकरामजाम पितृव्यक पिता को भाई लगतो होय तासूं काका बाबा कहे है यातें इसनें कह्यो ऐसो कोन रामसिंह नामक कोटा को राजा. ताको जाम जायो. यह अर्थ. मुहुकम्म कुमर गोपीनाथ को पुत्र, राव शत्रुशाल को भाई ताके वंश में भयो ऐसो सालमसिंह नामक. कुसर्ग कुत्सित है प्रजा जाके. ऐसो याके पुत्र व्हैहैं जे स्वामी बुधसिंह को शत्रु व्हैहैं यातें कुसर्ग कह्यो ॥ १३ ॥ इत्यादीति ॥ सप्तोत्तर सत १०७ एक सो सात और दुल्लह और एक बून्दी को इन्द्र ए एकसो आठ भये. या लग्न पर राना जयसिंह नें एक सो आठ १०८ कन्या अपनी अरु बंधु वर्गन की इकट्ठी करके व्याही तहां तीन दुलहा तो बूंदीसों गये दोऊ भाई और एक सालमसिंह अरु एक कोटा सों ऐसे ओरहू देशन के राजा तथा राजकुमार तथा उमराव या लग्न पर एक सो आठ १०८ विवाहे इत्यर्थः ॥ १४ ॥ छप्पनेति ॥ छप्पन वागड़ देश के समीप देश विशेष. ताको नरेस चहुवान यह शेष. ताको तनया पुत्री अंतर मन. तामें ॥१५॥ ताकेति ॥ अवधारि धारी. ॥ १६ ॥ कुमरीति॥ कुमरीजेठो. कुमरीसों जेठो. ज्येष्ठ बडो. यह अर्थ.

सत्रुसल्ल नंदिनिय नाम गंगा गुन गाई ॥
भावसिंह भगिनी सु पुब्ब रानहिं परिनाई ॥
अमरेस कुमर ताके उदर प्रथम भयो कुल पट्ट पति ॥
तुरकान तेज संगति प्रबल घरघर हिंदुन अनय रति॥१७॥
लखि यह अमरकुमार राज लघुबंधव पावत ॥
कुप्पि अनय उप्फनिय जनक उप्पर भुव जावत ॥
हानि धरम हिंदून लाय घरघर इम लग्गैं ॥
अणुके सम्मित अनय भिदुर गृह पब्बय भग्गैं ॥
अमरेस उदित आहव रचन बल बिसेस धनबिनु कठिन॥
यह सोचि आय मातुल निलय बुंदिय गढ तिहिं मंत्र खिन।१८।
यह भाऊ१९५१अधिराज देत अनई न कपर्दन ॥
तीनलक्ख३०००००तब दम्म पाय निट्ठहि मातुल सन ॥
अर कुमार अमरेस आय बेघमपुर ओसरि ॥
राउत अनुपमसिंह पग्घ पलटि रु धीसख करि ॥
बखसीस च्यारि४चामर बिरचि संगर उचित अनीक साजि॥

यह कुमरी सों बहुत वर्ष पहिलैं भयो हो. जिह जाकों. तिह ताकों. तब यह शेष. नंदिनिय पुत्री. पुब्ब पहिलैं ॥ १७ ॥ लखीति ॥ बंधव भाई. जनकउप्पर पिता उप्पर. भुव भू. अनय अन्याय. सोही भिदुर वज्र. ताकरिकैं "कुलिशं भिदुरं पवि" रित्यमरः ॥ गृहपब्बय गृह घर. सोही पब्बय पर्वत. भग्गें नष्ट होत. आहव युद्ध. बल सेना.मातुलनिलय मातुल मांमा. ताको निलय स्थान. तिहँमंत्रखिन या युद्ध करिवेके मंत्र के. खिन क्षण में ॥ १८ ॥ यहेति ॥ भाऊ भावसिंह. अनई अन्याई. यानैं पितासों लरिवेकों मांगी यए अन्याय की यातें. कपर्द लोके कोडी. न नहीं. दम्म द्रम्म लोके रुपइया. सन सों. अर शीघ्र.बेघम बेघम नामक नगर. ओसरि पीछो फिरकैं. रावत है अंकंदक पद जाको ऐसो अनुपमसिंह अनोपसिंह नाम करि बेघम को पति ताकों. मेवार के उमराव रावत बहुत बजै हैं. पग्घ शिरोवेष्टि लोके पाघ. ताकों पलटि बदलि.उनकी पाघ इननें यह अर्थ.मूढ लोक याकों आधुनिक समय में मित्रताको चिन्ह गिनै हैं यातैं. रु अरु. धीसख मंत्री. अनीक सेना. "चक्रं चानीकमस्त्रियाम्" मित्यमरः ॥ पुरउदय उदयपुर. बृंहित गजशब्द. हेसा हयशब्द.

पुरउदय जाय घेरिय प्रबल बृंहित हेषा निनद बाजि ॥ १९ ॥
सु सुनि रान जयसिंह पुत्त लघु सहित पलायो ॥
किल्ला कुंभिलमेरु बसि रु वह काल बितायो ॥
सुत हल्ला लखि सत्य मात गंगा सकोप मन ॥
खेटक खग्ग उचाय आय ठड्डी गृह तोरन ॥
पठई कहि अनुपमसिंह पहँ तुम भटवर धारत धरम ॥
समुझावहु कुतनय बिनयसन जो चौंडाघर तुम जनम २०
यह सुनि अनुपमसिंह सुमिरि निज पुब्बपितामह ॥
प्रथम मिल्यो चलबुद्धि अब सु बदल्यो डर दुस्सह ॥
साजि अप्पनो अत्थ सम्मुख प्रतिभट ह्वै धायो ॥
चोसर चत्वर उदयनेर लुट्टन नहिं पायो ॥
समुझाय कुमर अमरेसकहँ तुल्य सुभट एकत्त जुरि ॥
कुल धरम थंभि सुत जनकके सुनय साम किन्नों बहुरि२१

॥ दोहा ॥

रहैं तखत जयसिंह नृप, तोलों अमरहिं अप्पि ॥
राजसमुद्र तड़ाग तट, राजनगर गढ थप्पि ॥ २२ ॥
इम गंगा पहिले समय, पुराय पतिव्रत पाय ॥
भेदि सु अनुपमसिंह भट, लिय स्वपुत्र समुझाय ॥२३ ॥
गंगासम गंगा कही, सुधरम सतिय सुजान ॥
भीखमसम कैसैं कहौं, अनई अमर अमान ॥ २४ ॥

निनद शब्द. ॥१९॥ सुसुनेति॥ सु सो. पुत्र उम्मेदसिंह नामक. सुत अपनों पुत्र अमरसिंह नामक ताकों. मात माता. खेटक ढाल. तोरन बाहिर को द्वार. कुतनय कुपुत्र. पितासों लरिबे आयो यातें याकों. सन सों. हेतु में पंचमी. तुम तुमारो. इतो यह शेष ॥ २० ॥ यह इति ॥ पुब्ब पूर्व. ताकों चूँडा कों. यह अर्थ. सम्मुख सामने. चोसर चार चार पंक्तिवारे चत्वर जामें ऐसो ॥ २१ ॥ रहेति ॥ अमरसिंह कुमार कों पंच उमरावननें यह शेष. अप्पि देकैं. थप्पि थापो. ॥ २२ ॥ इमेति ॥ यह स्पष्ट ॥२३॥ गंगाइति ॥ सतिय सती (पतिव्रता) यह

लहि प्रसंग कछु यँहँ कहौं, चौंडाकी नय वत्त ॥
जाहि सुमिरि अनुपम भयो, गंगावच अनुरत्त ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक्क१समय चीतोर रान लखपति खेतल सुत ॥
तरुन कुमर इक तास नाम चौंडा नय जय जुत ॥
नृप रनमल रट्ठोर गेह तनया मंडोवर॥
चौंडासौं संबंध करन आये तस कग्गर ॥
सुनि पत्र रानलखपति कहिय तरुननकौं हेरत जगत ॥
यह जनक बैन सुनि सुनि कुमर किय मन तिहिँ व्याहन विरत२६
कहि चौंडा करजोरि सुनहु मरुवर सुज्ञाता ॥
व्याह पिताको रचहु वहै कन्या मम माता ॥
यहु सुनि मरुवासीन कह्यो लिखिदेहु अप्प कर ॥
रट्ठोरनको भागिनेय चीतोर पट्ट पर ॥
यह सुनत लिखित निजहत्थ करि मरुवासिन सौंप्यो कुमर
लखपतिहु रान व्है मंदमति व्याहलइय वह वृद्धवर ॥२७॥
तुच्छ दिननके अंत गरभ रट्ठोरि ग्रहन किय ॥
समय अंत सुत जनम नाम मुक्कल विप्रन दिय ॥
लखपति अज तिनदिनन काल कंठीरव मारयो ॥
चौंडासौं रट्ठोरि रूठि पीहर बल धारयो ॥
बुलवाय तात रनमल्ल पुनि जोधभ्रात चीतोरगढ ॥

वृत्तान्त बहुत वर्ष पहिलैको यहां कहि दीनों है ॥२४॥ लहि इति ॥ यँहँ यहां ॥ २५ ॥ इक्कइति ॥ तास ताको. कग्गर पत्र. तिहँ ताकों. व्याहन व्याहिवेकों विरत विरक्त (उदासीन) ॥२६॥ कहि इति ॥ मरुवर मरुदेश के वर श्रेष्ठ. सुज्ञादि यह संबोधन. अप्पकर अपनें करसों. भागिनेय लोके भानेज. वह रट्ठोर राजा रनमल्लकी कन्या. वृद्धवर बूढे वरनें॥२७॥ तुच्छेति॥ जनमि जन्म्यों. मुक्कल मोकल. लोके मोकल. अज बकरा. काल मृत्यु. सोही कंठीरव सिंह तातें.

तिन हत्थ द्वार कुंचिय अरपि किल्ला करिय प्रपंच दढ २८
नारिबुद्धि रठोरि समुझिनहिं परिग फलाफल ॥
तव सुख रनमल्ल कहिय तजैं चौंडा जब यह थल ॥
यह सुनि चौंडारान जुत्ति निकस्यो भीसम धुर ॥
मुलक छोरि मेवार गयो माल्लव मंडूपुर ॥
मारवन दाव लाग्यो तवहि जोधा रनमल मंत्र जपि ॥
करि भागिनेय मुक्कल कदन थिरहि लैन चीतोर थपि २९
इक्क१रान अनुचरिय नेह मंड्यो जोधासम ॥
इक१दिन आसवपान जोध बुल्ल्यो मतिविभ्रम ॥
मुक्कलकों अब मारि दुग्ग दल देस कोस हरि ॥
इक्क१मासके अंत तोहि भजिहैं रानी करि ॥
यह वत्त डारि दासिय दई मुक्कलकी माता श्रवन ॥
सुनि सोचि तवहि रठोरिकों चौंडा आयउ चिंतमन ॥३०॥
पत्र मंडि प्रछन्न दूत मंडुव पठवायो ॥
सुनि चौंडा साजि सेन अद्ध रजनी गढ आयो ॥
करि हल्ला चढि कोट धस्यो बीराधिबीर बल ॥
कुमर जोध भजि कढिग मारिलिन्नों नृप रनमल ॥

तात पिता. जोधभ्राता जोधसिंह नामक भाई. द्वारकुंच्चिय दरवाजेनकी कूंची. अरपि देकैं. दढ दृढ ॥२८॥ नारिबुद्धिरिति ॥ परिग परयो. थल स्थल (स्थान). रान राना. जुत्ति जोके जुपिकैं. भीसमधुर भीषमकी धुरकै. जा धुरकै भीषम जुप्यो ताके यह अर्थ. मारवन मरुवासीनके. कदन नाश. थपिको अन्वय मंत्र सों है ॥ २९ ॥ इक्केति ॥ अनुचरिय दासी. तानैं. सम यासों. दासिय दासी नैं. माताश्रवन माताके कान में ॥ ३० ॥ पत्रइति ॥ सेन सेना कों. बल सेना. मुकलहिं मोकल कों. अरपि देकैं. तटस्थ भिन्न. हिंदवान हिंदुस्थान. यहां वर्णाश्रम धर्म धारे या कुमारिका चेत्र के वासी जन हैं तिनकों म्लेच्छ लोग तो हिन्दू कहेहैं. यह हिन्दू शब्द या चेत्र में जवननको राज्य भये पीछे बहुत प्रकट व्हैकैं देशीप्राकृत में गयो यातें देशीप्राकृत जानिकैं हमने वर्तमान कारनतें कह्यो है. अन्यथा या शब्द को अर्थ तो बुरो ही होत है; क्योंकि म्लेच्छ

सुक्कलहिँ पट्टगाहिय अरपि रहि तटस्थ जग जस लियउ ॥
हिँदवान बत्त धारहु हृदय करहु जेम चौंडा कियउ ॥३१॥

दोहा—यह चौंडा करि चितमन, अनुपम धरम विचारि ॥
किये साम सुत जनककैँ, निज पुर लूट निवारि ॥३२॥
रान अनय मन ठानिकैँ, राज देनलगि जाहि ॥
ताकी वर सोदर स्वसा, बुड्ढ नरेसहिँ ब्याहि ॥ ३३ ॥
तीजीइरानीकी सुता, भीमहिँ दइय विचारि ॥
भ्रात भीमकी नंदनी, जोधसिंह अवधारि ॥ ३४ ॥
सुहुकमहर सालम अरथ, सुभट सुता परिनाय ॥
बहुरि सीख डेरन दई, सबहिन मोद सुनाय ॥ ३५ ॥
दुल्लह डेरन आय किय, बिहित नित्य सुचि होय ॥
गोरन असन निमंतकोँ, रहे रान मग जोय ॥ ३६ ॥
रान कैफ मंडत बहुत, आतआत अलसाय ॥
गोरन दिवस अतीत व्है, समय निसीथ सु आय ॥३७॥

॥ षट्पात् ॥

लोग तो इनकों अच्छे कहैं नहीं तिन मतानुकूल उत्तम आर्य जनों को अधम करिकें कहनों परत है कि तिन हिंदुनको स्थान है. ताके अनुस्वार कों "अनुस्वारो बहुलं" या प्राकृतलक्षणसों अनुनासिक कियो. जेम ज्यों ॥ ३१ ॥ यहइति ॥ साम प्रथम उपाय. निजपुर रानाको पुर (उदयपुर) ताकी ॥ ३२ ॥ रानेति ॥ स्वसा भगिनी. लोके बहिनि. "जामिस्तु भगिनी स्वसे" तिहैमः ॥ यह बहिन भाईसों बहुत वर्ष पीछैं भई. ब्याहि ब्याही ॥ ३३ ॥ तीजीइति ॥ भीमहिं कोटा के राजा को पुत्र भीमसिंह. ताकों. दइय दई. भ्रातकी राना जयसिंह को भाई भीमसिंह. ताकी. नंदिनी पुत्री. अवधारि धारी ॥ ३४ ॥ सुहुकमेति ॥ हर देशीप्राकृत में वंश वारे कों कहत हैं. तातें सुहुकम वंशी यह अर्थ भयो ॥ ३५ ॥ दुल्लहइति ॥ नित्य सन्ध्यादिक कर्म. सुचि पवित्र. गोरन विवाह के दूजे दिन कों लोक में गोरन कहै. ताके. असन भोजन के. निमंत्र बुलाबाको. रानमग राना के मार्ग कों. जोय देखि. जोय को अन्वय रहे लों है ॥ ३६ ॥ रानइति ॥ कैफ नशा. निसीथ अर्धरात्रि ॥ ३७ ॥ सुपहुइति ॥ सु

सु पहु रान जयसिंह मन्नि मादक सराग मन ॥
भंगि अरक भुञ्जैं सु प्रमित दुव बीस२२पहीसन ॥
प्रिय रानिय छप्पनिय भौंन पगधारि नित्य भल ॥
असन अप्प अहरहिं मेर खट६रितुहि अंबफल ॥
इम मत्त मातुलानिय अरक दसमी१०निस ससिके उदय॥
चहुवान सिबिर सीसोद चलि भानुहारि गोरन समय।३८।
मिलि उपेत सनमान राव रानाँ अनंद रजि ॥
चढि गयंद चहुवान स्वसुर महलन प्रयान सजि॥
परिकर सह परि पंति असन किन्नौं अधिराजन ॥
अति सुख डेरन आय सयन मंडिय प्रमोदसन॥
जयसिंह रान तीजे३दिवस जनक दोस मेटन जहर ॥
परताप भट्ट डेरानप्रति मुदित आय मंडिय महर ॥ ३९ ॥

(दोहा)

अग्गैं रानाँ राजसौं, रुट्ठो भट्ट प्रताप ॥
अब जयसिंह प्रसन्न किय, आय पटालय आप ॥४०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे सप्तोत्तरशतविन्हसहितबुधसिंहोदयपुरविवाह

सो. पहु प्रभु राजा. मन्नि मानिकैं. मादक नशे की वस्तु. तासौं. सरागमनराग प्रीति. तासहित मनकौं. भंगि भंगा. ताको. अरक सार. भुंजैं खावै. सु सो. प्रमित प्रमान. भौन गेह. पगधारि जायकैं. अंब आम्र. लोके आंबा. तिनके फलनसौं रुचि बहुत ही या तैं बारह मास राखते. मातुलानिय भंगा. ताके. चहुवान बुधसिंह के. सिबिर रचना विशेषसौंफोज के डेरा. तिनप्रति. सीसोद रानौं ॥ ३८ ॥ मिलिइति ॥ उपेत युक्त. राव बुंदीनृप. रजि शोभित व्हैकैं. सह सहित. असन भोजन. सन सौं. जहर विष. महर कृपा ॥ ३९ ॥ अगेति॥ राजसौं राजसिंह नामकसौं. पटालय डेरा ॥ ४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में उदयपुर में एक सौ सात दुलहों सहित बुधसिंह के विवाह के वर्णन का तीजा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इकता-

वर्णनं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदित एकचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४१ ॥

षट्पात्--दिन चउत्थ४ दीवान वुल्लि रघुपतिय पुरोहित ॥
अरु चारन आनंद भट्ट परताप बुद्धबित ॥
च्यारिलक्ख४००००० निज चलन दम्म खज्जूर संगदिय ॥
हय बर इक्कहजार१००० दोयदस१२ मत्त दंतिय ॥
सिरुपाव उच्च द्वादस सहँस१२००० कति बिधि भूखन संग किय॥
मंगनन भाग धनपति मनहुँ दैन त्याग इम हुकमदिय ॥ १ ॥
दिन पंचम२ दुवर२ नृपन सजिय चीतोर समागम ॥
पिक्ख्यो दुग्ग सु प्रथित समर जहँ हुव अकबर सम ॥
पुग्गिम१५ दिन करि गोठि फाग कोतुक किल्लापर ॥
होरिय उच्छव ठानि बहुरि आये पत्तन बर ॥
अतित्याग उभ्भल सुनिसुनि सुजस हरखि रान जयसिंह जिय॥
बिधिउचित पुज्जि बरबरनि छबि रहि रस बुंदिय सिक्ख दिय।२।
चलि बरात प्रतिपंथ भीम करजोरि भ्रात धुर ॥

बीस २४१ मयूख हुए ॥

दिनइति ॥ चउत्थ चतुर्थ. चौथे दिन यह अर्थ. दीवान बुधसिंह. वुल्लि बुलाय कैं. रघुपतिय रघुपति नामक. यहां स्वार्थ में क प्रत्यय आन्यों. ताके व्यंजनको लोप करिकैं प्राकृत के मतसों यकार कियो. यह रीति सर्वत्र ऐसे प्रयोग आवैं तहां जानलेनी. आनंद आनंदराम नामक. अपनी पोळि को चारण हरिखा नाम ग्राम को स्वामी हमारे पितामह बदनसिंह को प्रपितामह यह शेष. भट्ट भाट. बुद्धिबित बुद्धि परखवे वारो. "विदूज्ञाने" धातु है. ताको वित् भयो. ताके तकारकों प्राकृतसों सस्वर कियो. दम्म रुप्पैया. खज्जूर खर्जूर रूपा. ताके. कति कितेक. धनपति कुबेर. त्याग दान. विवाह में मंगननकों दान होत ताकों त्याग कहे हैं ॥ १ ॥ दिनइति ॥ पिक्ख्यो देख्यो. दुग्ग दुर्ग. किल्ला. सु सो. (चित्तोर). हुव भयो. समा सों. पुग्गम पूर्णिमा. ताके दिन. गोठ रीति विशेषसों भोजन. पर ऊपर. होरिय यहां हुतासनि की. जाकों अग्नि में जारिवे सो लेनी ॥ पत्तन नगर. तिनमैं बर श्रेष्ठ ॥ उदयपुर यह अर्थ भी होत है ॥२॥

कोटाप्रति किय सिक्ख अप्प आयउ बुन्दीपुर ॥
दिय मिलान सब सैन जैतसागर तड़ाग तट ॥
दइवजोग निस समय आगि लग्गिय डेरन पट ॥
सर सेतु मध्य गृह पिहित इक१अजि रु तत्थ वर वरनि रहि ॥
हुव छार हसम डेरन सहित मनुज तुरंगहु कछुक दहि ॥ ३ ॥
इहिँ दारुन उतपात दान सत दोय२०० सबिधि दिय ॥
सुभ समय निज नगर द्वार उत्तर प्रवेस किय ॥
पुरजन मंगलपुब्ब बिबिध उच्छाह बधारे ॥
हट्टा चत्वर चोक सउध प्राकार सिँगारे ॥
बिधि निगम साधि वर बरनि इम नीराजित गृह गमन किय॥
कछुदिनन अंत जवनेसके चरन आय फरमान दिय ॥ ४ ॥
दिल्लियपति अवरंग४०।३तपत इक१छत्र तीन३दिस ॥
दक्खिन दब्बनकाज चढिग आतिबल अतीव रिस ॥
पहिलैं रेवापार नाम निज नगर बसायो ॥
बहुत बरस रहि तत्थ कछुक अरि अमल उठायो ॥

कोटेति॥भीम कोटानृपपुत्र.आतधुर भाइनमें मुख्य.सरसेतु तड़ागकी तट. वाँके पालि. पिहित गुप्त. तत्थ तहां. छार भस्म. हसम वैभव. यह हसम शब्द देशीप्राकृतमें है. ताको उदाहरण. "हसम हय गाय देश आति"॥ यह दोहाको चरन पृथ्वीराजरासेमें महुब्बा खंडमें है. अरु और ठोरहु रासे में बहुत प्रयोग हैं अरु मुसलमान कहै हैं कि हमारे वैभवको नाम हशमत् है ताको यह भयो है, परन्तु यामें तकार नहीं है यातैं देशीप्राकृत ही मान्यों. मनुज मनुष्य. दहे जरे ॥३॥ इँहिइति ॥ दारुन भयंकर. सबिधि विधि सहित. उत्तर उत्तर दिशाके. हट्टा बनिकन के विक्रयको स्थान. चत्वर चुहट. चोक बाजार. सउध देशीप्राकृतमें सउध, सौध. लोकमें महल ॥ "सौधोऽस्त्रीराजसदन" मित्यमरः ॥ प्राकार तोंके कोट. निगम वेद ताकी. नीराजित आरती उतारे भये. चरन दूतन. फरमान लिख्यो हुकम ॥ ४ ॥ दिल्लियपति इति ॥ रिस रोससों. मेकलजा नर्मदा "रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यके" त्यमरः॥ नामनिज अपने नामको. तुरक मुसलमाननमें रूढ शब्द देशीप्राकृत है ॥ तहांके वासी ही तुरक

हाजरि समस्त हिंदुव तुरक जोन अवर दिस सुक्कल्यो॥
तुरकान तहर जालम जहर लोपि लहर काहुन झल्यो॥५॥

॥ दोहा ॥

काबल सूबा काल वस, सुनि अनिरुद्ध जरूर ॥
अब सेवन अंतर समुझि, बुल्लिय बुद्ध१९७।१हजूर ॥६॥
अहदी तब अवरंग४०।३के, अतिजव बुंदिय आय ॥
सिरधरि साहन बंदगी, चलहु कह्यो हित चाय ॥ ७ ॥
जाय सम्मुख फरमानकै, करि सलाम लिय झेलि ॥
उपज्यो चलन प्रपंच अब, देत हुकम को पेलि ॥ ८ ॥
सुनि कग्गर परिकर सबहि, मिलि इक्कत किय मंत ॥
स्वामि बाल सेवा कठिन, आलोचहु मतिअंत ॥ ९ ॥
इहिं अंतर अवरंग४०।३सुत, जेठो आलमसाह४०।३ ॥
बंदीगृहतैं कढिचल्यो, चिंति आगरा चाह ॥ १० ॥

(पज्झटिका)

हुव पुत्र पंच५अवरंग धाम, सुलतानमुहुम्मद४१।१प्रथम जाम ॥
सुत दूजो आलमसाह ४१।२ एह, सुत तीजो आजम ४०।३ पितु सनेह ॥ ११ ॥
सुत चोथो अकबर ४१।४ नामधार, हुव कामबख्स ४१।५ पंचम कुमार ॥
जेठसुत हैरसनकरि उदास, बंदीगृह डारे बिसम बास॥१२॥

थजत हैं ते यहां नहीं लैनें ॥ तहर मताप. जालम जुलम करिबेवारो. यह या-वनीभाषा के शब्द हैं. लहर या जहरके असर को झोला. काहु काहूसों ॥५॥ काबलसूवेति ॥ जरूर त्वरित. अंतर विक्षेप. बुध बुधसिंह ॥ ६ ॥ अहदीति ॥ साहन पातशाहनकी ॥ ७ ॥ जायइति ॥ पेलि टारि ॥ ८ ॥ सुनिइति ॥ इक्कत एकत्र. आलोचहु विचारहु. मतिअंत बुद्धिपर्यंत ॥ ९ ॥ इंहिंइति ॥ चाह इच्छा॥१०॥ हुवइति॥ जाम जन्म. एह यह. जो आगराको चल्यो सो॥ पितुसनेह पिताके स्नेहवारो ॥ ११ ॥ सुतइति ॥ यह स्पष्ट ॥ १२ ॥ सुलतानइति ॥

सुलतानमुहुम्मद४११मरियतत्थ,आलमबच्योसु४१२आयुहिसमत्थ
याकैहुं पुत्र हुव प्रथम च्यारि४, आयैं बय जुब्बन कैद डारि ॥१३॥
कैदहिमैं पाये पलित केस, अपमानित दीनहुसौं बिसेस ॥
बरसावधि पावैं दगल इक्क१, परि दुसह दहैं जूका रु लिक्क १४
नहिं वपनन्हान नहिं असन इष्ट, जूकान जनित सहियत अरिष्ट ॥
इकसमय दुक्ख अरजी कराय,जो महर नयो मिलि दगल जाय१५
अवरंग४०३हुकम पठयो अनेह, उलटा करि धारहु दगल एह ॥
इक समय मिल्यो सरदा बिसारि,तिंहिं छेदन छुरिका हित उचारि१६
पुनि कहिय साह भरि कोप भार, सिरसैं दै फोरहु नहिं हथ्यार ॥
इम कुपित साह सुत सीस आहि,इक समय सभासौं कहिय चाहि१७
जो मिलहिं हमारे हुकम आज, तो पावहि आजम४०३साह राज॥
जो मिलहिं खुदाके हुकम पाय, लहिहैं तो आलम साह आय १८
सुनतहि इम आजम कहिय एहु, बंदीगृह बासी सोहि देहु ॥
यह सुनत साहहिय बढि बिखाद, कोपारुन आजम प्रति जगाद१९
सुत जेष्ट ममायस धरत सीस, वह कैदी अरु तुम तखत ईस ॥
यह कहि बुलाय आलम उदास,निकस्यो तजि कारागृह निवास२०
करि गुसल बपन मंजुल कराय,अति दिव्य बसन धरि आम आय॥
लखि साह छिप्र हियसौं लपेटि,भुज दुवरगहिलीनौं सुजन भेटि२१

तत्थ तहां (कारागृहमेंही). डारि डारयो ॥ १३ ॥ कैदहिमैंइति ॥ पलित जरासूं स्वेत. जूका यूका. लोके जूँ. रु अरु. लिक्क लिक्षा. लोके लीक ॥ १४ ॥ नहिंइति ॥ वपन चौरकर्म . इष्ट चाह्यो . महर कृपा होयतो ॥ १५ ॥ अवरंगेति ॥ अनेह विना स्नेहसों. सरदा उष्णकालमें फल विशेष. विसरि भूलिकैं. जानिकैं तो वाकौं कौन देतो एसो पिताको कोप हो. छेदन फारिबेकौं. उचारि कही ॥ १६ ॥ पुनिइति ॥ हथ्यार शस्त्र. नहीं है ॥ १७ ॥ जोइति ॥ यह स्पष्ट ॥ १८ ॥ सुनितेति ॥ एह यह. विखाद खेद. जगाद कहतभयो. यह संस्कृत शुद्ध क्रियापद है ॥ १९ ॥ सुतजेष्टेति ॥ ममायस मेरो हुकम ॥ २० ॥ करीति ॥ गुसल स्नान. यह यावनी शब्द है. आम जामैं सब पहुंचैं ऐसी बडी

चिरकाल कंठ गदगद बढात, दुवघाँ हुव अश्रुन अधिक पात ॥
तहँ दियउ रीझि अवरंगसाह, अकबरपुर सूबा जुत उछाह ॥ २२॥
बारहहजार१२०००मनसुब लिखाय, दिय सीख आगरा हित बढाय
लहि सीख चलन मन करि विचार, द्रुत चढिग साह आलम कुमार
रेवा उलंघि अतिदल अमान, पुर आय अवंती दिय मिलान ॥
अग्गैं अवंति सूबा पधारि, कछुकाम पीर अर्चन उचारि ॥ २४ ॥
द्रुत कैद जोग वह रहिय सेस, अब करिय आय पूरन सुदेस ॥
खैरात बंटि बसु बिबिध नाम, क्रमि मग्ग अग्गरापुर जगाम ।२५।
नृप बिष्णुसिंह आमेर नाथ, निज बंस सुभट हरिसिंह साथ ॥
अवरंग हुकम जो लहि जरूर, हुव आय साह आलम हजूर।२६।

॥ दोहा ॥

अग्गैं इक अवरंगको, सीम समीप बिचारि ॥
बिष्णुसिंह नृपसौं हुकम, हुव मारन जटवारि ॥ २७ ॥
बिष्णुसिंह नृप सुभट निज, लिय हरिसिंह बुलाय ॥
किपउ बिदा जटवारि पर, संगर सेन पठाय ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

हरियसिंह कछवाह जाय जटवारि बिंटिलिय ॥
बहु जट्टन सिर कट्टि खनित खड्डन प्रविष्ट किय ॥
वह लंबापुर नाथ बंस खंगार संग साजि ॥
सेवन आलमसाह आय कूरम नरेस राजि ॥
दै दल मिलान जमुना पुलिन संचरि आम सलाम करि ॥

सभा तामैं. यहहु यावनी शब्द है ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ रेवाइति ॥ रेवा नर्मदा ताकों. पधारि पधारे हे तब ॥ २४ ॥ द्रुतकैदइति ॥ सुदेश वाही देशमें. खैरात पुण्यदान. यावनी. बसु द्रव्य. क्रमि चलि. अग्गर आगरा. जगाम जाचतभयो ॥ २५ ॥ नृपइति ॥ स्पष्ट ॥ २६ ॥ अग्गैंइति ॥ हुकम पदको अन्वय अवरंग पदसों है. जटवार जाटनको देश ॥ २७ ॥ २८ ॥ हरीति ॥ खनित खोदे-

हरिसिंह सहित ठट्ठ मिसल रचि अंजलि आदाब धरि।२९।

॥ दोहा ॥

हरिसिंहहिं आलम दये, रीभि खिलत१ हयराय२ ॥
कूरम पतिके कथन करि, जट्ट कदन हित लाय ॥ ३० ॥
इम आलम कढि कैदसन, अकवरपुर द्रुत आय ॥
कूरम निज तावीन करि, वासर कछुक विहाय ॥ ३१ ॥
यह उदंत भट सचिव सुनि, नृपहिं अलप वय जानि ॥
अरु दक्खिन अवरंगको, सेवन दूर प्रमानि ॥ ३२ ॥
आलमप्रति पुरआगरा, पठई अरज लिखाय ॥
लेहु हमहिं कहि साहसौं, निजसेवन मन लाय ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे प्रत्तोदयपुरदानबुधसिंहबुन्द्यागमन१, बुधसिंहाह्वानावरंगालसदुर्जनप्रेषण२, अवरंगपुत्रपञ्चकालमशाहकारानिवसन ३, कारामुक्तालमशाहाकबरपुराधिकारप्रापण ४, यवनेन्द्रसूनुनिदेशामेरराजविष्णुसिंहजट्टजनपदविजयनं चतुर्थो मयूखः॥४॥

आदितो द्विचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४२ ॥

हुए. खञ्जन खाडनमें. पुलिन तट ॥ २९ ॥ हरिसिंहेति ॥ आलम आलम शाहजादानें. खिलत सिरुपाव ॥ ३० ॥ इमइति ॥ वासर दिन ॥ ३१ ॥ यहइति ॥ उदंत वृत्तान्त ॥ ३२ ॥ आलमइति ॥ निजसेवन तुम्हारे सेवनसें ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह का उदयपुर में त्याग देकर बुंदी में आना १ बुधसिंह के बुलाने को अहदी भेजना २ औरंगजेब के पांच पुत्रों का और आलमशाह के कैद में रहने का वर्णन ३ आलमशाह का कैद से छूटकर आगरे के सूबे पर जाना ४ शाहजादे की आज्ञानुसार आमेर के राजा विष्णुसिंह का जाटों के देश को विजय करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बियालीस २४२ मयूख हुए ॥

॥ मुक्तादाम ॥

यहै बिनती सुनि आलम तत्त, पिताप्रति दै अरजी लिखि पत्त ॥
इहाँ नृप कूरम ज्यों भटभाव, रहैं मम संगहि बुंदिय राव ॥ १ ॥
यहै सुनि साह पठाय निदेस, रहो तुम संगहि बुद्धनरेस ॥
दयो तब आलम पत्त पठाय, स्वसंग बलापति बुद्ध बुलाय ॥२॥
भयो दल बंचि समस्तन मोद, बढ्यो लखि लग्ग प्रयान बिनोद ॥
दये बहु दान बिधानन रीति, प्रवासिन हेय तजे नय रीति ॥३॥
मनी कुलदेविय पूजन मोद, नमे हरि पायन लै चरनोद ॥
किये सबिधान प्रवासिक कर्म, लखे सुभ साकुन लग्न सधर्म॥४॥
किते भट मंत्रिन आयस अप्पि, इहाँ गृह राज निबाहन थप्पि ॥
दये तिन्ह ग्राम पटा गज बाजि, दयो भुजभार बिचार बिराजि ॥५॥
सजी तब बुद्ध बलापति सेन, दिपैं भट तारक अप्प द्विजेन ॥
रहे निज आलय सोदर जोध, चल्यो दल होत प्रभंजन रोध ॥ ६ ॥
खुले उडि कुंभिन कंध निसान, तिरोहित व्है रविरेणुबितान ॥
हरोलन हाक नकीबन छोह, बडे गज ऐंचत लंगर लोह ॥ ७ ॥
रही झुकि पीत पताकन पंति, मरातब माहिय भासिग भंति ॥

मुक्तादाम॥ यहइति॥ तत्त तहां. पत्त पत्र ॥ १ ॥ यहैइति ॥ निदेश हुकम. स्वसंग अपनें संग. बलापति बुंदी को पर्वत. जो पारियात्र अचल ताकों लोकमें बला कहै हैं ॥ २ ॥ भयोइति ॥ दल पत्र. बंचि पढिकैं. प्रवासिनहेय प्रवासी जो प्रस्थान करिवेवारे तिनके छोरिवे योग्य तीनरात्रि पहिले चौरकर्म. रात्रि पहिले दुग्ध. इनसें हेय त्याज्य होत ॥३॥ मनीइति ॥ मनी मनाई. चरनोद चरनको उद जल ॥ ४ ॥ कितेइति ॥ आयस हुकम. अप्पि देकैं. तिन तिनकों. बिराजि शोभित व्है हैं ॥ ५ ॥ सजीइति ॥ तारक नक्षत्र. द्विजेन द्विजनको इन स्वामी चंद्र. निजआलय अपने घर. प्रभंजन पवन ताको. रोध रुकनों ॥६॥ खुलेइति ॥ कुंभिन कुंभी हस्ती. तिनके. तिरोहित गुप्त ॥७॥ रहीति ॥ मरातिब माहिय, ए दोऊ बादशाहनें अपनी कृपा जनायवेकों दीनें ऐसे चिन्ह विशेष तिनमें मरातिब छोटे गडवाके आकार. अरु माही मत्स्यी के आकार. अकब्बर

अकब्बरपुत्र दयो तहि काज, बज्यो वह राजत हुंदुभिराज ॥८॥
मलंगत फाँद तुरंगन जूह, चले उडि नोवति नाद दुरूह ॥
चल्यो दरकुंचन यों चहुवान, दये मथुरापुर जाय मिलान ॥ ९ ॥
दई सतइक्क सअष्टक१०८गाय, समानहि हाटक हून१०८मिलाय॥
बिधीरित यों बहुधा करि दत्त, अकब्बरपत्तन आय प्रपत्त ॥१०॥
मिले क्रम आलम साह हजूर, कियो सनमान कह्यो हित पूर ॥
हन्यों हम कृष्ण अवंतिय जेन, रह्यो तुमरो हममैं हक तेन॥११॥
करे पलटा हमहू तसमात, लहो हमकों भजि रिक्खिन बात ॥
करी सुनि यों अरजी नरनाह, भली करिहै सब ज्यानपनाह ॥१२॥

रनाह१पनाह२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

परस्पर प्रीति उभै२सनमान, रहे इम कूरम औ चहुवान ॥
उहाँ दिन वित्तत के अवरंग, सुनी सुत आलम कित्ति अभंग १३
इते विच सोर सुन्यो मुलतान, बढे सिख लुप्पत साहन आन ॥
तबैं सुत आलमको जवनेस, दई मुलतान सम्हारि सु पेस ॥१४॥
यहै सुनि आयस आलम साह, सजे दल हिंदुव मिच्छ सिपाह ॥
भयो बिधिसों चतुरंग पयान, भये दरकुंच धरा मुलतान ॥ १५ ॥
कुविग्रह मेटि रच्यो नय राज, भजे सिख तित्तिरि ज्यों डर बाज॥
दफैकरि दंग प्रजा दुख दंद, रहै इम आलम तत्त अनंद ॥ १६ ॥
रहै दुवरूपनसों अति प्रीति, सबै दलकों सुख आदर नीति ॥

र लूप तूर्णीयो करता है. पुत्र पहिले राय सुजान को दये हे. राजत रजत रूपा तत्संबंधी ॥८॥ ९ ॥ समान गायन के प्रमानहि. बिधीरित बिधिसें कह्यो। दत्त दान. प्रपत्त प्राप्तभयो ॥ १० ॥ मिलेइति ॥ कृष्ण कृष्णसिंह कुमर तुम्हारो पितामह. अवंतिय उज्जैनमें. जन आकारनकों ॥ ११ ॥ करेइति ॥ तात मतलब. पनाह रक्षक. यावनी ॥ १२ ॥ परस्परेति ॥ उभै उभय. कित्ति कीर्ति॥१३॥ इतेइति ॥ मुलतान पंजाबको देश नाम हो. सिख यां देश के जमीदार. सु सो. पेस आधीन ॥ १४ ॥ यहैइति ॥ मिच्छ म्लेच्छ. ज्यों वे इनकों हिंदू कहै त्यों ए यामें इनकों म्लेच्छ कहे ॥ १५ ॥ कुविग्रहेति ॥ दफै नाश. यावनी ॥ १६ ॥ र-

कोउ दिन इक नदी जल कोलि, चले चढि नाव प्रवाहन पोलि १७
रजू दुव२भूपति सेवन लार, सजैं जलकुक्कुट वेधि सिकार ॥
कही तहँ कूरमसौं सुतसाह, करो हमसौं दुहिता निज ब्याह १८
कही तब कूरम यौं करजोरि, वनैं दुहिता जब होय बहोरि ॥
सुता इक१ आहि सु तो करि नेम, दई बुधसिंहहिं पुव्वक प्रेम १९
कही बुधसिंहहिं आलम तत्त, करी तुमसौं इन ब्याहन बत्त ॥
कही तब बुन्दिय राव सहास, कही इन जो सु भई कथ तास २०
यहै सुनि जंपिग आलमसाह, ततो हमही करिहैं तव ब्याह ॥
करी सुनि यौं बुधसिंह सलाम, कह्यो निज आयस है सिरकाम २१
यहै सक चोवन सत्रह१७५४साल, नई कथ ब्याह बनीवसि काल
भई वय द्वादस हायन१२शुद्ध, सजैं खुरली नय साधन सुद्ध २२
दयो लखि बुद्धहिं वीर सिपाह, परग्गन टोंक सु आलमसाह ॥
कही तब यौं करि बुद्ध सलाम, लह्यो पुर टोंक वढ्यो मम नाम २३
परंतु कह्यो हमरो इक सेस, ततो करिये पुरपट्टनि पेस ॥
गई यह पट्टनि पूरवकाल, वढ्यो जब जट्टन वैर कराल ॥२४॥
सुनी अवरंगहु खून पुकार, कियो सुत आजमको सुत त्यार ॥
दये सँग बुन्दियतैं अनिरुद्ध, वन्यो समयो गुनगोरि प्रबुद्ध ॥२५॥
रहे तिहिं कारन द्वादिन गेह, न कावलपैं पहुँचे तियनेह ॥

[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] ॥ १८ ॥ [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible] ॥ २० ॥ [illegible] ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ २२ ॥ [illegible] ॥ २३ ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]

भई तुरसी इहिँ कारन आय, समा सर वेद रु सत्रह१७४५पाय२६
लई तब पट्टनि साह उतारि, दई नृप रामहिँ काम बिचारि ॥
छुटी तबकी अब सेवन पाय, दई इन आयस साह मँगाय।२७।
जर्यो निज टौंक परग्गन राज, बच्यो मँहँदीपुर इक्क१ अकाज
लरे मँहँदीपुरके कछवाह, तजी सुरतान पिनातिन राह ॥२८॥
भई मँहँदीपुर तोपन मार, लये सब जीति कियो गढ छार ॥
रजू इम टौंक जिला करवाय, रहैं मुलतान सु बुंदियराय।२९।

॥ दोहा ॥

दुव२भूपनकौं बरस इक१, गयो रहत मुलतान ॥
सेवत आजमसाहकौं, इम कूरम चहुवान ॥ ३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे यवनेन्द्रकुमारालमसेवाबुधसिंहगमन१ औरंगजेबाज्ञानुसृतिकुमारालमसुल्तानाशिक्खविजयन२ आलमशाहस्य टौंकपट्टनिप्रान्तद्वयबुधसिंहप्रदानवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥
आदितस्त्रिचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४३ ॥

बनी. समा वर्ष. "हायनोऽस्त्री समाब्दे" त्यमरः ॥ सर ५ पंच. वेद ४ च्यार. रु अरु. सत्रह १७ सप्तदश. सत्रहसै पैंतालीस १७४५ यह अर्थ ॥ २६ ॥ लईइति॥ रामसिंह कोटा के राजाको. इन आलमशाहनें. आयस आदेश. यावनी मैं. जर्योइति ॥ महदीपुर महँदवास नामक नगर. सुरतानपिनातिन सुरतानके पिनाती वंश के सुरतानोत कछवाहे तिननें. राह रीति ॥ २८ ॥ भईइति ॥ रजू अधीन. यावनी ॥ २९ ॥ दुव इति॥ दुव बुंदी १आमेर २ के दोऊ ॥ ३० ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह का शाहजादे आलम की सेवा में जाना १ औरंगजेब की आज्ञा के अनुसार शाहजादे आलम का मुलतान के शिक्खों को विजय करना २ आलमशाह का बुधसिंह को टौंक और पाटण दिलाने के वर्णन का पांचवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ और आदि से दो सौ तियालीस मयूख हुए ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

इक्क१नबाब अमीरखाँ, अग्गैं कहि अवरंग ॥
थप्यो दै भुजभार निज, सूबा काबल संग ॥ १ ॥

॥ तोटकम् ॥

इतनैं वह खान अमीर मर्यो, अवरंग यहै सुनि सोक पर्यो ॥
कहि साह उमीर रह्यो जितनैं, हम भोग लहे अब दुक्ख घनैं२
लहि काबल साह यहै समयो.उत दिल्लिय राज सु दब्बि लयो
तब साह हिये तस आन बसी, धरकाबल आलमकौं बखसी ३
इनहू मुलतान जमाय जिला, लिय काबल काम कमान चिला
ऋतु सारद बारद नष्ट भये, सरिता समि पद्धति पंक गये ॥४॥
सर बान तुरंगम इक्क१७५५समा, सुत साह चढ्यो इसमास अमा
अति आरव भेरिनके गरजैं, पबिपात कि पब्बय दै दरजैं॥५॥
खुलि दंड पताकन पंति लसी,रसना जनु कालियकी निकसी
बढि कोसन फोज हरोल चली, बहु जंग उछाह सिपाह बली६
चहुवान रु कूरम संग चलैं, बरबीर पठान गुमान झलैं ॥
मनमैं बल मोद रजू रनमैं, उरझात सदागति सेलनमैं ॥ ७ ॥
धनु पट्टिस खेटक खग्ग कसैं, बपुद्दान हिये तृनमान बसैं ॥
इम हिंदुव म्लिच्छ चले रनकौं, छबि निंदत भद्दवके घनकौं ।८।

दोहा ॥ इक्कइति ॥ अग्गैं पहिले समयमें ॥ १ ॥ इतनें इति ॥ इतनैं इतने अंतरमैं. कहि कह्यो ॥२॥ लहिइति॥ आन रचा. धर धरा. आलम आलमशाह (अपनों बडो पुत्र)ताकों. बखसी दई ॥ ३ ॥ इनइति ॥ काम कार्य. सोही कमान धनुष. ताको चिल्ला लोके पिनच. बारद मेघ. यहां बार शब्द हलंत है ताकों प्राकृतसों सस्वर कियो. समि सर्मों समित भई. पद्धति मार्ग. तिनके ॥ "सरणी पद्धती पथे"त्यमरः ॥ ४ ॥ सरइति सर५. बान६. तुरंग७. समा वर्ष. इसमास लोके आसोज मास. अम अमावास्या. आरव शब्द. पबि वज्र. ताके पात परिवेसों, कि किधों. दरजैं दरारैं ॥ ५ ॥ खुलि इति ॥ यहस्पष्ट ॥ ६ ॥ चहुवानेति ॥ गुमान गर्व. सदागति पवन ॥ ७ ॥ धनुइति ॥ पट्टिस कटा-

सननंकिय प्रोथन वात वहैं, हननंकिय हींस दिशीस दहैं ॥
रननंकिय कोच करी करकैं, फननंकिय नाग फटा लरकैं ॥९॥
गननंकिय गैंन धरा धमकैं, छननंकिय नेउर हैं छमकैं ॥
झननंकिय पक्खर भार भिरैं, खननंकिय नालन आगि खिरैं ॥१०॥
ठननंकिय कुंभिन घंट घसैं, भननंकिय भेरिय हूर हसैं ॥
वजि आरव आरव कूह चली, बहुभाँति अनीक रमैं खुरली ॥११॥
भट केक त्रिभागन दाव अरैं, कमनैत विहंगन वेध करैं ॥
झपटाय तुरंगन वाह वचैं, असि मग्ग उदग्ग किते विरचैं ॥१२॥
भट केक बँदूकन लच्छय लहैं, बहुवार कटार गदा निवहैं ॥
करटीन नवीन घटा बहुधा, बरछीन अनीन अकास सुधा ॥१३॥
खुरतालन खेह वितान जुर्यो, नद तालन पंकिल नीर घुर्यो ॥
हुलसे इम कावलकी धरपैं, दल आलमके जय संगरपैं ॥१४॥

॥ षट्पात् ॥

अटक सरित उलंघि कटक आलम बढि धायो ॥
कावलपति प्रति पत्र प्रथम लिखवाय पठायो ॥
मरनहिं खान उमीर छिद्र तुम तकत निहार्यो ॥

र. खेटक ढाल. त्राग त्याग ॥ ८ ॥ सननंकियइति ॥ सननंकिय यह घोर के रवा-सको अनुकरण है ॥ ऐसे ओरहू लिखे ते अपनें अपनें शब्दन के अनुकरन जा-नों. प्रोथ हयनासा. तिनमें. वात पवन. हींस हयशब्द दिगीस दिग्पाल. कोच दवाय. तिनकी. फटा फन ॥ ९ ॥ गननंकिय इति ॥ गैंन गगन. हैं हय तिन के. नाल खुरनाल. तिनकरि ॥१०॥ ठननंकियइति॥ आरव वाद्यविशेष. आरव शब्द. ताकी. कूह कोलाहलता ॥ ११ ॥ भटइति ॥ केक कितेक. त्रिभागे भा-गे. तिनकरि. दाव शस्त्रके वार. तिनकों. असि मग्ग नाके. उदग्ग उदग्र. उच्च-कोंन हैं अग्रभाग जिनमें ऐसे. यह मार्गको विशेषन है ॥ १२ ॥ भटइति ॥ ल-च्छय लक्ष्य. करटी हस्ती. तिनकी घटा समुदाय. अकास आकाश. सुधा सुधा. सर्वो यह शेष ॥ १३ ॥ खुरतालइति ॥ पंकिल पंकवारो. दल कटक. संगर यु-द्ध. तामें ॥ १४ ॥ षट्पदी ॥ अटकइति॥ अटक अटक नामक. पहूली पृथ्वी. उ-

दिल्लिय थानाँ खंडि अमल अप्पन उपचार्‌यो ॥
अब छोरि पहुमि अवरंगको करन जोरि लग्गहु चरन ॥
दिल्लीस सेन जानहु दुसह इक इक्क लक्खन लरन ॥ १५ ॥
कावलपति दल वंचि समय बलवान सोधि मति ॥
रहि अप्पन निज गेह सेन पठयो आलम प्रति ॥
आय सेन अति वेग भिरन तुरकन मन वढ्ढे ॥
लटाबंध अभिधान अद्रि घाँटा रुकि ठढ्ढे ॥
इत उमगि साह आलम चमू सीमा संगर सीम हुव ॥
तिन दिनन भाल दिल्लीसकें बिधि मंड्यो जयपत्त ध्रुव ।१६।
इत तोपन जुरि पंति इक्क१तोपन उत रक्खैं ॥
इत परिमित आहार इक्क१वक्कर उत चक्खैं ॥
इत लाखन वहुरंग उत सु अयुत१००००हि इकरंगी ॥
इत बल बुद्धि अपार उत सु वपुजोर अभंगी ॥
दिल्लिय सुहाग इत भार परि उत गर लग्गी गज्जनिय ॥
दुवदलन जुद्ध जालम जुरिग परिग सोर पात कि पविय१७
गिरिन चूर हयखुरन मग्ग उव्वट धर पद्धर ॥
खुंदि कमठ खुप्परिय उरग फनमाल थरत्थर ॥
दिक्‌पालन उर संक कंक गिद्धन पर बज्जैं ॥
गहकि चिल्ल गोमायु भार भीरुन गन भज्जैं ॥

रन लरिबेवारे ॥ १५ ॥ कावलइति ॥ दल पत्र. अभिधान नाम. अद्रि पर्वत ताको. सीमा अपनी अमलदारी की. तहां. संगर युद्ध. ताको. भाल ललाट तापैं. पत्त पत्र. ध्रुव ध्रुव निश्चय ॥ १६ ॥ इतइति॥ इत दिल्लीकी सेनाकी तरफ. उत कावल की सेना की तरफ. परिमित अल्प. अयुत १०००० दशहजार. सुहाग सौभाग्य. गजनविय यह पहले वा देशकी राजधानीको नगर. जालम जुलम करिबेवारो. यावनी शब्द. पात परिबेसों. कि किधों. पवि वज्र. ताके पविको अन्वय पात शब्दसों है ॥ १७ ॥ गिरन इति ॥ उव्वट विना मार्ग की. धर धरा तामैं. पद्धर सीधे. यह मार्ग को विशेषन है. खुंदि मर्दित भई. उरग सर्प. यहां सामान्य नाग नामक कह्यो. परन्तु फनमाल के योग से शेषही ले

दुव दलन बीर बत्थन बिलग्गि मनहु मित्र चिरकाल मिलि॥
विधि च्यारि४हेति उड्डत बिसम धारन धार प्रहार किलि१८
बाजि आयुध रन रीठ फूटि हड्डुन पल छुट्टैं॥
कवच खंड असि करकि तरकि अंत्रावलि तुट्टैं॥
सरन सोक सननंकि परत झरि दंड पताकन॥
झुकत बीर घनघाय मनहुँ पामर मद छाकन॥
इम बिरचि मुक्त आयुध कलह अब अमुक्त गहि छोरि हय॥
करि हल्ल दुदल गिरिसिर चढिग जुरि जुरि जंपत जयति जय१९

॥ दोहा ॥

बुंदिय पति आमेर पति, ठट्ठे हय असवार॥
आलम गज आरुहि रह्यो, उत्तरि अवर अपार॥२०॥
उत इततैं नहिं बढिसके, इत उततैं नहिं कम्म॥
इक्क१पहर वह गिरि रह्यो, बाजीगरको दम्म॥ २१ ॥

॥ षट्पात्॥

तव दुवरदिस तजि हयन चढिग गिरि सिखर महाभट॥
कहि करीम रब तुरक होत हरि हर हिन्दुन रट॥
बुद्ध नृपतिकों बंधु राजसिंहह कुल जायो॥
नाम सु अनुपमसिंह तवहि मधुसुवन चलायो॥
दससहँस१००००सेन निज संग करि नृप पिल्ल्यो गिरि त्रिकट पर॥
मिलि वत्थ लुत्थि कटि कटि परत मनहुँ बिरबंधव बंटि घर॥२२॥

नों. थरत्थर यह धूजिवेको अनुकरन है. कंक पक्षी विशेष लोके करगस. चिल्ल लोके चीलह. गोमायु लोके स्याल. भीरु कातर तिनके. यान समूह. विधिच्यारि च्यार ४ विधिके. हेति शस्त्र ॥ १८ ॥ धजेति ॥ रीठ घने जोरको लगवो. झोक शब्द विशेष. कलह युद्ध. दुदल दोऊ दल ॥ १९ ॥ २० ॥ उतइति ॥ दम्म द्रम्म. लोके रुपय्या ॥ २१ ॥ षट्पदी ॥ तवेति ॥ करीम और रब ए दोऊ यावनीमें परमेश्वर के नाम हैं. बंधुवर्ग लोके भाई कुटुंबी. राजसिंहह राजसिंह. कुमर गोपीनाथ को पुत्र ताके हकार प्राकृतमें सर्व विभक्ति के स्थान में होत है. यहां प

॥ दोहा ॥

बुंदिय दल्ल आमैर दल, पब्बय चढिग रिसाय ॥
कलह भिरे भट काबली, उततैं बढि अतिकाय ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

पहर इक्क१दिन सेस बहुरि आलंम दल पिल्ल्यो ॥
दुदिस छोह छकि लोह बीर बत्थन बल ठिल्ल्यो ॥
उडत फुट्टि नागोद जंत जावक सम लोहित ॥
धपि धावत बिनु मत्थ होत अच्छरिगन मोहित ॥
बाहुल सिरस्क कंकट कटत फटत मुंह भेजन भरकि ॥
खेलखिलत मिलत जुग्गिनि जटिय किलकिलात कालिय करकि
घटिय दोय२दिन रहत जोर दिल्लिय दल जित्त्यो ॥
कट्यो कटक काबलिय बिसम प्रलयानल बित्त्यो ॥

छी के अर्थमें जानिये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति॥ यह स्पष्ट ॥ २३ ॥ षट्पात्॥ पहरइति ॥ बल सेना. नागोद उदर की सिलह "नागोदमुदरत्राण" मितिहैमः॥ लोहित रुधिर. लोके लोही. बाहुल हाथकी सिलह. लोके दस्ताना "बाहुत्राणं बाहुलं स्या"द्धैमः ॥ सिरस्क मस्तक की सिलह. लोके टोप. "शिरस्कं शीर्षकं च त" द्धैमः ॥ कंकट कवच "सन्नाहो वर्म कंकटः" इतिहैमः॥ जटीय जटी(शिव) ॥ २४ ॥ घटिय दोय इति ॥ कावलिय कावल संबंधी. यहां कांबली प्रयोग होय तो षट्पदी को लच्छन बनैं नहीं क्योंकि षट्पदी के पूर्व में च्यार चरन हैं तिनमें एक एक चरन प्रति पहिले एक एक षट्कलगन. पीछे ४ चतुष्कलगन. पीछे एक द्विकलगन. ऐसे छै ६ गन होत हैं. तिनमें छठी सप्तमी दशमी ग्यारहीं बारहीं चौदवीं पंद्रवीं अठारवीं उन्नीसवीं बाईसवीं तेईसवीं मात्रा मिलकर दीर्घ होय नहीं ऐसे चौवीस २४ मात्रा के मिलकर दीर्घ होय नहीं. ऐसे चोवीस मात्रा के च्यारि४ चरन होय. पीछे सामान्य अठाईस मात्रा के दोय चरन उल्लालय के होय तिनमें गन का नियम नहीं. तथाहि "षट्कलमादौ तदनु चतुस्तुरगं परिरुन्ततु ॥ शेषे द्विकलं कलय. चतुष्पदमेवं संचिनु॥ छन्दः षट्पदनाम भवति फणिनायकगीतं ॥ रुद्रे ११ विरतिमुपैति नृपतिसुखकरमुपनीतम्॥उल्लालयुगलमन्ते भवेदष्टाविंशतिकलमितं॥शृणु पंचदशे विरतिस्थितं पठितं पंडितजनहितम् ॥" इति नागराजानुभवार्णिक्षूपयो. यह यहां खिल्लदीनों सो सर्वत्र जानिये. प्राकृत के प्राचीन कविननैं ऐसे षट्पदी, दोहा-

गोपीनाथ वतंस परयो अनुपम मधुनंदन ॥
माधवहर गुम्मान दोय२हहुँ हनि दुज्जन ॥
इत्यादि बहुत आलम चमू पब्बयपर कटि कटि परिय ॥
करि तत्थ बहुरि अप्पन अमल काबल दल हनि विजय किय२५
इम आलम लहि विजय सीम काबल करि पद्धर ॥
बिष्णुसिंह बुधसिंह सहित रहि तँहँ बहु बच्छर ॥
सुनि सुतको जय सुजस साह अवरँग सुख किन्नौं ॥
नाम बहादुरसाह रीझि आलमकँहँ दिन्नौं ॥
इम जीति बहादुरसाह वह रमि काबल सूबा रह्यो ॥

दिक छंदन के लच्छन किये ते बोध बिनबनायेतैं अशुद्ध जानिये॥ तथाहि "अगद जिमअंकुरयो॥" तथाहि "सूर मरन मंगली" ॥तथाहि "सुतसोमेश्वर बडो" इत्यादि पृथ्वीराजरासे में बहुत हैं॥ तथा "बचै न बडी सबीलहू॥" तथा "लोयन बडी बलाय" तथा "गांठैं भरी मिठांस" इत्यादि बिहारीसतसई में. ऐसे बहुग्रंथन में है ॥ अरु षट्पदी दोहा को शुद्ध लच्छन यह है सो जानिये ॥ SSS. S. SI.IS. S. SSS. S. ॥ आदि में षट्कल ताके तेरह १३ भेद ॥ पुनि द्विरकल ताके दोय २ भेद. पुनि त्रिकल ताके तीन ३ भेद. पुनि त्रिरकल ताके तीन३ भेद. पुनि द्वि २ कल ताके दोय २ भेद. पुनि षट् ६ कल ताके तेरह १३ भेद. पुनि द्विरकल ताके दोय भेद. ऐसे एक १ चरनके भेद भये. शेष तीन चरन भी याही प्रकार गिनिये ॥ अरु अंत में उल्लालय छंद के द्वै चरन होवैं S. SSS. S. S. I. S. SSS. S. S. I. S. ॥ ऐसे षट्पदी छंद को शुद्ध लच्छन जानिये ॥ दोहा यथा ॥ SSS. S. S. I. S. SSS. S. S. I. आदि षट्कल. पुनि द्विकल. पुनि द्विकल. पुनि लहुनेमिक. पुनि द्विकल. षट्कल. पुनि द्विकल. पुनि गुरु. लहु नेमिक॥ ऐसे दोहा के एक चरन को क्रम॥तदानुकारही द्वितीय २ चरन को जानिये ॥ प्रलयानल प्रलय को सो अनल अग्नि. वा युद्धमें भयो हो सो. गोपीनाथवतंस गोपीनाथ के वंश को वतंस शिरको भूषण विशेष॥ "वतंसः शिरसः स्रजी" तिहैम:॥ माधवहर माधववंशी. माधवसिंह कुमर गोपीनाथ को छोटो भाई. ताके वंश को गुमान नामक. अनुपमसिंह अरु गुम्मानसिंह ए द्वै हाडे चहुवानवा लराईमें. दुज्जन शत्रुओंको. हनि मारिकैं परे. इत्यादि इनको आदि लेकैं अवरहु यह अर्थ ॥२४॥ पब्बियइति॥ यह स्पष्ट ॥ २५ ॥ इमइति ॥ लहि पाय. बच्छर वत्सर वर्ष. आलम आलम

चहुवान बहुरि कूरम दुहूँ प्रेम परस्पर निब्बहृयो ॥ २६ ॥
खट रु पंच हय इक्क१७५६साल आगम सक बिक्रम ॥
झुकि जुब्बन कछु झलक बुद्ध भूपति बय उत्तम ॥
बुंदियतैं बुलवाय अप्प अंतहपुर लिन्नौं ॥
साहबहादुर संग जंग जित्तन जस किन्नौं ॥
मुलतान सुता सगपन भयो तबतैं नृप आमैरपति ॥
बुधसिंह हिंतु मंडत बिनय गिनतसिद्ध जामात गति॥२७॥

(दोहा)

खरव कबंध सुताहु यह, व्याहयो पूरब काल ॥
संतति त्रिक३ताकै भयो, ढुंढाहर धरपाल ॥ २८ ॥
पुब्ब प्रसव पुत्रिय प्रकटि, नाम सु अमरकुमारि ॥
जयसिंह२सु दूजे२प्रसव, तीजे बिजय३बिचारि ॥ २९ ॥
कन्या अरु पट्टप कुमर, अंतर हायन तीन३॥
नृप आयस दोऊ२रहत, पुरआमैर प्रबीन ॥ ३० ॥
बिजयसिंह लघुपुत्त अरु, कछु पातरिगन संग ॥
इम काबल आमैरपति, रहत बुद्ध रस रंग ॥ ३१ ॥

शाहकों. ॥ २६ ॥ खटइति ॥ हय७ सस. लब्रहमैं छप्पन १७५६ के सालके.सक विक्रम राज के सकमैं ॥ या ग्रंथमैं सर्वत्र स्थल विक्रमादित्यको ही शक राख्यो है शालिवाहनको शक नहीं राख्यो॥ अप्प अपनैं. अंतहपुर जनाना. सगपन संबंध. हिंतु सों. सिद्धजामाता अबहि अपनीं पुत्री बुधसिंह कों विवाही नांहीं तथापि जैसे विवाह किये पीछै गिनैं तैसैं ॥ २७ ॥ दोहा ॥ खरव इति ॥ संतति संतान ताको. त्रिक ३ त्रय ढुंढाहर अपनों देश ताकी. धर धरा. ताके पाल पालक. ये संतान. अथवा ढुंढाहर धरा को पालक राजा विष्णुसिंह तासों भये यह अर्थ करियें ॥ २८ ॥ पुब्ब प्रसव इति ॥ पुब्ब पहिलें. प्रसव प्रसूति काल मैं. विजय विजयसिंह नामक ॥ २९ ॥ कन्याइति ॥ कन्या के अरु पट्टप ताके पाटवी. बडो कुमर जयसिंह ताके. हायन वर्ष. लुप्त पदीक. कन्या सों तीन वर्ष पीछै जयसिंह भयो यह अर्थ. नृप अपनों पिता. ताके. आयस हुकम सों. दोऊ कन्या और बडो कुमर॥ ३० ॥ विजयसिंहेति ॥ बुद्ध बुधसिंह सों. रसरंग अनुकूल ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे काबलाधिकारकुमारालमायत्तीभवन १, काबलामीरसेनाविजयनहत्वालमशाहार्थयवनेन्द्रप्रसादबहादुरशाहनामप्रापणं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितश्चतुश्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः॥ २४४ ॥

(षट्पात्)

प्रीति स्वसुर जामात साल जामिप मंडत अति॥
गृहविधि दुव अवनीस जात आवत डेरन प्रति॥
कूरम पतिके संग पान आसव नृप लग्गो॥
नच्चन वादन गान मान तानन मन पग्गो॥
जिनदिनन पातसाहन सभा जात न सायुध इक्क१जन ॥
लैजात सबहि केवल फलक बिनु बुंदिय हिंदुव जवन १
अग्गैं अकबर वेर राव सुरजन यह रक्खी ॥
कसि कटार इहिहेतु रहैं बुधसिंह समक्खी ॥
वसु सायक हय इंदु१७५८जेठ ग्रीखम रन रत्तो ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में काबल का सूबा शाहजादे आलम के आधीन होना १ काबल के अमीर की सेना से विजय पाने के कारण आलमशाह को बादशाह की ओर से बहादुरशाह नाम पाने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चवालीस २४४ मयूख हुए ॥

षट्पात् ॥ प्रीतिइति ॥ स्वसुर विष्णुसिंह. जामात बुधसिंह. साल शालक. लोके साला. (विजयसिंह). जामिप जामि भगिनी ताको पति बुधसिंह. लोके बहिनोई. "जामिस्तु भगिनी स्वसे" तिहैमः ॥ पग्गो आसक्त भयो. सायुध आयुध सहित. फलक ढाल "फलकोस्त्री फलं चर्मेत्यमरः" बिनुबुंदिय यहां लच्छन लच्छनासों बुंदी के राजा बिना यह अर्थ करनों॥१॥ अग्गैं. इति ॥ वेर समय. यह एक आयुध जाबे की. हेतु कारन. ताकरि. समक्खी समक्ष. बादशाह में स्वमक्ष. वसु ८ अष्ट. सायक ५ पंच. हय ७ सप्त. इन्दु १ एक. सम्वत् सै अट्ठावन१७५८के साल. जेठ ज्येष्ठमास. ग्रीखम ग्रीष्म ऋ

साह बहादुर धाम आम अवसर नृप पत्तो ॥
जवनिका द्वार लंघे जुगल२तीजे द्वार समीप भुव ॥
पहुँचत नरेस बुधसिंहप्रति जवन इक्क१भटभेर हुव ॥ २॥
वहै जवन अति दर्प्प साहआलमको किंकर ॥
सहसा भिरन प्रसंग बक्यो अप्रिय कुबाद पर ॥
सुनि कुबैन संभरिय कुप्पि मारिय कट्टारिय ॥
कालखंज हिय चक्खि अधप पहुँची अनियारिय ॥
रीढक्क बिदारि निकसी चुवत मनहुँ बिज्जु मानिक बमत॥
कै तिय सहीय परकीयको बातायन कर जावरत ॥ ३ ॥
पट बेणुक्क प्राकार अयुत१००००हत्थन चतुरायत ॥
सात फेर संपुटित चित्र तोरन बनि चायत ॥
कृत बिछाति कुंकुमिय नीर जलजंत्रन नच्चैं ॥
उडि उसीर आमोद राग गायक बहु रच्चैं ॥

तुमैं. धाम स्थान. आम बडो दरीखांनां ताके.अवसर समय.नृप बुधसिंह.पत्तो प्राप्तभयो.जवनिका लोके कनात.तथा सिरायचा.ताके.युगल२द्वै॥२॥वहैइति॥ दर्प अभिमान.सहसा अचानक.कुवाद खोटे वाद मैं.पर तत्पर.संभरिय संभरी बुधसिंह तानैं. राजा माणिक्यराज१३४ चहुवाननैं बहुत वर्ष पहिले संभर नामक नगर जहां लोन की खान है तहां राज्य कियो हो यातैं वाके वंश के चहुवान संभर तथा संभरी तथा संभरीक कहे जाते हैं. कालखंज कलेजा. हिय हृदय. अधप विना धापी (भूखी) यह अर्थ. रीढक पृष्ठिवंश. लोके वांसे को हाड ताको"रीढकः पृष्ठिवंशः स्या"दितिहैमः॥ बिज्जु बिजुरी. बमत वमन कर ते उगलते यह अर्थ.कै अथवा.तिय स्त्री.सुहीय सुहृदया. चतुर ऐसी. परकीय परकीया नायिका को. वातायन गवाक्ष. लोके झरोखा तामैं. कर हाथ. जाव जावक. ताकरिकैं रत्त रक्त. लोके लाल. जैसे रजस्वला परकीया आपनें जारकों आपनी दशा दिखायकैं संकेतसैं वाको जावनां वरजिबेकों चुवते जावकको हाथ वातायनमैं निकासैं तैसैं यह अर्थ. इहां चेष्टा जन्य ध्वनि है ॥३॥ पटबेणुइति॥ वेणु वंश. लोके वांस. स्वार्थेकः॥ तिनमय. प्राकार कोट. पाहिले अंबासमें राजनके कनात को ही कोट रहतो हो सो कोटहू कैसो. अयुतहत्थ दशहजार हाथ को. चतुरायत चोतरफ विस्तारित. तब एक दिशा को कोट२॥अढाई ह-

मोहत गुलाव मल्लिय महकि इंद विभव सोहत अजब ॥
दिल्लीस सुवन जहँ थित मुदित तहँ नृप यह डारिय गजब॥४॥
जहँ जमीन जोजनन सेन संकुलि नाहिं सुज्झत ॥
तीन सहँस३०००तुक्खार परिधिचोकिय वढि बुज्झत ॥
सहँस१०००तोप सावात जाल चहुँदिस जंजीरित ॥
झंडन केतु झपेट पौंन कंदत पथ पीरित ॥
असवार अहोनिस पंचसत५००प्रतितोरन जामिक रहिग ॥
बुंदिय नरेस बुधसिंहकी तहँ प्रकुप्पि पट्टिस वहिग ॥ ५॥
चूक चूक चहुँकोद कूक कढ्ढत कटार पगि ॥
वहत भीरु चलविचल गिरत तुरकान गरव गरि ॥
मारि जवन इम राव चुवत पट्टिस ढकि ठह्यो ॥
साहवहादुर संक गंजि चाहत रन गह्यो ॥

चार हाथ को भयो सो एक कोस के षोडशांश १६ सहित एक कोस के चतुर्थांश ४ प्रमान भयो. यथा—"यवोदरैरंगुलमष्टसंख्यैर्हस्तोऽङ्गुलैः षड्गुणितैश्चतुर्भिः॥ हस्तैश्चतुर्भिर्भवतीह दंडः क्रोशः सहस्रद्वितयेन तेषाम् ॥" इति भास्कराचार्यः ॥ सोहू कैसो सात फेर संपुटित ऐसे प्राकारके सात गिरद लगे तहां यह कह्यो ता प्रकारको कोट बाहर ही बाहरको जानिये. ताके गिरदके माहिं उचित अंतराल सों कै ६ प्राकार और जानिये ऐसें सात भये तब सात [illegible] जानिये. तोरन बाहिर को द्वार ॥ "बहिर्द्वारं तु तोरणं" सितिहैमः॥ पावन पाय(मंद). ताके बहायवेवारे. कुंकुमित्र कुंकुम के रंगको. उसीर लोके खस ताके. "उशीरं वीरणीमूलं" सितिहैमः ॥ आमोद याने मनोहर गंध. "आमोदः सोऽतिनिर्हारी" त्यमरः॥ मल्लिय मल्ली. लोके मोगरा. अजब अद्भुत ॥ ४ ॥ जहँहनि ॥ जमीन पृथ्वी. [illegible] तुक्खार घोरे. यहां उपलक्षणतें घोरेन के असवार जानिये. परिधिचोकी सेना की परिधि की चोकी के पहरायत. लोके छावनी. सावात शब्द ताके जालचारी. जंजीरित सांकलेसों जंजीरन सहित. झंडन झंडा(ध्वजा). तिनकी केतु पताका. तिनकी झपेटसों. पौंन पवन. कंदत [illegible]. अहोनिस दिनरात्रि. प्रतितोरन तोरन तोरन प्रति. जामिक पहरायत पट्टिस कटारी ॥ ५ ॥
चूकचूकहनि ॥ पगि पदार के पहमें. भीरु कातर. गिरत या जवन के गिरतें.

सुत साह हिंतु भाखी सबन आनि अरज उप्पर अरज ॥
कुणपहि सदोस आलम कह्यो गुनह आप्पि हेरिय गरज ६

(दोहा)

कहि आलम सागस हन्यौं, नहिँ बुंदियपति दोस ॥
खलक इलाही कुबच सुनि, को नहि रंगत रोस ॥ ७ ॥

(गीर्व्वाणभाषा)

(इन्द्रवज्रा)

औरङ्गिरेवम्प्रविचार्य्य कृत्यं बुन्दीन्द्रमाहूय समक्षमाशु ॥
आश्वास्य नीचाऽनुजतो जिगीषुर्दिल्लीभरम्भूपभुजे बबन्ध।८।

(शालिनी)

भोजाचारं रत्नसेवान्तथैव दिल्लीशत्रं शत्रुशल्यञ्च भावम् ॥

संकभय ताकों. गंजि अनादर करिकें. सुतसाहहिंतु साह बादशाह औरंगजेब ताके सुत आलमशाहसों. कुणप मृतक. "कुणपः शवमस्त्रिया" मित्यमरः॥ सदोस दोष सहित. गुनाह अपराध. यावनी शब्द ॥ ६ ॥ दोहा॥ कहीति॥ सागस आगस अपराध ता सहित. खलक संसार.इलाही परमेश्वर.यावनी ताकोंह. कुबच खोटे वचन. को कौन ॥७॥ गीर्वाणभाषा ॥ इन्द्रवज्रा ॥ औरंगि औरंग पुत्रः "अत इञ्" इतीञ्॥ जित्वा इत्यादिः। कृत्यम् निरपराधत्वात्प्रतिष्ठाकरणरूपं समक्षं प्रत्यक्षं. आशु शीघ्रं. आश्वास्य विश्वास्य. नीचाऽनुजतः नीचो यः पितुः प्रेष्टत्वाद्राज्यलिप्सुः स्वीयोऽनुजः आजमसाहनामातं द्वितीयार्थे तसिः। भर भारं बुधसिंहभुजे बबंध बंधितवान् ॥ ८ ॥ शालिनी ॥ भोजाचारमिति ॥ भोजः अकबरसाहसमये योऽभूत्स सुर्जनपुत्रस्तस्याचरणं सुरतिपुराधिराजमारणार्थंनःकरणेनाकबरशाहसेवनम् । रत्नसेवा तद्भोजपुत्रो यो रत्नसिंहःतत्कृता कब्बरशाहपुत्रजहांगीरशाहसेवनम्। दिल्लीशत्रं दिल्लीशो जहांगीरशाहस्तत्त्रुःशा

॥ भाषानुवाद ॥

इन्द्रवज्रा ॥ नीच छोटे भाई को जीतने की इच्छावाले औरंगजेब के पुत्र (बहादुरशाह) ने इसप्रकार कार्य को विचार कर बुन्दी के इन्द्र (बुधसिंह) को शीघ्र रूबरू बुलाकर विश्वास देकर दिल्ली का भार राजा के भुजों में बांधा ॥ ८ ॥ शालिनी॥ राव भोज का आचार, इसीप्रकार रत्नसिंह की सेवा, दिल्लीश की रक्षा करनेवाले शत्रुशाल और भावसिंह, कृष्णसिंह को उज्जैन में छलघात से मारने का स्मरण करके औरंगजेब के पुत्र(बहादुरशाह)ने शुद्धभाव धारण किया

कृष्णां छद्माऽवन्तिकाप्राप्तमृत्युं स्मृत्वौरङ्गिः शुद्धभावन्दधार९

(प्रायःप्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

यह उदंत दिसदिस उडिग, जस बुंदियपति जग्गि ॥
इम काबल सूबा अवनि, लगन स्वामि भट लग्गि ॥ १० ॥
कूरम पतिको लघु कुमर, बिजयसिंह रुचि रंग ॥
जावत अवसर आमके, स्वजनक जामिप संग ॥ ११ ॥
बालवेस कोतुक बिरचि, लगि छोनिय कछु लाह ॥
प्रथक पाय हिंडोनिपुर, सेवत आलमसाह ॥ १२ ॥
कूरमपति तत्थहि मरिय, लघुसुत रहिय समीप ॥
पट्ट लहिय जयसिंह नृप, पुर आमेर प्रदीप ॥

(हरिगीतम्)

लहि पट्ट नृप जयसिंह यौं वय अब्द द्वादस१२मैं तहाँ ॥
भट मंत्रि वर्ग बुलायकैं कहि कोन मंत्र अबैं यहाँ ॥
करिकैं समस्तन मंत्र भाखिय काल देस प्रमानिये ॥
अवरंग साह समीप सेवनमैं सबैं सुख जानिये ॥ १४ ॥
यह थप्पिकैं जयसिंह लै दल देस दक्खिनकौं गयो ॥
दरगाह साह सलाम कै मिल थान अप्पनपै ठयो ॥

हज्यहांनामा तद्वत्कमेतादृशं रत्नसिंहपौत्रं शत्रुशल्यनमानं च पुनः भावम् औरंगशाहनिदेशेन खजुवानगरादियुद्धविजतारं शत्रुशल्यपुत्रं भावसिंहनामानम्। कृष्णां कृष्णसिंहं भावसिंहभ्रातृभीमसिंहपुत्रं। आत्मनैवालमशाहेन छद्मना कपटेन अवन्तिकापुर्यां प्राप्तो मृत्युर्येन तं तादृशं शुद्धभावं चित्तशुद्धिं कपटराहित्यामिति यावत् । दधार धारयतिस्म ॥ ९ ॥ प्रा०कृ०प्रा०मि०॥ दोहा॥ यह इति ॥ उदंत वृत्तांत. लगन प्रीति. स्यामी बहादुरशाह के. अरु भट उमराव बुधसिंह ताके ॥१० ॥ कूरमेति ॥ आम बडी सभा ताको. स्व अपनें. जनक विष्णुसिंह. जामिप बुधसिंह. तिनके ॥ ११.॥ बालवेसेति ॥ वेस अवस्था तामैं पृथक् जुदो. हिंडोनिपुर हिंडोनि नाम नगर ॥ १२ ॥ कूरमपतिरिति ॥ तत्थ तहां. काबल के सूबा में. प्रदीप दीपक ॥ १३ ॥ हरिगीत ॥ लहिइति ॥ अब्द वर्ष.

बुलवाय साह समीप ओ दुवहत्थ अंजलि संग्रह्यो ॥
करिहै कहा अब जेर तू इम व्याज कोपित ह्वै कह्यो१५
जयसिंह यह सुनि उच्चरयो मम भाग आज उदोतहैं ॥
कर इक थंभत साह जो नर सर्व उप्पर होतहैं॥
अवरंग यह सुनि मोद मन्नि रु छोरि आयस अप्पयो ॥
नृप मानके कुल मानसो जयसिंह भूपतिहू भयो ॥१६॥
वय बाल अरु बच वृद्ध तो नृप मानसौंहु सिवायहै ॥
यह सिवाइजयसिंह नृप अब नाम एह कहायहै ॥
यह वत्त अंक रु वान सप्त रु इक१७५९संवतमैं भई ॥
पहुमी न इक्कहिं रत्त अब कछु होत जात नई नई॥ १७ ॥

(दोहा)

हिंदुनकी पहुमी प्रिया, भोगी तुरकन आय ॥
ज्यहाँगीर जारहि मरत, रतिरस अब न अघाय ॥ १८ ॥
कछु अवरंगहु तरुनपन, भोगी सकति निहारि ॥
अब यह जरठ जईफ वो, नित्यनई यह नारि ॥ १९ ॥

(षट्पात्)

सर ससि हय इक१७१५साल भ्रात दारा हनि जिट्टो ॥

यहइति॥ यद्यपि यह मंत्र करिकैं. थानअप्पनपैं अपनैं खरो रहिवे के स्थान पैं. ठयो रह्यो. साह.औरंगजेबनैं. ओ अरु. दुवहत्थअंजलि दोऊ हाथनतैं अंजलि करि राख्यो सो. व्याजकोपित झूठैं ही कोप करिकैं ॥ १५ ॥ जयसिंह इति ॥ या छंद के दूजे चरण के वाच्यार्थ सों मेरे दोऊ हाथ गहे हैं, यातैं मैं सबनतैं विशेष बढ़िगो यह व्यंग्यार्थ पायो. आयस हुकम. अप्पयो दीनों ॥ १६ ॥ वय बालइति ॥ वय अवस्था. बच बचन तातैं. वृद्ध बडो. अंक नव ९. वान पंच ५. सप्त ७ एक १ सत्रह के गुनसाठि १७५९ के संवत् मैं. इक्कहि एकसौं. रत्त आसक्त ॥ १७ ॥ दोहा ॥ हिंदुनकीइति ॥ ज्यहांगीरजारहि जहांगीरशाह अकबरशाहको पुत्र राजनीतिमैं कुशल हो ताके ॥ १८ ॥ कछुइति॥ जरठ वृद्ध. जईफ वृद्ध. या वनी. वृद्धपदको प्रयोग है बेर कियो यातैं अतिवृद्ध जानिये ॥ १९ ॥ षट्पात्॥ सरइति ॥ सर पंच५. ससि एक १. हय सप्त ७. सत्रह सै पंद्रहके साल१७१५

जित्ति धोलपुर समर तखत अवरंग बइट्ठो ॥
वसु रु वेद४८मित बरस पातसाही निरबाही ॥
गुन खट हय ससि१७६३ साल आय अब समय इलाही ॥
इकदिन बुलाय सुत आजमहिं कारि रहस्य अवरंग कहि ॥
जंपत निमाज ममसिर अलग करहु पुल तरवारि गहि२०

॥ दोहा ॥

भुग्गि जरा वय साह अब, लयो मृत्यु निज जोय ॥
जान्यों दिल रबमैं रहैं, जो निमाज बध होय ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि आजम यह सकुचि बत्त मन सोधि विचारिय ॥
इहिं उद्यम संधान होत संदेह जियन हिय ॥
कहत साह कछु और करत कछु और दुरासय ॥
यह दृढ करि उच्चरिय होय मोसों न यहै नय ॥
जो चहत अप्प मम सुख जनक तो यह हुकम अलीक कारि॥
दिल्लिय समेत अकबरनगर सूबा अप्पहु महर धारि ॥२२॥

॥ दोहा ॥

सुनत साह अवरंग इम, प्रिय सुत आजम बैन ॥
अक्कबरपुर दिल्लिय अरपि, सूबा सुनसुब सैन ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बरस. यावनी. दारा दाराशाह नामक. जिट्ठा ज्येष्ठ. (बडो). वसु अष्ट८. अरु वेद च्यार ४. ऐसे ४८ अठतालीस तिनके. मित प्रमानवारे. गुन तीन३. खट ६ छै. हय ७ सप्त. ससि १ एक. ऐसे सत्रह सै त्रेसठि १७६३ के साल वर्ष. यावनी. तामैं. रहस्य एकांत मंत्र. जंपत पढत. निमाज यावनी धर्मपुस्तक. अलग भिन्न ॥ २० ॥ दोहा ॥ भुग्गिइति ॥ भुग्गि भोगिकैं. जोय देखि. दिल मन. यावनी. रब परमेश्वर. यावनी. मैं तामैं ॥२१॥ षट्पात् ॥ सुनिइति॥ नँधान मुक्त करिबो. तासों. दुरासय दुर्गम है आशय हृदय विचार जाको ऐसो. नय न्याय. अलीक मिथ्या. अप्पहु देहु. महर कृपा. यावनी॥२२॥ दोहा॥ सुनत इति ॥ अरपि देय. सैन सेना ॥ २३ ॥ षट्पात् ॥ कियइति ॥ संगर युद्ध

किय आजम यह मंत्र साह मरिहै अब जीरन ॥
मैं दिल्लियपुर जाय बैठि गद्दिय प्रपंचपन ॥
साहबहादुर सुत अजीम संजुत हनि संगर ॥
कामबखस पुनि अनुज मारि इकछत्र तपौं धर ॥
यह सोचि सीख दिल्लिय लई आजम उचित अनीक सजि
चढि चलिय चाहि गद्दिय गरज तब अवरंगाबाद तजि २४
साहबहादुर सुत अजीम अभिधान नेक नर ॥
पूरब पुर पटनाँ सु रहत हुकम अवरंग बर ॥
कछुक काज तिन दिनन साह बुल्ल्यो अजीम वह ॥
बंचि पितामह पत्र चल्यो दक्खिन दरकुंचह ॥
खट६मिजल रक्खि अकबर नगर मैंनपुरी सु अजीम रहि ॥
उत समय पाय आजम चल्यो दिल्लिय आयस साह लहि२५
प्रथम साहके पुत्र भयो सुरतान मुहुम्मद१ ॥
कारागृह संकटिय मरयो दुखपाय मितंवद ॥
दूजो आलमसाह२ सोहु कारागृह डारयो ॥
जब आजम जच्च्यो सु तबहि द्रुत साह निकारयो ॥
आजम३यहै सु तीजो तनय ताहि साह हित करि चहै ॥
सुत कामवखस४चोथो सु पै साह हुकम अति निब्बहै २६
तुरकनकैँ नहिं बरन अबाधि चंडाल इक्क लव ॥

तामैं. अनुज छोटो भाई ताकों. दिल्लिय दिल्लीकी. अनीक सेना. गरज सुख इच्छा. दशीप्राकृत ॥ २४ ॥ साहबहादुरइति॥ अजीमअभिधान अजीम नामक. नेक धार्मिष्ठ. यावनी. पूरबपुरपटना पूरब दिशाको सूबा पटना. वा पुर को नाम. तहां. सु सो(अजीम). हुकम आज्ञा. यावनी. बुल्ल्यो बुलायो. दरकुंच नित्यही कूँच करिकैं. हकार यहां तृतीयाके बहुवचनमैं है. अकबरनगर आगरा. मैनपुरी चहुवाननको नगर विशेष॥ २५ ॥ प्रथमेति॥ साहके अवरंगजेबके. संकटिय संकटवान होयकैं. मितंवद थोरो बोलिवेवारो. कारागृह बंदीखाने. जच्च्यो मांग्यो. सु सो (आलमशाह). तनय पुत्र ॥ २६ ॥ तुरकनकैइति ॥ बरन ब्रह्म चत्रियादि अबाधि चंडाल पर्यंत. लव अंश. गणिका वेश्या. ताके. पिंड उदर

काम बखस यह कुमर भयो गणिका पिचंड भव ॥
याहि साह करि रीझ धरा दक्खिन सूबा धुर ॥
भागनगर अप्प्यो रु बहुरि दिन्नौं बीजापुर ॥
पंचमों पुत्र अकबर प्रकटि अति जुव्वन उद्धत बह्यो ॥
परघरन तक्कि मंडत अनय कुप्पि साह बध्यहि कह्यो २७

॥ दोहा ॥

अकबर मारक जनक सुनि, भजि मारवधर आय॥
रट्ठोरन ढाकि रक्खयउ, पुनि भय गयउ पलाय ॥२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे आलमसाहप्रकोष्ठदुर्वचनभाषियवनबुधसिंहहनन १ आमेराधीशविष्णुसिंहकनिष्ठसूनुविजयसिंहहिण्डोनपुरप्रापण २ आमेराधीशविष्णुसिंहस्वर्गवासपट्टपुत्रजयसिंहपट्टासादनसमसवाईपदाधिगम ३ पितृवधास्वीकारिकुमाराजमार्थयवनेन्द्रौरंगजेबदिल्ल्यकबरपुराधिकारद्वयवितरण ४ औरंगजेबसूनुपंचककनिष्ठाकबरस्य तातविरोधितया पलायनवर्णनं सप्तमो मयूखः ॥७॥ आदितः पञ्चचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४५ ॥

मैं " पिचंडो जठरोदरे " इतिहैमः ॥ भव भयो. ऐसो याहीं कामबखसकौं. साह अवरंगजेबनैं. धुर मुख्य. अप्प्यो दयो. उद्धत निसंक. बध्य मारिवेयोग्य. ॥ दोहा ॥अकबरइति ॥ मारवधर मारवारि धरामें. ढकि छिपाय ॥२८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में आलमशाह की ड्योढी पर बुधसिंह का दुर्वचन कहनेवाले एक यवन को मारना १ आमेर के राजा विष्णुसिंह के छोटे पुत्र विजयसिंह को हिंडोनपुर मिलना २ आमेर के राजा विष्णुसिंह का देहांत होने पर पाटवी पुत्र जयसिंह का गद्दी बैठकर सवाई पद पाना ३ पिता को मारने का अस्वीकार करनेवाले शाहजादे आजम को बादशाह औरंगजेब का दिल्ली और आगरे के दो सूबों का देना ४ औरंगजेब के पांच पुत्रों में लघु पुत्र अकबर का पिता के विरुद्ध होकर भाग जाने के वर्णन का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से दो सौ पैंतालीस मयूख हुए ॥ २४५ ॥

(गीर्वाणभाषा)

अनुष्टब्युग्मविपुला ॥

सिंहावलोकिनी गाथा प्रबन्धेपुप्रबध्यते ॥
योजनीयोऽन्वयो वाक्यमहावाक्ययोऽवसानयोः ॥ १ ॥

द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ तथा कथयामि न कोप्यऽभूज्जगति शाहनिदेशपराङ्मुख ॥
स्वशरणं सविचार्य्य यथा मनागकबरो गतवानपि धन्वनि ॥२॥

प्रायःप्राकृती मिश्रितभाषा ॥पज्झटिका

अग्गैं नरेस जसवंत नाम, उज्जैन जंग तजि भजिग धाम ॥
हुव जनक रक्खि अवरंग साह, तब जाय मंद मंग्यो गुनाह॥ ३ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टब्युग्मविपुला ॥ सिंहावलोक नीति ॥ सिंहावलोकिनी भूत्वा पुनरवलोक्यवृत्तान्त वक्तुं प्रवर्तनी। गाथा वाग्विशेषः। वाक्यं एकतिङ् महावाक्यं वाक्य समूहः। तयोरवसानयोरंतयो रित्यर्थे तरेतरयोगो द्वन्द्वः। द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकं संबध्यते इति संबंधः ॥ १ ॥ द्रुतविलम्बितम् ॥ अथ इति ॥ अथ शब्दो वक्ष्यमाणवृत्तान्तप्रारंभ द्योतकः।तथा तेन प्रकारेण कथयामि वर्णयामि। तथा कथं यथा. शाहनिदेशपराङ्मुखः शाह औरंगजेब स्तदाज्ञाविमुखः कोपि नाभूत्. कश्चिदपि नासीत्। तथा च मनाक् ईषत्. स्वशरणं विचार्य. ज्ञात्वा स शाहस्य पंचमपुत्रोऽकबरनामापि धन्वनि मरुदेशे "मरुस्थलौ मरुधन्वानौ" इत्यमरः॥ गतवान् जगाम। धन्वनीत्यधिकरण विवक्षायां सप्तमी। कथितमोरंगजाज्ञानर्थकत्वं ज्ञेयम् ॥ २ ॥ पज्झटिका ॥

खजुवापुर संगर साह कीन, सूजा भजाय निज भ्रात दीन ॥
तत्थहु कबंध तजि स्वामि प्रीति, अवरंग हसम लुट्टिय अनीति ४
धन कोस जनाँनन लूट ठानि, मरुधर भाजि आयउ नास मानि
तब साह मरुस्थल लियउतारि, जसवंत निमज्जिग बिपति वारि
बहु अब्द मरुस्थल बिनु बिहाय, पुनि दुखित आय लगि साहपाय
सकुटुंब रचिय दिल्ली निवास, बहुकाल खंचि सेवा बिसास ॥ ६ ॥
दै साह बहुरि धर धन्व राज, काबलधर पठयो आन काज ॥
नाहि साहु सधी सूबा सम्हारि, बहुकाल रह्यो उद्यम बिसारि॥७॥
दिस बिदिस परन दब्बी जमीन, सुनि अलस कोप पुनि साह कीन
रनवास हुतो दिल्ली सु साह, अटक्यो जरि फोजन इहिं गुनाह॥८॥
इक रानी धारत गर्भ आस, हुव अजितसिंह जनि जठर जास॥
दल साह हवेली फिरि दुरंत, अंतहपुर घेर्यो न दुख अंत ॥ ९ ॥
रानिन पँहँ पठयो हुकम साह, सुत जन्म सुन्यो नृपकै उछाह ॥
सो देहु सौंपि जो मुल्क चाह, लैहैं बिसासि अब वाहिं साह१०
जसवंत जोधपुर जोग्य नाँहि, सुत देहु भयो जो अत्र आँहि ॥
रनवास सबहि सुनि यह निदेस, उमराव बुलाये निज असेस ११
आहूत सबहि रट्ठोर आय, करि मंत्र तत्व रानिन कहाय ॥

बनी ॥ ३ ॥ खजुवापुरइति॥ खजुवा नामक नगर को युद्ध. साह औरंगजेबनैं. सूजा शुजाशाह नामक. निज अपनों. तत्थ तहां. कबंध रट्ठोर राजा जसवंत सिंहनैं. स्वामि जो औरंगजेब तासों. हसम वैभव. देशीप्राकृत ॥ ४ ॥ धनकोसइति॥ कोस भंडार. जनानन जनानेनको. निमज्जग बूड्यो. वारि जल तामैं. बहुअब्दइति ॥ अब्द वर्ष. बिहाय बिताय. खंचि काढि ॥ ६ ॥ दैसाहइति ॥ धन्व मरुदेश. आन रजा. सधी बनी ॥ ७ ॥ दिसबिदिसइति ॥ परन शत्रुन. अलस आलस्य. या जसवंतसिंहकों यह शेष. हुतो हो. सु सो. जरिफोजन जरिके गोलासों फोजन के जंजीर रूप; वा कटक रूप जानिये ॥ ८ ॥ इकरानीइति जनि जन्म "जनिरुत्पत्तिरुद्भवः" इत्यमरः ॥ जठर उदर जासों. जास वाके रानिनइति ॥ सो पुत्र. चाह चाहहै तो ॥ १० ॥ जसवंतइति ॥ अत्र यहां. आँहि हैं. निदेश हुकम. असेस सब ॥ ११ ॥ आहूतइति ॥ आहूत बुलाये. तत्व

पठये नृप काबल दै स्वधाम, सोंपै न सुधारत साह काम ॥१२॥
सुत जो भयो सु नहि गुप्त अत्थ, अब ताहि साह मंगत समत्थ ॥
भाखत इहिं देहौं धन्वराज, अरु कोप लखत दरसत अकाज १३
तत उचित नाँहि तुरकन बिसास, छल होन लगे बहु आसपास॥
अब काढि कुमर जिहिं तिहिं उपाय, कछुवृत्ति जिवावहु धन्वजाय
प्रच्छन्न जन्यो अप्पन अपत्य, तसमात कहहु भो यह असत्य॥
तहँ भट्टिय भट गोइंददास, कापालिक बनि लिय कुमर पास॥१५॥
भट्टिय रघुनाथ सु पति लवेर, सजि दुर्गदास रट्ठोर फेर॥
ए बान सहाय दुवश्भट अमान, कुमरहि निकासि गय इष्ट थान१६
किय जंग अवर सुभटन अछेह, लरि हट्ठी रानिय तजिय देह॥
इम भावसिंह भगिनी सुभाय, निरबाहि पतिव्रत स्वर्ग पाय ॥१७॥
जसवंत कुमर कसि कंठदेस, लहि काल कढे वे बदलि वेस ॥
तिन छन्न साहसौं धन्व जाय, इक बिप्रगेह रक्ख्यो छिपाय ॥१८॥
मरुधर रह्यो न रट्ठोर राज, द्विजगेह कुमर बासि दुख दराज ॥
दिल्लीसौं साहन हुकम पाय, मरुधर रनवासहु अवर आय॥१९॥
नहिं मिलत मात सुत बिपति बास, तप उग्र सहत अवरंग त्रास॥
इहिं अंतर नृप जसवंत अंत, बसि काल भयो काबल बसंत ।२०।
जसवंत सुवन तबहू बुलाय, इन कुपित जान रक्ख्यो दुगाय ॥
नृप अजितसिंह जसवंत जाम, प्रच्छन्न रहे इम बिप्र धाम ॥२१॥
गजसिंह जनन यँहँ नास होत, भट दुर्गदास रक्ख्यो उद्योत्त ॥

सिद्धांत. स्वधाम जोधपुर ॥ १२ ॥ सुतजोइति ॥ अत्थ यहां. लखत देखतें ॥१३॥ ततउचितेति ॥ तत ताकरनसों. कछुवृत्ति कोउ जीविकासों. धन्व मरुदेश ॥ १४ ॥ प्रच्छन्नइति ॥ अपत्य पुत्र. भट्टिय भाटी जातिको क्षत्रिय. कापालिक व्यालग्राहक ॥ १५ ॥ भट्टियइति ॥ लवेर लवेरा नामक ग्रामका. इष्ट प्रिय धान स्थान ॥ १६ ॥ कियइति॥स्पष्ट ॥ १७ ॥ जसवंतइति ॥ वे दोऊ भाटी और रट्ठोर तीनों ही ॥ १८ ॥ मरुधरइति ॥ दराज बडा. साहन बादशाहको. अवर हाडी रानी विना ॥ १९ ॥ नहीति ॥ बसिकाल॥ कालवासि ॥ २० ॥ जसवंतइति ॥ जाम जन्मवारो ॥ २१ ॥ गजसिंहइति ॥ जनन वंश. त्रुन ३ तीन. सत्र-

नव गुन रु सप्त इक १७३९अब्द मान, जसवंत भूप किय देह हान
तिन दिनन यहै अकबर कुमार, मरुदेस गयो भय साह भार ॥
रट्ठोर नहिंन ऐसे समत्थ, अवरंग खूनि रक्खैं सु अत्थ ॥ २३ ॥
तब तिनहु दयो अकबर निकारि, ईरान गयो वह बल बिचारि ॥
अकबर सु मरयोपुर इस्पहान, सुतज्येष्ठ मरचो प्रथमहि सयान ॥
अवरंग पुत्र अब जियत तीन३, घर कावल पट्टपके अधीन ॥
हुव कामवखस दक्खिन नरेस, पुर दिल्ली आजम लिन्न पेस ॥

॥ दोहा ॥

साहबहादुरके प्रथम, मोजदीन हुव पुत्त ॥
अनय ऐस आलस निलय, जवनी जठर प्रसुत्त ॥ २६ ॥
रूप नगर रट्ठोर नृप, तनया ताके गेह ॥
साह बहादुरकों प्रथम, व्याही अवनि सनेह ॥ २७ ॥
ताके उदर अजीम भो, दूजो सुवन सिपाह ॥
पूरबधर पुर पट्टनां सूबा जिहिं दिय साह ॥ २८ ॥
सुत रफील आदिक कदर, यह तृतीय अभिधान ॥
अखतर आदि बुलंद पुनि, यहै चतुर्थ अमान ॥ २९ ॥
आलमके चयारि४ सुत, तिनमें चतुर अजीम ॥
सोजदीन सबसौं बड़ो, दिल्ली तरुको दीम ॥ ३० ॥
तीन पुत्र निज जनक तट, पुर पटना सु अजीम ॥
सो आवत हुत साह ढिग, कछु विशेष नय नीम ॥ ३१ ॥

[illegible] सुननरलाार १७३९ के. मान प्रमान के. अब्द वर्ष में. हान त्याग ॥ २२ ॥ निर्निदेशा [illegible] ॥ रट्ठोर रठौड़. समत्थ. अत्थ यहां. (या समकसें ॥ २३ ॥ तबति नइति ॥ [illegible] ज्येष्ठ बडो. सुरतान मुहम्मद नामक ॥ २४ ॥ २५ ॥ दोहा ॥ साहेति ॥ जवनी जवन जातिकी स्त्री ताके. जठर उदरसें ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ताकेइति ॥ अजीम अजीमशाह नामक. शाह पितामह ओरंगजेबनें ॥ २८ ॥ सुतइति ॥ रफीलके आदि कदर यह अर्थ. अखतरके आदि बिलंद अखतरबिलंद नामक ॥ २९ ॥ आलमके इति ॥ दीम लोकके वडेई. (दीपक) ॥ ३० ॥ तीनपुत्रइति ॥ निज अपनों. जनक पिता आलमशाह ताके. तट काव

आजमकै इक सुत भयो, वखस अंत दीदार ॥
जो हाजरि निज जनक जुत, साह निकट गिनि सार ।३२।
आजम पुव्व लिख्यो सु करि, दिल्लिय लोभ चलाय ॥
पुर अवरंगाबादतैं, पंचकोस परि आय ॥ ३३ ॥
इहिं अंतर अब देखिये, करत मही नवरंग ॥
सक गुन खट६३फागुन असित, तजिग देह अवरंग ॥३४॥

॥ षट्पात् ॥

सत्रुसछ्छ नृप समय साह अवरंग उपज्जिय ॥
हनि अग्रज पितु तरजि छिन्निखिन्नी निज गद्दिय॥
मरहट्ठन सुनि फैल गयो दक्खिनधर दव्वन॥
बहुत बरस रहि तत्थ रच्यो निज नामक पत्तन ॥
गुन खट तुरंग ससि१७६३साल बनि बिक्रम सक फग्गुन असित॥
अवरंग मरिग दक्खिन अवनि अब मरहट्ठन दिन उदित।३५।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे तातत्रासमरुगतौरंगजेबपञ्चमपुत्राकबरप्रसंगयोधपुरभूपयशवन्तसिंहपूर्वोदन्तस्मारणं १, बहादुरशाहपुत्रचतुष्कगणनानन्तरऔरंगजेबनिधनवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥

लके सूबा. नाम मूल ताको ॥ ३१ ॥ आजमकैइति ॥ बखसअंतदीदार दीदार बखस नामक ॥ ३२ ॥ आजमेति ॥ पुव्व पहिलैं ॥ ३३ ॥ इहिंइति ॥ गुन ३ तीन. खट ६ छै. ताके ६३ त्रेसठि भये तहां सत्रह अनुवृत्तिसों सत्रह से त्रेसठि १७६३ के साल यह अर्थ करिये. असित कृष्णपक्ष ॥ ३४ ॥ षट्पात् ॥ सत्रुसछ्छेति॥ अग्रज बडे भाई. पितु पिता ताकों. तरजि तरजना करिकैं. लोके दर्पणवत् रायकैं. पत्तन नगर. गुन ३ तीन. खट ६ छै. तुरंग ७ सप्त. ससि १ एक. यातैं यही सत्रहसे त्रेसठि १७६३ को साल आयो. तामैं ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में औरंगजेब के पांचवें पुत्र अकबर का पिता के त्रास से मारवाड में जाने के प्रसंग से जोधपुर के राजा जशवंतसिंह की पूर्वकथा का स्मरण कराना१ बहादुरशाह के चार पुत्रों की गणना के अनंतर औरंगजेब के मरने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छि-

आदितः षट्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४६ ॥

॥ दोहा ॥

साह मरत आजम सुन्यो, यह सुनि बत्त अजीम ॥
मैंनपुरीसौं आगरा, आयो व्है भट भीम ॥ १ ॥
आय कटकजुत आगरा, किल्ला सजिग सम्हारि ॥
जनकहुसौं पहिलैं रह्यो, आजमपैं इक धारि ॥ २ ॥
उत आजम बुल्ल्यो उमँगि, साह मरन सुनि बत्त ॥
दिल्लीपर दावा रचन, मन्नि फिरयो मयमत्त ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

साह मरन सुनि सजव फिर्‌यो आजम सुत संजुत ॥
पुर अवरंगाबाद जाय किन्नौं प्रपंच उत ॥
सब घर हसम सम्हारि खरच धन कोस खुलाये ॥
नृप नबाव रचि आम विहित इतमाम बुलाये ॥
कहि इम पठाय सहँसन पदग रेवा तट रुक्कहु सकल ॥
पहुँचैं न बहादुरसाह प्रति साह मरन अब मंत्र बल ॥ ४
प्रतना इम पिल्ली रु सवहि रुक्के रेवा मग ॥
नृप नबाव विसवासि कह्यो मंडहु प्रपंच पग ॥
अब दिल्लिय अप्पानिय हनहु रन साहबहादुर ॥
पाय पटा द्विगुनत रु ऐस मंडहु रस आतुर ॥
सुनि यहहि मिच्छ हिंदुन सबन धरिग लुब्भि गणिका धरम॥

चालीस २४६ मयूख हुए ॥

॥ १॥ २॥ उतइति ॥ मय मद. ॥ ३॥ षट्पात् ॥ साहेति ॥ सुत दीदारबखस. उ वा तरफ वा पितर्कमैं. हसम वैभव. देशीप्राकृत. आम वडी सभा. विहित य ग्य. इतमाम[ ]पदग पैदल सिपाह. रेवा नर्मदा. साहमरन शाह के म ने की खबरि ॥ ४ ॥ प्रतनाइति ॥ पृतना सेना. "पृतनानीकिनी चमूः" इत्य रः ॥ पिल्ली भेजी. मग मार्ग. ऐस आराम. लुब्भि लोभ पायकैं. गणिका इया ताकों. भुगावै भोगे. जाहि वा वेश्याकों. स्वपच चांडाल. सधन धन :

भुग्गवैं ज्ञाहि स्वपचहु सधन कुल न जास सुकृत न सरम ॥५॥

॥ दोहा ॥

कोटापति नृप रामसौं, कहि आजम कथ मुद्ध ॥
पुर पट्टन तुमसौं लयो, आलमके बल बुद्ध ॥ ६ ॥
अब तुमकों बुंदिय दई, रचहु जंग नृपराम ॥
सुनि यह हुकम किसोरसुत, किय करजोरि सलाम ॥७॥
बिनु बुंदिय अरु जोधपुर, लिय सब सेन सम्हारि ॥
इतर भूप हाजरि अखिल, इक उदैपुर टारि ॥ ८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

आमैर भूप जयसिंह पेस, चहुवान राम कोटा नरेस ॥
दतिया पति दलपति नाम सज्जि, नरउर नरेस गजसिंह गज्जि॥९॥
सोपुर महीप गोड़ावतंस, सीसोद रामपुर चन्द्र वंस ॥
चहुवान सिरोही पति सु चंड, ऑडिच्छ आदि बुंदेल खंड ॥१०॥
हाजरि हुव बीकानेर राय, मालव नरेस रट्ठोर आय ॥
इम भट्टिय जैसलमेर ईस, इत ईडर छप्पन भुव अधीस ॥ ११ ॥
खिच्चिय भदोर जद्दव बघेल, इत्यादि बहुत साजि मंत्र मेल ॥
निज भट समस्त हाजरि नवाब, हुव विविध फोज गगाना हिसाब१२
सजि कटक लक्ख सप्तक७०००००सम्हारि, हुव लक्ख२००००० वाजि पक्खर प्रसारि ॥
सजिसहँसपंच५०००मत्ते मतंग, पादातिलक्खपंचक ५००००० प्रसंग

हित. जास जा चांडाल के. सरम लज्जा ॥ ५ ॥ दोहा॥ कोटेति ॥ मुद्ध मूढ. पट्टनि या पुर को नाम जो बुधसिंहनैं आलय दयो हो ॥ ६ ॥ ७ ॥ बिनु बुंदिय इति ॥ इहां बुंदी जोधपुर कों लच्छन लच्छना सैं करिकैं दोऊनके राजा. ऐसैं सर्वत्र जानिये ॥ ८ ॥ ९ ॥ सोपुरइति ॥ चंद्रवंश चंद्रसिंह सीसोदिये के वंशके चंद्रावत सूर्यवंशी. ऑड़िच्छ नाम नगर तदादिक दतियासौं इतर औरहू बुंदेल जानिये ॥ १० ॥ हाजरि इति ॥ राय राज ॥ ११ ॥ खिच्चियइति॥ छप्पन देश. ईडर नगर. गगना गिनती ॥ १२ ॥ सजिइति ॥ पादाति पयादे

दुवसहँस२००० तोप जंगी दुरूह, सहँसन निसान फहरंत समूह॥
फटि आसिन वाढ झारि सान फूल,दल रंगरंग वानां दुकूल॥१४॥

॥ मुक्तादाम ॥

सजी अब आजम संगर फोज,पटा गज बाजि करी हित मोज॥
खरे खुरसानन चुंवत खग्ग, चिरैंफटि धारन बाढ उदग्ग ॥१५॥
ग्रहग्रह तंतनि सिंधुव सोर, घुरे भजि भेरिन भद्दव घोर ॥
दये बहु आयुध आजम बंटि,सम्मग्तन बंदि लये सिर संटि॥१६॥
कसैं बहु बाहुल कंकट टोप, कसीसत कंद कमानन रोप ॥
उदायुध केक घसैं सिर गैंन, नचैं रनपैं कहुँ आरुन नैंन ॥१७॥
सनंकत सान अहो निस लोह, परैं झारि फूल हुतासन छोह ॥
तपैं असिधावक पावक ताव, मनों तरु तिंदु चिनंगिय दाव ॥१८॥
करैं बहु वीर बिधानन दान, मनों रन इष्ट बधावन मान ॥
भई रजसों तमसों मिलि संधि,रह्यो कहुँ सत्व बिसेस न बांधि॥१९॥
करैं रन आगम वीर उछाह, मनों नर नायकबेस बिबाह॥
रचैं प्रति बासर आजम आम, रहैं इक आहव आहव नाम॥२०॥
बन्यों दल द्वादसकोस१२बिथार, भ्रमी पहुमी नर बाजिन भार॥
धरैं उर अच्छरि संग उमंग, करैं भट के भट कुंकुम रंग ॥ २१ ॥
बन्यों नर आकर दक्खिन भाग, मनों सुर दच्छ प्रजापति जाग॥

हिपाही ॥ १३ ॥ दुवइत्त ॥ ऊह तर्क. नाम न आवै. निसान पताका. आसि खड्ग तिनको. सान खुरसान तिनतैं. फूल लोके चिनगी. दुकूल वस्त्र ॥ १४ ॥ मुक्तादाम ॥ सजीइति ॥ पटा आसनके. मोज रीझ ॥ १५ ॥ ग्रहग्रहइति॥ यह बाजे को अनुकरण. सिंधुव रागविशेष. भद्दवके मेघकी घोर. बंदी बंदन करि ॥ १६ ॥ कसेति॥ बाहुल दस्ताना. कंकट बकतर. रोप बान. "पत्री रोप इषुर्द्वयोः" इत्यमरः ॥ ऊंचे किये हैं आयुध जिननें. ऐसे सुभट ॥१७॥ सनंकेति ॥ असिधावक सिकलीगर" अस्यासत्कोऽसिधावकः" इतिहैमः॥ तिंदु वृक्षविशेष. ताकी दाव बनमैं अग्नि लगै तामैं "दवो दावो वन्यवन्हि" रितिहैमः ॥१८॥ करैइति॥ मान सत्कार. बासर दिन. आहवयुद्ध. रज रजोगुन. तम तमोगुन: तिनसों दोऊ यह अर्थ. कहुँ कोऊक ठोर. सत्व सत्व गुन रह्यो ॥१९॥करैंइति॥नायकबेस जोवन अवस्था ॥ २० ॥ २१ ॥ बन्योंइति ॥ आकर खानि. जाग याग (यज्ञ) "यज्ञ

गये रुकि मेकलजा नदि मग्ग, चल्यो अब आजम जंग उदग्ग॥२२॥
मही फटि नालन देत दरार, दबैं भर भोगिय भोग हजार ॥
प्रकंपत चिक्करि दिग्गज अठ्ठ८, मचक्कन घुम्मत कोल कमठ्ठ॥२३॥
मच्यो रव कल्प प्रभंजन मान, मनों पयसागर फेर मँथान ॥
चली चलि संग चरक्खन तोप, लगैं बिरचैं गढ पव्वय लोप ॥२४॥
किती वृक सिंह सुखी बिकराल,करी अहि नक्र सुखी अरिकाल
रजैं लिपि नागज आनन रत्त, करैं सिर छाँहँ पताकन छत्त ॥२५॥
जुते वृष ऐंचत के करि हल्ल, बडे गज पिट्ठि लगावत टल्ल ॥
गिलैं अयपिंड घटी दुव ग्रास, चरारत चक्र चरक्खन चास ॥२६॥
रहैं प्रतिइक्क बतीस३२जवान, परैं लगि गोलक कोस प्रमान॥

ध्वरो रवो रागः" इत्यमरः ॥ मेकलजा नर्मदा. "मेकलकन्यके" त्यमरः ॥ २२ ॥ महीफटिइति ॥ भोगिय भोगी (सर्प). "उरगःपन्नगो भोगी" त्यमरः ॥भोग फन. कोल वराह ॥ २३ ॥ मच्योइति ॥ रव शब्द. कल्प प्रलयकाल के. प्रभंजन पवन के. मान प्रमान. पय दुग्ध. चरक्ख शकटविशेष. देशी प्राकृत ॥ २४ ॥ कितीइति ॥ वृक वनकुत्ता "कोकस्त्वीहामृगो वृकः" इति हेमसूरिः॥ नक्र मकर विशेष. रजैं सोहैं. लिपि चित्र रचना विशेष. नागज सिंदूर. "सिंदूरं नागजं नागरक्तं" इतिहैमः॥ आनन मुख. रत्त लाल. छांह छाया. छत्त छत्र ॥ २५ ॥ जुतेइति ॥ जुते जुपेहुये. वृष वृषभ. लांक बैल. ऐंचत खैंचत. के केते ही. पिट्ठ पृष्ठि. टल्ल टल्ला. ताके धक्का. अयपिंड लोह के पिंड. गोला यह अर्थ. घटी तोलविशेष. छै ६ गुंजाको एक १ मासक. अष्टादश १८ मासकको एक १ पईसा. चालीस पईसा को एक १ सेर. पंच ५ सेर की १एक घटी. तैसी दुव २ दोय घटीको. चरारत यह चक्रके शब्दको अनुकरण है. चक्र ताके पहिया. चरक्ख तोप के आधार शकट विशेष. चास खबरि. चरक्खन के चक्र के शब्द ही सों खबरि परै कि यह तोपन को ही शब्द है ऐसी ॥ २६ ॥ रहैं इति ॥ प्रतिइक्क एक तोप प्रति. जवान यौवनवारे. ३२. यहां जवान सामान्य अवस्था वाचक है परन्तु तोपन के योगसों पुरुष ही जानिये. गोलक गोला. ललक्कन चरक्खन के चक्र द्वारा ललकार करत. लार संग. हकी चली. डाकिनि तोप. यहां साध्यवसानानों आरोप विषय तोप तिनको निगरण करिकैं आरोप्यमाण डाकिनि शब्द को प्रयोग कियो यातैं डाकिनि नके कहे तोप जानिये. यहांहु तोप डाकिनि दोऊ शब्दनसैं प्रथमा के जस

ललक्कत आजमके दल लार, हली इम डाकिनि दोयहजार२००० ॥
चली गज पंचसहँस्न५००० न पंति, भयंकर कज्जल पब्बयभंति ॥
लगैं मग निठ्ठि करेणुन लोभ, डगैं डग डाक्कन छक्कत छोभ ।२८।
मरोरत साखिन जुत्थप मत्त, परीखात व्याल रिसावन रत्त ॥
वडे वपु भद्र मृगादिक बंस, सजे गुड साजन अंतक अंस ॥२९॥
वहैं फटकारत सुंडिन व्योम, प्रभा परि पद्मक जुव्वन जोम ॥
अहारत इच्छित पै न अघात, जनैं जलपीवनकौं घटजात ॥३०॥
उडैं जिम कंदुक अंदुक पाय, जरे त्रिपदीन खुले सम जाय ॥
घुमावत जे सिर बीतन घाव, पयप्रति मंडन अंगद पाव ॥३१॥
कसे मखतूल कपालक कंध, बरत्तन नद्ध हवद्दन बंध ॥
जरी कुथ जेवर जोति चमक्क, उयो असिताचलपैं मनु अक्क३२
करैं पथ पंकिल दान प्रवाह, लगैं तन तोमर चुक्कत राह ॥

प्रत्यय का लोप जानिये ॥ २७ ॥ चलीइति ॥ पंति पंक्ति. भंति तुल्य. मग मार्ग. निठ्ठि कष्टसों. करेणु हस्तिनी. तिनके. डगैं चलैं. डग एक १ पैंड. डाक्कन डाक. वाकों कुद्ध करिकैं शस्त्रको अल्प प्रहार करनों तिनकरि. छक्कतछोभ चोभ लोके छोभ. तामैं. छक्कत तृप्त होत ॥२८॥ मरोरतेति ॥ साखी वृक्ष. तिनकों. जुत्थप जुत्थ [यूथ] घने हस्तीनके समूह. तिनके पति. परिखात तिरछी घात करिवेवारे हस्ती. व्याल दुष्टहस्ती. "तिर्यग्घाती परिखातो गजो व्यालो दुष्टगजः" इतिहैमः॥ गुड हस्तीकी सिलह. तिन करि "गुडकं हस्तिसन्नाह" मितिमेदिनी ॥ अंतक जमराज. ताके. अंश श्यामतामैं तथा क्रोध मैं ।२९। वहैंइति ॥ वहैं चलैं. सुंडिन सुंडादंडनतैं. पद्मक हस्तीके जुव्वन अवस्थामें बिंदु निकसैं ते "बिन्दुजालं पुनः पद्म" मितिहैमः॥ अहारत अहार करत. इच्छित चाह्यो. अघात तृप्त होत. जनैं उत्पन्न किये: विधाताने यह शेष. घटजात अगस्त्य ॥ ३० ॥ उडैंइति ॥ अंदुक जंजीर "शृङ्खला निगडोऽन्दुकः" इतिहेमचन्द्रः॥ त्रिपदी डगबेरी. तिन करि "त्रिपदी गात्रयोर्बन्धः" इतिहैमः॥ बीत महावतनको पगनको हूलनों. तिनके ॥३१ ॥ कसेति ॥ मखतूल रेसम. कपाल कलावे. बरत्त रस्से. तिन करि. "नध्री वध्री वरत्रा स्या" दितिहैमः ॥ कुथ झूल. उयो उदय भयो. अक्क अर्क ॥ ३२ ॥ करैंइति ॥ पंकिल पंकवारे. दान मद. राह चालिवेकी रीति. सिरी मस्तक को भूषण. देशीप्राकृत. हाटक सुवर्ण. भर्म

सिरी मनि हाटक मंडित सीस, मनों ग्रह मंडल मर्म गिरीस ३३
करैं नभचारन चंचल चोट, उड़ैं फटि फट्ट कपाट रु कोट ॥
घटा घन भद्दवके अनुकार, हले गिरि जंगम पंचहजार५०००।३४।
जुरे हय झंपत जामललक्ख२०००००,तरारन निंदत मारुततक्ख
जरे बर जेवर पक्खर तीन, तरोगति नीर कि मंडत मीन ॥३५॥
धपैं धरि धोरित आदिक धाव, परैं छिति पातुरिकी गति पाव ॥
प्रबज्जत लासन नासनपौन, बटा नटके जिम गुफत गोन ॥३६॥
बनावत नालन भुम्मि बिभाग, मनोगति मप्पन मप्पत माग ॥
उडैं गजगाह मलंगत अच्छ, परोहिग जानि अपाकृत पच्छ ॥३७॥
चलैं निज छाँह जभ्भकत चित्त, घलैं वर घुम्मर मान समित्त ॥
पटीपर पूर लगावत लीह, मनों मत गोतम पाठक जीह ॥३८॥
थरक्कत घुम्मत नीर कि थाल, फलंगत चित्रकतैंबढि फाल ॥
लसैं गल पालन माल उदोत, सुचंदन चाप कि पन्नग पोत ३९
उठैं झुकि नद्द दुतंगन अंग, कमानन हारत कंठ कुरंग ॥
कढैं छपि हत्थिनमैं धपि धाव, वनैं जनु बारिद बिज्जु सलाव ४०

सुपर्ण ताके. गिरीस गिरिराज (सुमेरु) तापैं ॥ ३३ ॥ करैंइति ॥ नभचार पक्षी. तिनपैं. घटा हस्तिनके समूह. जंगम चलते ॥ ३४ ॥ जुरेइति॥ जामल दोय २. तरारे उडान. तिन करि. मारुत पवन. तक्ख तार्क्ष्य (गरुड़)ताकों. तरोगति वेगगति. कि मनों ॥ ३५ ॥ धपैं इति ॥ धोरित गति विशेष. धाव गति. लास लास्य (नृत्य) तिनसैं. नास नासिका. तिन करि. गोन गमन ॥ ३६ ॥ बनावतइति॥ नाल खुरताल. तिनकरि. मप्पन मापिबेकों. माग मार्ग. परोहिग अंकुरितमध्ये. अपाकृत काटे॥३७॥ चलैंइति॥ जभ्भक्कत चमकत. घुम्मर मंडलाकार. मान बल माफिक विशेष डोरनों. लीह लीक. मत गोतमको न्यायशास्त्र ताके पाठक की. जीह जिव्हा॥ ३८ ॥ थरक्कतइति ॥ थाल चित्र विचित्रित गुंफित शिखाके केस तिनकी. सुचंदन श्रेष्ट चंदन के. चाप धनुष तापैं. कि मनों. पोत बालक. अच्छे चंदन के चाप के रूप घोरन के स्कंध कहे. सुचंदनसों पन्नगनकी प्रीति बिशेष है. अरु चाप नहीं कहते तो स्कंधन की आकृति नहीं आवती. सुचंदनसों हेतु अलंकार ही जानियें ॥३८॥ उठै इति ॥ झुकि नम्रिनामिकैं. नद्द

बहैं छिति छेकत बत्थन घल्लि, कसीसत कंधर अँड उभल्लि ॥
कुसानुग जे पटकैं जित जाय, रहैं लखि लोभ पतंगहु पाय ४१
घमंकिय पक्खर घुग्घर नद्द, छमंकिय नेउर भेकनि भद्द ॥
दिसा बिदिसा बढि हिंकृत हेस, सजैं जिन आसन आस सुरेस ४२
दुरैं पलटैं कुलटा जिस दिठ्ठि, चलैं चरज्यौं परि पत्रिय पिठ्ठि ॥
खलीनन लेहनमैं अनुरत्त, सदा जयसूचक जे जव जत्त ॥ ४३ ॥
बनैं चकरी सकरी बिसिखान, सहागति द्रौपदिके पट मान ॥
बडे तरु साखन ह्वै कढि जात, बराछिनपैं उडि लंघत बात ॥४४॥
भिरैं खुर भोगिप भू भटभेर, फिरैं गज फेटनतैं चकफेर ॥
सजे इम आजमके दलसंग, तरोमय जामल लक्ख२०००००तुरंग
क्रमेलक जुब्बन बेग बिसेस, बनैं जिनतैं घर देस बिदेस ॥
बजावत गल्लन हल्ल बितंड, चलैं धरि पव्वय पिठ्ठि प्रचंड ॥४६॥
भरे सल जे दल डेरन भार, हले जुरि घुम्मत साठिहजार६००००

सजे बर बेसर बीस सहस्स२००००,
तथा सकटावलि तीससहस्स३०००० ॥ ४७ ॥
जनानन के जन बाहन जुत्त,
सजे सिबिका रथ इक्क अयुत्त १००००॥

बंधे ॥ ४० ॥ बहैंइति ॥ कंधर कांधे. अँड अगरूरी. तामैं. कुसानुग कुसा बाग ताके. अनुग कहा करिबेवारे. पतंग सूर्य ॥ ४१ ॥ घमंक्वियइति॥ भेक मेंढक लोके मेंडक. भद्द भाद्रपद. तामैं. हेस हींस. ताको. आस इच्छा॥ ४२ ॥ दुरैंइति॥ चर दास. खलीन लगाम तिनको. लेहन चाटनो तासें. सूचक दिखायबेवारे. जव बेग. तामैं. जत्त बंधे ॥ ४३ ॥ बनैंइति ॥ बिसिखा गली तिनसें. बात पवन. ॥ ४४ ॥ भिरैंइति॥ भोगिप सर्प. अरु भू पृथ्वी. यहां भू के योगसों सर्प शेष ही जानिये. तरोमय बेगमय. जामल दोय २ ॥ ४५ ॥ क्रमेलकइति ॥ क्रमेलक ऊंट. गल्ल गाल तिनकों. बितंड बेतंड हस्ती ॥ ४६ ॥ भरेइति ॥ सल उष्ट्र. लोके ऊंट. "सलोभोलिर्मरुप्रियः" इतिहैमः ॥ बेसर खच्चर. "बेसरोऽश्वतरो बेगसरः" इतिहैमः ॥४७॥ जनाननके बाहन निबाहिबेकों. जुत्त जुक्त. सिबिका पा-

चली सुव डोरिन सप्पत फौज, उदै हुव आय प्रवीरन ओज ॥४८॥
हजारन डोरिय हंति समान, दिसा विदिसा फहराय निसान ॥
सहस्रकपंच ५००० नकीव जलेव,
चली पृतना रचि जेवर जेव ॥ ४९ ॥
समात न सेलनके गन गैन, छई भुव पक्खर लक्खन लैन ॥
विभागन वंटत सत्तुन वंस, उमीरन वीरन के अवतंस ॥५०॥
हरोलन चंड नकीवन हाक, करैं मग लुट्टन बाक कजाक ॥
चले इम दिल्लियपैं रचि दाव, उमंगन आजम औ उमराव ॥ ५१ ॥

(दोहा)

इत आजम इम सजि कटक, प्रभु वनि किन्न प्रयान ॥
उत आलम सुनि उज्झल्यो, सावन मुदिर समान ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे दिल्लीपट्टाधिवेशनाभिप्रायौरंगजेबकनिष्ठपुत्राजमशाहस्य दक्षिणादेशाद्दिल्ल्यागमनवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥
आदितः सप्तचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४७ ॥

(षट्पात्)

आलमसाह वकील हुते अवरंग निकट जिन ॥
समय साह अवसान पत्र लिखि छन्न प्रपंचिन ॥
जतु गुटिका विच रक्खि दूत करि वेस दिगंवर ॥

लकी. ओज तेज ॥ ४८ ॥ हजारनइति ॥ हंति शिखा लोक-भार ॥ "अर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियां" मित्यमरः ॥ जेव शोभा. पावनी ॥४९॥समातेति ॥ गन समूह. गैन गगन तामें. लैन पंक्ति. उमीर बड़े वैभवके स्वामी. पावनी. अवतंस भूषण विशेष ॥ ५० ॥ ५१ ॥दोहा॥ इतइति॥ मुदिरमेघ ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में दिल्ली के पाट बैठने के अभिप्राय से औरंगजेब के लघु पुत्र आजमशाह का दक्षिण से सेना सजकर दिल्ली पर जाने के वर्णन का नवमा९,मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ सैंतालीस२४७मयूख हुए॥

षट्पात् ॥ आलमसाहइति॥ जतु लाखकी. गुटिका गोली. ताके॥ "जतु:अलक्तः

काबल धर मुक्कलिय आनि अटंकिय रेवापर ॥
उनमत्त होय सरिता उतरि गति सवेग काबल गयो ॥
निद्रित जगाय अद्धिय रजनि आलम प्रतिदल अप्पयो॥१॥
कुंल्लो दे कग्गरहिं छत्र भग्गत सुव भग्गी ॥
अब निवारि निंदरिय पिक्खि पब्बय दव लग्गी ॥
घर फुट्टा जर फुट्टि फुट्टि हिंदुव मिलि आवत ॥
आज़म अनय सिचान पस्त दिल्लिय पारावत ॥
वंधहु प्रपंच मंडहु विहित यह न बेर फिरि आयहै ॥
बिन जतन गये लव लव बहुरि दूजे कलप दिखायहै ॥२॥

[निःश्राणी]

अद्धीके घरियारपैं चर पत्र लगाया ॥
धूजि थरत्थर नाजरूँ अवरोध चलाया ॥
साहबहादुर सैंनसैं बरजोर जगाया ॥
जिन खंधैं सुख निंद ते परलोक पलाया ॥ ३ ॥
जिनकी धाहर चाहतें तिन धाट बनाया ॥
अब उत्तैंही अप्पनाँ नहिं छत्र पराया ॥
यौंसुनि बेगम अप्पनी कर आँचि उठाया ॥
जाकौं कंत कहावते वह बासर आया ॥ ४ ॥
लाय सिलग्गी भक्खरौं तुम निंद लुभाया ॥
यौं सुनि आलम जग्गिकैं अवरोध उठाया ॥
कग्गर बंचि प्रपंचकौं बुधसिंह बुलाया ॥

क्रमिजा" इतिहैमः ॥ रेवा नर्मदा. दल पत्र. अप्पयो दयो ॥१॥ कुल्लयोइति ॥ भग्गत नष्टहोत. निंदरिय निद्रा. सिचान लाकें बाज. पारावत कपोत. "पारावतः कलरवः" इतिहैमः ॥ विहित योग्य ॥ २ ॥ निःश्राणी ॥ अद्धीकेइति ॥ अद्धी अर्धरात्रि. देशीप्राकृत. ताकें चर दूत. (नाजर) याचनी. अंतःपुर में जायवे योग्य नरभेसधारी नपुंसक तिननैं. अवरोध अंतःपुर तासैं. "शुद्धान्तश्चावरोधश्चत्यः परः" ॥ सैंन सयन. तासों. निंद निद्रा ॥३॥ जिनकीइति॥ धाहर सहाय. धाट लोकें ये, ...हा. बासर दिन॥४॥ लाय सिलग्गीइति॥ भक्खर पर्वत. देशीप्राकृत.

नैंन मिलाया नेहसैं भुज भार भिलाया ॥ ५ ॥
बंस सताके बीर तू काहि यौं बिरुदाया ॥
हिंदू भूप हराम है सब फोरि मिलाया ॥
दिल्लीके कुच कुंभपैं कर आजम लाया ॥
जोर जनानैं जारका नहिं जात पचाया ॥ ६ ॥
अब तेरे भुजदंडपैं रसबीर बढाया ॥
बाजीमैं और न रह्या पग्ग आग लगाया ॥
हौरैं भुग्गन दूर है जिनैं जस माया ॥
यौं सुनि राव उछाहकैं कर मुच्छ मिलाया ॥ ७ ॥
मुट्ठि सम्हारी संभरी रस सत्त ७ उडाया ॥
थाई बीर रउद्दका इकैं छक छाया ॥
ज्यौं कंदल कनउज्जके भट संजमजाया ॥
कै गोरी सुरतानपैं साजि कन्ह धंकाया ॥ ८ ॥
ज्यौं जंभासुर जंगपैं सतसत्त सुहाया ॥
कै द्रोणाचल लैनकौं कपिराज कसाया ॥
पीवन पारावार कैं घटजात धुमाया ॥
कै बन सुत्ता बिंटिकैं मृगराज जगाया ॥ ९ ॥
कै काकोदर चंपतैं फनफैल बनाया ॥

तिनमैं. अवरोधउठाया दूर किया. कग्गर पत्र: कैवारकैं. बुधसिंह बुंदी के स्वामीकों. भलाया दिया॥५॥ बंसइति॥ सताके शत्रुशल्यके. जोर पराक्रम. पचाया पाचन किया. दिल्ली मेरे भोगने योग्य स्त्री रूप है;ताके कुच कुंभपैं आजम हस्ताक्षेप कियो चाहत है यातैं जनानेके जार आजमका जार अरे पाचन नहीं होता ॥ ६ ॥ अबइति ॥ बाजी खेल तामैं. पग्ग दाव. भुग्गन भोगिबेकों. हूर अप्सरा. यावनी. माया वैभव ॥ ७ ॥ मुट्ठिइति ॥ खड्गकी मूठ रोष: सत्त सत ७: थाई स्थाईभाव. बीररउद्दका बीररस रौद्ररस का उत्साह अरु क्रोध यह अर्थ. गोरी सुलतानपैं. कन्ह पृथ्वीराज चहुवानका काका ॥ ८ ॥ ज्योंइति ॥ सतसत्त सतसत्र. (इन्द्र) शुक्रप्राकृत. कपिराज हनुमान. कसाया सज्जीभूत हुआ. पारावार समुद्र. ताकों. घट कलस. तासों. जात जन्मैं ऐसे अगस्त्य. धुमाया उत्साह जुक्त भया ॥९॥ कैइति ॥ काकोदर सर्प, ताकों. सापात वारूद. तामैं.

सोर किधौं साबातमैं दव दुंग मिलाया ॥
जमका शृंखल जानिकैं काहि पाव दबाया ॥
यौं सुनि बत्तँ संभरी मन जंग लगाया ॥ १० ॥
सोक सिलग्गा साहका काहि बैन समाया ॥
मो सिर जोलौं कंधपैं सुख अप्प कुमाया ॥
गद्दी ज्याँनपनाहकी हम वीर सिवाया ॥
धर्मछरामी सेर व्है कोऊ न कहाया ॥ ११ ॥
अग्गैं पंडव जित्तिकैं कुरुवंस नसाया ॥
रावन किन्नी रामसौं सोही फल पाया ॥
पापन पक्की होनदै दल होहु सिवाया ॥
ऐंचौ आजम कंठमैं धरि चाप अधाया ॥ १२ ॥
यौं सुनि साह सिराहकैं तजबीज लगाया ॥
सेनानी संभर किया चतुरंग सजाया ॥

॥

बड्डे प्रात पयानकौ फरमान चढाया ॥ १३ ॥
जंग नग्गरौं नद्द व्है धर काबल छाया ॥
सिंधू राग रनंकिया चढि सोर सिवाया ॥
डेरौं डेरौं सज्ज व्है नर बाजि कसाया ॥
जालग तीजे जामका घग्गियार बजाया ॥ १४ ॥

दुंग दमंग (चिनगी). जानि इच्छा पूर्वक ॥ १० ॥ सोकइति ॥ सिलग्गा प्रज्वलित भया. समाया सामित किया. मोसिर मेरो मस्तक. कंधपैं कांध पर. तोलौं यह शेष. कुमाया संचय किया. ज्यान प्राण. सबनके तिनके. पनाह रक्षक. ऐसे आप. तिनकी है यह शेष. ज्यान पनाह ए दोऊ यावनी लज्ज हैं. सिवाया सब सों सिवाय. सेर सिंह. यावनी ॥ ११ ॥ अग्गैंइति ॥ पक्की प्रारब्धकी सिद्धि. दल सेना. होहु यह भू धातुको लोट् लकार के प्रथम पुरुषके भवतु प्रयोग को प्राकृत है. अधाया अतृप्त ॥ १२ ॥ यौंइति॥ सिराह प्रशंसा ताकों. कै करिकैं. आम वडी सभा. तजबीज देशीप्राकृत. प्रारंभकी रचना विशेष. सेनानी सेनापति. संभर बुधसिंह. फरमान हुकम ॥१३॥ जंगइति ॥ रनंकिया यह शब्द को अनुकरण. कसाया सज्जभया. जाम प्रहर ॥ १४ ॥ केइति ॥ घेरों घेरे इ-

के गज घेरों घल्लिकैं चेरों गरदाया ॥
काहू व्याज प्रपंचकैं बिरुदाय मिलाया ॥
अंग रुमालों मंजिकैं रजरंग उडाया ॥
द्वै द्वै मनके मानके संजाव खिलाया ॥ १५ ॥
के जल देगों पायकैं मुख लोभ लगाया ॥
अग्गैं रक्खि गजीनकों बिसवास बढाया ॥
झंपि महाउत कंधपैं गति बंदर आया ॥
जंगी हौदन मंडिकैं गुड नद्ध बनाया ॥ १६ ॥
घाय घरयारी घोरज्यों घलि घंट झिलाया ॥
चाप तुपक्कों आदिकैं सब हेति सजाया ॥
बंधि बरत्तों सज्जकैं बड वाक लगाया ॥
फोजों नायक भार ए सिर तेरे आया ॥ १७ ॥
यों कहि कंधा थप्पिकैं रन रंग रचाया ॥
जंगी अंदुक डारिकैं आलान छुराया ॥
वारी बाहिर बाकतैं रचि डाक डगाया ॥
केक मतंगों तुंगके भुजदंड झुकाया ॥१८॥
मेघाडंबर के कसे सिर अंबर लाया ॥
केक हवद्दों सज्जव्है गल्ल गज्ज मचाया ॥
यों नभ अंबर अभ्र भू १०००परिमान गिनाया ॥

स्ती के अनुचर तिननें. व्याज कपट. रुमाल वस्त्र के खंड विशेष. तिनकरि. संजाव सय्याव. ताके सींग. तथा हलवा. खिलाया भक्षणकराया ॥ १५ ॥ केइति॥ देग देशीप्राकृत. बहुत बडे पात्र विशेष तिनकों. गजी हस्तिनी तिनकों. गति तरह. बंदर वानर ताकी. गुड हस्ती की सिलह तिनकरि. नद्ध बंध ॥१६॥ घायइति ॥ हेति आयुध. बरत्त रस्से तिनकरि. बड बडे. वाक वचन ॥ १७ ॥ योंइति ॥ अंदुक जंजीर. आलान बंधयेकोखूंटा. तथा खंभा "आलानं बंधनस्तंभः" इतिहैमः ॥ वारी हस्तीको ठान ताके "वारी तु गजबन्धभू" रितिहैमः॥ तुंग ऊंचे ॥ १८ ॥ मेघइति ॥ मेघाडंबर छायाघारे होदा. ताके अंबाबाड़ी.

हत्थी आलमसाहके रन एह सजाया ॥ १९ ॥
लक्ख१०००००तुरंगौं लैनपैं वर साज बनाया ॥
देत खलीनौं दोरपैं नचि कंध नमाया ॥
जंग पलानौं डारिकैं कसि तंग मिलाया ॥
घोर घमंकी पक्खरौं छोनीतल छाया ॥ २० ॥
रंग बिरंगे राह के गजगाह लगाया ॥
छोरि दुवग्गौं ठानतैं चर बाहिर लाया ॥
तुक्कि मलंगौं तुंगपैं रवि रुक्कि लुभाया ॥
तोप हजारा१०००तीरकैं चहकात चलाया ॥ २१ ॥
डारि दवाली बीर जे सजि जंग लुभाया ॥
साहबहादुर सज्ज ह्वै मंच बाहिर आया ॥
बारनपट्ट अरोहिकैं फरमान लगाया ॥
कुंच नकीबो बुल्लिकैं हरवल्ल बढाया ॥
एते मान विहानका घरियार बजाया ॥
पाय रकाबौं मंडिकैं चढि बीर चलाया ॥
छोनि मचक्की भारकैं फन नाग डगाया ॥
चौंके दिग्गज चिक्करैं उर कल्प अमाया ॥ २२ ॥
ध्यान समाधी छोरिकैं मन चित्र बढाया ॥

के कितेकनपैं. नभ शून्य०. अंबर शून्य०. अभ्र शून्य०. भू एक१. ऐसे हजार१००० ॥ १९ ॥ लक्खइति ॥ लैन पंक्ति. तिनपैं. खलीन लगाम तिनकों ॥ २० ॥ रंगइति ॥ राह रीति. तिनकरिकैं. दुवागौं दोऊ तरफ बंधके अगारी के रस्से तिनकों. तुक्कि तुलितुलिकैं. तुंग ऊंचा. तिनपैं. तोपहजारा तोपनको हजार. हजार १००० तोप यह अर्थ. तीरकैं तीर. उनको निवाला बारूदकी थैली अरु गोला सो उनमें डारिकैं. चहकात चहकनों. चरखनके शब्दको अनुकरन ॥२१॥ डारिइति ॥ दवाली मेखलाकों. देशीप्राकृतसैं. बारनपट्ट मुख्यवारन. हस्ती तापैं ॥ २२ ॥ एतेइति ॥ कल्प प्रलयकाल ॥ २३ ॥ ध्यानइति ॥ समाधि समाधि

तद्दिन धूरि बितानके घन भान पिधाया ॥
सारद पुण्णिमका ससी जिम बारद छाया ॥
दक्खि धरित्ती पक्खरों इक ओघ लखाया ॥ २४ ॥
सेलों अंबर ढंकिया नभचार रुकाया ॥
झंड बात झपेटकैं फीलों फहराया ॥
तारा उत्तरि पोदकी सुभ सौंन बताया ॥
दक्खिन भारद्धाजनैं द्रुत लाभ दिखाया ॥ २५ ॥
यों दरकुंच अनीकनैं लाहोर निराया ॥
पंजाबी दल बुल्लि कैं कछु तत्थ मिलाया ॥
आलमसाह सिपाह यों सजि सेर सिवाया ॥
दिल्लीके सिर दावपैं करि चाव चलाया ॥ २६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पुके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे दूतद्वाराबहादुरशाहान्तिकौरंगजेबपञ्चत्वोदन्तप्रापण १, सेनापतीकृतबुधसिंहससैन्यबहादुरशाहलवपुरागमनवर्णनं दशमो मयूखः ॥१०॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥२४८॥

वारे. तिननैं. चित्र अथिरज. पिधाया अन्तर्ध्यान हुआ. पुण्यम पूर्णिमा. वा दिवस. बारिद मेघ. ओघ समूह ॥ २४ ॥ सेलोंइति ॥ नभचार पक्षी. बात पवन. फीलों फील[हस्ती].यावनी. तिनपैं. तारा बाम दिशसे दक्षिण दिशा काली चिरी आवे ताकों कहिये. पोदकी काली चिरी. सौंन शकुन.. भारद्वाज लोकें रूपारेल तथा कुत्तावहा सोनचिरी ॥ २५ ॥ यों इति ॥ निराया निकटलिया. पंजाबी पंजाबका. दल कटक. बुल्लि बुलाया. तत्थ तहां. सेर सिंह. यावनी. चाव चाह [उत्साह] ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र में दूत द्वारा बहादुरशाह को औरंगजेब के मरने की खबर मिलना, बुधसिंह को सेनापति करके सेना सहित बहादुरशाह के लाहोर आने के वर्णन का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ अड़तालीस २४८ मयूख हुए ॥

॥ गीर्व्वाणभाषा ॥

लाहोरनामपुरतोऽपि कृते प्रयाणे,
मेघानुकारकबहादुरशाहचम्वा ॥
आयातमाशु दलमीप्सितमागरातो
ऽज़ीमस्य भूतयुतभाविविदः स्वसूनोः ॥ १ ॥

[उपजातिः]

श्रुत्वाऽवरङ्गं कृतकायहानं, मया समागत्य मनोजपुर्य्याः ॥
तत्रत्यभूतिर्द्रविणादिरात्ता दुर्गं च सज्जीकृतमागरायाः ॥ २ ॥
स्वास्थ्यं गृहाणेति विचार्य वप्तर्जहीहि चाचार्जितचक्रचिन्ताम् ॥

गीर्वाणभाषा ॥ वसंततिलका ॥ लाहोरेति ॥ मेघानुकारकबहादुरशाहचम्वा मेघाऽनुकृतवत्या बहादुरशाहसेनया लाहोरनामकपुरीसकाशात् प्रयाणे कृते सति आगरात आगरानामनगरसकाशात् भूतयुतभाविविदः अतीतभविष्यद्भानवतः अजीमस्य रूपनगरराज्ञो भागिनेयस्याजीमनाम्नः स्वसूनोः स्व शब्देन बहादुरशाहबोध्यस्तस्य सूनोः पुत्रस्य संबंधि आत्मन ईप्सितं दलं पत्रं आशु शीघ्रं आयातं प्राप्तम् ॥ १ ॥ उपजातिः॥ श्रुत्वेति ॥ अवरंगं मत्पितामहं कृतकायहानं त्यक्तशरीरं 'ओहा त्यागे' इत्यस्मात् भावे ल्युट् ॥ 'युवोरनाकौ' वित्यनादेशः॥ मया कर्त्रा मनोजपुरी लोके मैनपुरी तस्याः सकाशात् आगरापुरं समागत्य संप्राप्य तत्रत्या तत्र भवा या द्रवणादिभूतिः द्रव्यादिकमैश्वर्यं आत्ता गृहीता तस्या दुर्गं च सज्जीकृतं सन्नद्धीकृतम् ॥ २ ॥ स्वास्थ्यमिति॥ वप्तः हे पितस्त्वं इति मल्लिखितं विचार्य स्वास्थ्यं स्वस्थतां गृहाण अङ्गीकुरु. चाचार्जितचक्रचिंतां चाचा लघुपितृव्यक आजमशाहनामा तेन आर्जितं संचितं यच्चक्रं सेना तांचिन्तां । जहीहि त्यज । अत्र युद्धकार्थे मया अपि प्रयत्नो वि-

॥ भाषानुवाद ॥

लाहोर नाम नगर से मेघ का अनुकरण करनेवाली बहादुरशाह की सेना प्रयाण करते ही आगरा नामक नगर से भूत भावि को जाननेवाले अपने पुत्र अजीम का चाहा हुआ पत्र शीघ्र आया ॥ १ ॥ अवरंग के शरीर की हानि सुनकर मैंने मैनपुरी में आकर यहां का वैभव धन आदि ले लिया और आगरा के गढ को भी सज्जीभूत कर लिया है ॥ २ ॥ हे पिता! इस मेरे लिखे हुए को विचार कर निश्चिंतता धारण करो और मेरे काका आजमशाह की एकत्र कीहुई सेना की चिन्ता को छोडो । यहां मैंने भी युद्ध का उपाय एव-

विरच्यतेऽद्यापि मया प्रयत्नः प्रलक्ष्यते चाऽऽजमशाहपन्था: ॥ ३ ॥

[इन्द्रवज्रा]

आगम्यतां द्रागवतापि विद्वन् सेनान्वितेना बुन्दिनृपेण साकम् ॥
न्यस्याद्य शुद्धांतमुखां विभूतिं जाल्मो रिपुर्जाजवसीम्नि जय्यः ॥४॥

(शुद्धप्राकृतभाषा)

(गीतिः)

इअ पत्तं सोऊणं अईमलिहिअं जयासमेण समम् ॥
साहेबहादुरजोहा हारिसमग्गा जिईसवो हूआ ॥ ५ ॥
जह सूगसाणखित्ते वुट्ठो मेहो पक्कसालिम्मि ॥
अहव दिणयरो उइओ निसादिस.मूढविहलपहियगणे ॥६॥
वा रोअम्मि असज्झे मिलिओ धन्नंतरी कुआइसमम् ॥

रच्यते क्रियते. च पुनः आजमशाहपन्थाः क्व जजशाहस्य मार्गः प्रलक्ष्यते विलोक्यते ॥ ३ ॥ इन्द्रवज्रा ॥ आगम्यतामिति ॥ हे विद्वन् पितः! त्वया अपि बुन्दीन्द्रेण बुधसिंहेन सेनान्वितेन साकं सह द्राक् शीघ्रं आगम्यतां शुद्धांतमुखां विभूतिं खोजनादिपरिवारं न्यस्य स्थापयित्वा जाल्मः अविचार्यकारी एतादृशो रिपुः आजमशाहः जाजवसीम्नि जाजवनामनगरसीमायां जय्यः जेतुं शक्यः ॥ ४ ॥ शुद्धप्राकृतभाषा ॥ गीतिः ॥ इअइति ॥ इति पत्रं श्रुत्वा अजीमलिखितं जयाशयेन समम् साहबहादुरयोधाः हर्षसमग्रा जिगीषवो भूताः ॥ ५ ॥ यथा शुष्यमाणक्षेत्रे वृष्टो मेघः पक्वशालिके ॥ अथवा दिनकर उदितो निशा दिङ्मूढविह्वलपथिकगणे ॥ ६ ॥ वा रोगे असाध्ये मिलितो धन्वन्तरिः सुधया समम् ॥

॥ भाषानुवाद ॥

लिया है और आजमशाह का मार्ग देखता हूं ॥ ३ ॥ हे बुद्धिमान् पिता! आप भी बुंदी के राजा सेनापति बुधसिंह सहित शीघ्र आओ. जनाना आदि वैभव और खोजन आदि परिकर को यहां रखकर अविचारी दुष्ट शत्रु (आजमशाह) को जाजव नामक नगर की सीमा में जीतने को समर्थ है ॥ ४ ॥ अजीम का लिखाहुआ यह पत्र सुनकर जय के आशय के साथ बहादुरशाह के वीर हर्ष से पूर्ण जीतने की इच्छावाले हुए ॥ ५ ॥ जैसे पकेहुए धान्य के सूखते हुए खेत पर वर्षा होवे तैसे वा रात्रि के दिशा भूले हुए व्याकुल पथिकों के समूह में सूर्य उदय हुआ ॥ ६ ॥ अथवा रोग के असाध्य होने पर अमृत के साथ धन्वन्तरि मिले. वा मुरदा के शरीर में प्राण्य प्रवेश करनेवाले प्राण फिर आये ॥ ७ ॥

अहवा कुणावसरीरे अव्वो पच्चागया असुणो ॥ ७ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[षट्पात्]

किय उछाह इम साह वंचि कग्गर चूरासम ॥
बुल्लि नृपति बुधसिंह कहयो तद्दुदंत बिहित क्रम ॥
इक्क१इक्क१संजोग होत जिहिँविधि एकादस११ ॥
इम अजीम गढ लेत दइव दीसत अप्पन बस ॥
अल्लाह मह्र सुचक्क पहै अब न बीच अोर भय अटक ॥
आगग अोर पद्धति उचित क्रम सवेग हंकहु कटक ॥८॥
यह प्रपंच अनुकूल पिक्खि बुधसिंह चमूपति ॥
किय फोजन दरकुंच मंडि व्यूहन बिदग्ध मति ॥
सेन मध्य सुरतान हल्ल नरनाह हरोली ॥
सुवन साहके तीन३वाम दक्खिन चंदोली ॥
जयसिंह अनुज कूरम विजय लघुवय लखि नृप संग लिय॥
इहिँ क्रम उपेत दव्वत अवनि चलि सवेग चतुरंगिनिय॥९॥
काकोदर कलकलत फनन फुंकरि पलटावत ॥
कद्रू हिय अकुलात लखत पुत्तहिँ लचकावत ॥
त्यों विनता उर तिक्ख पुव्व चिंतत दासीपन ॥
यह कौतुक अदभूत फैलि कस्यपघर फोजन ॥
संकर समाधि तजि तजि सहज कारन लखत बिचार करि॥

अथवा कुणाशरीरे अहह प्रत्यागता असवः ॥७॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा ॥ षट्पात् ॥ कियइति ॥ चूरासम साम सहित. बुल्लि बुलाय. तद्दुदंत वा अजीम को वृत्तान्त. अोर तरफ. पद्धति मार्ग. "सरणी पद्धती पदी" इत्यमरः ॥ ८ ॥ यहइति ॥ व्यूह रचना विशेष. सुवन पुत्र. मोजदीन १ रफीउलकदर२ अख्तरयिलंद ३. उपेत सहित ॥ ९ ॥ काकोदरइति ॥ काकोदर यहां सर्प. कद्रू नागमाता. विनता गरुड़माता. पुव्व पहिलो दासीपनो. कद्रूनें याकों दासी करीहो यह भाव. नवमालतिवृत्त नवीन युद्ध साधा को कारन. इनहि इनकों विचकों. तहकि सों चौकिकैं. गषरि पार्वती।१०

नवमाल हेतु कहि कहि इनहिं गहकि मोद बाढत गवरि ॥१०॥
मिजल इक्क१सहस्सन अग्ग चोकी त्रि३सहस्सन ॥
अरिन छन्न उपचार प्रबल बिस आदि परक्खन ॥
निधि तृन अन्न निधान मग्ग मैदान मुकामिक ॥
खग मृग तरु उद्यान जात सोधत इम जामिक ॥
प्रतिदिस जिहान खलभल परिग मनहुँ वज्र भुव फारिहैं ॥
पापिन निदान आय कि प्रलय छलि समुद्द हद छोरिहैं॥११॥
कमठ भंग गिलि अंग प्रान नारिन परि बुड्डिय ॥
भिरि हमल्ल भुव भार पिट्ठि पावक घसि उड्डिय ॥
झगि दमंग बढि झाल जात कच्छप पतंग जरि ॥
दरित टारि दंतुल्लिय टिकत सूकर तुंडाकरि ॥
आतंक सुरन उतपात इहिं कंपत जय कारन कह्यिय ॥
बुधसिंह मनहुँ आगम बिजय अकूपार आहूति दिय ॥१२॥
अहि कच्छप भूदार दुहिन दिग्गज दिगपालक ॥
भूलोक रु तिम भुवर बहुरि सुरलोक बिसालक ॥
इन समन्त अतलादि तिमहि सागर इत लासहिं ॥
इक्कहिं परि आयास अवर आतंक उपासहिं ॥

मिजलइति ॥ अग्ग अगारी. त्रिसहस्सन. तीन हजारन ३००० फौ. अरिन शत्रुनके. छन्न गुप्त. मैदान चोगान. यावनी. मुकामिक मुकाम संबंधी. खग पक्षी. मृग पशु. उद्यान बन. पापिननिदान पापी बहुत बढे तिनके कारन सों. कि मनों. हद सीमा ॥ ११ ॥ कमठइति ॥ नारिन नाडिनमें. पतंग कीट पतंग तुल्य. यहां जात ऐसो वर्तमान प्रयोग कियो यातैं एक कच्छप जरत विधाता दूजो बनावत सो जरत तीजो बनावत ऐसे जानिये. दरित भीत. "दरितश्चकितो भीतः" इतिहैमः॥ सूकर बराह. अकूपार कच्छपराज. "अकूपारः कूर्मराजे महोदधौ" इतिमेदिनी ॥ १२ ॥ अहिकच्छपइति ॥ अहि शेष. कच्छप भूमिस्तंभक. भूदार बराह. "क्रोडो भूदार इत्यादि" इत्यमरः ॥ दुहिण ब्रह्मा. "धाताब्जयोनिर्द्रुहिणः" इत्यमरः ॥ भुवर भुवर्लोक. अतलादि अतलको आदि देकैं सातों ही तले लोक. इक्कहि इनमैंसों एकको ब्रह्माको तो. आयास भ-

संकित बिनास धुज्जत सकल चकित चेत भूतन भजिय ॥
प्रिय जिय इतेन नारिन परिग रटन नह नारिन तजिय ॥ १३ ॥
इम अनीक दरकुंच आय डत्तार बृंदावन ॥
संभरपति बुधसिंह मंत्र मंडिय प्रपंच मन ॥
रानिय गनाउरि आदि अप्पन अंतउर ॥
कामबिपिन तज बीच तत्थ रक्खिय सुद्धातुर ॥
सजि कुंच बहुरि आलम सहित नृपति आय अक्कबर नगर ॥
मिलतहि अजीम संबोधि मुद जटित पिक्खि बीरन जगर ॥ १४ ॥
तेरीबेर अजीम न्याप रट्ठोरि गहिय दुख ॥
तेरीबेर अजीम थाल बज्ज्यो सु सबन सुख ॥
तेरीबेर अजीम पट्ट छिड्डिय चढिपानी ॥
तेरीबेर अजीम जन्यौं ओग न तुरकानी ॥
इम डहिं मिसहि छंडिय अधिप सब दल दुग्ग सम्हारि लिय ॥
मिलि सुतहिं साह मंडिय महर कहि तुम विजय प्रपंच किय ॥ १५ ॥
कछुक काल रहि तत्थ सेन पिक्खिय सेनापति ॥
दल सारध दुवलक्ख२५००००तोप हज्जार१०००बिबिध तति ॥
सवालक्ख१२५०००तुक्खार जंग पक्खर जिन्ह डारिय ॥
दुवरदीनन वर वीर दस्सासि गज्ज गाग बढारिय ॥

भ. प्रजा फेर पनाचरकों. अवर ओर. (क्रम बिना). भूतन देहधारीनके. भजिय भाजे. जिय जीव. इतैं इत. ये काहे तिनके. नारिन नाडनमैं. परिग परे. नारीन नारी स्त्री. तिन संबंधी ॥ १३ ॥ इमइति ॥ अंतेउर अंतहपुर. कामबिपिनैं कामवन. सुद्धातुर अंतउरको विशेषण. संबोध्यो. मुद मोदमों. जटित जर. जगर कवच. "जगरः कवचोऽस्त्रियाम्" इत्यमरः ॥ १४ ॥ तेरीइति ॥ रट्ठोरि रूप नगरके राजा मानसिंहकी बेटी. नगी जाता तामैं. दुःख गर्भ संबंधी. चढि चल्यो. वही रट्ठोरि तुरककों दई. यातैं कह्यो. महर कृपा. पावनी ॥ १५ ॥ कछुकइति ॥ सेनापति बुधसिंहनैं. सारध (सार्द्ध) अर्ध सहित दुव लक्ख २५०००० अढाई लाख यह अर्थ. बिबिध अनेक प्रकार. तति पंक्ति. तुक्खार घोर. जिन्हैं

इभ सहँस इक१०००खैंचत निगड बहु निसान फहरानि बनि ॥
इम सब सम्हारि बुंदिय नृपति प्रति जवनेस प्रयान भनि ॥१६॥

॥ दोहा ॥

अंतहपुर धन आदि सब, राज बिभव रखि तत्थ ॥
चंबक ढक्क बजिनग बहुल, संगर पढन समत्थ ॥ १७ ॥
अप्पन दल रु अजीम दल, सब एकत्त सम्हारि ॥
कारिय कुंच तजि आगरा, गवन जाजवगारि ॥ १८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे अवरोधकृतवृन्दावनबुधसिंहावरोधबहादुरशाहागरपुरागमनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितः एकोनपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २४९ ॥

दोहा—सेचक फग्गुन साह मरि, इन सुनि मधु अवदात ॥
आवत लिखे मास दुवर. अब आपाढ प्रभात ॥ १ ॥
आजम कछुक बिलंब किय, साहबहादुर भाग ॥
दक्ष निदाहि आतप दिनन, आवत सुव अनुराग ॥ २ ॥
तपन जेठ दिनकर कुमहु, आजम कटक दुरंत ॥

जिनमैं. दुवदीनन दोऊ दीन हिंदू मुसलमान. तिनके. इभ हस्ती. निगड जंजीर. फहरान फरकनों ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अंतहपुरइति ॥ तत्थ तहां [आगरामैं] चंबक. वाद्यविशेष. बहुल घने. संगर युद्ध ताकों ॥१७॥ अप्पनइति ॥ स्पष्ट ॥१८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में स.ग. में बुधसिंह के जनाने को वृंदावन में रखकर बहादुरशाह के आगरे आने के वर्णन का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ उनचास २४९ मयूख हुए ॥

सेचकइति ॥ सेचक कृष्णपक्ष. फग्गुन फाल्गुन मास संबंधी तामैं. साह औरंगजेब. मरि मरयो. इन या आलमशाहने. सुनि सुन्यो. मधु चैत्रमास ताके. अवदात शुक्ल पक्षमैं ॥ १ ॥ २ ॥ तपनइति ॥ दुरंत कष्टसों जाको अंत आवै ऐसो. पंगु जयचंद्र. कन्नौज नगरको राजा राठौर, पृथ्वीराज चौहानको प्रतिपक्षी, अगैं बारहसै अडतालीस १२४८ के साल विद्यमान हो. सो जानिये

चलत पंगु जयचंद्र जिम, वसुधातल दव्वंत ॥ ३ ॥
इम पत्तो ग्वालेरपुर, आजम विभव उपेत ॥
सजि किल्ला वनितादि सब, रक्खय तत्थ निकेत ॥४॥

॥ षट्पात् ॥

अग्रज अवरंगीय साहदारा अभिधानी ॥
ताकी तनया व्याहि लई आजम अभिमानी ॥
यह अग्गैं इक्कबेर पकरि बंधी मरहट्टन ॥
तब अनिरुद्ध नरेस जित्ति आनी भुजदंडन ॥
दीदारबक्खस जाके उदर ताहि नगर ग्वालेर धरि ॥
उत्तैं उफान सागर उपम आयो आजम कोपकरि ॥ ५ ॥
अकबरपुर इन तजिय तजिय ग्वालेरनगर उन ॥
ए दक्खिन सम्मुह रु वेसु उत्तरपर आरुन ॥
इम आवत दुव कटक मिले जाजव दिन अत्थैं ॥
रहि मुकाम वह राति कलह उग्गतरवि कत्थैं ॥
दुव २ दल प्रपात सोहत सहज मनहुँ सिंधु बीचिन भारिग॥
बद्दल उदीचि आवाचिके प्रबल बात भेट कि परिग ॥ ६ ॥

याके सेन बहुतही. अस्सी लाख घोर है, यातैं सेनाके बाहुल्यमैं वाकी उपमा दीनी. दव्वत दाबंत ॥ ३ ॥ इमइति ॥ पत्तो प्राप्त भयो. उपेत सहित. किल्ला ग्वालेरपुरको. वनिता स्त्री. तिनकों आदि देकैं सब वैभव. निकेत स्थान ॥४॥ षट्पात् ॥ अग्रजइति ॥ अग्रज बडा भाई. अवरंगीय अवरंगशाहको. साहदारा अभिधानी दाराशाह नामक. तनया पुत्री. यह आजमकी स्त्री. अनिरुद्ध बुंदीका राजा बुधसिंहको पिता तानैं. ताहि वा अपनी स्त्रीकों ॥ ५ ॥ अकबरइति ॥ अकबरपुर आगरा. इन बहादुरशाहनैं. उन आलमशाहनैं. ए बहादुरशाहकी सेनाचारे. रु अरु. वे आजमशाहकी सेनाचारे. सु पादपूर्णार्थ है. आरुन मसाकन. जाजव आगरा अरु ग्वालेरके बीचमैं ग्राम विशेष तहां. कलह युद्ध. कत्थैं कहैं. प्रपात प्रवाह, बीचिन बीची (तरंग) तिनकरि. भारिग भरयो. बद्दल मेघ. उदीचि उदीची (उत्तरदिशा) ताके. आवाचिके दक्षिण दिशा ताके. बात पवन ताकरि. कि मनो ॥ ६ ॥ दोहा ॥ सक्कइति ॥ जुग च्यार ४. खट छै ६. सत्रहसैं चौसठि १७६४. आसित कृष्ण पक्षकी ॥ ७ ॥ पद्धतिका ॥ दैदलइ-

॥ दोहा ॥

सक चउ४खट सत्रह१७६४समय, असित तीज३आषाढ ॥
दिय मुकाम दुव दलन इम, मिलि आजव गहि गाढ॥७॥

(पद्धतिका)

दै दल मुकाम बुंदिय नरेस, किय मंत्र पिक्खि अरि दल बिसेस
रतिवाह वाह रोकन बिचारि, निज दल प्रबंध बंधिय निहारि ।८।
पक्खरैत सहँस द्वादस१२०००प्रबीर, सजि थप्पि सेन बाहिर सधीर
निज भट रनपंडित जैत नाम, तिनमाँहि मुख्य करि रक्खि ताम।९।
यह बैरिसल्ल कुल्ल भव असंग, निज बंधु जैत दिय सोधि संग ॥
कहि नेह बचन सनमानकीन, अब काका दिल्ली तव अधीन १०
जो रचहिँ मग्गु रतिवाह जाल, तो झेलि चास भेजहु उताल ॥
इम भाखि छबीनाँ किय तयार, हय जैतसंग द्वादसहजार१२०००
दल परिधि जाम तिन चक्र दिन्न, क्रम इम प्रबंध चहुवान किन्न॥
पुनि कहिय नीति साहहिँ प्रबोधि, सुख सैन करहु अब काल
सोधि ॥ १२ ॥
निस जाम रहत निंदहिँ निवारि, पिक्खहु बिहान रन भट प्रचारि॥
सुनि साह सैन मंडिय सतोस, भूपाल बुद्ध भुज दुव भरोस ॥१३।
सब साह हसम डरन सम्हारि, नृप सिबिर आय कटिपट निवारि

ति ॥ रतिवाह रात्रि समय अचानक आय लरै सो युद्ध. ताके. वाह वार तथा प्रहार. प्रबंध रचना विशेपसों फोजको राखनों. बंधिय बंध्यो. निहारि देखिकैं ॥ ८ ॥ पक्खरैतइति ॥ जैतनाम जैतसिंह नामक. बैरीशल्लोत हाडा फलोधी नगरको अधिराज. तिनमांहि वे छबीनाके बारह हजार १२००० पक्खरैत सेनाके बाहिर गिरदकी चौकी फिरवेको भेजे तिनसें. ताम तहां ॥ ९ ॥ यहइति ॥ यह जैतसिंह. भव भयो. बंधु सपिंड कुलमें. सोधि बिचारिकैं ॥ १० ॥ जोरचहिंइति ॥ रतिवाह रात्रिको युद्ध. ताको. चास खबर ॥ ११ । दलइति ॥ परिधि गाद [चक्र मंडल फिरना]. सैन सयन [सोवनों] ॥ १२॥ निसइति । जाम एक प्रहर. निंदहि निद्राकों. बिहान प्रातःकाल. सैन सयन. सतोस तोस प्रसन्नता ता सहित ॥ १३ ॥ सबइति ॥ हसम वैभव. देशीप्राकृत. खिघर

लगि सबहि फौज नायब बुलाय, सहुझाय कहिय आगम सुनाय॥१४
अग्गौं प्रमाद समुपत सुत्त, पांडव दल मान्यो द्रोन पुत्त ॥
जिस सुत्त साह गोरिय अनीक, कइमास इक्क किय कांदिसीक॥१५
तसमात असन अलपहि विधाय, गज्जहिं सगरत सोवहु सुभाय ॥
करि तीन३ स्वस्व परिकर विभाग, कट्टहु त्रि३ जाम जय रक्खि
गाग ॥ १६ ॥

गज हयन देहु विश्राम पंथि, श्रम पिक्खि अलप आहार संथि ॥
बहु गांजि सज्जहु हय गज बहोरि, जंगा पत्राल संधान जोरि॥१७
निस रहत जाम ताजे तजि निकाय, पुनना सु रक्खावन देहु पाय।
बुल्लिय विदग्ध तोपन चलाक, कांह विंटि दलहिं मंडहु कजाक
पंद्रहहजार १५,००० पायक तुरंग, आरोपि साह तोरन अभंग ॥
इम मंडि व्यूह जामिक अनूर, चहुवान असन किन्नों सुरूप॥१९॥
हुन पुनि अग्गहि हैवर दिवान, गयडिग फिरि किन्नों सावधान ॥
इम सिबिर पिक्खि निज थान आय, सुख सयन किन्न नय बल
सुभाय ॥ २० ॥

अपना शिबिर में आनी सेना को डेरा नहीं. कहिय कहत्यो. आगम स्थान करि. नायब साहिब. गावनी. आगम आज्ञा ॥ १४ ॥ अग्गौंइति ॥ प्रमाद गाफिलता करि. समुपत मलिन. सुत सुत. जांक बुरा. द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ताने. साहगोरिय गोरी जाति को पठान शाहबुद्दीन वादशाह अलाउद्दीन नामक ताकी. कयमास पृथ्वीराज चहुवानको मंत्री नाम. कांदिसीक भयतों भाजिबेवारो. "कांदिशीको भयद्रुत." इत्यमरः ॥ १५ ॥ तसमातइति ॥ असन भोजन. अलपहि थोरोही. विधाय करिकै. सज्जहु सज्जी धुराहो. स्वस्व अपने अपने परिकरनिके. त्रिजाम तीन प्रहर. जय विजय ताकों. राग प्रीति ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ निसइति ॥ जाम इक प्रहर. निकाय स्थान "निकाय्यो भवनं कुयः" इतिहैमः ॥ बुल्लिय बुलाये. विदग्ध चतुर ॥ १८ ॥ पंद्रहइति ॥ पायक पयादे. तुरंग असवार. यहां उपादान लक्षणानों यह अर्थ जानिये. आरोपि स्थापन करिके. तोरन बाहिरको दरवज्जा तहां. व्यूह रचना विशेष. ताकरिकै. जामिक पहरायत. असन भोजन. अनूर अनाहति. यहां चहुवानको विशेषन ॥ १९ ॥ हैवर हय. दिवान बुधसिंहको उपपदं ॥ २० ॥ इहइति ॥ थपिर थापि. निसान

यह सुनि अनीक व्यूहन विवेक, आजमहु थप्पि जामिक अनेक ॥
इम किय मुकाम दुवदल अमान, दुवघाँ निघात बज्जत निसान॥२१॥
रन माहताब उद्दित दुरओर, चकि चौंकिपरत जिन लखि चकोर ॥
बढि दुहदल चंद्रजोतिनविकास, पुरिमास मयंक बहुविफुरिपास॥२२॥
दुहुँओर बाजि गज रव दुरंत, दुवसेन उच्च डेरन दिपंत ॥
दुहुँओर सूर जामिक दुरूह, सजि सजि अनेक विचरत समूह॥२३॥
दुहुँओर लखत प्रछन्न दूत, दुव दल नकीब आरव अभूत ॥
भंडन भपट मच्चत दुरओर, सिंधुव अलाप दुवदिस सजोर॥२४॥
दुहुँओर करत जामिक दुराव, दुहुँओर छवीनाँ लखत दाव ॥
दुहुँओर बाजि फाँदत दुरबंध, दुहुँओर दंति गज्जत मदंध ॥ २५ ॥
दुहुँओर सुद्ध सेलन चमक्क, दुहुँओर घंट पक्खर घमक्क ॥
दुहुँओर सूर हूरन उछाह, दुहुँओर होत हरि हर इलाह ॥ २६ ॥
दुहुँओर सुतर जंघाल जात, दुहुँओर चास पल पल दिखात ॥
दुहुँओर करत बहुरीति दान, दुहुँओर होत विधिजुत विधान।२७।
गुन३जाम रत्ति हुव इम अतीत, गहकिय सु जंग आरंभ गीत ॥
निद्दहिँ निवारि बुंदिप नरेस, करि नित्य वंदि प्रभु द्वारिकेस।२८

वाद्यविशेष ॥ २१ ॥ रनइति ॥ माहताब यावनी. हवाई विशेष. जाको प्रकाश चंद्रिका के माफिक होत है सो. दुरओर दोऊ तरफ. दुदल दोऊ दलनमैं. चंद्रजोतिन चंद्रज्योति नामक हू हवाई विशेष होत है. तिनको विशेष प्रकाश. पुरिमास पूर्णिमासी ताके. मयंक मृगांक(चंद्रमा). विफुरि विस्फुरित भये. पास समीप ॥ २२ ॥ दुहुओरेति ॥ रव शब्द. दिपत सोहत. दुरूह ऊहा तर्कना तासैं दुखसौं आवैं ऐसे ॥ २३ ॥ दुहु०लखतइति ॥ प्रच्छन्न गुप्त. आरव शब्द. अभूत अद्भुत॥२४॥दुहु०करतइति॥दुराव पैलनको न दीखैं ऐसो गुप्त चौकीसैं छिपनों. बाजी घोरे. फांदत कूदत. दुबंध दोऊ अगारी पिछारीके बंधन छोरैंहू. दंति दंती:[हस्ती]॥२५॥ २६ ॥ दुहु०सुतरइति ॥ सुतर ऊँट. यावनी.जंघाल अति वेगवान्. "जंघालोऽतिजवस्तुल्य"इत्यमरः ॥चास खबरि ॥२७॥ गुनइति ॥ गुन तीन३. जाम प्रहर. रत्तिरात्री. अतीत व्यतीत ॥ २८ ॥२९॥ सुनिइति ॥ उवाच

जामिकन साह आलम जगाय, बुधसिंह तबहि हुव लिय बुलाय ।
कहि उचित मंत्र मंडहु नरेस, अब नहिं बिलंब हुव सब असेस ॥२९॥
सुनि नृप उवाच नय कछु सनर्म, अब होत जंग बिधि बिधि अधर्म ।
बहु तोप करत दुर्गन बिनास, बीरहु सकैं न यह टारि लास ॥३०॥
लैजात सबन धरि छिन्न घोर, मनमाँहि रहत सुभटन मरोर ॥
तस्मात आप दल पिछि दूर, रहि छन्न काल कढहु जरूर ॥३१॥
इम सुभट जुद्ध पंडित अमोल, बिधि सब निबाहि नय धर्म बोल ॥
मथि दल समुद्र भुज मंदराग, निज बल कृपान रचि चंड नाग ॥३२॥
जयशत्न कढ्ढि जतन जरूर, ह्वै ख्यात निवेदहिं निज हजूर ॥
इहिनीति छन्नमांहहिं निकासि, दल सजिय अप्पहिय जय बिकासि ॥३३॥
दल चढन बेग दै निज निदेस, बिधि करि बिहान संध्या बिसेस ।
सजि उनहु चढन आयस प्रसारि, नर गज तुरंग कलकल निकारि ॥३४॥

॥ दोहा ॥

दुवदल इम खलभल परिग, गहकि नफीरिय गान ॥
किलक नकीबन हुव कहर, पहर पलान पलान ॥३५॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

जगी सेन दोऊ रही जाम रत्ती, बजे वेव भेरी बढी हल्ल बत्ती ॥
दुहूँ ओर ह्वै सुद्ध के नित्य मंडैं, दुहूँ ओर संसारतैं प्यार छंडैं ॥३६॥
दुहूँ ओर गंगोद कैं अंग मंजैं, दुहूँ ओर गीतादि गीतादि गंजैं ॥
दुहूँ ओर बानैत नागोद बंधैं, दुहूँओर के तोप गन्नाद संधैं ॥३७॥

कहत भयो. सनर्म नर्म लोक ठट्ठा. लासोंहत ॥ ३० ॥ लैजातइति ॥ छिन्न ना-क ॥ ३१ ॥ इमइति ॥ मंदराग मंदर नामक अग पर्वत. ताकरि. नाग बासुकि. ॥ ३२ ॥ जयइति ॥ यहनीति या नीतिसों. दल सेना ॥३३॥दलइति ॥ निदेश हुकम. उन आजमशाहनें. कलकल कोलाहल ॥३४॥ दोहा ॥ दुवइति ॥ नफीरी वाद्य विशेष. देशप्राकृत ॥ ३५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जगीइति ॥स्पष्ट ॥३६॥ दुहूँ गंगोद इति ॥ गंगोद गंगाजल. ताकरि. गीतादि भगवद्गीतादिक. पुनः गीतादि गान तदादि करि. नागोद लोके पेटी ॥ ३७ ॥ दुहू०जालीइति ॥ जाली लोके

दुहूँओर जाली दुनालीन डारैं, दुहूँओर धाराल धाराल धारैं ॥
दुहूँओर सिंधून उच्छाह जग्गैं, दुहूँओर बाजीनपैं जीन लग्गैं ।३८।
दुहूँओर झंडाल सुंडाल गज्जैं, दुहूँओर हिंजीर जंजीर बज्जैं ॥
दुहूँओर उच्चूल नेजा फरक्कैं, दुहूँओर के जोर छोनी मचक्कैं ।३९।
दुहूँओर धानुक्ख टंकार पूरैं, दुहूँओर देखैं लगी लोभ हूरैं ॥
दुहूँओरमैं भूत ह्वै सूत मिल्लैं, दुहूँओर बेताल खेताल खिल्लैं।४०।
दुहूँओरके भीरु उद्दाव मंडैं, दुहूँओरके वीर बानैत तंडैं ॥
दुहूँओर बंदीनको सोर बड्ढैं, दुहूँ ओर तोपैं दरावीन चड्ढैं ॥४१॥
धरैं कुंत बंदूक तुल्लैं बरच्छी, हुलैं हंकि हत्थी खुलैं सज्ज कच्छी
चढी सेन दोऊ बढी जंग चाहैं, अवाची उदीची घटा ज्यौं उमाहैं४२

॥ दोहा ॥

बुंदियपति सन्नद्ध बनि, नय निकासि निज साह ॥
दल सारध दुअलक्ख(२५००००)लै, चढ्यो तुरग जय चाह।४५।
उत आजम आरोहि गज, लै दल सम्मुह आय ॥
मुलक प्रलय आगम मनहुँ, उदधि सत्त उफनाय ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे आकबरपुरप्रस्थितबहादुरशाहगोपाद्रिपुरप्रस्थि-

तिगह. "जालिका स्वंगरक्षणी" निहैनः ॥ धाराल अच्छी धारावाले. धाराल खङ्ग ॥ ३८ ॥ दुहूँ०झंडालइति ॥ झंडाल झंडोंवाले. सुंडाल हस्ती. ॥ 'सुंडालः सामजो नागः" इत्यमरः ॥ हिंजीर हस्तीके जंजीर. जंजीर हस्ती बिना और पाखर तोप आदिके जानिये. उच्चूल ऊपर लुम्ब बंड फुंदावाले ॥ "अवचूलोवचूलाख्यः कूर्चोधोमुखकूर्चकः" विनिहैनः ॥ ३९ ॥ दुहूँ०धानुक्खइति ॥ धानुक्ख धानुष्क. कमनैत ॥ "धन्वी धनुष्मान् धानुष्कः" इत्यमरः ॥ मिल्लैं मिलैं. खेताल क्षेत्रपाल ॥ ४० ॥ दुहूँ०केभीरु ॥ उद्दाव भाजनों. तंडै गर्जना करै ॥४१॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में आगरा से बहादुरशाह और ग्वालेर से आजमशाह का

ताजमशाहरणहेतुजाजवनगरान्तिकस्कन्धावारनिवेशनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥

आदितः पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५० ॥

(दोहा)

सक चउ खट सग्रह१७६४समय, मिलि चउत्थि सुचि मास ॥
असित पक्ख उग्गत अरक, वढि दल बिजय बिलास॥१॥

(मुक्तादाम)

बढे दल तोपनकौं करि अग्ग, मिले भट उद्धत संगर मग्ग ॥
इतेबिच कौतुक जंग अछक्क, उयो उदयाचलके सिर अक्क ॥२ ॥
लख्यो रवि दोउन बंदि बिसेस, भयो तब तोपन पुब्ब निदेस ॥
पलट्टनि पिक्खि रुमालग सैंन, लगी दुहुँओर अलातन दैंन॥ ३ ॥
मिली तँहँ तीनहजार३०००न आग्गि, बढी अफलैत दुहूँदिसदग्गि
भयो नभ धूमित धुंधरि भान, लगे दृग मीचन देव बिमान ॥४॥
परे अय गोलक बिद्युत पात, जुरे नर गैंवर है उडिजात ॥
उगल्लत फेरहिं फेर अखंड, चलै चटका रिनके मित चंड ॥ ५ ॥
भुजंगमके सिर नच्चत भुम्मि, धरैं फननैं फन घायन घुम्मि ॥
नचे जिम कन्हर कालिय कंध, बनैं इम छोनिय तंडव बंध ॥६॥
लगे डगमग्गन अद्रिन स्रृंग, गिरैं जिनतैं मृग भ्रामित अंग ॥

चलकर युद्ध के अर्थ जाजव नामक नगर के पास मुकाम करने के वर्णन का बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पचास २५० मयूख हुए॥

सकइति॥ चउत्थि चतुर्थी. ४ सुचि आषाढ. असित कृष्ण॥मुक्तादाम॥बढेइति॥ अछक्क अतृप्त. उयो उदयभयो. अक्क अर्क (सूर्य) ॥ २ ॥ लख्यो ॥ पलट्टनि पयादे सिपाहनकी पंक्ति ॥ ३ ॥ मिलीइति ॥ अफलैत तोपनके लार करायबे की क्रिया विशेष ॥ ४ ॥ परेइति ॥ फेरहि फेर अवाज प्रति अवाज. मित प्रमान. भुजंगमइति ॥भुजंगम शेष. ताके. कन्ह कृष्णावतार. कालिय कालीनाग

निवानन ग्राकुलि तुट्टन नीर, पग्यो इक आतप ग्रीखम पीर ।७।
तजैं बढि बांधन सागर सीम, भ्रमैं प्रलयानिलमैं जिम भीम ॥
जुग्यो दिन दब्बि कुहू तम जग्गि, ग्रलात लगैं जनु पेतनअग्गि८
परैं दृग वे उत ओर प्रकास, लखैं इनहू इत फैर उजास ॥
दुहूँदिस यौं लखि मारन दाव, भयो दुहुँघाँ इम मोर प्रभाव ॥९॥
सज्यो बढि घूम सुरालय संग, अजौं नभ बद्दल राजिहि रंग ॥
गिरैं निच गोलक गोलक फूट, मनौं पविनैं पवि चंडचपेट ॥१०॥
गिरैं गजमस्थ छिनच्छिन छूट, कटैं पवि पात कि अद्रिन कूट ॥
गिरैं गज झुंडहु गोलन गोन, गिरैं तरु ताल कि पब्बय पोन ११
लख्यो रवि उग्गत ज्यौं तम लाल, किते अब भुल्लत आन्हिक
काल ॥
बिहानहु कोकन लग्गि बियोग, बिनाँ नर जानत जामिनि जोग
परैं गज गंडन गोलक पात, करैं जनु भद्रक जातिन ख्यात ॥
परैं दुहुँ ओर तुपक्कन पंथ, मच्यो रव आप्टूक ज्यौं हरिमंथ ॥१२॥
चहूँदिस चंड चढ्यो रज चूर, पग्यो रजताचललौं उडि पूर॥

ताके ॥ ६ ॥ ७ ॥ तजइति ॥ भीम भयंकर. कुहू चंद्रकला रहित अमावास्या की रात्रि ताके. भी तम अंधकार ॥ ८ ॥ परैंइति ॥ वे पेली सेनाके. उत वात-रफके. मोर ग्रारम्भ. ताके प्रकाशमैं दीसै. इन ओरकी सेनावारेनकों. इत यातर फके. लखैं देखैं ॥ ९ ॥ सज्योइति ॥ सुरालय सुरलोक. ताकौं. अजौं अबभी नभ आकाश. बद्दल मेघ. ए स्याम. जिहरंग वा धुंवांके रंगसा है. पहले या रंग नहि है. गोलक गोलासौं. पवि वज्र ॥१०॥ गिरैंइति ॥ गोन गमन. तासौं. तरुताल तालवृक्ष. कि अथवा. पब्बय पर्वतसौं. पोन. पवन करिकैं ॥ ११ लख्योइति ॥ तम अंधकार. तासैं. लाल मानुष्य. बिनानर मनुष्य रहित. और प्राणीमात्र. जामिनि रात्रि.ताको ॥ १२ ॥ परैंइति ॥ भद्रकजातिन भद्रजाति वारेनके. ख्यात प्रकट. भद्रजाति हस्तीनके मस्तकमैं मोती निकसै हैं यातैं. रव शब्द. आप्टूक लोके भाड़. तासैं. हरिमंथ चना॥"चणको हरिमंथकः"इतिहैमः॥ चहूँदिसइति ॥ रजताचललौं रजताचल कैलास पर्वत तहाँ लगि. जहाँ शिव

जटी जटजूटहु पंकिलजात, लगे कुव कंजन पुंज लसात ॥१४॥
भज्यो ससि भीरुक भालहिं छोरि; रहैं रज लेत सुधा सम चोरि।
अकंज सकंज भये इम ईस, समान न खाद भयो भर सीस ।१५।
महानट पाँखहि खेद समाज, निमीलत नैन समाधिक ब्याज ॥
जलंधर बंचित चंडिय अग्ग, लखैं धव संकि महाभय लग्ग ॥१६॥
भयो यह विग्रह संकरभोन, गिरैं फननां इत गोलन गोन ॥
थरत्थर भुम्मि जथा जल थाल, बन्यों रन तोपन यों विकराल१७
सिलग्गहिं तज्जहिं गज्जहिं सोर, लरज्जहिं बज्जहिं सिंधु हिलोर॥
भजैं गज संगर लंगर तोरि, महावत गवत लावत सोरि ॥ १८ ॥
दिसाविदिसा जगि जारत ज्वाल, मनौं कुहु उज्ज दसैंधन माल ॥
चलैं उडि सोर सिखा चमकात, परैं जिम भद्दव बिज्जुव पात ।१९।
भ्रमैं कटि सुंडि गिरैं उडि भाग, मनौं जनमेजय अध्वर नाग ॥
पगावलि भिल्लनकी पजरात, जटायुक अग्रज ज्यौं गिरिजात ।२०।
उडैं ध्वजनंदन खंड अकास, रचैं जिम उद्धहि केकिय रास ॥
जरैं गज पिट्ठि पताकन जूट, किधौं दव दग्गिय अद्रिन कूट ।२१।

तिनकी. जट जटा ताको. जूट जूरा. पंकिल पंकवारो. जात भयो. कुवकंज कुव कुवलय. लोके गट्टूल. कंज कमल तिनके. "कुवेलं कुवलं कुवं" इतिहैमः ॥ १४ ॥ भज्योससिइति ॥ भालहिं शिवके ललाटको. छोरि त्यागिकैं. अकंज कंज चंद्रमा ताबिना. कंज कमल. तिनकरिहित. खाद पंक. "कर्दमश्च निषद्वरः खादः" इतिहैमः ॥ १५ ॥ महानटइति ॥ महानट शिव. "महापरादेवनटेश्वरा हरः" इतिहैमः ॥ ब्याज मिसमों. जलंधरबंचित जलंधर दैत्यकी ठगी. चंडिय पार्वती. धव अपनों पति. ताको. लग्ग लग्न. तांके लग्यो ॥१६॥ १७ ॥ सिलग्गहिइति॥ तज्जहिं तर्जना करै. सोर बारूद. हिलोर थरात्तरंग ॥ १८ ॥ दिसाइति ॥ कुहु चंद्रकला रहित अमावास्या की रात्रि तामैं. "सा नष्टेन्दुकला कुहूः" इतिहैमः॥ उज्ज कार्तिकमास तामैं. "बाहुलोऽर्जो कार्तिकिकः" इत्यमरः ॥ दसैंधन दीपक. तिनको माल. "दशेन्धनो गृहमणि" रितिहैमः ॥ १९ ॥ भ्रमै इति ॥ अध्वर यज्ञः तामैं. 'वितानं बर्हिरध्वरः' इतिहैमः ॥ जटायुकअग्रजज्यों संपाति गृध्रके समान ॥ २० ॥ उडैंइति ॥ उद्धहि उजारही. केकिय मयूर. रास नृत्य ।२१।

कहँ पुर जाजव हो अधकोस, दग्यो चहुँधा तउ संगति दोस ॥
तप्यो समरंगन तोपन ताप, चढ्यो नभ जाससलउजाम दिवाप ॥२२॥

॥ दोहा ॥

इम तोपन रन होत इत, इत कोलूहल आम ॥
रवि कुराहरसों चढि कढ्यो, तक्कन तुमुल तमाम ॥ २३ ॥
इहिं अंतर कुवदिग अतुल्ल, घुम्मत तोप निर्घात ॥
साहबहादुर भाग्य सन, चज्ज्यो उत्तर वात ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

पलटत उत्तर पवन दाह तोपन इत दग्गिय ॥
उड्डुत पिक्खि अनीक लाय शत्रुन उर लग्गिय ॥
आजम गज आरूढ हुतो निज कटक हरोल्ली ॥
गोला लगि लेगयउ पारि दल मध्य मतोल्ली ॥
इम तोप जनक आजम उडत निज दल लखि परभर नयो ॥
दीदारबख्स तस सुत दुसह है नायक हरवल भयो ॥२५॥
आजमसुत इम कहिय मरन मंगल भट संगर ॥
करहु सोक जिन बीर धरहु पायन लज लंगर ॥
इम सिसाखि सब सेन अग्ग ठट्ठो आजमसुत ॥
गति अंगद पय गहि मरन मंड्यो जनून जुत ॥
दै पुनि निदेस तोपन दगन नृप नबाब हलकारि सब ॥
दीदारबख्स रज्ज्यो दुजन गुमर टेक मंडत गजब ॥ २६ ॥

कहँपुरइति ॥ जासल उभय. दिवाप दिवापति (सूर्य) ॥ २२ ॥ दोहा ॥ इमइति ॥ तक्कन देखन. तुमल संकुलितयुद्ध ताको ॥ २३ ॥ इहिंअंतरइति ॥ वात पवन ॥ २४ ॥ षट्पात् ॥ पलटनइति ॥ हरोली फौजके अग्रभाग. मतोली चौथी. गोले नाली. "अथवा मतोली दिमिच्चा" इतिहैमः ॥ नय ताको ॥ २५ ॥ आजमसुतइति ॥ संगर युद्धमें रहेहुये. भट सूरवीर को. मंगल उत्सव होतहैं ताते. जनून. बावली. क्रोध ॥ २६ ॥ दीतियापतिइति ॥ इतेन इतनें सहित. इतमंत्र

दतियापति राउत्त नाम दलपति बुंदेल्लह ॥
नरउरपति गजसिंह बंस कछवाह ससेलह ॥
रामसिंह चहुवान अनय आकर कोटापति ॥
लगि बुंदियधर लोभ गिनत भोरो न कालगति ॥
सचिवन इतेन आजमसुवन गजारूढ हरदल्ल गहि ॥
इनमंत्र अवहि आजम उडयो सुवन ग्वास अपरोस गहि ॥२७॥
इम आजम उड्डतहि सुवन ठट्टो चढि सिंधुर ॥
दगत तोप दुहुँओर उवन बीरन रस अंकुर ॥
इहिं अंतर जयसिंह नगर आमेर नरेसुर ॥
निज नकीब मुक्कलिय बुद्ध भूपति प्रति आतुर ॥
गृहविधि कहाय प्रछन्न गय जाभिप तुम ए खल जवन ॥
कुल स्वसुर टारि मंडहु कलह होत तोप ताखक हवन॥२८॥

[दोहा]

बुंदियपति यह सुनि बिनय, प्रतिउत्तर पठवाय ॥
घर अप्पन संबंध घन, यँहँ रन दंड उपाय ॥ २९ ॥
तातैं तुम साहस तजहु, बय नय समर बिचारि ॥
बचहु बाम दक्खिन बद्दलि, तोपनको मग टारि ॥ ३० ॥
इम कहाय बुंदिय अधिप मंड्यो तोपन जंग ॥
इहिं अंतर दूतन कह्यो, भो आजम असु भंग ॥ ३१ ॥
बलहिं प्रचारत भटन बिच, हो हत्थिय आरूढ ॥
गोला लगि दोजख गयो, महा अनय रत मूढ ॥
तब ताको सुत सज्जहुव, तथा सचिव नृप तीन ॥

ए तीन सचिव कहे तिनके संगमां ॥ २७ ॥ इमइति ॥ उवन उत्पन्न. रस बीररस ताखक. हवन होम ॥ २८ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति ॥ अप्पन अपना ॥ २९ ॥ तातैंतुमइति ॥ साहस हठ ॥ ३० ॥ इमइति ॥ असुभंग प्राणभंग ॥ ३१ ॥ बलहिंइति ॥ दोजख. यावनी. नरक ॥ ३२ ॥

नरउरपति दतिया नृपति, कोटा पति इक कीन ॥३३॥

[षट्पात्]

सुनत एह बुंदीस मंत्र निजदल सह संडिय ॥
अरि आजम उद्धतहि लरन तससुत हरोल लिय ॥
अरक जाम अवसेस तोप चल्लत त्रिजाम गय ॥
अब हय देहु उठाय जानि हरिहत्थ जयाजय ॥
इम कहि नरेस सुभटन उचित हयन हंकि सम्मुह हल्लिय ॥
नग्गिद उदीचि दिसतैं मनहु चंड पवन दक्खिन चल्लिय ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जाजवनगरान्तिकबहादुर [आलम] शाहाजमशाहनाल्लीयग्गद्वियामरणाजमशाह१ पितृस्थानास्थिताजमसूनुदीदारबकेसरणावर्णानं त्रयोदशो मयूखः ॥१३॥

[नाराचम्]उठाय जंग यौं तुरंग बुद्धसिंह उप्परयो ॥
मची कजाक हक्क हाक बीर वाक वित्थर्यो ॥
महा गभीर धीर बीर नीर छीर ज्यौं मिलें ॥
हमल्ल झोक सुम्मिलोक खंड खंड ह्वै खिलें ॥ १ ॥
झनंकि तंति सिंधवी अलाप राग झुक्कयो ॥
रनंकि जीन पक्खरीन पौंन गौंन रुक्कयो ॥
खनंकि धार ह्वै प्रहार अंग भंग उल्लटैं ॥
सनंकि स्वास सेसकी फनालि फुंकरैं फटैं ॥ २ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में जाजव नगर के समीप बहादुरशाह[आलमशाह] और आजमशाह से दुपहर तक तोपों का युद्ध होकर आजमशाह का मारा जाना १ आजम के पुत्र दीदारबखस का पिता के स्थान में स्वामी होकर लड़ने के वर्णन का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदिसे दो सौ इकावन २५१ मयूख हुए॥
नाराच ॥ यह स्पष्ट ॥ १ ॥ झनंकिइति ॥ यहस्पष्ट ॥ २ ॥ छनंकिइति ॥ छुरियो

छनंकि बान लै उडान आसमान छद्दयो ॥
ठनंकि घंट जंग जाम नाग तोम नद्दयो ॥
तनंकि रंच खंचतैं प्रतंच चाप टंकरैं ॥
झनंकि पच्छ भूरि मच्छ गिद्धनी झरप्फरैं ॥ ३ ॥
चली भली कृपान सानसुद्ध राव बुद्धकी ॥
अरीन जुद्धकी उमंग राज रंग रुद्धकी ॥
मच्यो अनीक संगरेक आजमीक अंगरयो ॥
चलैं कु चक्र भोगि भोगभोगपैं भ्रम्यो भ्रम्यो ॥ ४ ॥
प्रहार खग्गधार मार लुत्थि लुत्थिपैं परैं ॥
चिरैं बितंड गंड झुंड खंड खंड व्है झरैं ॥
दिसादिसानमैं कृपान बिज्जुमान निक्खसी ॥
भिरैं गरूर पूर सूर पिक्खि हूर हुल्लसी ॥ ५ ॥
सुबाजि सोक ओकओक भीरु लोक भग्गये ॥
जरैं निघात सन्निपात इक्करीठ लग्गये ॥
झरैं ससुंड गै सुसुंड कंध बंधतैं कटैं ॥
अटैं सु रुंड गोलकुंड फाटि मुंड उच्छटैं ॥ ६ ॥
छिकैं बिछक्क बान कै पलान हान बित्थरैं ॥
गिरैं उलट्टि सूर पिक्खि हूर झूर झग्गरैं ॥
जमाति जुग्गिनीनकी पिवंत पेय पत्तकैं ॥

आच्छादित किया. नागतोम नाग हस्ती तिनको. तोम समूह. भूरि बहुत ॥ ३ ॥ चलीइति ॥ सानसुद्ध सान खुरसान. ताकरिकैं तयार. अरीन अरिनकी. राज-रंग राजनके लरिबे योग्य रंग संग्राम भूमि तामैं. रुद्धकी रोकी. आजमी आ-जमका पुत्र. कुचक्र भूमिचक्र. भोगिभोगभोगपैं भोगी शेष ताके भोग फन फनपैं॥ ४॥ प्रहारइति ॥ बितंड वेतंड [हाथी] तिनके. गंड कपट. बिज्जुमान विज्जु समान॥५॥सुबाजिइति॥सुबाजि अच्छेबाजी तिनकी सोकसों. ससुंड सुडादंड स-हित.गैसुसुंड गै हस्ती तिनके सुसुंड दंतन सहित मुख.कंधबंधतैं कलावाके बंधके स्थानतैं ॥ ६ ॥ छिकैंइति ॥ हान त्याग. झूर झुंड. पेय उनके पीवे योग्य रुधिर.

किलक्कि वीर बावनी ५२ फिरैं उमत्त रत्तकैं ॥ ७ ॥
चलैं समग्ग खग्ग के कटार पार निक्कसैं ॥
सुबीर सीस संचयी गिरीस हुल्लसैं हसैं ॥
दरारि वारिजंत्र ज्यों छुलक्कि घाय उब्बकैं ॥
अनीक नारि के छइल्ल छोह छाकमैं छकैं ॥ ८ ॥
ढुरैं बिभान मुक्कि दान कुक्कि झुक्कि के करी ॥
बजंत हेति हेतिकैं मनो कि दंड चच्चरी ॥
जरैं बितंड पिट्ठि झंड अद्रिकूट तालज्यों ॥
बहंत रत्त खाल के बिसाल ताल नालज्यों ॥ ९ ॥
सिलग्गि सोर ओरओर ज्वाल जोर संक्रम्यों ॥
भयो निसान ध्वान जो दिसा दिसानमैं भ्रम्यों ॥
विधाय भानु रेनुको बितान व्योम बित्थर्यो ॥
लखे परैं न अप्प पार अंधकार यों भर्यो ॥ १० ॥
चलच्चली मही रु सेन आजमी खलब्भली ॥
कलक्कली किलक्क झाल ज्वालकी झलज्झली ॥
गिलंत गृद्ध गिद्धनी फिकारि फिक्करी फिरैं ॥
खिलंत कंक स्यार खग्ग धार धारतैं खिरैं ॥ ११ ॥
उडैं दुरओर बीर यों तुपक्क तोप त्यों चलैं ॥
जरैं दुकूल के हठी हकारि सम्मुहे हलैं ॥

वीरबावनी वीरनकी बावनी ५२ ॥ ७ ॥ चलैंइति ॥ सुबीर अच्छे वीर तिनके शीसनके संचयवारे. गिरीस शिव ॥ ८ ॥ ढुरैंइति ॥ बिभान सुधिबिना. दान मदके किनेक हेति है तिनके शस्त्रशस्त्र करिकैं. दंडचच्चरी चर्चरीके दंड. पामरलोग फागनमैं लगावैहैं ते. ताल तड़ाग लोकमें तलाव ताके ॥ ९ ॥ सिलग्गि इति ॥ ध्वान शब्द "ध्वनिध्वानरवस्वनाः" इत्यमरः ॥ विधाय अंतर्धान करिकैं. भानु सूर्यको ॥ १० ॥ चलच्चलीइति ॥ फिक्करी अंगाली ॥ ११ ॥ उडैंइति ॥ दुरओर दोऊ तरफ. तुपक्क बंदूक. दुकूल वस्त्र. कालखंड कलेजा ॥ १२ ॥

बरखत बानन बिंदु निबिड नीरद बनि आयो ॥
सुंडि बीच इहिं समय घाय गोला लगि घल्ल्यो ॥
इभ पोगर उड्डिजात चकित चिक्करि भजि चल्ल्यो ॥
गज भजत कुहि बरसारगति कढ्ढि असिय दारुन कलह ॥
हयमेध चरन डारत हलिय सान मंडि अति कोप मह ॥१७॥

[त्रिभंगी]

कोटेस कृपानी चंडचलानी घग्ग घलानी सेर घटा ॥
तंडै रचि ताली जुग्गिनि जाली भूरि भटाली करत कटा॥
काली किलकारैं बीर बकारैं चंडचिकारैं कुंभि करैं ॥
अति पान इसारैं बाध बिसारैं मुंडन मारैं प्रेत परैं ॥ १८ ॥
असवार उलट्टैं कंकट कट्टैं पूर पलट्टैं सूर सजैं ॥
पन्नग फन फट्टैं अवनि उछट्टैं बंब बिकट्टैं ग्रंबबजैं॥
बुंदीपतिवारी काल कराती तेग दुधारी वेग चली ॥
कोटेस अवाहन उग्र उछाहन मांडि महारन बीर बली॥१९॥
गिद्धी गहि अंती अभ्र उडंती क्रोक झिलंती चंग निभा ॥
सूरन सिर छाया रचन रचाया बेस बनाया छत्र विभा॥
सुंडिन भरि फुंकैं गोरव सुंकैं चोसठि चुंकैं नख्ख नसा ॥
हल्लीसक मंडैं तालिन तंडैं खाय अखंडैं बीर वसा ॥ २० ॥

सवन. नीरद मेघ. इभ हस्ती. पोगर सुंडाको अग्र. चकित भीत. चिक्करि चिक्कारी करिकैं. अतिकोपमह अति बहुतसैं कोप क्रोध अरु मह उत्साह वा तेज तामैं. ऐसो 'महस्तेजस्युत्सवे च' तिहैमः ॥ १७ ॥ त्रिभंगी ॥ कोटेसइति ॥ कोटेस कोटापुरको ईस ताकी. भटाली भटनकी आली पंक्ति. कुंभि कुंभी [गज]. अतिपानइसारैं पान पीवनौं रुधिरको ताके इसारेसैं ॥१८॥ असवारेति॥ कंकट कवच. बिकट्टैं घोर विकट. यहां बहुवचनमैं एकार है ॥ १९ ॥ गिद्धीइति ॥ अंती अंत्र.तांके आंत. चंगनिभा चंग कागजको पक्षी. जाके डोर बांधिकैं बालक उडावैहैं ताके. निभ आकार. छत्रविभा छत्रकी तरह. फुंकैं यहां बहुवचनमैं एकारहै. चुंकैं चोंकपरैं. हल्लीसक स्त्री जनको मंडलाकार नृत्य ॥ 'मंडलेन तु यन्नृत्यं स्त्रीणां हल्लीसकं तु तत्' इतिहैमः॥ वसा हृदयको मेद. 'ह्रन्मेद-

गहुगहु बढि बानी भटन भयानी धार धपानी मार मचैं ॥
ढालन लगि ढल्लरि के असि कल्लरि राव सु झल्लरि भाव रचैं॥
कटि हड्ड करक्कैं फिप्फ फरक्कैं तेग तरक्कैं एक उडैं ॥
चाटन असि चंडैं खंडैं खंडैं छारि बितंडैं गिरत गुडैं ॥ २१ ॥
बिनु मत्थ दुबाहे संभु सिराहे चाहिय चाह उछाहि अरैं ॥
डोलैं गज डारे फुट्टि नगारे पत्थ हठारे बत्थ परैं ॥
गजदंत उपारैं कोप करारैं मीरन मारैं बीर बढैं ॥
कटि धार कृपानन गात सु गानन बीर बिमानन केक चढैं॥२२॥
जुग्गिनि जय जंपैं कातर कंपैं बाजि बिझंपैं बेग बली ॥
लुत्थिन भुव छावैं बीर बढावैं मिच्चु न मावैं छोह छली ॥
कोटेस बिनाँ हय छंडि महा गय रुट्ठि बडे रय रागि रुप्यो॥
गज बाजि गहम्मह कूह कहक्कह त्रंब त्रहक्क लोक लुप्यो ।२३।

[दोहा]

कोटापति किलकत पर्यो, आलम दल सिर आय ॥
करि सु संध चंडासि कुल्ल, तुट्टयो आसिन अधाय ॥ २४ ॥

स्तु चपा वसे' त्यमरः ॥ २० ॥ गहुगहुइति ॥ धपानी धपायवेवारी. के कितेक. असि खड्ग. कल्लरि कालरव्हैकैं. राव शब्द. झल्लरिभाव देवालयमैं वाद्य विशेष ताकी तरह. फिप्फ लोक फेफरा. तेग खड्ग. तरक्के तडाकैं. एक केवल 'एकं संख्यान्तरे श्रेष्ठे केवलं तरयात्रिषु' निमेदिनी॥ बितंडैं बेतंडोंके. गुडैं गुड हस्तीकी सिलह. तहां बहुवचनमैं अैकार है ॥ 'गुडकं हस्तिसन्नाहः' इतिमेदिनी ॥ ॥ २१ ॥ बिनुइति ॥ दुबाहे दोऊ हस्तों से तुल्य प्रहार करैं ते. गजडारे गजनके पटके. पत्थहठारे पत्थ पार्थ ताकी तरह हठवारे. मीरन मीर जवन विशेष तिनकों. गात गवत. सुगानन अच्छे गाननकों ॥ २२ ॥ जुग्गिनिइति ॥ जंपैं कहैं. बिझंपैं बिशेष करिकैं झंपैं. बीर बीर रस. मिच्चु मृत्यु. नमावैं नहीं मावैं. छोहछली चोभसों उफनी हुई. यहां देशरूढिसों मिच्चुको स्त्रीलिंग कियो. गय गज. रय वेग. गहम्मह घनी भीर. मरुदेशीय प्राकृत. लुप्यो लुप्तभयो ।२३। दोहा ॥ कोटाइति ॥ सुसंध श्रेष्ठ है संधा प्रतिज्ञा जाकी एसो ॥ २४ ॥ पट्पा-

(षट्पात्)

तजि मतंग भुव कुद्दि काढ्ढि असि बर धकि कुप्प्यो ॥
नट मलंग नचि अंग रंग अंगद जिम रुप्प्यो ॥
रतन भोज रविमल्ल मग्ग उज्जल करि मानों ॥
तिल्लतिल्ल धारन तुट्टि भयो अमरन अगवानी ॥
पैंतीस३५वंस सिक्खवत प्रकट धारत तदपि न धर्म धर ॥
चंडासि बंस रन भजि चलन नन सिक्खो पिक्खो निडर ॥२५॥
चक्ख्यो कछु चिलहनिन कछुक गिद्धन निज किन्नों ॥
कछुक लह्यो बिसकंठ कछुक कालिय लगि लिन्नों ॥
खाय कछुक खित्ताल डमरुधर ताल डकारयो ॥
भखि जुग्गिनि कछु भाग बहुत अनुराग बढारयो ॥
अटि अटि हडुडु फग्गुन उपम फटि फटि फोजन उप्फन्यों॥
कोटा नरेस कटिकटि असिन बटिबटि बहु पोसक बन्यों ॥२६॥

(दोहा)

कोटापति भरि भुव परत, आजम सुत अकुलाय ॥
पट्ट मतंगज पिल्लिकैं, आयो बलहि बढाय ॥ २७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे निगडनाल्नीयन्त्रकलोत्थापिताऽवबहादुरशाहसैन्त ॥ भजिइति ॥ पैंतीसवंसनिसिक्खवत चहुवान विना और क्षत्रियनके पुरातन और नूतन सब आधुनिक लोक गणनामें पैंतीस ३५ वंश हैं ते. युद्धमें बहुत ठौर भजि जावत हैं योंही उनकों भजिवो सिखावनों है ॥ २५ ॥ चक्ख्यो इति॥ बिसकंठ शिव तिननैं. खित्ताल क्षेत्रपाल. अटिअटि अटन करिकरिकैं. फटिफटि जुदा व्हैव्हैकें. अथवा फाटि फाटि बटि बटि सघनकों व्हैकैं. पोषक पोषिबेवारो ॥ २६ ॥ कोटाइति ॥ पट्टमतगज मुख्य हस्ती ॥ २७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के स्वामी बुधसिंह के चरित्र में, तोपों का युद्ध रोक कर बहादुरशाह की सेना के घोड़े उठाने में तरवारों से युद्ध होकर कोटा के रावराजा रामसिंह के काम आने का

न्पालिसमरकोटाधीशरावरामसिंहमरणं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥
आदितो द्विपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

घटिय पंच दिन रहत परत उक्कत कोटापति ॥
आजमसुत इभ पिछि गुमर मंडत रावन गति ॥
आयो आहि जिम बिसिख बिसिख बरसत झुंकारव ॥
नरउर दतिया नृपति बाम दक्खिन सजि संजव ॥
दक्खत उमीर बीरन दुसह बुंदियपति उप्पर बढ्ढिग ॥
मानहुँ अवाचि घुँमडत मुदिर चंड अनिल उत्तर चढ्ढिग ॥१॥
डक त्रंबक डकडकत थान खकलकत सलभ सम ॥
छिछि रुहिर छकछकत घाय धकधकत दमक दम ॥
बेतालक बकबकत धकत अच्छरि हठि हेरत ॥
उयर कुट्टि फकफकत गिद्ध मकमकत लोथ गत ॥
कोसन दुरंत दारुन कलह मार मंडलग्गन मचिग ॥
मानहुँ बिरंचि नूतन मनुज रस अचिज्ज सोहित रचिग ॥२॥
धरनि धुज्जि धमसत सेस कसमसत कमठ सम ॥
हर दिग्गज हिय डुल्लि भुल्लि थहगत मलय भ्रम ॥
कटि कंकट नागोर टोप बाहुल कारि टूकन ॥
रथ्या दिसदिस रचत बेध बिसिखन बंदूकन ॥
बनि दूत भूत डुँडिम बिबिध रिस रचाय लावत जुरन ॥

चउदहवां १४ मयूख हुआ और आदि से दो सौ बावन २५२ मयूख हुए ॥ षट्पात् ॥ घटियपंचइति ॥ बिसिख बिना सिखाको म्लेच्छ यह अर्थ. बिसिख तीर. सजव सरपकू है जव बेग जाको ऐसा. मुदिर मेघ 'घनजीमूतमुदिरः' इतिहैमः ॥ अनिल पवन ॥ १ ॥ डकत्रंबकइति ॥ सलभ कीटविशेष. लोके टीडी. दम स्वास. थापनी. उयर उदर. मंडलग्ग मंडलाग्र खड्ग. तिन करिकैं. बिरंचि ब्रह्मा. "द्रुहिणो विरिंचिर्द्रुघणो विरिंचः" इतिहैमः ॥ रसअचिज्ज अद्भुतरस. ताकरिकैं ॥ २ ॥ धरनिइति ॥ सम सहित, रथ्या गली. रिस क्रोध, जुरन ल-

छल इहिं अनेक कटि भट छकत मिच्चु चहत न चहत मुरन ॥३॥
गज पय खंडन जोरि रचत उप्पर नर रुंडन ॥
साजि सुंडिन उच्छीस मंजु कंदुक नृप मुंडन ॥
गुड पक्खर गद्दी रु बंधि बहु अंत बरत्तन ॥
इहिं मंचक आरूढ मात कालिय अधप्प मन ॥
लै तिहिं पिसाच बाहक महत चहत उछाहक महमहत ॥
जित तित सुगंधि तित ते सजव रुहिर मिष्ठ हेरत रहत ॥४॥
भटन भूत कहुँ भिरत कहुँक कातर आक्रंदत ॥
करभ कहुँक कल्लरत गिरत गज कहुँक चिक्करत ॥
कहुँक अश्व कटि परत कहुँक घायल भट घुम्मत ॥
कहुँ कबंध उठि लरत कुट्टु कुणपन कहुँ झुम्मत ॥
कहुँ कंक मेद कवलन करत कहुँ सिचान झारत झपट ॥
॥ ५ ॥
कहुँक नैंन कढि परत कहुँक कटि भौंह फदक्कत ॥
उत्तमंग कहुँ उडत गहत हर उद्ध मोदगत ॥
कालखंज कहुँ कटत बुट्ठि बुक्कन कहुँ बुट्टत ॥
कहुँ फुल्लत हिय कंज मधुप मानस उडि उट्टत ॥
कर पय बिभिन्न तरफत कहुँक मनहु मीन जल तुच्छ मत ॥

तसरिपेको. छलयह या भूलनके छलसों. मिच्चु मृत्यु. मुरन मुरबो॥३॥ गजपइति ॥ पय पद. उच्छीस उसीसा. कंदुक छोटे तकिया. गुड गजनिलह. गद्दी बिछोना. तिहुँ वाकालीकों. महमहत महकत. सुगंध मीठे रुधिरको जानिये ॥ ४ ॥ भटनइति॥ करभ ऊंट. कबंध बिना मस्तक क्रियावंत सूरवीर. कुट्टु कोट्टु. लोके स्याल. कुणपन कुणप मृतक तिनके ॥ ५ ॥ कहुंकइति ॥ उद्ध ऊर्ध ऊपरही. मोदगत मोदप्राप्त. कालखंज कलेजा. 'कालखंजं कालखंडं कालेयं कालिपं यकृद्' इतिहैम: ॥ मधुप भ्रमर. सोही मानस मन. उडिउट्टत वा हियकंजहिंसों. यामैं कत गत, छमत रमत, ए अंत्याऽनुप्रास राखे. या रीति सर्वत्र एकसों तौकैं जितनैं अक्षरनको अन्त्याऽनुप्रास रहावैं तितनैं अक्षरनको पद जुदो करिलेनों. प्राचीन भाषा के ग्रंथनमें

दीदारवखस बुधसिंह दुव २ रसिक प्रान बाजिय रमत ।६।
रुहिर रंग बढि बहत छेद छत्तिय पिचकारिन ॥
डफ महल्ल डिंडिमिय नाल मंडन सिव तारिन ॥
पात गुंज पुहल्लिय पुहप अंगार प्रकासत ॥
खग्ग खग्ग मिलि खिग्गत बूर अब्बीर बिभासत ॥
जुग्गिनि जमानि पननारि जिम आलापन झुकि उच्चरत ॥
दीदारवखस बुधसिंह दुव २ कलह फग्ग कौतुक करत ।७।
पहुमि छत्र कटि परत जरत चामर ज्वालानल ॥
बरत बीर अच्छरिय झरत हेतिन कृसानु झल ॥
कोमन कलह दुरंत बाड आसि बर इक बज्जत ॥
बहु निखंग बिक्खरत चाप तुट्टत सर सज्जत ॥
तरफत प्रमत्त हिंदुव तुरुक आलम दल जालम जन्यों ॥
नयचय खिलहार बुंदिप नृपति आजमसुत बढि अंगम्यों ॥८॥

॥ तोटकम् ॥

धर संगर आजम पुत्त धक्यो, गज उप्पर जोहन छाक छक्यो ॥
दतियापति आदि कगीन चढे, बहु अग्ग प्रबीर उमीर बढे । ९ ।
रसधार निसानन ध्यान रच्यो, बिदिसान दिसान कृसानु मच्यो॥

[illegible] अनुप्रास [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]

मिलि सूर झरैं पर पैं न मुरैं, जिम तार्किक सद्दिय वाद जुरैं ॥१०॥
खग धारन धार सुमार खिरैं, पलभोजन चोसठि संग फिरैं ॥
नटके वट ठट्ट भट के लटके, झटकेन झरैं बटके वटके ॥ ११ ॥
किलकारत भै करि भूत भिलैं, हलकारत खित्तरपाल खिलैं ॥
उमडे असि बिज्जुव अंकनसे, घुमडे दल भद्दवके घनसे ॥ १२ ॥
गहि भैरव नर्त्तकको गतिकौं, मिलि वंचत कालिपकी मतिकौं॥
करितुंड ससुंड स्वसुंड कसैं, बनि आखुग संकर अंक वसैं ॥१३॥
सुत जानि प्रचुंबन ईस सजैं, भय धारि तबैं किलकारि भजैं ॥
छहछजोजन फोजन भुम्मि छई, अति पाउस जानि घटा उनई॥१४॥
पवमान दिगुत्तरको प्रसरयो, सु मनौं घन पोसक होय सरयो ॥
चहुघाँ तरवारिनकी चमकैं, ति दिपैं मनु बिज्जुवकी दमकैं॥१५॥
मिलि भूखन ओज इरम्मदलौं, लगि सिंजित दद्दुरके नदलौं ॥
बहु झंड सु रोहित चाप बनैं, तनितारव दुंदुभि ढाल तनैं ॥ १६ ॥

सद्दिय शाब्दिक. (शब्दशास्त्र व्याकरण ताके पाठक॥१०॥खगधारइति॥ सुमार देशीप्राकृत. अतिशय करिकैं. चोसठि यहां युद्धमैं ६४ जोगनी ऐसे सर्वत्र जानिये. वट मार्ग. झटकेन झटके, देशीप्राकृत, खड्गाऽऽघात तिन करिकैं ।११। किलकारतइति ॥ भै भय. असि खड्ग. अंकनसे अंक चिन्ह तिनसों. बिज्जुरी के चिन्हनसे यह अर्थ ॥ १२ ॥ ॥ गहिइति ॥ नर्तककी नर्तक बहुरूप स्वांग आनिबेवारो ताकी. वंचत ठगत. करितुंड करि हस्ती तिनके तुंड मुख. "तुंडमास्यं मुखं वक्र' मितिहैमः ॥ ससुंड सुंडा सहित. स्वसुंड अपनें सुंडमैं. आखुग गणेश. आखु उंदूर ताकरिकैं चलिबेवारे. "द्वैमातुरो गजास्यैकदंतौ लंबोदराखुगौ" इतिहैमः ॥ अंक लोकके गोद तामैं ॥ १३ ॥ १४ ॥ पवमानइति ॥ पवमान पवन. दिगुत्तरको उत्तर हिमालयकी तरफकी दिशा ताको. आजमशाह गोलासों उठ्यो ताके पहिलेही चल्यो हो सो. सरयो चल्यो. यहां प्रसरयो प्रसरयो ए अंत्यानुप्रास हैं. ति ते ॥ १५ ॥ मिलिइति ॥ इरम्मदलों इरम्मद मेघकी प्रभा ताके तुल्य 'मेघज्योतिरिरंमदः' इत्यमरः ॥ सिंजित भूषणको शब्द. "भूषणानां तु शिञ्जित" मित्यमरः॥ झंड झंडे. रोहित सीधे इंद्रधनुष. 'तदेव ऋजु रोहित' मित्यमरः ॥ तनितारव तनित स्तनित मेघको निर्घोष ताके तुल्य आरव शब्द 'स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोष" मित्यमरः ॥ १६ ॥ करकाबलिइति ॥

करकावलि इड्डन खंड किरैं, फटि टोप उडे बकपंति फिरैं ॥
चमकैं जो इरिंगणलौं चिनगी, उद सोनित बुट्टि झरैं उमगी॥१७॥
रन जाजव पाउस यौं बिरच्यो, मुगलान चुह्वानन दाव मच्यो ॥
भट खग्गन के कटि सुंडि भ्रमैं, अहि ज्यौं जनमेजय अध्वरमैं ॥१८॥
करकैं कटकावलि कोच कढैं, फरकैं कढि कालिक वच्छ फटैं ॥
तरकैं तरवारिन हड्ड तुटैं, छरकैं छिति छिंछिन रत्त छुटैं ॥१९॥
लटकैं असवार तुखार लरैं, पटकैं गहि इक्कहिं इक परैं ॥
चटकैं कटि टोपनकी चटकैं, छटकैं भट बाजिन लोह छकैं॥२०॥
गटकैं पल गिद्धनि प्रेत गिलैं, खटकैं असि खुप्परि खंड खिलैं ॥
अटकैं कि रकाबन पाप अरे, भटकैं भट गज्जहि छोह भरे ॥२१॥
लगि कोसन जंगनकी लरसैं, बरखा नरअंगनकी बरसैं ॥
सननंकत मोथन प्रान सरैं, झननंकत आयुध आग्गि झरैं ॥२२॥
तननकत तेगनकी तरकैं, थरकैं रननंकत लोह थकैं ॥
रन होत मुहूरत मान रह्यो, बलतैं बल लोह सुमार बह्यो॥२३॥

[दोहा]

बल बल लोह सुमार बढि, घोर मचिग घमसान ॥

करका ओले गड़ा तिनकी. आवली पंक्ति. किरैं बिखरैं. इरिंगण खद्योत. ओके जिगनियांके तुल्य. 'खद्योतो ज्योतिरिंगणः" इतिहैमः ॥ यहां अकार विशिष्ट ओकारको प्राकृत तासों ह्रस्व जानिये. यातैं सगनको ह्रास भयो नहीं यथा॥ 'इहिआरा बिंदुजुआरा ओत्थुक्का. अवक्खमिलिआवि लहुलहवंजणसंजो-ये परे असेसं पिसाविहास" सितिपिंगलो नागराजः ॥ उद जल. यहां नग्गी उग्गी अंत्याऽनुप्रास ॥ १७ ॥ रनेति ॥ अध्वर यज्ञ तामैं ॥ १८ ॥ करकैंइति ॥ कालिक कलेजा. वच्छ ओके छाती. रत्त रक्त॥ १९ ॥ लटकेइति ॥ तुखार उत्तम हय विशेष. "ताजिकाश्च खुरासाणास्तुषाराश्चोत्तमा हयाः"इति नकुलपांडवः॥ चटकैं चटक खंड ताके बहुवचनमैं ऐकार है ॥ २० ॥ गटकेंइति ॥ कि कितेक. ॥ २१ ॥लागिइति॥ लरसैं लरस. पंक्तिको वाचक. देशीप्राकृत ताके बहुवचनमें ऐकार. मान हृदयमैं रहिबेवारे प्रान विशेष. सरैं चलैं ॥ २२ ॥ २३ ॥ दोहा ॥

आजमसुत अंधार भो, चंडकिरन चहुवान ॥ २४ ॥

(षट्पात्)

घटिय दोय २ गवि रहत प्रथित आजम सुत पिल्ल्यो ॥
नगउर दतिया नृपति ठानि हरवल्ल दल ठिल्ल्यो ॥
कुक्क परिग चहुँकोद टुक्क टुक्कन दल तुट्टत ॥
हगन मोह हुलास छोह सूरन असु छुट्टत ॥
निज साह भाग रनगति नव प्रबल नीति फल पक्कयो ॥
बुंदिय नरेस पावक विसम तृन आजम दल तक्कयो ॥२५॥

(मुक्तादाम)

घटानिभ फौजन भो घमसान, उतैं जवनेस इतैं चहुवान ॥
बजैं असि हड्डन अड्ड विदारि, किधौं तरु कट्टहिं क्रूर कबारि॥२६॥
अग्यो दतियापति सम्मुह आय, पग्यो झरि वीर लयो फल पाय॥
रुप्यो गजसिंहहु कूरमराज, सज्यो इत हड्डनको सिरताज ॥२७॥
वढी बुध भूपतिकी हतबाह, कटे भट ओर भज्यो कछवाह ॥
धग नाम गंगर संकुलि धुंधि. लयो नृप आजमको सुत रुंधि॥२८॥
रुपे इम जाजव के दल रारि, झरैं असि झल्लरिलौं झनकारि ॥
महानद नच्चन मुंडन मोह, करैं किलकारत कालिय कोह ॥२९॥
झुकैं थिरकैं धडसज्जि ढहन झुंड, रचैं अनिवार नचैं बहु रुंड ॥
अौं इकनैं इक वत्थन आय, परैं गज पब्बय ज्यौं पवि पाय ॥३०॥
थरत्थर सुम्मि गलग्गल थान, लग्यो अहिभोगनकौं लचकान ॥
कुलालक चक्र भगो भ्रमि कच्छ, वाराह सूकर रह्यो विलच्छ॥ ३१ ॥

घमसान ॥ अंधार अंधकार. चंडकिरन सूर्य ॥ २४ ॥ षट्पात् ॥ घटियइति॥ प्रथित विख्यात ॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटाइति ॥ कबारि कबारी लकड़ा ॥ २६॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ कोइसाइति॥ महानद शिव. कोह कोलाहल ॥ २९ ॥ झुकैंइति ॥ असि खड्ग नाके. धार प्रहार. रुंड बिना मस्तकके क्रियावान सुभट रुंडकबन्धौ स्वपर्शीर्षे क्रियायुक्तौ इत्यमरः ॥ पवि वज्र नाको ॥ ३० ॥ थरत्थरइति ॥ भोग फन जिनको. कच्छ कच्छप ॥ ३१ ॥ लगंइति ॥ त्रिविष्टप स्वर्ग. सूचत सूच-

लगे अतलादिक कंपत लोक, इतैं अकुलात त्रिविष्टप ओक ॥
इमैं पलचारहु आरुन रंग, सबै इम सूचत सोनित संग ॥ ३२ ॥
चढ्यो गज आजमपुत्त सचाव, धर्यो नृप सम्मुह उद्धत धाव ॥
कमानन खैंचत कानन कानि, तक्यो इम मारत बानन तानि ॥ ३३ ॥
लगैं सर छत्तिन व्है इम लीन, मनों बिल सप्प कि संबर मीन ॥
सजैं बजि पत्तन सायक सोक, उडैं सलभा जिम अंबर ओक ॥ ३४ ॥
चलैं असि कुंत बरच्छिन चोट, असृग्ग दुरैं बहु हत्थिन ओट ॥
उडैं बहु अंबर अग्गि अलात, जरी गिरि गिद्धनि चिल्हनि जात ॥ ३५ ॥
फिरैं रत्ति फेरव फेरन फाल, बिसुल्लत कंक उडैं बिकराल ॥
कमान फटैं रु हटैं कमनैत, पलान कटैं उलटैं पखरैत ॥ ३६ ॥
हरैं कहुँ प्रान लरैं कहुँ हक्कि, जरैं कहुँ मुच्छ परैं कहुँ जक्कि ॥
बरैं कहुँ हूर झरैं कहुँ बाढ, गिरैं कहुँ भीत धरैं कहुँ गाढ ॥ ३७ ॥
रुलैं कहुँ मत्त खुलैं कहुँ रास, हुलैं कहुँ हत्थि डुलैं कहुँ होस ॥
बकैं कहुँ प्रेत छकैं कहुँ बीर, धकैं कहुँ ज्वाल हकैं कहुँ धीर ॥ ३८ ॥
चढैं कहुँ बाजि बढैं कहुँ चाव, पढैं कहुँ बंदि कढैं कहुँ पाव ॥
धमैं कहुँ स्वास नमैं कहुँ धून, भ्रमैं कहुँ गिद्ध रमैं कहुँ भून ॥ ३९ ॥
मचैं कहुँ गैठ जचैं कहुँ मुंड, रचैं कहुँ साम नचैं कहुँ रुंड ॥
बजैं कहुँ प्रोथ सजैं कहुँ बाह, लजैं कहुँ भीत भजैं कहुँ लाह ॥ ४० ॥
खसैं कहुँ घुम्मि हसैं भट संग, ग्रसैं कहुँ सेष कसैं कहुँ संग ॥

ना करत. सोनितसंग रुधिरके संगकौं ॥ ३२ ॥ चढ्योगजइति ॥ कानि अवधि ॥ ३३ ॥ लगैंसरइति ॥ संबर जल नामैं. पत्तन आपनें पतन करिकैं ॥ ३४ ॥ चलैंइति ॥ असृग्ग कातर. अलात अंगारे. जरी दग्ध भई. ॥ ३५ ॥ फिरैंइति ॥ फेरव शृगाल. "फेरुः फेरवः शिवा" इतिहैमः ॥ फेरन फेराफिरकैं ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ रुलैंकहुँइति ॥ रुलैं रुसैं. हत्थि हस्ती ताको. होस ज्ञान ॥ ३८ ॥ चढैंकहुँइति ॥ बंदि बंदीजन. धमैं धमन करैं ॥ ३९ ॥ मचैंकहुँइति ॥ जचैं जांचैं. साम उपाय विशेष. प्रोथ हयनासा. बाह प्रहार. लाह लाभ ॥ ४० ॥ खसैंकहुँइति ॥ ग्रसैं

चटैं कहुँ सोन घटैं कहुँ चेत हटैं कहुँ पिक्खि गटैं कहुँ हेत ॥४१॥
बटैं कहुँ संगि रटैं कहुँ बेर, खटैं कहुँ भिटि चटैं कहुँ खेर ॥
चबैं कहुँ उड्ड फबैं कहुँ चोट, अबैं कहुँ भिच्छ दबैं कहुँ ओट ॥४२॥
झिलैं कहुँ वार खिलैं कहुँ झुम्मि, मिलैं कहुँ घुम्मि मिलैं कहुँ भुम्मि।
लगैं कहुँ मोह वगैं कहुँ लोह, दगैं कहुँ तोप जगैं कहुँ द्रोह ॥ ४३ ॥
गिनैं कहुँ घाय बनैं कहुँ गाय, हनैं कहुँ दागि भनैं कहुँ हाय ॥
चिपैं कहुँ सोन लिपैं कहुँ चैल, छिपैं कहुँ भाजि दिपैं कहुँ छैल ॥४४॥
तनंकत चाप पपंचन तुट्टि, खनंकत खग्ग सु मुट्ठिन खुट्टि ॥
सनंकत बानन प्रानन संकि, झनंकत पक्खर रोचि झमंकि ॥४५॥
बढे पग्गवानक नद्द विहद्द, महाबल बुद्ध रच्यो अवमद्द ॥
परयो अरि सेन उपक्रम पूर, सज्यो इम संभर एंगव सूर ॥ ४६ ॥
थइत्थेइ नच्चहिँ उट्ठि कबंध, मलप्पहिँ दै कर ताल मदंध ॥
निसादिन जादिन छिन्न अनंत, भिरैं गजतैं गज मत्त भ्रमंत ॥४७॥
अरैं बहु बीति बिनाँ असवार, उलट्टहिँ खुट्टहिँ ज्ञान अपार ॥
गिरैं इभपालक दागित गत्त, मनौं तरुतैं कपि निंद प्रमत्त ॥ ४८ ॥

घाय घावैं. सोन रुधिर ॥४१॥ बटैंकहुँइति ॥ बटैं यह महादर्शीय प्राकृत. उक्त तासों लरैं. भिटि मिलिकैं. बेरश्यावर्त्त. कुदाल. उड्ड ओठ, तासे होठ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥
गिनैंकहुँइति ॥ घाय घाव तिनकों. सोन रुधिर. चैल वस्त्र, 'चेलं चैलं वस्त्रम्' इतिहैमः ॥ छैल यहां सनासुन्दरीके रसिक जानिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥
बढेइति ॥ पग्गवानक पणव वाद्य विशेष. आनक ढोल तिनके. विहद्द बेहद अर्थात्. अवमद्द अवमर्द, ताके रूपराथाण ॥ "अवमर्दस्तु पीडनः" इतिहैमः ॥ उपक्रम पलायन. "उपक्रमस्तुत्प्रेक्ष्यो द्राव" इतिहैमः ॥ संभरपुंगव संभर नायक बहुवाननमें श्रेष्ठ ॥ ४६ ॥ थइथेइइति ॥ ए दोऊ नृत्यके अनुकार शब्द हैं ॥ यहां थकार विशिष्ट दोऊ एकारनकों प्राकृत तासों पहिले लिख्यों, या नागराजके वचनसों रहस्य जानिये. निसादिन निसादी हाथीनके असवार तिन आदिकैं. "हस्त्यारोहा सादियन्ता महामात्रनिसादिनः" इतिहैमः ॥ जादिन यादवनमें. छिन्न छीन. अनंत अपारमित ॥ ४७ ॥ अरैंइति ॥ बीति अश्व. "गंधर्वो वा सप्तर्वाति" इतिहैमः ॥ इभपाल हाथीके महावत. "गजाजीवा इभपालकाः" इतिहैमः ॥ दागितगत्त दागित फाटे गत्त गात्र जिनके ऐसे. निंद निद्रा ॥ ४८ ॥ पताः

पताकिन होत सदंड पपात, वडे तरु ताल सकीस कि बात ॥
किरैं बहु मस्तक लस्तक कट्टि, गिरैं गुन तुट्टि फिरैं धनु फट्टि॥४९॥
खिरैं बिखरैं सर छोरि निखंग, जथा बिलतैं बहु भीम भुजंग ॥
इली असिधेनुन बुट्टि अपार, किधौं मलयाचल नागकुमार॥५०॥
बहैं परिघातन कुंत सबेग, त्रिसीसक सांगि रु पट्टिस तेग ॥
अरैं कति अश्वन मंडि नियुद्ध, करैं तुमुलाहव के भट क्रुद्ध॥५१॥
परैं फटि दुंदुभि भेरिन पूर, गरज्जहिं के नर मंडि गरूर ॥
परैं झरि वग्ग कबी रुलपान, कटैं खुर प्रोथ हयच्छद कान॥५२॥
रची इम संभर जाजव रारि, हनी अरि सेन घनी हलकारि ॥
घटा गज मध्य सु दै घन घाय, लयो नृप आजम पुत्त निराय ॥५३॥
भयो जबहीं असु आजम भंग, सबै नृप तत्थ छुट्टि तजि संग ॥
भज्यो इक १ भूप रु द्वै २ हनि भिट्टि, लयो अब आजमको सुत
बिंटि ॥ ५४ ॥

पताकिनइति ॥ पताकिन पताकी पताका रखनेवारे. जिनके निशाँनबरदार. तिनके. सदंड ध्वजा दंड सहित. तरुताल तालवृक्ष सकीस कीस बानर तासहित "कपिः कीशः प्लवंगमः" इतिहैमः ॥ कि समां. बात पवनको. किरैं बिखरैं. लस्तक धनुषकी मुष्टी. "लस्तकस्तु धनुर्मध्यं" इतिहैमः ॥ गुन प्रत्यंचा. ॥ ४९ ॥ खिरैंबिखरैंइति ॥ सर तीर. भीम भयंकर. इली जिनके छुरी ॥ "स्यादिली करवालिके" तिहैमः ॥ असिधेनु छुरी. "छुरिका चासिधेनुका" इत्यमरः ॥ ॥ ५० ॥ बहैंइति ॥ परिघातन परिघ जिनके लोहांगी. "परिघः परिघातनः" इत्यमरः ॥ त्रिसीसक त्रिसूल. "सर्वला तोमरे शल्यं शंकौ शूले त्रिशीर्षक" मिति हैमः । अरैं लरैं. अश्व घोरेनकों. नियुद्ध भुजयुद्ध. "नियुद्धं बाहुयुद्धं स्या" दित्यमरः ॥ तुमुलाहव संकुलित युद्ध ॥ ५१ ॥ परैंफटिइति ॥ पूर समूह. गरूर देशीप्राकृत गर्व. वग्ग घोरेनकी बाग. कबी लगाम. हयच्छद घोरेनके स्कंध. "हयस्कंधो हयच्छद" तिहारावली ॥ ५२ ॥ रचीइमइति ॥ घटागजमध्य हस्तीनकी घटाके बीच. "बहूनां घटना घटे" तिहैमः ॥ सु सो ॥ ५३ ॥ भयोइति ॥ असु प्राण. आजम लग्नपक्षीक. नृप अमिराज. इक नरवरको राजा गजसिंह कछवाह भज्यो. रु अरु. द्वै २ कोटाकों महाराव रामसिंह अरु दतियाको राजा दलपतिसिंह बुंदेला २ ए दोऊ तिनकों. भिटि मिलिकैं. बिंटि घेरि ॥ ५४ ॥

चढ्यो गजह्वो अब हारि बिचारि, रची सुत आजम बानन रारि ॥
सु संभर हेति सबै बरसाय, दयो अरि निब्बल पारि दबाय॥५५॥
हुती हय७लक्ख चमू हमगीर, भयो अवसान न इक्कहु भीर ॥
रच्यो जिहिँ बिग्रह भुग्गन राज, बचैं वह तित्तिरि क्यौं लहि बाज।५६।
फितूर दफै करि मंडल केरि, घनी निज सेन लयो गज घेरि ॥
कियो तउ बानन जंग कराल, कहाँलग जोर करैं लहि काल ॥५७॥
अधर्म न होत सहायक अंत, लगे बुध आयुध मर्म मिलंत ॥
भयो सुत आजम मोहि बिभान, चल्यो समतंगहि लै चहुवान५८

(दोहा)

घटिय इक्क खिल रवि रहत, घल्लिय संभर घत्त ॥
आजमसुत इभपाल सह, मोहित भयउ प्रमत्त ॥ ५९ ॥
इभ समेत लै तिहिँ अधिप, उमँडि मुकामन आय ॥
साहबहादुर ढिग सजव, पत्र बिजय पठवाय ॥ ६० ॥
सरिता इक्क ढिग सजतह्वो, सफरन बडिस सिकार ॥
आयो डेरन बिजय सुनि, कहत बुद्ध जयकार ॥ ६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे आजमप्रधनानन्तरमनेकार्यराजाजमसेनापृथ-

---

चढ्योइति ॥ सु सो (दीदारबख्श). संभर बुधसिंहनें. हेति शस्त्र ॥ ५५ ॥ हुतीइति ॥ हय सात ७ लाख. अवसान अंत समय. भीर सहाय. भुग्गन भोगिवेकों ॥ ५६ ॥ फितूरइति ॥ फितूर यावनी. झूठो गर्व. लुप्तद्वितीयाक. दफै यावनी नष्ट. तउ तथापि. काल मृत्यु नाहिं ॥ ५७ ॥ अधर्महति ॥ अंत अवसान तामैं. मोहि मूर्छित व्हैकैं. बिभान बिना भान. समतंग मतंग मातंग वाको हस्ती तासहित ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ घटियइति ॥ खिल शेष. बोके बाकी. घत्त घात. इभपालसह महावत सहित ॥ ५९ ॥ इभसमेतइति ॥ अधिप राजा (बुधसिंह). सजव बेग सहित ॥ ६० ॥ सरितेति ॥ सफरन सफर मत्स्य तिनकी. बडिस बनसी जोके कालिया ताकरिकैं ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के पति बुधसिंह के चरित्र में आजम के मरे पीछे अनेक आर्य राजाओं का आजम की

गमवन १ नरवरनृपकूर्मगजसिंहरणापलायन २ दतियाभूपदलपति सिंहमरण ३ आजमात्मजबीदारबख्तसमूर्छितदशाग्रहणं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितस्त्रिपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५३ ॥

(दोहा)

आजम दल अवलग्ग बच्यो, पृथक सोऽगति पाय ॥
अब टरिटरि रन उत्तरे, आलम दल विच आय ॥ १ ॥

(षट्पात्)

चरमाचल रवि चलत चित्त प्रमुदित निसचारन ॥
आजम सुत तजि मोह बहुरि झुल्ल्यो थित वारन ॥
को जिय्यो दल कोन सु सुनि इन कहिय कुसीलित ॥
जिय्यो आलमसाह कटक वाको तुम कीलित ॥
बीदारबख्त यह सुनि दुखित हौदासौं सिर दुनिमरिय ॥
भलि लोह छकित कुसलाकहू परि प्रमत्त असु परिहरिय ॥ २ ॥

[दोहा]

जिहिं उप्पर आजम सुवन, भरिग फोरि उतमंग ॥
वारन वह सोनित वमत, आयुध भेदित अंग ॥ ३ ॥

सेना से जुदा होना १ नरवर के राजा गजसिंह कछवाहे का युद्ध से भागना २ दतिया के राजा दलपतिसिंह बुंदेले का मारा जाना ३ आजम के पुत्र बीदारबख्त का मूर्छित दशा में पकड़ेजाने का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ त्रेपन २५३ मयूख हुए ॥

दोहा ॥ आजमइति ॥ अवलग्ग अद्यावधि. पृथक् जुदो ॥ १ ॥ षट्पात् ॥ चरमेति ॥ चरमाचल अस्ताचल ताके ऊपर. "अस्तस्तु चरमक्ष्माभृ" दित्यमरः ॥ प्रमुदित प्रमोदित लोभकरि. मोह मूर्च्छाकों. सु सो. इन बुधसिंह के सुभटों नें. कुसीलित यह संबोधन है. खोटे सीलवारे ते. कीलित बद्ध. तोके कैदी प्रमत्त मोहित. असु प्रान. परिहरिय तजिय ॥ २ ॥ दोहा ॥ जिहँउप्परइति ॥ सोनित रुधिर. वमत उगलत ॥ ३ ॥ आजमइति ॥ भेदर कावनी आभूषण.

विबुधालय झल्लरि घंट बजे, सुरभीन स्ववच्छन मेलसजे ॥ १०॥
दिन मूकन घूकन हूक दई, चित चक्कन चौंकि तजी चकई ॥
चिलकारिन पिंगलिका चहकी, निधिसी निसचारन धारनकी॥११॥
चहुँओरन चोरन चाय चढे, बहु जारन दारन मोद बढे ॥
दिनचार भपार अगार दुरे, फबि ब्योम नछत्रन चित्र फुरे ॥ १२ ॥
जुरि दीप निवासन भास जगी, दहनोदय चुल्हिन हेति दगी ॥
रचि गायक गोरिय गान रहे, गनिकान उमंगि भुजंग गहे ॥१३॥
रस पीय स्वकीयन हीय रजे, परकीयन तीयन पीय तजे ॥
भय मुद्ध नवोढन चित्त भरयो, हिय ह्रच्छय मध्यन बोध हरयो ।१४।
बसि प्रोढन केलि त्रपा बिसरी, क्रुध धारि अधीरन रारि करी ॥
छमि आगस धीरन नाह छले, चढि चाव बिदग्धन दाव चले ॥१५॥

चावनी संसारमैं. विरंज विना रंज. विबुधालय देवालयमैं ॥ १० ॥ दिनमूक-इति॥ चिलकारिन चीत्कारी वाके शब्दको अनुकरण है. "चिलीतिसान्ते चि-लीलिती" दीक्षयसंतराजः॥ पिंगलिका कोचरी. की करी. कही नहीं अन्त्यानु-प्रास है ॥ ११ " चहुँइति ॥ भयार अगवारे ॥ १२ ॥ जुरिदीपइति ॥ जुरि ज्व-लित व्हैकैं. दीप दीपक. निवासन घरमैं. भास कांति. "भाश्छविद्युतिर्दीप्तयः" इत्यमरः॥ दहनोदय दहन अग्नि ताके उदय करिकैं. चुल्हिन चुल्ही चुल्ही लोकै चूल्हा. रसोई पकायवेके तिनमैं. हेति ज्वाल. "अर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियां" मि-त्यमरः ॥ गोरियगान गोडी रागिनीको गान. हनुमान कविराजके मतमैं तथा आधुनिक गायकनके मतमैं गोडीको समय सायंकाल है. भुजंगगहे भुजंगस अपने पति ॥ "भुजंगो गणिकापति" रितिहैमः ॥ १३ ॥ रसपीयइति ॥ पीय प्रिय. अपनों परिणीत. अपनों परिणीत नायक. तत्संबंधी रस शृंगार तामैं. स्वकीयन स्वकीया नायिकानको. हीय हृदय. रजे रंजित भये. मुद्धनवोढान मुद्ध मुग्धा. नवोढन नवोढा तिनके. ह्रिय ह्री लज्जा तामैं. 'मंदाक्षं ह्रीस्त्रपा व्री-डा" इत्यमरः ॥ ह्रच्छय काम तामैं "विषमायुधो दर्पककामहृच्छयाः' इतिहै-मः ॥ मध्यन मध्या नायिकानके ॥ १४ ॥ वसिप्रोढनइति ॥ प्रोढन प्रौढा नायि-कानमैं. केलिवसव्हैकैं. त्रपा लज्जा कों. क्रुध क्रोध कों. अधीरन अधीरा नायि-कानमैं. छमिआगस आगस अपराध ताकों. छमि क्षमाकरिकैं. धीरन धीरा नायिकाननैं. नाह नायक. विदग्धन विदग्धा परकीया नायिका विशेष तिननैं. वाक्यविदग्धा १, क्रियाविदग्धा २ ए दोऊ तिनके. दाव चातुर्यसों नायककों

रस भूति स्वदूतिन ऊलि रची, बयवारिन लच्छितिकान बची ॥
कुलटा तजि गेह सनेह कमी, जियमैं मुदितान सु प्रीति जमी ।१६।
अनुपुव्वसयानन भीति अरी, पिय संग सहेट न भेट परी ॥
परभोगदुखीन सखीपरखी, हिय रूप रु प्रेमवती हरखी ॥ १७ ॥
पतिप्रोषितकान बिलाप पर्यो, क्रुध मानस खंडितिकान कर्यो ॥
बिन टेक निबाहि अबैं दरिता, तजि मान उठी कलहंतरिता ॥ १८ ॥
झगि बिप्रसलब्धन सोक झिल्यो, मन सेट सहेट न आनि मिल्यो।
उतकंठिनि पुच्छि निदान अली, लख्यो मग बासकसज्जलली॥१९
भर दर्प अधीनइनान भज्यो, अभिसारिनि बेस नयो उपज्यो ॥
बहु गंध कुबेलनको बिकस्यो, ससिहू ब उदैगिरितैं निकस्यो।२०।
ससिके बसि ओषधि पोष लह्यो, गडकाय चकोरन मोद गह्यो ।

संकेतादि सूचना करिबेके ॥ १६ ॥ रसभूतिइति ॥ रसभूति रसहीसैं भूति वैभव जिनकै ऐसी. स्वदूति स्वयंदूतिकाननैं. यह नायिका प्राचीननमैं लिखी नहीं. अरु चमत्कार विशेष हु नहीं तथापि आधुनिक भाषाकविनके मताऽनुसार लिखिदीनी है. ऊलि क्रीड़ा. बयबारिन बयवारी अपनें समान अवस्थाधारी सखी तिनसों. लच्छितिका लक्षिता नायिका. बची नहीं छिपी रही. सनेह नेह सहित. कमी चली. मुदिता मुदिता नायिकानकै॥१६॥ अनुपुव्वइति ॥ अनुपुव्वसयानन अनु है पूर्वमें जिसकै ऐसी सयानन सयाना जे अनुसयाना तिनके. भीति त्रास संकेतके नासादिककी. सहेट संकेत तहां. भेट मिलाप. परभोगदुखीन अन्यसंभोगदुःखिता तिननैं. सखीपरखी यहां विपरीत लच्छनासों याकी शत्रु जो नायकसों संभोग करिआई सो दूती जानिये. रूपरुप्रेमवती रूपगर्विता प्रेमगर्विता ए दोऊ॥१७॥पतिप्रोसतिकानइति॥ पतिप्रोसतिका प्रोषितपतिका तिनके. क्रुध क्रोध. मानस मन. खंडितिकान खंडिताननैं. दरिता डरी हुई ॥ १८ ॥झगिविप्रइति ॥झगि दूती प्रकुपित व्हैकैं. विप्रसलब्धन विप्र सहित लब्धा जे विप्रलब्धा तिनकैं. मनसेट मनस इष्ट, मन ताको इष्ट स्वामी ऐसो नायक. उत्कंठिनि उत्कंठिता तिननैं. पुच्छि पूछ्यो. निदान आदिकारन नायकके अनागमको. लख्यो लख्यो. मग मार्ग. बासकसज्जलली वासकसज्जा ललनानैं ॥ १९ ॥ भरदर्पइति ॥ भर भार. दर्प गर्व ताको. अधीनइन अधीन वशीभूत है इन पति जिनकै ऐसी जे स्वाधीनपतिका तिननैं. अभिसारिन अभिसारिका तिननैं. कुबेलनको कुबेल कुवलय लोके गट्टल तिन-

भुवपैं इम होत ।नसीथ भयो, रस ग्रेतन १११२ नयो रचयो ॥२१॥
थित निंद प्रजा व्यवहार थके, जिम संजम इंद्रिय जोगिनके ॥
गति या भांति रत्ति सु बिति गई, अलि प्रमाकुहूरत बेर भई ॥२२॥
बिरुदावलि बंदिनको बिथरयो, क्रम जग्गिय तहाँ नृप नित्य करयो॥
छकतैं कसि आयुध जोम छल्यो, चढि वाह सु साह हजूर चल्यो २३
इत आगम प्रात लुभे अहके, चटकी चरनायुधहू चहके ॥
दिक प्राचिय आरुन रंग दिपी, लगि अंबर सुन्दि सु रोचि लिपी २४
लघु दिट्ठि नछत्रन निट्ठि लहैं, थित ज्यौं तजि भोगन ध्यान चहैं॥
भजिकैं तम आहि गुफान भरयो, जिम तत्व लहैं भ्रम दूर करयो २५
द्युति पूर जरूर इतैं दमक्यो, चढि अज उदैगिरिपै चमक्यो ॥
छकमैं तिहिं बेर नरेस छयो, गति अर्जुन साह समीप गयो ॥२६॥

(दोहा)

साहबहादुर तिहिं समय, बैठो आम बनाय ॥
नजरि निछावरि लेत निज, परिकरतैं अप पाय ॥ २७ ॥
सुनि आगम बुधसिंहको, दाउआदा पढि देखि ॥
प्रमुदित आयो तखत पुनि, लोभ विजय निज लेखि ॥२८॥

(मनोहरम्)

एतेमैं नरेस आय अंदर प्रवेस होत,
उमहि नकीब कीनी सूचना अकूली है ॥
जाय कारि नजरि निछावरि मिसल लेत,

को. घ अघ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतआगमइति ॥ अहके दिनके. चटकी चिरी. चरनायुध कुक्कुट. दिक दिशा. प्राचिय प्राची पूर्व. आरुन अरुन लाल रंगकी. सु सो. रोचि कांति ॥ २४ ॥ लघुदिट्ठइति ॥ भोगन शब्द स्पर्शादि विषयनको. तम अंधकार. तत्वलहैं तत्वज्ञान अर्थ ॥ २ ॥ द्युतिपूरइति ॥ द्युति कांति. ताको पूर समूह. अज अर्क सूर्य ॥ २६ ॥ दोहा ॥ साहबहादुरइति ॥ आम बड़ी सभा ॥ २७ ॥ सुनिआगमइति ॥ दाउआदा कालकी पुरजा. प्रमुदित अधिक प्रसन्न. पुनि फिरि. लेखि देखिकैं॥ २८ ॥ मनोहरम् ॥ एतेमैंइति ॥नरे-

निकट बुलाय साह बक्खकी बिभूतीहै ॥
बीठलाय हियसौं लगाय मुसिकाय कह्यो,
मरद दर्दा तैं रखी खूब मजबूतीहै ॥
दिल्लीपुर बादी मैं लखी जो यह बादी वीर,
मेरे महारावराजा रावरी सपूतीहै ॥ २९ ॥

(पादाकुलकम्)

महारावराजा इम अक्ख्यो, भूपहिं छिनक लाय हिय रक्ख्यो ॥
पुनि बखसीस करी दिल्लि अधपति, रावनृपति वह सुनहु रविख रति ३०
कोटादिक कोसन५ कमल जानैं, कहत नाम कछु कछु क्रम यानैं ॥
कोटा१अरु बिक्रमापट्टणि२, गागरोनि३तीजो दुर्गम मानि॥ ३१ ॥
साहाबाद५सेरगढ६आनक, अरु बडोद७घेलत अभिधानक ॥
छबडा८अरु घूसेर९दुर्गवर, पंचपहार१०डाप११डग१२नगर ॥३२॥

॥

॥ ३३ ॥

॥

॥ ३४ ॥

॥

॥ ३५ ॥

रा बुधसिंह. [illegible] निरायलेके पश्च. सुजना जानकारी. अठूनी और फाकूसे आरबेलों सी [illegible] पाई है ऊि. आ[illegible]के मारिबेवारे अरु दीदार-पखुल को [illegible] कीलित मारि [illegible]वार, बुंदीसके आयबेतैं नखो-मर्थ पीनहीं. [illegible] ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

आगे ग्रन्थकर्ता [सूर्यमल्ल] की रचीहुई टीका यहां तक ही पाई सो हमने ग्रन्थकर्ता के रचेहुए क्रम के अनुसार ज्यों की त्यों यहां लिख दी है. अब यहां से आगे हम [बारहठ कृष्णसिंह] अपने रचेहुए क्रम के अनुसार कुछ कठिन पदों पर अंक देकर नीचे टीका लिखते हैं.

॥
॥ ३६ ॥
॥
॥ ३७ ॥

साह सिक्ख डेरन दिन्नी जब, बिन्नति नृप करजोरि करी तब ॥
कूरम नृप जयसिंह इगागिय, पै सेवक मंगी तस जोगिय॥ ३८ ॥
तातैं तिहिं संबंध अरज यह, आजम दोस आहि जखमी वह ॥
जो आयस तिहिं ढिग तो जाऊँ, सेवक करि अप्पन समुझाऊँ३९
सुनि यह अरज साह कछु अक्खैं, तव संबंध महर हम रक्खैं ॥
पुर आमेर सु तो फिरि पावहु, अब तव संग भलैं ढिग आवहु४०
यह सुनि नृप कूरम ढिग आयो, प्रदर घाव सिक्कत वह पायो ॥
तीर एक[6] भुज सव्य लग्यो तस, जाजव रन इक[7] कंठ लाहन जस४१
सो जग भयो बुद्ध सरनागत, छकि कूरम पाये केवल छत ॥
तिन सिक्कत जापरु नृप तक्यो, करि मनुहारि मोद हिय छक्यो ।४२।
कही बहुरि नृप नेह कहाई, आजम बसि आमेर बिहाई ॥
आलम सेवा अबहि अराधहु, स्वरूप जोर बुद्धम सुख साधहु॥४३॥
डेरा अब आलम दल मंडहु, खगि कछु दिनन बिपति दुखखंडहु॥
कूरमकों लै संग यहै कहि, चाहुवान निज दत्त आयो चहि॥४४॥
अप्पन ढिग कछवाह उतारे, सालक आमिष बिनय सम्हारे ॥
बिधि इहिं कहैन अपूरव बित्त्यो, जाजव रन बुद्धम नृप जित्त्यो ४५

---

१ इनकी बहिन की मुझसे सगाई (संगर्ग) हुई है ॥ ३८ ॥ २ आजम के पक्ष में होने के अपराध से ३ घायल है ४ आज्ञा होवे तो ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ तीर के घाव को तपाताहुआ ६ वाम भुज पर ॥ ४१ ॥ ७ घाव ही पाया, यश नहीं पाया ॥ ४२ ॥ ८ पहिले के यानि (अड़िलोई) बुधसिंह के बल से ॥ ४३ ॥ ९ गाहन करके ॥ ४४ ॥ १० साला बहिनोई ने अधिक मनाया था ११ इस रीतिसे अपूर्व (पहले नहीं हुआ ऐसा) नाश १२ राजा बुधसिंह ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे मूर्छोत्थितश्रुतस्वानीकपराजयकरिपल्याणप्रहारभग्नमस्तकदीदारबख्शमरणं १ दीदारबख्शगजगतकोटिमुद्रालंकारोपेतविजयप्राप्तिबुधसिंहबहादुरशाहसेवानिवेदनं २ द्वितीयदिनप्रभातयवनेन्द्रबहादुरशाहसभासमागतबुधसिंहार्थमहारावराजपदसहितद्वापञ्चाशत्प्रान्तयवनेन्द्रप्रदानं ३ बुधसिंहालमसेनासमानीताम्बेराधीशजयसिंहालमसेवकत्ववर्णनं षोडशो मयूखः॥ १६ ॥

आदितः चतुःपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५४ ॥

(षट्पात्)

मरत साह अवरंग मंत्र मंडिय रट्ठोरन ॥
अब न साह अवनीस मूढ तस सुत प्रमाद मन ॥
इहिं अंतर यह पिक्खि आनि बंभन अगार सन ॥
पहु तख्त जोधपुर नृपहिं रक्खहु निसंक मन ॥
यह मिसल अठ्ठ८उपजाय उर द्विज गृहतैं तब आनि हुतै ॥
नृप अजितसिंह रक्ख्यो तख्त सबन तत्थ जसवंत सुत ।१।

(दोहा)

इत आलम लहि बिजयअरु, प्रभुपन सत्य प्रमानि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, मूर्छा से सचेत हुए दीदारबख्श का अपनी पराजय सुनकर हाथी के होदे से मस्तक फोड़ कर मरना १ दीदारबख्श के हाथी पर क्रोड़ रुपयों के भूषण सहित विजय मिलने का बुधसिंह का बहादुरशाह की सेवा में निवेदन करना २ दूसरे दिन बुधसिंह के प्रभात समय बादशाह बहादुरशाह की सभा में जाने पर बादशाह का बुधसिंह को महारावराजा के पद के साथ बावन परगने देना ३ आमेर के राजा जयसिंह को बुधसिंह का आलम की सेना में लाकर आलमशाह के सेवक बनाने के वर्णन का सोलहवां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चोपन २५४ मयूख हुए ॥

राठोड़ों ने १सलाह की २ भूमि का पति बादशाह अब नहीं है उसका मूर्ख पुत्र उन्मत्त मनवाला ३ ब्राह्मण के घर से ४ जोधपुर के उमरावों की गणना में मुख्य आठ मिसल (बैठने की जगह) मानी जाती हैं ५ शीघ्र ॥ १ ॥ २ ॥

सुत जखमिन आजम भटन, नृपन हरामी जानि ॥ २ ॥
इहिं अंतर मरुधर[1] खबरि, पहुँची विविध पुकारि ॥
रट्ठोरन जसवंत सुव[2], दयो तख्त बैठारि ॥ ३ ॥

[षट्पात]

यह सुनि आलमसाह कहर[3] हिंदुनपर कुप्यो ॥
प्रलय रुद्र जिम प्रबल लज्ज धीरज सब लुप्यो ॥
दिय आयस तिहिंबेर नगर आमेर१रु नरउर२ ॥
कोटापत्तन३ बहुरि पुरी दतिया४ रु जोधपुर५ ॥
आमेर आदि चउ४राज्य ये आजम[4] दोख उतारि लिय ॥
रट्ठोर हुकम बाहिर रहत धंन्व[5] सीस अमरख धकिय[6] ॥४॥
समँर[7] जित्ति यह साह रहिय चउ४मास सुसावर ॥
इसं[8] दसमी१०अवदात[9] अनखि मारवँधर[10] उप्पर ॥
पीरन जारति करन बुल्लि अजमेर बहानाँ ॥
करि फोजन दरकुंच आय आमेर रहानाँ ॥
बुधसिंह हिंतु[11] जयसिंह तब कहिय एह परिनँय[12] समय ॥
इत साह संग अनँवधि[13] गमन बहिनि भई इत उचितँ[14] वय ॥ ५ ॥

(दोहा)

साह जेर करि जोधपुर, करिहैं दक्खिन जेर ॥
बेग न पुनि आवन बनैं, ब्याहनकी यह बेर ॥ ६ ॥
लग्गी हमरी खालसै, रजधानी[15] रंन रोस ॥

---

१ मारवाड़ देश की २ पुत्र को ॥ ३ ॥ ३ क्रोध करके अथवा जुलम के साथ हिंदुओं पर क्रोधित हुआ ४ आमेर को आदि लेकर चार राज्य तो आजम के पक्ष में होने के दोष से उतार लिये और राठोड़ पहिले से ही हुकम बाहिर थे इसकारण ५ मारवाड़ पर क्रोध में ६ जला (प्रज्वलित हुआ) अथवा क्रोध करके मारवाड़ पर चला ॥ ४ ॥ ७ जाजव का युद्ध ८ आश्विन ९ सुदि दशमी १० मारवाड़ पर क्रोध करके ११ से १२ परनने (विवाह करने) का १३ विना अवधि १४ विवाह के उचित अवस्था॥५॥६ ॥ १५लड़ाई करने के क्रोध

*अंतहपुर सामोदगढ, रक्ख्यो भटन[1] भरोस ॥ ७ ॥
तातैं द्वैरदिन सिक्खलै, वहिनी लेहु विबाहि ॥
संगहि ऐहैं साहढिंग, चित्त वहुरि खुंव[2] चाहि ॥ ८ ॥
बुंदियपति यह सुनि कहिय, सुनहु अरज मम साह ॥
मुलतान[3] जु संबंध भो, जानत ज्यानपनाह ॥ ९ ॥
कूरम नृप यातैं कहत, सहर निकट सामोद ॥
द्वैरदिन अंतर लगनहै, बिरचहु व्याह बिनोद ॥ १० ॥
तातैं जो आयस[4] लहौं, आऊँ करि उदबाह[5] ॥
द्वैरदिनकी यह सुनि मुदित, सिक्ख दई तब साह ॥ ११ ॥
संभर कूरम सिक्खलै, आये दुहुँ सामोद ॥
बनि दुल्लह बुधसिंह नृप, साह्वि लगन सविनोद ॥ १२ ॥
जामि[6] वडी जयसिंहकी, अमरकुमरि अभिधान[7] ॥
बुंदियपति हिय हित बिरचि, व्याही विहित[8] विधान ॥१३॥
इत आलम अजमेरपुर, पहुँच्यौं गजब गरूर[9] ॥
बुंदियपति आमेरपति, आये वहुरि हजूर ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

इम आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि ॥
रचि मारून[10] पर रीस हल्यो[11] दरकुंच अलस[12] हरि ॥
अजितसिंह सुनि एह नमित मरुदेस नरेसुर ॥
वेग आय कर बंधि परयो पायन अल्हनपुर[13] ॥
इम साह धन्व[14] किय निज अमल सत्थ रक्खि जसवंतसुव[15]॥

से राजधानी (आमेर) खालसे होगई * जनाना १ उमरावों के भरोसे ॥ ७ ॥ २ भूमि लेने की चाह से ॥ ८ ॥ ३ मुल्तान में थे तब ॥ ९ ॥ १० ॥ ४ आज्ञा ५ विवाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ ६ वहिन ७ नाम ८ उचित रीति से ॥ १३ ॥ ९ बहुत घमंड से ॥ १४ ॥ १० मारवाड़ों पर ११ चढ़ा १२ आलस्य मिटा कर १३ आलणयावास नामक नगर में १४मारवाड़ में १५ जशवंतसिंह के पुत्र को

उप्परि उफान सागर उपम दक्खिन पर गज्ज्यो गरुव॥१५॥
रहि कछुदिन अजमेर साज्जि संभर सेनापति ॥
दक्खिनपर दरकुंच गव्व धरि चलिय अनंक गति ॥
होय दुग्ग चित्तोग हेठ दसउर मिलान दिय ॥
यहँ रानाँ अमरेस प्रनति मनुहारि पठाविय ॥
हिंदवान सीस मिच्छन हुकम तामैं कुल रानन टरयो ॥
जवनेस तदपि निकसत निकट प्रनति द्रव्य पठवन परयो ॥१६॥

[दोहा]

अमररान अप्पन अनुज, तखतसिंह अभिधान ॥
देवसिंह मेघमपुर पँ, कुवरपठये सनिदान ॥ १७ ॥
इक्क१अनेकपँ च्यारि४हय, साह काज दिय संग ॥
च्यारि४बाजि चहुवान हित, इम पठवाय अभंग ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

अष्ट८बाजि गज इक्क१भेट अमरेस पठाये ॥
तखतसिंह अरु देव लै रु दसउर दुवरआये ॥
बाजि च्यारि बुधसिंह हेत नतिपुब्ब निवेदिय ॥
मंडि विविध मनुहारि जानि जामिप प्रमोदि जिय ॥
पुनि कहिय साहहित रान प्रभु हय हत्थिय पठये हुल्लासि ॥

साथ रख कर वहां से १ उफड़ कर २ समुद्र के बढाव के ३भांति४बहुत (भारी) ॥ १५ ॥ ५ चहुवाण बुधसिंह को ६ गर्व ७ पहिले इसका पिता औरंगजेब गया था उसी रीति से ८ चित्तोड़ के नीचे होकर ९ मंदसोर मुकाम किया १० अमरसिंह ने ११ विशेष नम्र होकर १२ हिन्दुस्थान के ऊपर म्लेच्छों के हुकम से १३ रानाओं का कुल ही बचा है १४ तोभी १५ भेजना पड़ा ॥ १६॥ १६ अपना छोटा भाई १७ नाम १८ पति १९ कारण सहित [अपने देश में आये हुए बडों को भेट देनी चाहिये इसकारण से] ॥ १७ ॥ २० हाथी २१ बुधसिंह के लिये, 'अभंग' यह महाराणा का विशेषण है ॥ १८ ॥ २२ मंदसोर नामक पुर में २३ नम्रता पूर्वक २४ बुधसिंह को बहिन का पति जान कर २५ बादशाह के लिये २६ प्रसन्न होकर

मिलवाय हमहिँ यह भेट अव* विदित निवेदहु समय वसि॥१९॥

दोहा—सुनि संभर तिन्ह संग लै, जवनेंइस ढिग जाय॥
मिलवाये दसलूँ[3] सित, क्रम सलाम करवाय॥ २०॥
सीसोदन अक्खो सबहि, नुति[4] जु कहाई रान॥
आलम अंगीकार किय, नुति रु भेट सनिदान॥ २१॥
बुंदियपति करि सिक्ख तब, लै तिन्ह डेरन आय॥
नृप कूरम रट्ठौरहू, तीन्हे उभय बुलाय॥ २२॥
अजितसिंह अरिसिंहकों, इक संभर अवलंब॥
पुच्छिय मंत्र नरेसपनि, कहिकहि कित्ति कदंब॥ २३॥

[षट्पात्]

वैरहु वत्त बुंदीस आय[12] रुक्कत हम आतुर॥
लियउ कुपि जवनेस छिन्नि आमेर जोधपुर॥
नहिँ निबाहि अब सकत विभव गज बाजि बिभँन अति॥
स्रोत सफरँ[15] जिम साह गहत दिनदिन उलटी गति॥
सुनि यह नरेसँ अक्खिय उचित औसर कछु धीरज वहँहु॥
सेवन बढाय कछु साहको गत सही सु निजनिज गहहु॥२४॥
बुंदियपतिको हुकम साह दलौं[19] माँहिँ सबनसिर॥
सीसोदन यह पिक्खिँ जानि जोमिप जग जाहिर॥
रान सुभँट[22] राउत्त देवसिंहह वेघस पति॥

---

* प्रक्षिप्त॥२४॥ १दुर्जनसिंह २बादशाह के पास ३रीति के अनुसार॥२०॥ ४नम्रता वा स्तुति ५कारण सहित अर्थात् राणाओं ने पहिले नम्रता और भेट कभी नहीं की थी इसकारण से॥२१॥ ६आमेर का राजा कछवाहा जयसिंह ७जोधपुर के राजा राठोड़ अजीतसिंह का॥ २२॥ दुर्जनसिंह का ही ८आधार था ९दुर्जनसिंह से १० कीर्ति का समूह॥ २३॥ ११ कहो १२ इन आमद करने से १३ पीड़ित हैं १४ उदास १५ जल के प्रवाह में मच्छ के समान [बहतेहुए जल में मच्छ उलटाही जाता है] १६ दुर्जनसिंह ने कहा १७ दिन १८ धारण करो॥ २४॥ १९ बादशाह की सेना में २० देखकर २१ पहिनोई २२ महाराना का उमराव देवसिंह

संभर प्रति करजोरि बिहित अक्खिय यह बिन्नति ॥
करि नेह गेह पावन करहु मंजु[1] बिबाहहु जाँमि[2] मम ॥
सुनि यह नरेस स्वीकार किय सिक्ख बिमंगिय[3] साह सम[4] ॥

[दोहा]

दस बासर[5]की सिक्ख दिय, साह बिदित सनमान ॥
अजितसिंह जयसिंहसौं, तब अक्खिय चहुवान ॥ २६ ॥
बेघम व्याहन जात हम, तुम रहि साह समीप ॥
मन न गिनहु कुमहर महर[6], उर बिचारि अवनीप[7] ॥ २७ ॥

[षट्पात]

सुनि कूरम रट्ठोर दुहुन अक्खिय सनेह सधि ॥
साह कितव[8]के संग अबहु जैहैं रेवा[9]ऽवधि ॥
इहिं अंतर कछु होय ततो रहिहैं संगति[10] लर ॥
नहिंतो ऐहैं सुररि अप्प करियो कछु उप्पर ॥
यह सुनि नरेस पुनि उच्चरिय यह उचित न तुमकौं अबहि ॥
जोलौं बिबाहि आऊँ सजव[11] तोलौं पुनि रक्खहु हितहि ॥ २८ ॥

[दोहा]

इम प्रबोधि[12] बुंदिय अधिप, मन जय जुब्बन[13] मत्त ॥
दसउरतैं दरकुंच करि, पुर बेघम द्रुत पत्त[14] ॥ २९ ॥
पुत्ती[15] अनुपमसिंहकी, फूलकुमारि अभिधान[16] ॥
देवभ्रात[17] सबिनय दई, बुद्धहिं बिहित[18] बिधान ॥ ३० ॥
बान तक्क मुनि इक्क १७६५ सक्क, पुरिखाम माधव[19] मास ॥

१सुंदर २ यहिन ३ मांगी ४ बादशाह से (यहां 'सम' शब्द 'से' का वाचक है) ॥ २५ ॥ ५ दिन की ॥ २६ ॥ ६ अकृपा और कृपा ७ हे राजाओ ॥ २७ ॥ ८ छली [ठग] के साथ ९ नर्मदा नदी पर्यन्त जावेंगे १० साथ चल कर ११ वेग सहित ॥ २८ ॥ १२ समझाकर १३ जाजव के युद्ध की जय और जोवन से मन में मस्त होकर १४ प्राप्त हुआ [गया] ॥ २९ ॥ १५ पुत्री १६ नाम १७ भाई देवसिंह ने १८ उचित रीति से ॥ ३० ॥ १९ वैशाख ॥ ३१ ॥

चुंडाउति व्याही चतुर, बुंदियपति सविलास ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे दृष्टयवनेन्द्रराज्यदौर्बल्यमारवठक्कुराजितसिंहयोधपुरपट्टाभिषेचन १ श्रुतमरुदेशोदन्तक्रुद्धयवनेन्द्राजममित्रत्वापराधहृतामेरकोटानरउरदतियाराज्ययोधपुरप्रयाणं २ हृतयोधपुरालमशाहदक्षिणदेशगमनं सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

आदितः पञ्चपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५५ ॥

[षट्पात्]

चोवन५४गढ जब साह दये जाजव रन जित्तत ॥
कोटाहू तिन माँहिं नृपहिं दिन्नौं अरिबित्तत ॥
जय उद्धत चहुवान नाँहिं सम बिसम बिचार्यो ॥
आतन भुव लरि लेन प्रथम दल³ उतहिं हकार्यो ॥
कग्गर पठाय लिखि अप्प कर बेघम सनँ बुंदिय नगर ॥
करिलेहु प्रथम कोटा अमल भट मंत्रिय सम्मति समर॥१॥
यह कग्गर इत बंचि मंत्र मंडिय इत बुंदिय ॥
जोधराज परधान बनिंक बपवृद्ध प्रपंचिय ॥
धावैं गंगाराम सूर सुभटन इक्कत करि ॥
कोटा उप्पर कटक बेग मंडिय बीरन बरि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बादशाही को निर्बल देख कर मारवाड़ के उमरावों का अजितसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बिठाना, मारवाड़ की खबर सुनने से बादशाह का क्रोधित होकर आजम के साथी होने के दोष से आमेर, कोटा, नरवर, दतिया इन चारों राज्यों को खालसे करके जोधपुर पर चढ़ाई करना २ जोधपुर को खालसे करके आलमशाह के दक्षिण में जाने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पचपन २५५ मयूख हुए ॥

१ बुधसिंह को २ शत्रुओं का नाश होने पर ३ सेना ४ अर्जी ५ कागज[पत्र] ६ अपने हाथ से ७से ८युद्ध में सलाह करके ॥ १ ॥ ९ पत्र १० बनियां ११धाऊ

सुहुकम्म बंस कनकेस सुत[1] जोगीरामहिं मुख्य किय ॥
यह वीरधीर हडुन उमगि चलि सम्हारि चतुरंगिनिय[2] ॥२॥

[दोहा]

कोटापति जाजव मर्यो, तासु[3] तनय नृप भीम ॥
बेसतरुन लै पट्ट बल, सो न तजत निज सीम ॥ ३ ॥
बालकृष्ण निज व्यास अरु, फतेचंद कायत्थ ॥
बुंदिय पठये भीमनृप, करन साम नय कत्थ[4] ॥ ४ ॥
आय हुँहुँन किन्नी अरज, कोटा इक्क[5] न लेहु ॥
मुलक ओर सबही नजरि, निज गिनि धरहु सनेहु । ५ ।
नाथाउति नृपमात[6] तब, अरज न मन्नी एह ॥
हिंदुनके दिन पत्तरे, उपजत लोभ अछेह ॥ ६ ॥
तमंकि[7] तत्थ दोऊ सचिव, पच्छे निज पुर पत्त ॥
भक्खी[8] भूपति भीमसौं, रन मंडहु अनुरत्त[9] ॥ ७ ॥
इत बुंदियतैं उमँडि दल[10], चम्मलि उत्तरि चंड[11] ॥
गंजन जोगियराम गो, स्निरत अंबर[12] भुजदंड ॥ ८ ॥

(मुक्तादाम)

सज्यो उत भीम[13] महादल[14] सूर, गज्यो इत जोगियराम गरूर ॥
कचौंदियखेट[15] मिले दुव आय, दये दल[16] दोउन बाजि[17] उठाय ॥९॥
बजी रन गेठ[18] मची धमचक्क, चलाचल होनियँ[19] लग्गि लचक्क ॥

१ कनकसिंह का पुत्र २ सेना ॥ २ ॥ ३ उस रामसिंहका पुत्र भीमसिंह तरुण अवस्था में था तो भी ॥ ३ ॥ ४ राजा भीमसिंह ने नीति के कथन से मिलाप करने को भेजा ५ अपनं जान कर ॥ ५ ॥ ६ बुधसिंह की माता ने ॥ ६ ॥ ७ तहां क्रोध करके ८ कहा ९ युद्ध में अनुरक्त होकर युद्ध रचो ॥ ७ ॥ १० सेना ११ भयंकर (यह यातो सेना का विशेषण है अथवा चामल नदी का विशेषण है) १२ आकाश से ॥ ८ ॥ १३ भीमसिंह १४ बडी सेना १५ कचोदीखेड़ा में १६ सेना में १७ घोड़े उठादिये ॥ ९ ॥ १८ बल पूर्वक प्रहार अथवा निरंतर प्रहार १९ भूमि चलायमान होकर झुकने लगी

खटक्किय [1]हड्डन हड्डन खग्ग, मचक्किय पब्बय लै डगमग्ग ॥१०॥
बडेबल भीम करी हतबाह, कटे बहु बुंदिय सेन सिपाह ॥
तिलत्तिल [2]तुट्टिग स्वामिय काम, परयो कनकाउत जोगियराम॥११॥
दयो सब बुंदिय सेन बिगारि, [3]जयो नृप भीम[4] हजारन मारि ॥
उतैं सु कबंध रु कूरम नत्थ[5], गये दुव मेकलजा[6] लग सत्थ॥१२॥
[7]तथापि न साह भयो [8]अनुरत्त, चल्यो दरकुंचन जात उमत्त[9] ॥
वहै सरितां[10] तब साह उतारि, फिरे दुव भूपति डेरन जारि ॥१३॥
मिल्यो नृप रान इहाँ अनुरत्त, उदैपुर हैं दरकुंचन पत्त ॥
इते दुल्लही नृप [11]सेवन चाहि,चल्यो जवनाधिप सेवन चाहि ॥१४॥
लयैं नृप रानिन [12]सांवंर संग, मिल्यो जवनेसहिं धारि उमंग ॥
गयो दरकुंचन दक्खिन साह, सजे दल सब्बल[13] सूर सिपाह ॥१५॥

(दोहा)

कामबखस निज भ्रातहो, दक्खिनधर रखवार ॥
भागनगर बीजापुरप[14], हुव तिहिं सिर हुसियार ॥१६॥
बिक्रमनृप परमारभो, उज्जइनीपुर ईस॥
ता पीछैं नृप भोज भो, धारानगर अधीस ॥ १७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटारावभीमसिंहस्यकोटाविजयार्थप्रस्थितबुन्दीसैन्यनिरसनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥

१हाडों के खड्ग हाडों पर खटके॥१०॥२टूटा (मारागया)॥११॥ ३ विजई हुआ ४ भीमसिंह ५ कछवाहों का नाथ (पति) ६ नर्मदा तक साथ गये ॥ १२ ॥ ७ तोभी ८ अनुकूल ६ उन्मत्त १० वह नर्मदा नदी ॥ १३ ॥ ११ बादशाह की सेवन की इच्छा से ॥ १४ ॥ १२ बुधसिंह १३ सबल (बलवान्) ॥१५॥ १४ पति ॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में कोटा के राव भीमसिंह का कोटा विजय करने को गईहुई बुंदी की सेना को नष्ट करने का अठारहवां १८ मयूख समाप्त हुआ

आदितःषट्पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५६ ॥

(दोहा)

इन लग हिंदुन अद्दरयो, छक्कि उचित[1] रन छोभ ॥
इन पिच्छैं नय[2] धरम तजि, लग्गे केवल लोभ ॥ १ ॥
पृथ्वीराज चुहान नृप, जयचंदह रट्ठोर ॥
इनलगहू कछु अनुसरी, हिंदुन धरम हिलोर ॥ २ ॥
तिनपिच्छैं तुरकान[3] हुव, निज नय धरम निधान॥
पीढिन कछु अंतर परत, छंडो तिनहु कुरान ॥ ३ ॥
इत बुंदियपति अद्दरिय, कोटाउप्पर कोप ॥
इत आलम रन अंकुरयो[4], लाज धरम करि लोप ॥ ४ ॥
कामबखस आलम अनुज, अग्गैं जिहिं अवरंग ॥
भागनगर बीजापुरह, सूबा दिय हित संग ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तुरकन दिन बिपरीत आय आलम तिहिं उप्पर ॥
धर दक्खिन धमचक्क सजिय बीजापुर संगर[5] ॥
बुधसिंहहिं बलईस[6] बिरचि अति कोप बढारयो ॥
कामबखसकौं पकरि मुद्ध[7] आगस बिनु[8] मारयो ॥
बप्प[9]के दये छलकरि कुनिधि[10] लिय बीजापुर भागपुर ॥
सूबा सम्हारि सज्जिय अमल आलम अनय[11] उमंगि उर ॥६॥
इत कूरम रट्ठोर आय बिरहित अति आतुर[12] ॥
मेकलजा[13]सन सुररि उररि[14] दुव पत्त[15] उदैपुर ॥

और आदि से दोसौ छप्पन २५६ मयूख हुए ॥

१ युद्ध में उचित क्रोध करना इन तक ही रहा २ नीति ॥ १ ॥ २ ॥ अपनी नीति और धर्म में निधान ऐसे ३ यवनों का राज्य हुआ ॥ ३ । ४ युद्ध में खड़ा हुआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ युद्ध ६ सेनापति ७ मूर्ख ने ८ अपराध बिना ९ पिता को दिये हुए १० बुरी रीति से ११ अनीति से ॥ ६ ॥ १२ अपने राज्यों की आमद के विरह से पीड़ित होकर १३ नर्मदा से १४ उद्दंड होकर(धीठता से)१५ प्राप्त हुए

दहवारी दिस इक्क हुते बहुरा[1] जु बिनायक ॥
आय रान अमरेस तत्थ भिंट्यो छलतच्छक[2] ॥
तीनहि नरेस केकान[3] तजि मन प्रसन्न वत्थन मिले ॥
रानहिं निहारि भूपन दुहुन[4] खूबिंय हिय पंकज खिले ॥७॥

(दोहा)

अग्गैं रान प्रतापसे, भये अरातिन भीम[5] ॥
आयसहू[6] नहि अहरयो, साहनको जिन सीम ॥ ८ ॥
साह सिकंदर जुल्लिकरन, अरु गज्जन गोरीस ॥
अग्गैं हिंदुन जित्तिकैं, भये प्रबल भुव ईस ॥ ९ ॥
तिनतैं अबलग नहिं तक्यो, सीसोदन गिनि साँह[7] ॥
यह कुल राउल वप्पको[8], रक्खैं हिंदुन राह ॥ १० ॥
पुर आमेर रु जोधपुर, साह सुभट[9] सरसाय ॥
आलमतैं अब तोरिकैं, उभय उदैपुर आय ॥ ११ ॥
अमर रान अति मोद करि, भिंट्यो[10] सनमुख आय ॥
कूरम तहँ जयसिंह कछु, चरनन हत्थ चलाय ॥ १२ ॥
पकरि हत्थ हियलाय[11] तव, कढ़िय रान अमरेस[12] ॥
भूपति मैं पावन भयो, आवन दुहुन अधेस ॥ १३ ॥

(षट्पात्)

इम मिलाप करि रान आय तिनसहित उदैपुर ॥
महलन परिखद[13] मंडि उभय खुल्ले अवनीसुर ॥
बाहिर परिखद लांघि रान सम्मुह पुनि आयो ॥ ॥

---

१ बहुरा विनायक नामक [गणेश] २ छल को काटनेवाला [यह महाराणा का विशेषण है] ३ घोड़े छोड़ कर ४ खुशी से ॥ ७ ॥ ५ शत्रुओं को भयंकर हुए ६ हुक्म ॥ ८ ॥ ९ ॥ ७ बादशाह अर्थात् उनको सदैव ही शत्रु ही समझे बादशाह कभी नहीं समझे ८ बापा राउल (इनका नाम महेन्द्र और उपपद बापा था) का कुल ॥ १० ॥ ९ बादशाह के उमराव ॥ ११ ॥ १० मिला ॥ १२ ॥ ११ हृदय से लगाकर १२ अमरसिंह ने ॥ १३ ॥ १३ सभा

करि जुहार कर सीस रक्खि बहु मोद बढायो ॥
कर दुहुँन रथंभि निज संग करि हुलासि खास परिखद हल्लिय ॥
उमराव बुल्लि निजनिज उचित करन मंत[1] एकंत[2] किय ॥१४॥

(दोहा)

बहिनी बुल्लहिँ त्याहिँ इत, देवीसिंह रत्तलेस ॥
वेग्रमतैं[3] हुत आयकैं, मिलियो[4] रान नरेस ॥ १५ ॥
दिल्लखुसाल प्रासादकैं[5], गोख मध्य पग[6]धारि ॥
बैठे भूपति तीन ह्वां, चौकी गद्दी डारि ॥ १६ ॥
मध्य रान अमरेस[7] अरु, कूरम नृप दिस वाम ॥
दक्खिन दिस रट्ठोर नृप, इम रहि सज्जिग[8] साम ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

कूरमपति करजोरि कहिय सीसोद नृपति प्रति ॥
तुरकनको नहिँ तोर[9] भयो सब जोर मंद गति ॥
राजाकुल तुमरो सुं[10] हद्द हिंदुन तुम रक्खैं ॥
जोखा[11] दिल्लिय जार प्रबल आनन[12] तुम पक्खैं ॥
साहसों तोरि इम आय इत राज धरम साहस परखि ॥
हिंदुन[13] हँकारि हिंदुव अवनि हिंदुन[14]पति भुग्गहु हरखि ॥१८॥

(दोहा)

इत बुल्ल्यो रट्ठोरनृप, इम रावरे सुभट्ट[15] ॥
भुग्गहु अज्जाउत्त[16] भुव, ताहि दिल्लिय पुर पट्ट ॥ १९ ॥

(मुक्तादाम)

---

१ मंत्र (सलाह) करने को २ एकत्र (इकट्ठे) ॥ १४ ॥ ३ शीघ्र ४ मिला ॥ १५ ॥ ५ दिलखुशाल नामक महल के झरोखे में ६ पधार कर ॥ १६ ॥ ७ अमरसिंह ८ मिलाप किया ॥ १७ ॥ ९ प्रताप १० सो ११ योषित (स्त्री). दिल्ली रूपी स्त्री है सो तुम जैसे प्रबल जार का १२मुख देखती है १३ हिंदुओं को बुलाकर हिन्दुओं की भूमि को १४ हे हिन्दुओं के पति हर्ष के साथ भजो १५ उमराव १६ आर्यावर्त की भूमि ॥ १९ ॥

यहैं सुनि रान कही अमरेस, न मैं पुरदिल्लिय जोग्य नरेस ॥
सुनै हम दिल्लियको दसतूर, रहो सब सांजलि[१] साह हजूर ॥२० ॥
प्रवेसत सायुध[२] इक्क न आम[३], सजैं सब बारहि बार सलाम ॥
जहाँ बिनु आयस[४] बुल्लि सकैंन, नमैं[५] इकटक्क निहारत नैंन ॥२१॥
जहाँ नहिं बैठक दुक्ख दुरूह[६], तरज्जत[७] तंडिँ नकीवन जूह ॥
चलैं सब पैदल आनन अग्ग, प्रभू[८]जिम मन्नि पलोटत[९] पग्ग ॥ २२ ॥
पठावत नारिनकौं नवरोज, उठावत पत्तनकौं हतओज ॥
बजावत बंब[१०] न जावत बार, सजावत पुत्रिन[११] ब्याहि सिंगार॥२३॥
सुनौं यह साहनको दसतूर, हलैं सब हिंदुव धुज्जि हजूर ॥
प्रभुप्पन[१२] मिच्छन भोग्यहि एह, लिख्यो बिधि हिंदुन गोधि[१३] न लेह[१४]॥२४
रु कोउ करैं इम हिंदुव राज, भिरैं तब जानि असूयन भाज[१५] ॥
हमैं तसमात[१६] न दिल्लिय हौंस, दहैं[१७] घर रक्खन ही निस द्यौंस।२५।
रु जो हठ दोउनको मत एह, गिनौं तब दिल्लियही[१८] यह गेह ॥
रजू तुम साह उथप्पन राज, उदैपुर ही तब दिल्लिय आज ॥२६॥
पुरा[१९] नृप कूरम[२०] मान जु किन्न, पधारि सुधारि वहै तुम लिन्न ॥
अबै हठ अप्पन ज्यौं जस होय, जथा[२१] करिये बल कालहिं जोय।२७।

---

१ हाथ जोड़े हुए ॥ २० ॥ २ आयुध सहित ३ बड़ी सभा में ४ विना आज्ञा बोल नहीं सक्ता बादशाह के देखने ही नेत्र नहीं टिसका कर ५ झुकते हैं ॥ २१ ॥ ६ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसा दुःख ७ गर्जना करके नकीबों का समूह डराता है और मुख आगे सब पैदल चलते हैं ८ स्वामी के समान आन कर ९ पैर दबाते हैं अथवा पग पंपोलते हैं ॥ २२ ॥ १० नगारा ११ उनसे विवाह करके पुत्रियों का शृंगार कराते हैं ॥ २३ ॥ १२ यह स्वामीपन म्लेछों के भोगने योग्य ही है १३ ललाट में नहीं लिखा १४ लेख ॥ २४ ॥ जाति की असूया के १५ पात्र १६ इसकारण हम को दिल्ली की चाह नहीं है १७ घर की रक्षा में ही जलते (छीजते) हैं ॥ २५ ॥ १८ इस घर (उदयपुर) को ही दिल्ली जानों ॥ २६ ॥ १९ पहिले २० तुम्हारे प्रपितामह राजा मानसिंह ने जो किया था (मानसिंह ने बादशाह अकबर की सेना का सेनापति होकर महाराणा प्रतापसिंह से युद्ध किया था और सामिल भोजन नहीं कराने के कारण राणा की पुत्रियों को यवनियें बनाने का भय दिखाया था) २१ जिसप्रकार ॥२७॥

बद्यो पुनि कूरम भूप वृतंत, भली सबही करिहै भगवंत ॥
अबैंकरि हिंदुन इक्कत *अत्थ, सजैं पुनि आलमपैं निज सत्थ ॥

(दोहा)

हिंदुव चाकर रानके, इक परंतु यहँ ओर ॥
आलमतैं हम तोरिकैं, लियउ रावरो जोर ॥ २९ ॥
देस दुहुन१के खालसैं, और न लैन उपाय ॥
तो हम जित्तैं मुलक निज, जो दल देहु सहाय ॥ ३० ॥
जित्ति मुलक पुनि कटक सजि, व्है दुवे२रान हजूर ॥
दक्खिनपर दरकुंच करि, जित्तहिं साह जरूर ॥ ३१ ॥
रानकहिय कछुदिन उभय२, रहहु अत्थ गृह जानि ॥
पुनि जो जो भवितव्य३हैं, लेहैं सबहिं प्रमानि ॥ ३२ ॥
वाँदिन डेरन सिक्ख दिय, दोउनतैं कहि एह ॥
इक१इक१गज हैं२हैं अरव, दोउ२न अप्पि सनेह ॥ ३३ ॥
अतरपान पुनि बुल्लिकैं, इन ढिग रक्खे रान ॥
तब दोउन२कर ओडि कहि, देहु अप्प कर दान ॥ ३४ ॥
रान तथापि न पान दिय, पानदान गहि हत्थ ॥
जिहिं अंतर कर दुहुँन२के, संग्रेहि धरिय समत्थ ॥ ३५ ॥
दोउ२नृप इम पान लै, निज निज डेरन आय ॥
दूजेदिन किय गोठि तब, रान अमर रस भाय ॥ ३६ ॥
दोउ२नृप बुल्लिलय बहुरि, पंति परिय चहुँ ओर ॥
करिय अरज तँहँ रान प्रति, पुनि कूरम रट्ठोर ॥ ३७ ॥
इक१थाल विच अप्पनों, हमसँह भोजन होय ॥
अबतैं संतत एकता, करहु न संसय कोय ॥ ३८ ॥

* यहां ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ जोधपुर और आमेर के दोनों राजा ॥ ३१ ॥ २ यहां ३ होनेवाला ॥ ३२ ॥ ४ उस दिन ॥ ३३ ॥ ५ बुलाकर ६ हाथ मांड(फैला) कर ७ आप के हाथ से ॥ ३४ ॥ ८ तोभी ९ पकड़ कर, उस समर्थ (महाराणा) ने ॥ ३५ ॥ १० स्नेह की रीति से ॥ ३६ ॥ ३७॥ ११हमारे साथ १२निरंतर॥३८॥

सुनि बुल्ल्यो *भट रानको, दृढमन गंगादास ॥
सगताउत पुरबानसों, पति कछु †रोस प्रकास ॥ ३९ ॥
‡कूरम पति यह रावरे, पुरुखन अग्गैं कीन ॥
तोहू कुल उज्जल यहै, भो नहिं धरम बिहीन ॥ ४० ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं अकबरसाह लैन जुगराज लुभाये ॥
भगवतसिंह रु मान[1] पिता सुत उभय[2]पठाये ॥
दरकुंचन इन दौरि जोर जित्ती गुज्जर[3]धर ॥
पलटे पुनि सुत जनक[4] मिजल पंचक[5]के अंतर ॥
भगवंतसिंह आयो प्रथम दिल्लिय जावत रान घर ॥
जिनदिनन छत्र राना उदय धारन हिंदुन धर्मधर ॥ ४१ ॥
नृप भगवंतहिं रान जाय सम्मुह गृह लायो ॥
उनहू भोजन करन रान जुत प्रसभ[5] रचायो ॥
दिय उत्तर तब रान देत तुरकन तुम पुत्रिय ॥
हम हिंदुव अकलंक[6] धरम छंडैं न जात जिय ॥
तस्समात[7] सुनहु दोउन[2]असन[8] इक्क[1]थाल नांहिंन उचित ॥
यहसुनि नरेस भगवंत तब पृथक[9] जिम्मि बुल्ल्यो बिदित[10]।४२।

॥ पज्झटिका ॥

नृप सुनहु पंच बासर[11] बिहाय, सुत मान[12] इहाँ ऐहैं सुभाय ॥

---

* महाराणा का उमराव † क्रोध करके ॥ ३९ ॥ ‡ हे कछवाहों के पति (जयसिंह) आप के बडाउवों ने भी पहिले ऐसा ही किया था ॥ ४० ॥ १ मानसिंह २ गुजरात ३ पुत्र और पिता ४ पांच दिन के अंतर * से ॥ ४१ ॥ ५ हठ किया ६ निष्कलंक ७ इसकारण से ८ भोजन ९ भिन्न (जुदा) जीमकर १० प्रसिद्ध बोला ॥ ४२ ॥ ११ पांच दिन बिताकर १२ मेरा पुत्र मानसिंह

छठे राशि की टीका के नोट में हम लिख आये हैं कि आमेर के राजा मानसिंह के साथ भोजन नहीं कर नें का विरस महाराणा प्रतापसिंह से हुआ था उदयसिंह का नाम भूल से लिखागया है सोही यहां जान ना चाहिये ॥

वासौं नरेस व्है हठ प्रमत्त, बुल्लहु न भुल्लि ऐसी *कुवत्त ॥ ४३ ॥
यह कहि नरेस भगवंत वत्त, दरकुंचन दिल्लिय नगर †पत्त ॥
दिन पंचक अंतर कुमर मान, भिंट्यो पुनि ‡सम्मुह जाय रान॥४४॥
मिलि तास[1] विरचि अति मानुहारि[2], पुनि रान स्वगृह तिन[3]जुत पधारि
रचि गोठि विविध व्यंजन रसाल[4], बैठारयो मानहिं पृथक थाल॥४५॥
रहि रान दिठ्ठि परुसन[5] लगाय, तब कुमर मान बुल्ल्यो हिताय ॥
तुमकौंहु उचित बैठन नृपाल, भुंज्जैं[6] दुव भुज्जन[7] इक्क थाल॥४६॥
तब कहिय रान राजाधिराज[8], एकासन[9] व्रत मैं करिय आज ॥
कूरम तथांपि[10] बुल्ल्यो निहोरि, सागस[11] न होत व्रत इक्क छोरि॥४७॥
हमरो हुव आगम समय पाय, है इक्कथाल भोजन हितांय[12] ॥
इम प्रसंभ[13] पुंज मानहिं निहारि, पटु रान उँदय[14] बुल्ल्यो प्रचारि ४८
तुम लोभ धारि लिय जवन रीति, हमरे घर हिंदुन धर्म नीति ॥
तुम अधम जामि[15] दुहिता[16] कलत्र[17], तुरकन समप्पि हुव सचिवतत्र॥४९॥
अकलंक यहै ईकलिंग[18] ऐन, तसमात[19] संग भोजन बनैं न ॥
यह सुनत मान कुप्यो कराल, बुल्ल्यो सु उट्ठि छंकि[20] छोरि थाल ५०
तुम तियन पारि तुरकन प्रसंग, कछु दिनन अंत [21]खैहैं[22] वे संग ॥
यह कहि द्रुत दिल्लिय मान जाय, अकबरहिं अत्थ आन्यो कुपाय५१

---

*ऐसी खोटी वार्ता भूलकर भी मत कहना ॥ ४३ ॥ † प्राप्त हुआ (पहुंचा) ‡ सन्मुख जाकर मिला ॥ ४४ ॥ १ उस मानसिंह से २ मनुहार ३ उस मानसिंह सहित ४ रसयुक्त ॥ ४५ ॥ ५ परोसने में दृष्टि लगाकर ६ भोजन करैं ७ भोजन ॥ ४६ ॥ ८ राजाओं के पति [महाराना] ने कहा ९ दिन में एक समय भोजन करने का व्रत १० तोभी कछवाहा बोला कि ११ एक व्रत छोड़ने से अपराध नहीं होता ॥ ४७ ॥ १२ हित के अर्थ १३ मानसिंह का हठ का समूह देख कर वह चतुर १४[महाराणा उदयसिंह) ललकार कर बोला ॥ ४८ ॥ १५ बहिन १६ बेटियें और १७ स्त्रियों को देकर वहां (यवनों के) सचिव हुए हो और यह १८ एकलिंगेश्वर का घर [मेवाड़वालों के इष्टदेव एकलिंग महादेव हैं] कलंक रहित है १९ इसकारण २० क्रोध में पूर्ण होकर ॥ ५० ॥ २२ अब २१ साथ खावेंगे ॥ ५१ ॥

बहु बरस रहिय चित्तोर जंग, रान न तथापि[1] छंडयो स्वरंग[2] ॥
बिनु बित्त[3] लहिय बरसन बिपत्ति, छिँति[4] हित तथापि कंपी न छत्ति।
यह कुल वहै हि निज नय[5] उपेत, दुहितादि[6] तुम सु तुरकान देत।
इकथाल असन तातैं बनैंन, भट हम निसंक मिथ्या भनैंन॥५३॥
यह सुनि कबंध कछवाह राय, खँमि[7] समय जानि रोस न दिखाय॥
करजोरि कहिय दुवरन्नृपन फेरि, हिंदुन नरेस तुम धर्म हेरि ॥५४॥
हम किय अधर्म गिनि बिभव हानि, मरजी सु करहु भट हमहिं मानि॥
अमरेसरान यह सुनि उदार, बुल्ल्यो सु ब्यावहारिक[9] बिचार ।५५।
मम गेह ओर नहिं तुमहिं देयँ[10], इक बत्त सुनहु दुवरन्नृप अजेय[11] ॥
सौंपहु जो निजकर[12] लिखित सत्य, अबतैं न दैहिं तुरकन अपत्य[13]।५६।
तो दुवरसुतौं[14] सु दोउन रबिवाहि, देसहु लै देहैँ अरिन दाहि ॥
सह[15] भोजन तो नहिं उचित[16] आहि, पत्रावलि[17] जिम्मत हम सदाहि ५७
तुम डारि रजत बिष्टर[18] बिसाल, नगजटित मध्य धरि कनक[19] थाल
इम भुंजत[20] तुरकन एधमान[21], इत्यादि हेतु सह असन हयाँन ५८
करि लिखित देहु जो कथित[22] चाहि, तो दैहिं सिक्ख पुत्रिन बिवाहि
दुवरन्नृपन यह सुनि असन[23] किन्न, रान सु परुसावन[24] गहिय भिन्न[25]५९
नृप दुव जिमाय इम सिक्ख अप्पि, डेरन हुँन आय रु मंत्र थप्पि ॥

---

१ तोभी २ अपनी धर्मपरायणता का रंग नहीं छोड़ा ३ धन ४ तोभी भूमि के अर्थ छाती नहीं कांपी ॥ ५२ ॥ ५ अपनी नीति सहित ६ पुत्री आदि ॥ ५३ ॥ ७ सहन करके ॥ ५४ ॥ ८ उमराव मान कर ९ व्यवहार सम्बन्धी ॥ ५५ ॥ १० देने योग्य ११ किसी से नहीं जीते जावैं ऐसे १२ अपने हाथ का लिखा हुआ १३ सन्तान (पुत्री) ॥५६॥ १४ पुत्रियें हैं सो १५ शामिल भोजन करना तो १६ उचित नहीं है १७ पातल (वृक्ष के पत्तों से निर्मित पात्र) में ॥ ५७ ॥ १८ चांदी का बाजोट १९ सोने का थाल २० भोजन करते हो २१ यवनों का पकायाहुआ [यहां 'इध पचने' इस धातु से एधमान शब्द हुआ है जिसका अर्थ पकाना है] ॥ ५८ ॥ २२ मैंने कहा उसको [विवाह की] चाहना होवे तो २३ भोजन किया २४ न्यारे ॥ ५९ ॥ २५ इन दोनों राजाओं ने

यहँ उभय साहसौं तोरि आय, करि लिखित दैंन[1] इत इन कहाय॥६०
अब करहि साह कुमहर अजेय, तसमात[2] रान कथितहि[3] बिधेय[4] ॥
यह सोधि लिखिय नयँ[5] दुहुँनरआदि, तुरकन न दैंहिं अबतैं सुतादि[6]
कहिहैं जु रान धरिहैं सु सीस, इम लिखित ठानि दुव भुवअधीस॥
यह लिखित रानकर दियउ आय, प्रभु रान सुनत बिस्वास पाय
दुहिता दुहूनर[7]ब्याहन बिचारि, बिरचिय बिबाह उच्छव बढारि ॥
कूरमनरेस यह समय पाय, प्रछन्न[8] रान प्रति कथ कहाय ॥६३॥
संग्रामसिंह पट्टप कुमार, सुहिं[9] तास जामि दैहो उदार ॥
सुनि रान बहुरि पच्छी कहाय, इक लिखित और अप्पहु लिखाय॥
याकैं जु पुत्र जगदीस दैहिं, वह मुख्य राज आमेर लैहिं ॥
आंमेरईस[10] सुनि यह उपाय, लिखि स्वकर पत्त दिन्नों पठाय॥६५॥
दुहिता स्वकीय[11] जनिहै सु पुत्त, आमेर पट्ट लहिहै अभुत्त[12] ॥
यह लिखित रान बंचि रु बिचारि, निज पुत्ति[13] उचित कूरम निहारि।

(दोहा)

निज पुत्तिय[14] संबंध तब, कूरम सैंन[15] किय रान ॥
निज काकासुत पुत्रिका, दिय रट्ठौरहिं दान ॥ ६७ ॥
चंदकुमरि कूरम लहिय, कृष्णाकुमरि रठौर ॥
इम बिबाहि दुवरभुव[16]अधिप, जचिय[17] सिक्ख इन जोर ॥६८॥
हँटक[18] दोलाजंत्र[19] तब, दुहुँनरगन न्रप दिन्न ॥

---

१ महाराणा ने ॥६०॥ २ इसकारण से ३ राना का कहना ही ४ उचित है ५ दोनों ने नीति को आगे करके ६ पुत्री आदि ॥ ६१ ॥ ७ भूपति ॥ ६२ ॥ ८ छानें ॥ ६३ ॥ ९ आप के पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री ॥ ६४ ॥ १० जयसिंह ने ॥ ६५ ॥ ११ आप की पुत्री १२ अभुक्त (नहीं भोगने योग्य अर्थात् छोटा होने पर भी आमेर का राज्य लेवेगा) १३ पुत्री यहां सामान्य रीति से पोती को पुत्री करके लिखा है ॥ ६६ ॥ १४ पुत्री का १५ से ॥६७॥ १६ भूपति १७ मांगी [इन, विवाह कीहुई कन्याओं के बल ने, अथवा महाराना के, बल से ॥ ६८ ॥ १८ स्वर्ण का १९ हिंडोला [हींडलाट] ॥ ६९ ॥

दुहुँन२तुल्य दायज अरपि, कुसल सिक्ख तब किन्न ॥६९॥
सत्त सहँस७०००निज दे¹ल सबल, करि दुव२भूपन संग ॥
रान सिक्ख देसन दई, अ²वनी लैन अभंग ॥ ७० ॥
तब दुव२भूपति सिक्खकरि, बढि चल्लिय बरजोर ॥
छोनी दब्बत साहकी, उमँडिय सं³भर ओर ॥ ७१ ॥
दुव२नृप इम दरकुंच करि, संभर उप्पर जात ॥
नारनोल सय्यद सुनी, रुँ⁴मा बिलुट्टन बात ॥ ७२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे दक्षिणागतालमशाहहतस्वानुजकामवख्शभागनगरबीजापुरादान १ आलमशाहविरुद्धनर्मदाप्रत्यागतामेराधीशजयसिंहयोधपुराधीशाजितसिंहोदयपुरागमन २ सहभोजनानंगीकारापमानितलेखितयवनेन्द्रकन्याप्रदानप्रतिषेधपत्रोक्तोभयराजमहाराणामरसिंहनिजात्मजायुगलपरिणायन ३ पट्टपाभावेऽपिलेखितस्वदौहित्रामेरस्वामित्वहस्ताक्षरमहाराणामरसिंहस्वपट्टपपुत्रसंग्रामसिंहकन्याजयसिंहपाणिपीडनवर्णनमेकोनविंशो मयूखः॥१९॥

---

१ सेना २ भूमि लेने को [अभंग, यह महाराना का विशेषण है]॥ ७० ॥ ३ सांभर नगर की ओर बढे [उठे] ॥ ७१ ॥ ४ सांभर लूटने का ॥ ७२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के नृपति बुधसिंह के चरित्र में, आलमशाह का दक्षिण में जाकर अपने छोटे भाई कामवख्श को मार कर भागनगर और बीजापुर लेना १ आमेर के राजा जयसिंह और जोधपुर के राजा अजितसिंह का आलमशाह से विरुद्ध होकर नर्मदा नदी से पीछे फिरकर उदयपुर आना २ महाराणा अमरसिंह का उक्त दोनों राजाओं को सामिल भोजन नहीं करा कर अपमान किये पीछे आगे कभी यवनों को पुत्रियें नहीं विवाहने का पत्र लिखा कर दोनों राजाओं को अपनी दो पुत्रियें विवाहना ३ अपना दौहित्र पाटवी नहीं होने की अवस्था में भी आमेर के स्वामी होने के अक्षर लिखा कर महाराणा अमरसिंह का अपने पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री का जयसिंह से विवाह करने के वर्णन का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सत्तावन २५७

आदितः सप्तपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५७ ॥

[षट्पात]

जाजव संगर जित्ति साह अति गेब्ब[1] सम्हाऱ्यो ॥
संभर पिक्खि सहाय[2] धरा जित्तन मन धाऱ्यो ॥
हुसनअली सय्यद नबाब आदिक सम्मंत[3] करि ॥
जित्ति सँजव जोधपुर धाय[4] दक्खिन साहस धरि ॥
कूरम कबंध अवनीपे[5] इत अमरराज[6] पुलिनपरनि[7] ॥
पृतनाँ[7] प्रचारि लुट्टन प्रथम पत्ते[8] लगि संभरसरनि[9] ॥ १ ॥

[दोहा]

नारनोलपुर सेनंपति[10], हुसनअलीके भ्रात ॥
घिंसीखान रु नूरदी, तँहँ पत्तो[11] यह बात ॥ २ ॥

॥ षट्पात ॥

हुसनअली सय्यद नबाब सुभटन अग्गेसर[12] ॥
नारनोलके फोजदार ताके सोदर भँर[13] ॥
घिंसीखान रु नूरदीन तिन बत्त सुनी यह ॥
लुट्टन संभर नगर सुपहु कूरम कबंध सह ॥
साजि तबहि सेन द्वादस सहँस१२००० रुसाँ[14] नगर रक्खन चलिय ॥
इत नृपन लुट्टि संभर सहर कहँर[15] काल बेहाल्ल किय ॥३॥

(दोहा)

पुरहिँ लुट्टि दुवर नृप कढत, सय्यद पत्ते आय ॥
भट कूरम रट्ठोरके, बुल्ले तिन विहसाय ॥ ४ ॥

मयूख हुए ॥

१ गर्व २ बुधसिंह को अपनी सहाय पर रखकर ३ सहमत (सलाह) ४ शीघ्र ५ भूपति ६ राजा अमरसिंह की ७ सेना ८ प्राप्तहुए ९ सांभर के मार्ग में लग कर ॥ १ ॥ १० सेनापति ११ पहुंची ॥ २ ॥ १२उमरावों में अग्रणी मुख्य) १३भट [वीर] १४सांभर नगर की रक्षा करने को चले. इधर काल रूपी १५ क्रोध करके इनने बुरा हाल कर दिया ॥ ३ ॥ ४ ॥

हरवैं[1] रावत ह्रकिये, आतप करत उभेल ॥
श्रमजल[2] हत्थ पसीजिहै, मुट्ठि न पैहै मेल ॥ ५ ॥
सुनत एह सय्यद भटन, दिय उत्तर अति आघ ॥
छोहानल बिच छिज्जिकैं, नेहो दरित निदाघ ॥ ६ ॥
इम कहि बाजिन वग्गलैं, तुट्टे हिंदुन सीस ॥
दल दोउन धमचक्क बजि, ज्यों कैटभ जगदीस ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मिलि हिंदुन मुगलान धिट्ठे रन रिट्ठे रूमापुरि ॥
भिरि भट चंचल सयनें पयन चंचल जिम पातुरि ॥
लुत्थिन लुत्थि अँहुट्टि बुत्थि लुत्थिन भट कट्टिय ॥
खडुन खग्ग खनंकि रुंड मुंडन भुव पट्टिय ॥
डाकिनिन डक्क डिंडिमि डमंकि नचि भैरव डेरुव नद्दियै ॥
जिम बनिजैकार टंडा ढरत इम अनीकै भुव आच्छदियै ॥८॥

॥ दोहा ॥

वैमीखान रु नूरदी, दुवर सय्यद लिय मारि ॥
हैस१०००सूर दुहुँ ओरके, भरिगे घोर खंग भारि ॥९॥
म कूरम रट्ठौर नृप, पुरसंभर जय पाय ॥
ढिल्ली गहि दोउनर दई, लहँगे अंदर लाय ॥ १० ॥

॥ सोरठा ॥

निज निज देसन आय, दुवर नृप संभर लुट्टिकैं ॥

१घोर रघूप [गरमी]२परिश्रम के जल[पसीने]से ह.थ भीजेंगे [रपटैं]गे. इनकारण तलवार की मूंठ मे मेल नहीं पावैंगे अर्थात् हाथ मे तरवार नहीं थामी जावेगी ॥५॥ ४ क्रोध रूपी अग्नि में जलकर गरमी से ७ डराने वाला जन (पसीना) नष्ट होगया॥ ६ ॥ ८ लेना ९ जिस प्रकार कैटभ नामक दैत्य और विष्णु भगवान् युद्ध हुआ था तैसे ॥७॥१० धृष्ट (धीठ)११वक्र पूर्वक प्रहार१२रोमांच१३चंचल खों से१४युद्ध करके१५नादयुक्त किया अर्थात् भैरवने डेरु (भैरव के वाद्य विशेष) को बजाया१६बनजारा१७सेना से१८भूमि को आच्छादन की॥८॥१९ झड़े मारगये)२०भयंकर खड्ग चलाकर॥९॥२१ दिल्ली रूपी स्त्री के लहँगे (घाघरे)

थानाँ दियउ उठाय, आलमके करि करि अमल¹ ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इत कोटापति भीम² दिय, बुंदिय कटक³ बिगारि ॥
जुज्झ्यो जुग्गियराम हद, मारि मरद तरवारि ॥ १२ ॥
धावर गंगाराम पुनि, सेनानायक⁴ होय ॥
कोटा उप्पर उप्परयो, उत्तरि चम्मलि तोय⁵ ॥ १३ ॥
कायथ घासीराम किय, पंचोलिय परधान ॥
मंत्रि वनिक हरिराम किय, गुज्जर कुमति गुमान ॥ १४ ॥
अलीखान अभिधान⁶ इक, जवन रुहिल्ला बुल्लि ॥
पंचसहँस५०००पँति⁷ रक्खयो, खमग⁸ पताकन खुल्लि ॥ १५ ॥
यह सुनि कग्गरं⁹ भीम नृप, धावर प्रति पठवाय ॥
बाबा धावर हमहुकौं¹⁰, रक्खहिं बुंदिय रॉय¹¹ ॥ १६ ॥
जान्यौं धावर नीतिजड¹², गुज्जर गहल गमार ॥
बाबा कहिकहि जो लिखत, भिरैं न सो रन भार ॥ १७ ॥
दे मिलान¹³ बहु दिन रह्यो, तब धावर नय छिन्न ॥
अलियखानको हक्क¹⁴ चढ्यो, दोय२मास दिन तिन्न३ ॥ १८ ॥

॥ पज्झटिका ॥

लहि समय भीम¹⁵ तब किय उपाय, बहु वित्त रुहिल्ला हित पठाय
अकिखय¹⁶ धावर प्रति¹⁷ देहु बैन, हक्क¹⁸ देहु न तो अब हम लरैं न १९
धावरहिँ कहिय यह अलियखान, जब किय कुमंत्र¹⁹ गुज्जर²⁰ अजान

में आग्न लगा दी ॥ १० ॥ १ मारवाड़ और ढूंढाड़ में अमल (अधिकार) करके आलमशाह के थाणे उठादिये ॥ ११ ॥ २ भीमसिंहने ३ सेना को ॥ १२ ॥ ४ सेनापति ५ चम्मल नदी के जल को उतरा ॥ १३ ॥ १४ ॥ ६ नाम ७ पांच हजार सेना का स्वामी ८ आकाश मार्ग में ध्वजाएं खोलकर ॥ १५ ॥ ९ कागज (पत्र) १० हे बाबा धाऊ [धाय का पति] ११ बुंदी का राजा ॥ १६ ॥ १२ नीति में मूर्ख उस धाऊ गूजर जाति वाले ने जाना कि ॥ १७ ॥ १३ मुकाम १४ तनखा ॥ १८ ॥ १५ भीमसिंह ने १६ वचन १७ कहा १८ धाऊ से कहो ॥ १९ ॥ १९ बुरीसलाह २० गूजर जाति के मूर्खने

बुंदिय भट बुल्लि रु कहिय एहु, मिलि सबहि जवन हक वित्त देहु २०
जो वित्त तो न हय करमें टारि, सब पाहि देहु भरनाँ वरारि ॥
सुनि यह कुमंत्र दुर्मन सिपाह, चढिचढि समस्त लगि वरन राह २१
तुरकन दिय धावर कैद घत्ति, यह खबरि देस दक्खिन हु पत्ति ॥
सुनि नृपति बुद्ध आयस पठाय, नहि लेहु मूढ धावर छुगाय॥२२॥
बहुदिन तब धावर कैद लिन्न, हरिरामसाह पुनि अरज दिन्न ॥
तब हुकम पाय जवनन चुकाय, हरिराम लियउ धावर बुलाय२३
कोटा नरेस इम खग्ग झारि, बैरबेर कटक दिन्नों बिगारि ॥
इत कामबखस सोदरहि मारि, निज अमल देस दक्खिन बिथारि२४
दरकुंच उतरि रेवा दुरंत, उज्जैनि आय करि भ्रात अंत ॥
गिरिवर मुकुंदंदर मध्य होय, पुर पट्टनि चँम्मलि लंघि तोय ।२५।
लक्खेरिय गिरि दरे कढि सुभाय, अजमेर पीर भिटन चलाय ॥
सक सत्त तक्क मुनि इक्क१७६७मान,अजमेर आय दिन्नो मिलान २६
तब बुद्धसिंहप्रति कहिय साह, कूरम कबंध किन्नों गुनाह ॥
संभरहि लुट्टि लिय स्वस्व देस, तसमातें जंग संडहु नरेस ॥२७॥
कहि भूप जिपत अवरंगसाह, हिंदून कियउ सासन निवाह ॥
यह आदि मुलक हिंदुन असेस, बिनु नीति अमल करनों न बेसें २८
फरमान दे रु दोउनरबुलाय, अबही नहिं रुक्कहु दुहुँनरआय ॥
अवरहु अनायें किय भुम्मि भौज. तिन सचन समप्पह ख्वग्गराज२९

१ धन॥२०॥२ ऊंटों को छोडकर ३ उदास होकर ॥ २१ ॥ ४ कैद में घालदिया [रखदिया] ५ हुकम भेजा ॥ २२ ॥ ६ अर्जी भेजा ॥ २३ ॥ ७ सगे भाई को ॥ २४ ॥ ८ दूर है अंत जिसका ऐसी नर्मदा नदी ९ नाश१० मुकुंदरा का घाटा कोटा के राज्य में है ११ चांमल नदी का पानी लांघकर॥ २५ ॥१२ लाखेरी के पर्वतों के दरे से निकलकर १३ मुकाम ॥ २६ ॥ १४ सांभर का १५ अपने अपने देश १६ इनकारण से ॥ २७ ॥ १७ आज्ञा का पालन किया १८ उत्तम नहीं है पारसी भाषा में बेस शब्द अधिक का वाचक है परन्तु यहां लाक्षणा से उत्तम के अर्थ में लिया है॥२८॥१९ आमदनी२० बिना आमदनी२१ भूपतियों को

अह कहि पठाय फरमान तत्त, संभरहु लिखिय दुव२नृपन पत्त३ ॥
हम कहि गुनाह सब किमउ दूर, आवहु निसंक तुम अब हजूर।३०।
यह सुनि कमंध कूरम चलाय, अजमेर साह मिट्यो४ सुभाय॥
तब कहिय साह गिनि अप्प५ तोर, संभर दुहून६लुट्टिय स्वजोर।३१।
कूरम कमंध तब कहिय एह, निज स्वामि निमक खद्दो सनेह७ ॥
आज्ञा अधीन अब उभयरयाँहिं८, जँह स्वामि काम तँह लरनजाँहिं ३२
आलम सिराहि तब दुव नरेस, दोउन१०लिखाय दिय स्वस्व देस॥
दतियादि९ राज अवरहु लिखाय, सँहदेस१० मवन दिन्नैं बुलाय।३३।
इम किंतु न्हान निम्वामि साह, गहि नीति सवन अप्पिय११ गुनाह।
दिन कछु बिताय अजमेर दंगँ१२, अब आप तखत दिल्लिय उमंग ३४

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे योधपुरराजराष्ट्रवराजितसिंहामेरराजकूर्मजयसिंहयोर्महाराणासैन्यसहायशाकम्भरीपुरीलुण्टनानन्तरस्वस्वराज्य-स्वाधिकारणानयनं १ कोटाविजयप्रस्थितबुन्दीसेनापतिधावरगंगारामगूर्जरस्य यवनकारकारानिवर्तनं २ अजमेरागतालमशाहस्याहूताजितसिंहजयसिंहभूपतिद्वयतद्राज्यपुनर्दानानन्तरेतरराजदतियादि

॥ २९ ॥ १ तहां २ बुधसिंह ने भी ३ पत्र ॥ ३० ॥ ४ मिला ५ अपना प्रताप जानकर ६ अपने बल से ॥ ३१ ॥ ७ स्नेह पूर्वक निमक खाया 'सांभर नगर में निमक की झील है इसकारण यहां निमक खाना कहा है' ८ हैं ॥ ३२ ॥ ९ दतिया को आदि लेकर १० देश सहित ॥ ३३ ॥ ११ सब के अपराध दिये [क्षमा किये] १२ नगर में ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में जोधपुर के राजा राठोड़ अजितसिंह और आमेर के कछवाहा राजा जयसिंह का महाराणा की सेना की सहायता लेकर सांभर नगर को लूटकर अपने अपने दोनों राज्यों में अपना अधिकार करना १ कोटा को विजय करने को भेजे हुए बुंदी के सेनापति धाबऊ गंगाराम गूजर का एक यवन की कैद में होना २ शाह आलम का अजमेर आकर राजा अजितसिंह और जयसिंह को बुलाकर दोनों को दोनों के राज्य पीछे दिये पीछे अन्य रा-

राज्यपुनर्दानवर्णनं विंशो मयूखः ॥ २० ॥
आदितोऽष्टपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५८ ॥

[दोहा]

नृप कूरम रट्ठोर सिर, साह नजरि लखि क्रुद्ध[1] ॥
हुसनअली सय्यद धक्यो, बंधुन वैर प्रबुद्ध[2] ॥ १ ॥
पति बुंदिय अरु जवनपति, जाजव रन दुव जित्ति ॥
अब अभिमानन[3] उप्फने, करन कित्ति[4] अपकित्ति ॥ २ ॥
कामबखस जबनैं हन्यौं, तबनैं आलम मुद्ध[5] ॥
याहि मुद्धपनं[6] चिंतयो, बुंदियपति अब बुद्ध[7] ॥ ३ ॥
पुर दिल्लिय दिन पत्तरि, आलम गरब उपत्त ॥
पुर बुंदिय दिन पत्तर[8], उपजिय धम्म[9] अहेत ॥ ४ ॥
तुरक हिंदु सब संग तकि, उपजि अपुब्ब[10] उछाह ॥
करिय कुंच अजमेर सन, लिय दिल्लिय मग साह ॥ ५ ॥
सेखाउत कूरम सहर, नाम मनोहर[11] रंग ॥
दिन दुवरत्तत मिलान[12] दिय, आलम अधिक उमंग ॥ ६ ॥
नृप कूरम रट्ठोरकों, दिय निज देसन रुक्ख ॥
चित्त बुद्ध[13] बुंदिय चहिय, तोरैं गब्ब जय तिक्ख[14] ॥ ७ ॥

[षट्पात्]

किय विन्नति करजोरि रावराजा आलम सन ॥
वंदगाह[?] किय बहुत रचिय पुनि स्वामिधम्म रन ॥
पुरबुंदिय अब पाय सिक्ख बक्खसहु प्रैमोद[15] भेम[16] ॥

जाओं को दालिया आदि राज्य पीछे देने का वर्णन बीसवां २० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठावन २५८ मयूख हुए ॥

१ क्रोधित हुआ २ भाइयों का वैर स्मरण होने से ॥ १ ॥ ३ घमंड ४ कीर्ति को अपकीर्ति करने के लिये ॥ २ ॥ ५ मूर्ख (मूढ) ६ जानकर मूर्खपन का स्मरण किया ७ बुधसिंह ने ॥ ३ ॥ ८ सहित ९ धर्म की शोभना ॥ ४ ॥ १० अपूर्व ॥ ५ ॥ ११ मनोहरपुर १२ मुकाम ॥ ६ ॥ १३ बुधसिंह ने १४ प्रताप ॥ ७ ॥ १५ प्रसन्नता से १६ से

भट बिग्रह मम भुम्मि उतहु रचिहैं कछु उद्यम ॥
मम जैत नाम काका मरद बैरिसल्ल कुल उद्धरन ॥
*सादी हजार१०००सुभटन सहित रहिहैं हाजरि चतुररन॥८॥

(दोहा)

यह सुनि बुंदिय सिक्ख दिय, बुद्ध नरेसहिं साह ॥
जैतसिंह भट सैहस जुत, संग लयो सु सिपाह ॥ ९ ॥
इम आलम लग्कुंच करि, पुर दिल्लिय संपत्त ॥
सत्त तक्क मुनि इक्क१७६७सक, बैठो तखत बिमत्त ॥ १० ॥
फरुकसेर अजीम सुत, करि तिहिं संग करीम ॥
पूरब सूबा ताहि दिय, रक्खयो निकट अजीम ॥ ११ ॥
बिनु बिक्रम अरु नीति बिनु, रहत पिक्खि दिल्लीस ॥
दक्खिन काबल दोहु दिस, सीमा दबिय सरीस ॥ १२ ॥
इत आलमनैं सिक्ख लै, चित इच्छत घर चाव ॥
चलिय मनोहर ढंग तैं, बुंदिय दिस बुधराव ॥ १३ ॥

[षट्पात्]

इक कनफटा नित्यनाथ कउलन आचारिज ॥
हरि हर धरम हटाय करत अधमन मत कारिज ॥
सिस्य बहुत तस संग सुभट हय गैंय सिबिका सह ॥
जावत दक्खिन देस नृपहिं मगमाहिं मिल्यो वह ॥
गजमुखंह पुरोहित नृपनि को कउलसग्ग सेवत रहत ॥
तिहिं जाय नाथ भिंट्यो त्वरित परिय पाय कित्तिय कहत १४

(दोहा)

* सवार ॥ ८ ॥ ६ ॥ १ संप्राप्त हुआ (सुख से पहुंचा) २ विशेष मत्त होकर ॥ १० ॥ ३ फरूखसियर नामक ४ करीमबखस नामक ॥ ११ ॥ ५ रीस (क्रोध) सहित ॥ १२ ॥ ६ राव बुधसिंह ॥ १३ ॥ ७ वाममार्गियों का ८ वैष्णव ९ . . . को हटाकर १० हाथी ११ पालखी सहित १२ पुरोहित का नाम है १३ वाममार्ग १४ मिला १५ शीघ्र १६ कीर्ति ॥ १४ ॥

नित्यनाथकौं *गुरुव नमि, गजमुख नृप ढिग आय ॥
सिद्ध मानि गोरक्ख सम, महिमा कहिय बनाय ॥ १५ ॥
यातैं †सकति प्रसन्न अति, याहि सकति बर दिन्न ॥
दै मनवंछित यह करत, सिस्यहुकौं सम सिद्ध ॥ १६ ॥
अनुष्टान जप होम अरु, मंत्र जंत्र मतिमंत ॥
कहैं जाहि भलमहु करैं, कहैं जाहि भुवकंत ॥ १७ ॥
किय नृप गजमुख कथितैं सुनि, नाथ निकेत प्रयान ॥
बुंदियको विगरन समय, अरु भावी बलवान ॥ १८ ॥
नित्यनाथ ढिग जाय नृप, पँय परि करिय प्रनाम ॥
कहिय सिस्य मोकों करहु, भरहु भेट धन धाम ॥ १९ ॥
लक्ख१०००००रुपय्यन करैं सुलभ, औसे ग्राम अनूप ॥
गहहु दच्छिना छत्त गिनि, रहहु इहाँ गुरु रूप ॥ २० ॥
नित्यनाथ यह सुनि कह्यो, हम दक्खिन वसवान ॥
गुरु मृत सुनि हुत जातहैं, न रहैं तास निदांन ॥ २१ ॥
हम भवदीय पुरोहितहि, मुख्य मंत्र देजात ॥
यातैं सिच्छा लेहु तुम, देहु याहि वसु ब्रात ॥ २२ ॥
यह कहि मंत्रु गजमुखहिं दै, गयो कनफटा देस ॥
इत बुंदिय ढिग कुंचकरि, आयो बुद्ध नरेस ॥ २३ ॥
जब कावल नृप बुद्ध हो, तब निज सोदर जोधँ ॥
चढि तरंडै गुनगोरि दिन, किय जलकोलि कुबोध ॥ २४ ॥

---

*गुरु के समान ॥ १५ ॥ † शक्ति १ अपने बराबर का सिद्ध करदेता है॥१६॥ २ बुद्धिमान् ३ राजा करता है ॥ १७ ॥ ४ गजमुख का कहा हुआ ५ उस नित्यनाथ नामक नाथ के स्थान पर गया ॥ १८ ॥ ६ पैरों में पड़कर ॥ १९ ॥ ७ सुगमता से लाख रुपये प्रतिवर्ष हासिल के आवैं ऐसे ८ छात्र (शिष्य) ॥ २० ॥ ९ गुरु को मरा हुआ सुन कर १० इसकारण से ॥ २१ ॥ ११ आप के पुरोहित को १२ शिक्षा १३ धन का समूह ॥ २२ ॥ १४ मंत्र ॥ २३ ॥ १५ सगा भाई जोधसिंह १६ नाव पर १७ बुरी बुद्धि से ॥ २४ ॥

सुभट सचिव अनुचर सकल, बैठे पोतन तत्थ ॥
नचि गावत पातुरि*निकर, श्रुति स्वर तालन सत्थ ॥२५॥
गज इकलिंगप्रसाद इक, इहिँ अंतर मैमत्त[1] ॥
निज दायज[2] आयो हुतो, उदयनेरतेँ अत्त ॥ २६ ॥
वह[3] बारन अति दानछक, जल पीवन तँह आय ॥
तास पिक्खि पोतन निरत, कुप्पि चल्यो अतिकाय[4] ॥२७॥
सत्थ सकल आपान[5] थित, किन्नौ कछु न उपाय ॥
निज पोतहि[6] पकरि निठुर, एतेमैं गज आय ॥ २८ ॥
धाइभ्रात[7] निज संगहो, तास भयो इक वार ॥
एतेबिच उलटाइ इभ[8], बोरी नाव सु बार[9] ॥ २९ ॥
नियति जोग सब तिरि कढिय, अंसु[10] बसु[11] त्वरित अबेरि ॥
धाइभ्रात अरु अर्भ[12] कुवर, स्वसंत[13] निकासे हेरि ॥ ३० ॥
निकसत[14] खिन गुँज्जर मरिय, असु निज कछु अवसेस ॥
सो चउत्थि[15] तसमान सो, पत्तो मृत परदेस[16] ॥ ३१ ॥
अनुज राव जयसिंहको, भीम[17] सुता पह तास ॥
जोधनारि[18] सहगमन[19] करि, पत्ती दिवि[20] पति पास ॥ ३२ ॥
यातैं पुर प्रबिसत अबहु, सोच[21] सुचै न सताय ॥
मति तथापि[22] संबोधि मन, इम पुरढिग नृप आय ॥ ३३ ॥

---

*समूह। गान के समय की बाईस श्रुति और स्वर तथा तालों के साथ ॥२५॥ १ मदमस्त २ जोधसिंह के दहेज में ॥ २६ ॥ ३ वह एकलिंगप्रसाद हाथी ४ बड़े शरीर वाला यह हाथी का विशेषण है ॥ २७ ॥ ५ पानगोष्ठी (मनजाल) में ६ जोधसिंह की नाव को ही ॥ २८ ॥ ७ धाय भाई (धाय का पुत्र) ८ हाथी ने ९ जल में यह नाव डुबा दी ॥ २९ ॥ १० प्राणरूपी ११ धन को शीघ्र अबेर कर १२ जोधसिंह १३ टूटते हुए (अन्तिम) स्वास लेते हुओं को ॥ ३० ॥ १४ निकलते समय गूजर जाति का धायभाई मर गया और जोधसिंह का कुछ प्राण बाकी था सो १५ इसके चौथे दिन मर कर १६ परलोक गया ॥ ३१ ॥ १७ बनेड़ा के राजा भीमसिंह की पुत्री १८ जोधसिंह की स्त्री १९ सती होकर २० स्वर्ग गई ॥ ३२ ॥ २१ शोक २२ तो भी बुद्धि से मन को समझा कर

सुनि भूपहिँ आवत सुभट, सचिव वेग * समुपेत॥
बुंदियपुर सन निकसि सब, सम्मुह आय †सहेत ॥ ३४ ॥
नगर जैतगढ ताले तट, रहि नृप अंतप मिल्लान ॥
प्रात पुरहिँ प्रविसत प्रकटि, गृहगृह मंगल गान ॥ ३५ ॥
कोटारन निज भट मर्‌यो, जुग्गियराम निसंक ॥
ताको सुत सालम लयो, गजारूढ नृप अंक ॥ ३६ ॥
इम आलमके पेंस रहि, पंद्रह१५बरस बिहाय ॥
हय खट सत्रह१७६७भद्दँ सित, प्रविस्यो बुंदिय आय ॥३७॥
बुंदियपुर प्रविसत समय, सउँन किन्ह मग रुद्ध ॥
बिधवाबाल रजस्वला, पिक्खी सम्मुह बुद्ध ॥ ३८ ॥
इत्यादिक असउँन बिबिध, मन मन्ने नहिँ तत्त ॥
प्रविस्यो उत्तरद्वार पुर, जाजव जय उनमत्त ॥ ३९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे अजितसिंहजयसिंहबुधसिंहार्थदत्तस्वस्वराज्यगमनाज्ञालमशाहदिल्लीगमन १ गुणगौरीदिनबुधसिंहानुजयोधसिंहस्य नावा सह बुन्दीतडागमज्जनसूचनमेक विंशोमयूखः ॥२१॥
आदितः एकोनषष्ठ्यधिकद्विशततमः ॥ २५९ ॥

॥ ३३ ॥ * सहित † स्नेह सहित ॥ ३४ ॥ १ तालाव के किनारे २ मुकाम ॥ ३५ ॥ ३ बिना शंका वाला जोगीराम ४ हाथी पर चढेहुए राजा ने गोदमें लिया ॥ ३६ ॥ ५ अश्विन ६ भादवा सुदि पक्ष में ॥ ३७ ॥ ७ शकुनों ने मार्ग रोका ८ बालविधवा और रजस्वला को बुधसिंह ने ९ सामने देखी ॥ ३८ ॥ १० इनको आदि देकर अनेक प्रकार ११ अशकुन १२ तहां ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में अजितसिंह, जयसिंह, बुधसिंह इनको अपने अपने राज्यों की सीख देकर बादशाह आलम का दिल्ली जाना १ गनगौर के दिन बुंदी के तालाव में बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह का नाव सहित डूबने की सूचना का इक्कीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ उनसठ २५९ मयूख हुए ॥

(छप्पई)

बुंदिय गद्दिय बैठि बुल्लि[1] गजमुखह[2] पुरोहित ॥
मन्नि गुरुत्व सुनि मंत्र कउल[3] मारग चाहयोचित ॥
लक्ख१००००० रूपय्यन मुल्लक हत्थि[4] सिबिका[5] हय अप्पिय॥
गद्दिय[6] तक अधिकार बखासि गजमुख गुरु थप्पिय ॥
आचार अधम अद्दरि रहिय पंच मकारन[7] मुदित मन ॥
बुंदीस बुद्धि बिगरी बिबिध कउल कम्म[8] लग्गो करन ॥१॥
जब काबल बुंदीस हुतो आलम अनुगामी ॥
तबहि रान जयसिंह गयो परलोक सु नामी ॥
तास तखत अमरेस[9] रह्यो रानाँ कछु बच्छर[10] ॥
पत्तो[11] वह परलोक सुनी बुंदिय यह संभर[12] ॥
लै सिक्ख तबहि पटरागिनी[13] रानाउति पीहर गई ॥
उम्मेदकुमरि तत्थहि अचिर[14] भावीबसि असु[15] बिनु भई ॥२॥

[दोहा]

पटरागिनि पंचत्व[16] इम, लयो उदैपुर जाय ॥
च्यारिलक्ख४००००० मुद्रा प्रमित, रह्यो तहाँ तस रॉय[17]॥३॥
इहिअंतर बुंदीस प्रति, सगपन[18]हित सरसाय ॥
पुर भनाय रट्ठोरके, नारिकेल[19] द्रुत आय ॥ ४ ॥
सो सगपन स्वीकार करि, नारिकेल लिय फेरि ॥

---

१ बुलाया २ गजमुख नामक पुरोहित को ३ वाममार्ग ४ हाथी ५ पालकी ६ गादी पर बैठने तक का अधिकार ७ वाममार्ग के *पांच मकारों में मन प्रसन्न करके ८ पापियों के कार्य ॥ १ ॥ ९ अमरसिंह १० वर्ष ११ प्राप्त हुआ १२ चहुवान बुधसिंह ने १३ पाटराणी १४ शीघ्र १५ प्राण विना ॥ २ ॥ १६ मृत्यु १७ धन ॥ ३ ॥ १८ संबंध के लिये १९ नारियल (सम्बन्ध करने का प्रथम दस्तूर)

*वाममार्गियों में, मदिरा १ मांस २ मैथुन ३ मुद्रा ४ और मत्स्य ५ ए पांच मकार प्रसिद्ध हैं, जिनके सेवन से वामीलोक मोक्ष होना मानते हैं, जिनका विशेष विवरण देखना होवे तो वामियों के 'भैरवी चक्र' नामक ग्रन्थ में देखें ॥

मन परंतु लगि कउल मत, प्रथित बेदमत पेलि[2] ॥ ५ ॥
रहत चक्रपूजा[3]नुरत, विधि नय धरम बिसारि ॥
आलस मद्य प्रमाद[4] करि, बिगरी राज सम्हारि ॥ ६ ॥
इहिँअंतर लाहोरतैँ, दिल्लिय आय पुकार ॥
सूबा बिच दल बंधि सब, सिख मिलि करत बिगार ॥७॥
नानक मत अनुगामि[5] सिख, अजितसिंह तिन ईस ॥
सो मंडत अप्पन अमल, सूबा खंडि सरीस[6] ॥ ८ ॥

(षट्पात)

सुनत एह दिल्लीस अटकदिस कटक अगंजित ॥
सजि चल्लिय द्रुत साह राह उद्धत जय रंजित ॥
सबहि पुत्र निज संग हुरम बेगम सब हाजरि ॥
तीन लक्ख३०००००तुरक्खार[7] भार सतपंच५००ताम भीर ॥
संक्रमित साह आलम सबल[8] क्रम प्रवेस लाहोर करि ॥
वह अजितसिंह सब सिखन हनि दंडि[9]खंडि लिन्नौं पकरि ॥९॥

(दोहा)

त्रासित[11] करि सब सिखनतैं, नानक पंथ छुराय ॥
मुंडित डड्ढी मुच्छ करि, दंडि[12] दये निकसाय ॥ १० ॥
सालिमार उपवन[13] निकट, रह्यो कछुक दिन साह ॥

शीघ्र आये ॥ ४ ॥ १ प्रसिद्ध २ हटाकर ॥ ५ ॥ ३ *चक्रपूजा में ४ गफलत [भूल] ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ नानक के मत के साथ चलनेवाले ६ रीस (क्रोध) सहित ॥ ८ ॥ ७ घोड़े ८ बल कर ९ सेना सहित १० दंड तोड़ कर [नानक मतवाले हाथों में दंड रखते हैं] ॥ ९ ॥ ११ त्रासयुक्त करके १२ उन दंड रखनेवालों को डाढी मूंछ मुंडवा कर निकला दिये [डाढी मूंछ का मुंडवाना नानक मत के विरुद्ध है] ॥ १० ॥ १३ सालमार नामक बाग के समीप

* वाममार्गियों के ग्रन्थों में "भैरवी चक्र" की पूजा की विधि विस्तार से लिखी है, वह यहां नहीं लिखी जाती जिस किसीको देखना होवे वह "भैरवी चक्र" नामक ग्रन्थ में देखै, इसका सिद्धान्त नीचे के श्लोक से जानना चाहिये ॥

प्रवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजोत्तमाः ॥ निवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥ १ ॥

अब अभाग तुरकानको, उलटी करत *इलाह ॥ ११ ॥

(षट्पात्)

कलिजुग भूपन कुमति †निलय नारिन भरि रक्खैं ॥
रहैं इक्क अनुरत्त अवर जारन तब चक्खैं ॥
यौंहीं आलम संग निकर[2] नारिन अंतहपुर ॥
तिनमैं बेगम इक्क लज्ज लंघिय कामातुर[3] ॥
सँहँसन सिपाह जामिक[4] रहत रुक्कत तोहु न कामग्य[5] ॥
निसदीह जार इच्छत निलज सरमा[6] जिम सारद[7] समय ॥१२॥

(दोहा)

गायक[8] आवत गान गृह, सिखवन[9] नारिन गान ॥
तिनबिच पिक्ख्यो[10] रूप बर[11], गायक इक्क जवान ॥ १३ ॥
छन्नैं ताहि कहायकैं, रक्ख्यो चिकन दुराय ॥
प्रतिसीरा[12] पलटाय पुनि, लिन्नौं रत्ति बुलाय ॥ १४ ॥
दिन रक्खैं मंजूस धरि, रत्ति निकारैं ताहि ॥
यौं बेगम दिल्लीसकी छिपी कलावँत चाहि ॥ १५ ॥
पिक्खि स[13]उत्तिन इक्क निस, अक्खी आलम अग्ग[14] ॥
सुनत प्रमादी साह धकि, लग्यो ताँहि गृह मग्ग ॥ १६ ॥
साहागौंस[15] बेगम सुनत, छन्नैं संग[16] लगाय ॥
जाय सउँच[17] संकानिलय[18], आई ताहि[19] दुराय ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

* ईश्वर वाची यावनी शब्द है ॥ ११ ॥ † स्त्रियों से घर भर रखते हैं, उन में एक से प्रीतियुक्त रहता है १ स्त्रियों का समूह २जनाने में ३ काम से पीड़ित ४पहरायत ५ काम का वेग ७ सरदऋतु के समय में ६ कुत्ती के समान॥ १२ ॥ ८ कलावंत ९, गाना सिखाने के लिये १० देखा ११ श्रेष्ठ ॥ १३ ॥ १२ कनात में लपेटकर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १३ सौतों ने १४ उसी बेगम के घर का मार्ग ॥ १६ ॥ १५ बादशाह का आना १६ छानें अपने साथ लेकर १७ पाखाने जाकर १८ पाखाने में १९ उस कलावंत को छिपाआई ॥ १७ ॥

इहिँअंतर आलम तँहँ आयो, तिय जुब्बन *तसकर नहिं पायो ॥
तब नचाय †सोतिन दृगतारा, ‡सउचगेह दिय सैंन इसारा॥ १८ ॥
सु लखि साह अक्खिय बेगम सन, मैं §वरेकगद ¶अज्ज बिकल मन
यह सुनि गायक मि[1]च्छु बिचार्यो, खंजर दौरि साह हिय मार्यो
रीढ[2]क फारि पार वह फुट्टो, छिन अंतर आलम [3]असु छुट्टो ॥
नि[4]यति जोग इम लेहु निहारैं, दिल्लीसहिं गा[5]यक हनिडारैं ॥ २० ॥
गायकहू नारिन गहि मार्यो, साह कुबिधि मरि सुजस बिगार्यो ॥
अंतहपुर तब बजिग[6] अचानक, इतउत रुदनराग[7] उर[8]आनक ॥२१॥

(षट्पात)

हुरम हार-श्रृंगार तोरि झूरत तोबा[9] करि ॥
झारिझारि बंगरिन परत लुट्टत उट्टत परि ॥
मोजदीन पट्टप कुमार यह सुनि हुंत[10] धायो ॥
सुत्तो कुमर अजीम मुंढ[11] ताकँहँ हनिआयो ॥
लघुभ्रात दोय तिन सिर निलज पिल्ल्यो[12] दल[13] हलकारिकैं॥
दोउन रमराय गहिय लई आजम[14] अनय बिचारिकैं ॥ २२ ॥

(दोहा)

आलम मरन अपुब्ब[15] हुव, फुट्टी दिस दिस वत्त ॥

*स्त्री के जोबन का चोर †तीनों नेत्रों की पुतलियों का इशारा करके ‡तहारत में होने का इशारा किया ॥१८॥ §हकनों के रोग में ¶आज १मृत्यु ॥१९॥ २बांसे की [पीठ की लंबी] हड्डी अथवा पीठ को फाड़ कर ३प्राण ४भाग्य के योग से ५ कलावंत ॥ २० ॥ ६ बज ७ रोने के राग और ८ छातियों के ढोल ॥ २१ ॥ ९ फारसी में तोबा शब्द परित्याग की प्रतिज्ञा का वाचक है जिसका अन्वय 'हार शृंगार' के साथ है, अर्थात् हार शृंगार के परित्याग की प्रतिज्ञा करके १० शीघ्र ११ मूढ [यहां मूढ कहने का अर्थ यह है कि अजीम, आलमशाह का छोटा पुत्र होने से वह पाट का हकदार नहीं था तो भी उस मूर्ख ने वृथा मारडाला १२भेजा १३ सेना १४ आजमशाह के किये हुए अनय [अनीति] को विचार करके अर्थात् आजम ने भी आलम के छोटे भाई होने पर दिल्ली के तखत का दावा किया था इसीप्रकार ये भी कर बैठें तो आश्चर्य नहीं, यह जानकर ॥२२॥ १५ अपूर्व

मोजदीन लय३आत हनि, बैठो तखत प्रमत्त ॥ २३ ॥

(षट्पात्)

आलम मृत सुनि अजितसिंह मरुदेस नरेसुर ॥
करि फोजन दरकुंच आय अजमेर निडर उर ॥
लिन्नौं *बिंटुलि दुग्ग साह थाँनाँ हनि †संगर ॥
सूबा दबि ‡सजोर भयो बिनु संक गब्ब भर ॥
इत तक्कि छिद्र दक्खिन अवनि मरहट्टन बल मंडयो ॥
जित तित उठाय दिल्लिय अमल छोंलि कातरपन छंडयो ॥२४॥

(दोहा)

मति प्रमाद आलम मरत दिल्ली तिय बरजोर ॥
तकी मारि कटाच्छ दृग, सहर सितारा ओर ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

दसदेस मचि दंग चंग भूखन चमकाये ॥
पुरपुर धाटिन पात पयन घुग्घर घमकाये ॥
अलस ऐस अन्याय हावभावन बिसतारत ॥
आसवपान अपार मार आतुर दृग मारत ॥
गनिकान विभव अधिकार गत चंडातक घुम्मर रचिय ॥
दिल्लिय नवोढ दुलहनि बनिय सहर सितारा बरन प्रिय ॥

(पहले किसी बादशाह का मरना नहीं हुआ ऐसा) ॥ २३ ॥ * अजमेर के गढ का नाम 'बींटली' है † युद्ध में ‡ जोर [बल] सहित १ भूमि में २ बढ कर ३ कायरपन छोडा ॥ २४ ॥४प्रमाद की बुद्धि से ५ कटाच्छ ॥२५॥ अब यहां रूपक अलंकार से दिल्ली रूपी स्त्री का सितारा शहर को बरने का वर्णन करते हैं कि ६ उपद्रव (दंगा) मचा सोही तो ७ चंगे (सुन्दर) भूषण चमकाये और पुरपुर में ८ धाड़े (डाके) ९ पड़े वेही पैरों में गूघरे बजाये १० अत्यंत मद्य पीना ही कामदेव से पीड़ित होकर नेत्र चलाये [नजारे मारे] गनिकाओं को वैभव मिलना और राज्य के अधिकार [उहदे] मिलना ही ११लहँगे[घागरे) की घूमर लगाई (स्त्रियों के समूह के नृत्य का नाम घूमर है) ॥२६॥

॥ दोहा ॥

मोजदीन इत भ्रात हनि, बैठि तख्त बनि बीर ॥
निलज दूर किन्नों *अनखि, आलमसाह वजीर ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

हुसनअली †आलमवजीर करि दूर ‡कुसिक्खन ॥
जुलफकारखाँ नाम अवर थप्पो लखि §इक्खन ॥
तजि पत्तन लाहोर रचिय दरकुंच गेह रुख ॥
अतिजव दिल्लिय आय पट्ट पायो सु पग्म सुख ॥
आसव ¶बिपान अनुरत्त अति हठ प्रमत्त लय३भ्रात हनि ॥
गनिकान संग मंदिर रहत दिल्लिय पादप दीमबनि ।२८।

॥ दोहा ॥

नायक लाडकपूर इक, गायक गेहिर गुमान ॥
तास लालबीबी बहिनि, अधिक रूप गुन आन ॥ २९ ॥
पट्ट हुग्म ताकौं करी, मोजदीन बस होय ॥
गलबाँहीं छिनछोरिकैं, कम्म सुनैं नहिं कोय ॥ ३० ॥

पादाकुलकम् ॥

नारिन संग फिरत काँतारन, नारिनहींमैं सहल सिकारन ॥
इक दिन बाग करी असवारी, नाजर संग तथा सब नारी ।३१।
पान कापिसायन आनि किन्नौं, माभ चढन सासन पुनि दिन्नौं॥
दिन बेला बसि केलि बिहाई, अपरभ्रन्ह संध्या अब आई ।३२।

---

* क्रोध करके ॥ २७ ॥ † आलमशाह के वजीर को ‡ बुरी शिक्षा से [लोगों के सिखाने से] § परीक्षा करने के लिये अथवा अपने नेत्रों से देख कर ¶ विशेष पीने [अधिक पीने] में अनुरक्त १ दिल्लीरूपी वृक्ष का २ दीमक (उदेही) ॥ २८ ॥ ३ कलावंतों का अफसर ४ कलावंत [गानकार] ५ गहरे घमंड वाला ६ घर अथवा नखरा ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ७ वनों में ॥ ३१ ॥ ८ मद्यपान ९ सन्ध्या समय १० दिन का समय क्रीड़ा में बिताया ११ अपरान्ह स-

मोजदीन अतिपान बिमत्तो, रहसि लालबीबी अनुरत्तो ॥
सोधि तास सिविका विच सोयो, जावत खिन काहू नहिं जोयो॥३३॥
असवारीके समय अचानक, इत उत वजे चढनके आनक ॥
कहि कहि त्वरा दरोगन किन्नी, सब हुरमन सिविका कसि दिन्नी॥
लैलै चले कहार नृजानन, जोवत फिरत साहकौं सब जन ॥
भटन लालबीबिय ढिग भास्यो, खोजन तब तहँ जाय निकास्यो॥३५
खोलि बंध सिविका इक नाजर, आन्यौ साह भटनके अंतर ॥
अति अचेत सिविका बिच डारयो, बुद्धिहिं राज समरत बिचारयो ३६
आई तब दिल्लिय असवारी, मनजित साह रहै इम मारी ॥
दे अधिकार बिभव सुखदायक, गुरुमंत्री किन्नै सब गायक॥३७॥
दोहा—इत दिल्लिय इम मचि अनय, इत बुंदिय अवनीस ॥
साहबहादुर मिच्चु सुनि, सोचि रु धुन्न्यौ सीस ॥ ३८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहवाममार्गधारणं १ नानकमतीयोपद्रवश्रवणालमशाहलाहोरगमनं २, आलमशाहकलत्रोपपतिगायककरालमशाहपञ्चत्वप्रापणं ३ हताग्रजत्रिकमोजदीनदिल्लीपट्टोपविशनं४ अतिमद्यपमोजदीनगायककनीलालबीबिविशाभवनं द्वा-

---

न्ध्या [सायंकाल] ॥ ३२ ॥ १ विशेष मत्त हुआ २ एकान्त में ॥ ३३ ॥ ३ शीघ्रता ॥ ३४ ॥ ४ पालखियों को ५ नाजरों ने ॥ ३५ ॥ ६ उमरावों के भीतर ॥ ३६ ॥ ७ बादशाह के मन का जीतने वाली ८ महामारी [मरी] रोग विशेष जिसको अंगरेजी में प्लेग कहते हैं, यह लालबीबी का विशेषण है ९ बड़े सलाहकार सब कलावंतों को किये ॥ ३७ ॥ १० अनीति ११ मृत्यु ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, बुधसिंह का वाममार्ग धारण करना १ नानक मत वाले सिक्खों का उपद्रव सुन कर आलमशाह का दिल्ली से लाहोर जाना २ आलमशाह की बेगम के जार [उपपति] एक कलावंत के हाथ से बादशाह आलमशाह का मारा जाना ३ तीन छोटे भाइयों को मार कर मोजदीन का दिल्ली के तखत पर बैठना ४ अत्यन्त मद्यपान करनेवाले मोजदीन का एक

विंशो मयूखः ॥ २२ ॥

आदितः षष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६० ॥

दोहा ॥

मति बिगारि भजि बाममत, सजि विधिरहित समाज ॥
आलस पर आसिक भयो, राजकाज तजि राज ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

हुसनअली सय्यद नवाब इक मंत्र रचिय इत ॥
मोजदीनकों मत्त जानि चिंतिय प्रपंच चित ॥
पूरब पुर पटनाँ सु साहफूरुक अजीम सुव ॥
तब पत्रनँ मिलि ताहि भिरन आन्यों दिल्ली भुव ॥
रन मोजदीन तासन बिरचि भजि दिल्लिय अंदर दुरचो ॥
लगि पिट्ठि साहफूरुक सजव आय ताहि हनि अंकुरयो ।२।

दोहा ॥

सक नव खट सत्रह १७६९ समय, विक्रम हायन बट्ट ॥
मोजदीनकों मारिकैं, बैठो फूरुक पट्ट ॥ ३ ॥
जुलफकारखाँ सचिव तस, हन्यों सोहु हमगीर ॥
सय्यद फूरुकसाह किय, हुसनअली सु वजीर ॥ ४ ॥
पलटी गहिय तीन ३ इम, बरस इक्क १ के माँहिं ॥
आलम पिच्छैं मोजदी, अब यह फूरुक आँहिं ॥ ५ ॥
बुध नृपकै याही बरस, भयो कुमर कुलभान ॥
कछवाही रानी उदर, देवसिंह अभिधान ॥ ६ ॥
होत जनम दिसदिस दये, लक्खन द्रम्म लुटाय ॥

कलावंत की पुत्री दासा बांधी के वशीभूत होने का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ साठ २६० मयूख हुए ॥

१ वाम मत का सेवन करके ॥ १ ॥ २ फूरुकशाह ३ पुत्र ४ पत्रों से मिल कर अर्थात् लिखा पढ़ी करके ५ युद्ध करने के लिये ६ उस फूरुकशाह के ७ खड़ा हुआ ॥ २ ॥ ८ विक्रम के सम्वत् के मार्ग से ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ९ रुपये

जातकरम अरु दान जप, सबबिधि[1] पुब्ब सधाय ॥ ७ ॥
कुमर जनम आमेरपुर, सुनि जयसिंह नरिंद ॥
पठये कुल पहिरावनी, दस १० हय दोय २ करिंद[2] ॥ ८ ॥
मास तीन ३ रहि कुमर वह, छोरि गयो निज देह ॥
बिगरि बामसग बुद्धमति[3], आलस गहिय अछेह ॥ ९ ॥
ऐसो आलस अंवर[4] गत, सुन्यौं न पिक्ख्यो रंच ॥
सातौं ७ प्रकृति[5] सम्हार नहिं, बिगरत सबहि प्रपंच ॥१०॥
पुर भनाय संबंध भो, तिहिं पर लगन लिखाय ॥
रट्ठोरनकौं खबरि दिय, आवत बुंदिय राय ॥ ११ ॥
बिप्र पुरोहित निज बिबुध[6], नाम भवानीदास ॥
महडू[7] केसोदास पुनि, कुल चारन मतिकास[8] ॥ १२ ॥
ये दुव२ भूप तयार करि, पठये नगर भनाय ॥
लगन बेर हम आयहैं, दिन्नी एह कहाय ॥ १३ ॥
द्विज चारन दुव २ जायकैं, भाखि लगन रहि तत्थ ॥
इत नृपकौं आलस अधिक, उपजत बिबिध अनत्थ[9] ॥१४॥
वहै लगन नृप चुक्किकैं, दूजो लगन दिखाय ॥
लगन पंच५इम चुक्कयो, व्याहन गो न भनाय ॥ १५ ॥
द्विज चारन प्रति कहिय तब, पति भनाय करि रोस ॥
अब तुम सिर कन्या हनौं, कै आनहु बुन्दीस ॥ १६ ॥
तब चारन तत्थहि रह्यो, द्विज आयो नृप पास ॥
बुल्ल्यो अब मरिहौं न तो, व्याहहु आलस वाँस[10] ॥ १७ ॥
यह सुनि द्विज संकोच करि, गो नृप नगर भनाय ॥

---

१ विधिपूर्वक ॥ ७ ॥ २ बड़े हाथी ॥ ८ ॥ ३ बुधसिंह की बुद्धि ॥ ९ ॥ ४ अन्य में गया हुआ ५ स्वामि, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, सेना ये राज्य के सातौं अंग हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ ६ पंडित ७ चारणों की एक शाखा का नाम है ८ बुद्धि का प्रकाश करने वाला ॥ १२ ॥ १३ ॥ ९ अनर्थ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १० हे आलस्य का स्थान ॥ १७ ॥

परनि सुता रट्ठोरकी, विविध त्याग बंटाय ॥ १८ ॥
बुंदिय दिस पुनि कुंच किय, अति आलस *अलसात ॥
आत आत मगमाँहिं रुकि, बहु मुकाम रहि जात ॥ १९ ॥
चलत रुकत रुकि चलत इम, नगर मालपुर आय ॥
तहँ [1]तडाग अंतर उतरि, कटक[2] मुकाम कराय ॥ २० ॥
व्याहयो मासतपस्य[3] बिच, साह्यो[4] अलस सुगाढ ॥
रहत मास पुरताल बिच, आयो सिर आषाढ ॥ २१ ॥

षट्पात् ॥

गरजि मेघ घनघोर ओर उत्तर सन आये ॥
अधिक मंडि आसार[5] विहित[6] संबर[7] बरसाये ॥
आयो जल जब ताल तबहि स्यंदन[8] मँगाय इक ॥
तिहिं उप्पर थित होय रह्यो बहु दीह आलसिक ॥
मालपुर सचिव यह सोधि मन कूरमपति[9] प्रति पत्र दिय ॥
उन कहिय नीर परिवाह[10] मग कढ्ढहु तब यह इन करिय ॥ २२ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ उपजातिः ॥

इत्थं स वक्षोद्वयसे कृपीटे रथस्थितो मालपुरातडागे ॥
बहून्यहानि ह्यवसत्प्रमत्तश्चिरक्रियो बिन्दुमतीक्षितीशः ॥ २३ ॥

अनुष्टुप् ॥

तत्रैव फूरुके शाहे, जाते भटसहस्रभृत् ॥
स्वामिदर्शनसाकांक्षो, जैत्रसिंहः समागतः ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ * आलस्य करता हुआ ॥ १९ ॥ १ तालाब के भीतर २ सेना का ॥ २० ॥ ३ फागुन में ४ उस आलस्य को गाढा (दृढ) पकड़ा ॥ २१ ॥ ५ मेघ धारा ६ उचित ७ जल ८ रथ मंगवा कर ९ आमेर के राजा जयसिंह प्रति १० जल निकलने के मार्ग [मोरी] के रस्ते से ॥ २२ ॥ इसप्रकार वह छाती पर्यन्त जल आने पर रथ में बैठाहुआ मालपुरा के तलाव में मदोन्मत्त आलसी बुंदी का राजा बहुत दिनों तक रहा ॥ २३ ॥ वहां ही फरोखशाह के बादशाह होने पर हजार योद्धाओं को धारण करनेवाला और स्वामी के दर्शनों की इच्छावाला जैत्रसिंह आया ॥ २४ ॥ जिस पीछे श्रावण मास के आने पर, आ-

वंशस्थः ॥

ततो नृपः श्रावणिके समागते, बुन्दीं समागम्य विसुप्तबुद्धिभृत्।
आलस्यमासेव्य चिरक्रियेश्वरोऽवसद्यथापूर्वमवस्थितः पुनः ।२५।

प्रायो ब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत मरुनृप अजमेर लिय, तब बिग्रह हुव एक ॥
रूपनगर[1] रट्ठोर नृप, राजसिंह किय टेक ॥ २६ ॥
मरुभूपति सौं नहिँ मिल्यो, हठपूरब हमगीर ॥
साहहिँ गिनि भानेज सुत, भो वह दिल्लिय भीर ॥ २७ ॥
याके अरु मरुईसकै, बनी नाँहिँ जब बत्त ॥
तब रजधानी[3] संगलै, दिल्लियपुर वह पत्त[4] ॥ २८ ॥
बुंदियहू तब आय वह, राजसिंह रट्ठोर ॥
नहि किन्नौं सतकार तस, बुद्ध[5] अलस बरजोर ॥ २९ ॥
राजसिंह निज पुत्रिका, सगपन हित कहि बत्त ॥
सोहू नृप मन्नी नहीँ, अलस नारि[6] अनुरत्त ॥ ३० ॥
पाय अनादर तब गयो, कोटापुर रट्ठोर ॥
कन्या भीमहिँ ब्याहिकैं, जुरि मंड्यो इक जोर ॥ ३१ ॥
रूपनगर पति रीति इहिँ, भीम हिँतु करि मंत्र[7] ॥
निज रजधानी संगलै दिल्लिय गयउ स्वतंत्र ॥ ३२ ॥
मरुनृपको बनि बनि पिसुन[8], अनय[9] साहसौं आक्खि ॥

लस्य का आश्रय लेकर, आलसियों का शिरोमणि, सोई हुई बुद्धि को धारण करनेवाला, राजा [बुधसिंह] जिसप्रकार पहिले स्थित था तिसीप्रकार बुन्दी में आकर फिर रहा ॥ २५ ॥ १ मारवाड़ के राजा ने १ किशनगढ के राज्य के प्राचीन राजधानी का नाम रूपनगर है ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ राजधानी की हाथी घोड़ा आदि सब सामग्री ४ प्राप्तहुआ ॥ २८ ॥ ५ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥ ६ आलस्यरूपी स्त्री से अनुरक्त ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ भीमसिंह से सलाह करके ॥ ३२ ॥ ८ चुगल ९ अनीति

साहि लगत भानेज सुत, यातैं अहर रक्खि ॥ ३३ ॥

पद्धतिः ॥

इत बैठि पट्ट फूरुक सिताब, करि सचिव मुख्य सय्यद नवाब ॥
फरमान देसदेसन पठाय, सतकारपुव्व सब नृप बुलाय ॥ ३४ ॥
बुधसिंह पास नति सहित तत्र, निज हत्थ मंडि पठयो सु पत्र ॥
द्रुत सदल आय सत्रुन बिदारि, चाचा बँ रचहु मम घर सम्हारि ३५
सोहू न पत्र मन्न्यो नरेस, बिधिजोग राज बुड्डन बिसेस ॥
किय छत्रमहल्ल बिच सतत बास, अब सुभट मंत्रि सब हुव उदास ३६

दोहा ॥

चारन केसोदाससौं, इकदिन अक्खिय बुद्ध ॥
मरुनृप जो अप्पन मिलैं, जुरैं साहसौं जुद्ध ॥ ३७ ॥
बुंदिय तजि उत हम चलहिं, वे आवहिं इत बेग ॥
ततो उभयरनमग्गमाँहिं मिलि, धर दब्बहिं गहि तेग ॥ ३८ ॥
महडू केसोदास तब, यह सुनि गो अजमेर ॥
मरुनृपसौं मिलिकैं कह्यो, अब नहिं करहु अबेर ॥ ३९ ॥
हेरतहो मरुनृप यहहि, कोऊ मिलहिं सहाय ॥
यातैं द्रुत दरकुंच करि, बुंदिय तरफ चलाय ॥ ४० ॥
कुंच तीन ३ मरुनृप करिय, चल्यो तथापि न बुद्ध ॥
तब आलस्य अचेत गिनि, फिर्‌यो कबंधहु क्रुद्ध ॥ ४१ ॥
दिल्लीपति फरमान इत, नहिं मन्नै बुंदीस ॥
यातैं अनर्थ बिचारि उर, रची साहहू रीस॥४२॥
रूपनगरपुर भूपको, तबही लग्गो दाव ॥
संभरको मरुपति सहित, चरच्यो पिसुन चवाव ॥ ४३ ॥

॥ ३३ ॥ १ पूर्वक ॥ ३४ ॥ २ नम्रता सहित ३ सेना सहित ४ हे काका अब ॥ ३५ ॥ ५ बुंदी के एक महल का नाम है जिसमें निरंतर रहना मांडा ॥३६॥ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥६क्रोध करके ॥४२॥ ७ रूपनगर नामक पुर के राजा का ८ चुगल ने ९ चुगली रची ॥ ४३ ॥

[पट्पात]

रूपनगर पति कहिय सुनहु मम बत्त साह श्रुत[1] ॥
मरुपति अरु बुंदीस जुरत मिलि उभयप[2]मंत्र जुत ॥
कोटापुर पति मरद वाहि बुल्लहु करि अद्दर ॥
दै तिंहिं बुंदिय देस प्रबल पिल्लहु तिन उप्पर ॥
कूरम नरेस जयसिंह कहँ छंद लिखाय हिय प्रीतिछकि ॥
उज्जैन नगर सूबा अगपि तत्थ[3] पठावहु नीति ताकि ॥४४॥
सुनत एह दिल्लीस पत्र लिखि भीम[4] बुलायो ॥
महाराव[5] कहि मिलि रु बहुत सतकार बढायो ॥
दै तिंहिं बुंदिय देस साह पिल्ल्यो[6] दोउन[8]पर ॥
इहिं तव कोटा आय सेन सज्जिय हित संगर[7] ॥
इत साह भेजि आमेर दल जयसिंहहिं इम हुक्म दिय ॥
सूबा सम्हारि उज्जैनपुर करहु जाय हम महर किय॥४५॥

(दोहा)

सुनि कूरम उज्जैन दिस, करि दरकुंच चलाय ॥
सूर सबल[9] सेना सहित, बुंदिय निकस्यो आय ॥ ४६ ॥
संभर सम्मुह जायकै, आन्यौं पुरहिं बधारि ॥
रक्ख्यो कछुदिन प्रीति रस मंडि बिबिध मनुहारि ॥४७॥
अंतेउँर[10] कछवाहको, अंतेउँर[11] विच आय ॥
मिलि ननंद[12] भाउज मुदित, रही हृदय हरखाय ॥ ४८ ॥
उपालंभ[13] कूरम दयो, बुद्ध नरेसहिं तत्थ ॥
मन्नैं नहिं फरमान तुम, किन्नौं बहुत अनत्थ[14] ॥ ४९ ॥

---

१ कानों में २ पत्र ३ तहां (उज्जैन) ॥ ४४ ॥ ४ भीमसिंह को ५ कोटावाले इस समय से पहिले केवल राव कहलाते थे अब महाराव की पदवी मिली ६ भेजा ७ युद्ध के अर्थ ८ पत्र ॥ ४५ ॥ ९ वह शूर और बलवान् जयसिंह ॥ ४६ ॥४७॥ १० कछवाहे का जनाना ११ बुन्दी के जनाने में आया १२ बुधसिंह की स्त्री ननंद और जयसिंह की स्त्री भोजाई॥ ४८ ॥ १३ ओलंभा १४ अनर्थ ॥ ४९ ॥

कोटापुर पति भीम अब, बुंदिय लिन्न लिखाय ॥
तुम प्रमत्त वह छिद्र तकि, करिहैं बिग्रह आय ॥ ५० ॥
यातैं मम मत आहि यह, सजहु भ्रात दुव साम ॥
प्रथित सत्य मैं बीच परि, कहौं द्रोह निकाम ॥ ५१ ॥
तब प्रमत्त नृप कहिय फिरि, एह गेहकी रारि ॥
घरहीमैं हम समुझिहैं, लिन्नी बिबिध बिचारि ॥ ५२ ॥
सक अंबर रिखि सत्त ससि१७७०, फग्गुन द्वादसि स्याम॥
कछवाही उर कुमर हुव, भावतसिंह स नाम ॥ ५३ ॥
भागिनेयं हित हरख करि, करिय कुंच कछवाह ॥
पहुँचावन बुंदीसहू, चढ्यो तुरग हित चाह ॥ ५४ ॥
चढत बाजि प्रासाद सिर, बुल्ल्यो बिकट उलूक ॥
काकन कंकन कुक्कुरन, किय फेरंडन कूक ॥ ५५ ॥
यह असकुन चिंते न चित, चल्ल्यो चढि चहुवान ॥
कूरमकों पहुँचायकैं, मुरस्यो अलस अमान ॥ ५६ ॥
नाथाउत नगराजको, गुढा नाम इक गाम ॥
मातुलकुल चहुबानको, किन्नैं तत्थ मुकाम ॥ ५७ ॥
सक अंबर रिखि सत्त इक १७७०, फग्गुन मेचक भूत १४ ॥
कोटापति लै दल चढ्यो, बुंदीपर मजबूत ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे हतादिल्लीपतिमोजदीनफूरुकसियरशाहयवनेन्द्री-

॥ ५० ॥ १ मेरी सलाह है २ प्रसिद्ध ॥५१॥ ५२ ॥ ३ कृष्णपक्ष की ॥ ५३ ॥ ४ भानजे के ॥ ५४ ॥ ५ घोड़े पर चढते समय ६ महल के ऊपर ७ पक्षि विशेष ८ कुत्तों ने ९ गीदड़ों [स्यालियों] ने कूक की ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १० बुधसिंह के मामा के कुलवाला का था ॥ ५७ ॥ ११ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी १२ सेना ॥ ५८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में दिल्ली के बादशाह मोजदीन को मारकर फ़रुकशाह का

भवन १ बुधसिंहभार्य्यासुजनताहेतुमराठापपुत्रीविवाहलग्नपत्रिका-
तिक्रमण २ मरुधराधीशअजितसिंहाजमेरग्रहणनिरुद्धरूपनगरराजराजसिंह-
दिल्लीगमन ३ आज्ञाप्रदानानिरुद्धफुर्रुकसियरबुधसिंहबुन्दीहरणान-
न्तरकोटापतिभीमसिंहनप्रदान ४ आमेराधीशजयसिंहाजामिनीप-
दप्रेषणं त्रयोविंशो मयूखः ॥ २३ ॥

आदित एकषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६१ ॥

[षट्पात]

पीतन चम्मलि छाय धाय बांऽजग निसान घन ॥
पक्खर घंट घमंकि वेग हल्लिय हय वारन ॥
माधानी सब संग मिलन अवरहु अनेक भट ॥
सहँस बीस२००००हय साजि भीम आयउ वट उब्बट ॥
निस घटिय दोय २ रहतें निडर त्वरन घेरि बुंदिय लई ॥
प्रातहि पुकार बुंदीस प्रति भय विहाल हाजरि भई ॥ १ ॥
सुनत एह बुंदीस चलिय चढि वाजि क्रुद्ध मन ॥
खबरि इतें बिच आय घेरि लिन्नों आरि पत्तन ॥
नवहि भूप टरि पास लंघि असतोली भूधर ॥
आय सुरथपुर करिय रक्तदंता दरसन वर ॥
राजमुख्य पुरोहित कहिय तब मैंतो जावत त्वरन रन ॥
भीमसों भिरि विरुराय भुज नगर द्वार रचिहों मरन ॥ २ ॥

पाहुणाद होना १ अपने वंश के कन्याओं आदिकन्या के कारण मराठा के राजा की पुत्री से विवाह करने में पांच वर्षों का बुलाना २ मारवाड़ के राजा अजितसिंह का अजमेर लेना और रूपनगर के राजा राजसिंह का अजितसिंह के विरुद्ध दिल्ली जाना ३ फरमान नहीं मानने के कारण फुर्रुखसियर का बुधसिंह से बूंदी छीनकर कोटा के राव भीमसिंह को देना ४ आमेर के राजा जयसिंह को जामिन के रूप पर भेजने का वर्णन २३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इकसठ मयूख हुए ॥

१ नगारों के चमड़ा मढ़ा था जिसके ऐसे हैं २ समान नगारे बजे ३ हाथी ४ माधोसिंहोत राठौड़ ५ मिला मार्ग ॥ १ ॥ ६ मन का क्रुद्ध ७ पुर ८ असतोली नाम

यह कहि गजमुख आय प्रविसि पच्छिम पुर तोरन[1] ॥
दक्खिन तोरन निज निकेत[2] तँहँ जाय रच्यो रन ॥
भरि भरि बारूत तुपक्क पिक्खि नृप भीम कहाई ॥
दोउन २ कैं तुम वंद्य[3] मिलहु करि बंध लराई ॥
गजमुखहु पाय तब लोभ गति मंद[4] जाय भीमहिँ मिल्यो ॥
पकराय तबहि लिन्नो निपुन[5] गुरुतामद तब द्विज गिल्यो ।३।

(दोहा)

गजमुखकौं पकराय इम, तोरन[6] अररन फारि ॥
आय तखत कोटेस अरि, बुंदिय अमल बिथारि ॥ ४ ॥
इत नृपसौं सालम कह्यो, मरन उचित इहिँ जुद्ध ॥
जो न रुचत तो लरहिँ इम, हमहिँ सिक्ख अब सुद्ध ॥ ५ ॥
यह कहि सज्ज्यो जाय गढ, निज पुर करउर नाम ॥
नृप सु सुरथपुरतैं सुरगि, गो मेवारन[8] गाम ॥ ६ ॥
मेवारहिँ पुनि दाहिनैं, करि गो मालव देस ॥
सालकैं[9] मिट्यो जाय तँह, पुर आमैर नरेस ॥ ७ ॥
इहिँ अंतर उनियार[10] पति, नरुबंस[11] संग्राम ॥
नैननैंगरके[12] ग्राम कति, दब्बे तकत कुकाम ॥ ८ ॥
कैरातैं[13] गजमुखहु कढि, गो मालव नृप पास ॥
तबहि अनादर तरजि[14] नृप, अंतर भो जु उदास ॥ ९ ॥
छिन्नि अखिल[15] अधिकार तस, द्विज सिवदासहिँ दिद्ध ॥
कउल मग्ग गुरुसिर कहरै[16], कोप बिगरि अब किद्ध ।१०।

स पर्वत लांघकर ॥ २ ॥ १ शहर के द्वार में २ अपना घर ३ नमस्कार करने योग्य ४ मूर्ख ५ चतुर भीमसिंह ने ॥ ३ ॥ ६ पुर के द्वार के ७ किवाड़ों को तोड़कर ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ मेवाड़ के गामों में ॥ ६ ॥ ९ शाला [जयसिंह] से मिला ॥ ७ ॥ १० उणियारा का पति ११ नरूका संग्रामसिंह १२ नैणवा नगर के ॥ ८ ॥ १३ कैद से १४ धमकाकर ॥ ९ ॥ १५ सब १६ क्रोध "यहां क्रोध की अधिकता दिखाने को एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग है" वा कहर का अर्थ जुल्म है

कोटापति बुंदिय मुलक, इत समरत अपनाय ॥
अनायत्त करउर समुझि, घेरचो सालम जाय ॥ ११ ॥
बुंदियपुर अवरोधतेँ, रानिय बिपति बिरत्त ॥
इक १ बेघम आमेर इक १, पुर भनाय इक १ पत्त ॥१२॥
अवर लोक अवगोधके, बिभव सचिव तिहिँ बार ॥
सब बेघमपुर संचरे, देवसिंहके द्वार ॥ १३ ॥
खरच रुपय्ये अट्ठसत ८००, अरपि नित्य तिन्ह एत्र ॥
इक १ हायन बुंदिय विभव, दुभर निबाह्यो देव ॥ १४ ॥
इत नृप मालव जायकेँ, लिन्नेँ तुरग अनाय ॥
बेघमपति प्रति मोलकी, हुंडिय दिन्न पठाय ॥ १५ ॥
देवसिंह वह बंचि दल, गिनि सगपन व्यवहार ॥
दिन्नी हय सोदागरन, मुद्रा तीस हजार ३०००० ॥ १६ ॥
विपति बीच इम बंदगी, चुंडाउत किय चाहि ॥
अप्पन सिर ऋन किय अधिक, बुंदिय बिभव निबाहि ॥१७॥
इत करउरपुर भीम नृप, रह्यो विंटि रनरत्त ॥
अठ्ठारह ८१ अंह अंकुरयो, मुरयो न सालम मत्त ॥ १८ ॥
पल पल बिच गोलन परिग, प्राकारन बिच पंथ ॥
सब करउर तोपन सिलगि, हुव भाड़के हरिमंथ ॥ १९ ॥
मुहुकमकुल उमराव इक, सुखसिंहह चहुवान ॥
पुत्रहिँ दे घर बिभव पद, किय कसाय परिधान ॥ २० ॥
वह अनिच्छ बिचरत फिरत, कोटा दल बिच आय ॥

॥ १० ॥ १ स्वतंत्र ॥ ११ ॥ २ जनाना से ३ विरक्त होकर ॥ १२ ॥ १३ । ४ देकर तिनको धारण किए (रक्खे) ५ एक वर्ष ॥ १४ ॥ ६ कुछ आमद नहीं तो भी ॥ १५ ॥ ७ पत्र ८ घोड़ों के सोदागरों का ॥ १६ ॥ १७ ॥ ९ युद्ध में प्रीति करके १० अठारह दिन ११ खड़ा रहा ॥ १८ ॥ १२ कोटों में मार्ग होकर १३ भाड़ में १४ चने होवें ऐसे होगया ॥ १९ ॥ १५ भगवा १६ वस्त्र ॥ २० ॥ १७ इच्छा रहित १८ कोटा की सेना में आया

मिलि गहिय तजि भीम नृप, दयो ताहि बैठाय ॥ २१ ॥
कह्यो भीम करजोरि तब, मो सिर करहु निदेस ॥
सुखसिंहहु यह सुनि कह्यो, चढि घर जाहु नरेस ॥ २२ ॥
तबहि कहें सुखसिंहकौं, वह चढि बुंदिय आय ॥
नतो कितो करउर नगर, लेतो इंतहि छुगाय ॥ २३ ॥

(पादाकुलकम्)

कोटापति सुखसिंह कथितं किय, जान्यों लोकन सालम जित्तिय।
कूरमपति इन मंत्र बिचारयो, जामिप बुंदिय हीन निहारयो॥२४॥
अमरं रानके पट्ट उदैपुर, लसत रान संग्राम धरम धुर ॥
तिहिं प्रति दल जयसिंह पठायो, स्वकर मंडि सतकार सिवायो॥२५।
हे नृप तुम भीमहिं समुझावहु, बुद्धहिं बुंदिय देस दिवावहु॥
यह मोसिर अैसान करहु अब, तुमरो हुकम भीम स्वीकृत सब॥२६॥
तबहि रान यह पत्र बिचारयो, कूरमपति संकोच सम्हारयो ॥
निज काका तखतेस बुलायो, बुंदिय भीम समीप पठायो ॥ २७ ॥
तबहि आय तखतेस भीम प्रति, अक्खिय विविध रानकी विन्नति ॥
बुंदिय तजि निज गेह पधारहु, मो सिर यह अैसान विचारहु ॥२८॥
यह सुनि भीम कह्यो धरि गव्वहिं, बुध नृपतैं बुंदिय नहि दव्वहिं ॥
जमी समस्त साहकी जानों, तजिहों तो ठेंहैं तुरकानों ॥ २९ ॥
यह कहि सिक्ख दई तखतेसहिं, तजत भीम नहिं बुंदिय देसहिं ॥
ंन देसहिं सालमं लागि लुट्टन, कोटा पति थानन करि कुट्टन॥३०

[दोहा]

सेवावत सामंतहर, इन हट्टन गहितेग ॥

॥ २१ ॥ १ आज्ञा ॥ २२ ॥ २ शीघ्र ही ॥ २३ ॥ ३ कहना किया और लोगों ने जाना कि सालमसिंह जीतगया ॥ २४ ॥ ४ महाराणा अमरसिंह के ५ पत्र ॥ २५ ॥ ६ स्वीकार (मंजूर) करेगा ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ७ गर्व ८ यवनों का राज्य ९ बुन्दी के देश को सालमसिंह लूटने लगा ॥ ३० ॥

बुंदिपढिग पुर जैतगढ, लुट्टिय आप सवेग ॥ ३१ ॥
तिन पर पठयो भीम नृप, धाइभ्रात भगवान ॥
वानैं जाय धनावपुर, किन्नों हद घमसान ॥ ३२ ॥
मेवावत सामंत हर, मरे बहुत करि जंग ॥
धाइभ्रात भगवानके, घाय बिलग्गे अंग ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावभीमसिंहबुन्दीहरणं १ बुन्दीन्द्रबुधसिंहजयसिंहनृपान्तिकमालवगमनं २ बंधमरावदेवसिंहबुन्दीकुटुम्बपालनं ३ सुखसिंहाभिधहड्डपतिकथनमहारावभीमसिंहकरवरनगरप्राकृत्युत्थापनं ४ जयसिंहलेखमहाराणासंग्रामसिंहस्य बुन्दीमुक्त्यर्थमहारावभीमसिंहभणानतदस्वीकरणावर्णनं चतुर्विंशो मयूखः ॥ २४ ॥

आदितो द्विषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६२ ॥

(पज्झटिका)

संग्राम रान आदर कहाय, सो भीम नाँहिं मन्निय सुभाय ॥
तकसीर तास मेटन बिचारि, कोटेस उदयँ पत्तन पधारि ॥१॥
सीसोदभिटि संग्राम रान, दिय भीम तत्थ कछुदिन मिलान ॥

॥ ३१ ॥ १ युद्ध ॥ ३२ ॥ २ सामंतसिंह के वंशवाले ३ विशेष करके घाव लगे ॥ ३३ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, कोटा के महाराव भीमसिंह का बुंदी छीनना १ बुंदी के रावराजा बुधसिंह का राजा जयसिंह के पास मालवे में जाना २ बंधम के राव देवसिंह का बुंदी के कुटुंब की पालना करना ३ महाराव भीमसिंह का सुखसिंह नामक हाडा सन्न्यासी के कहने से करवर नगर का घेरा उठाना ४ जयसिंह के लिखने से महाराणा संग्रामसिंह का बुंदी छोडने के अर्थ महाराव भीमसिंह को कहलाना और भीमसिंह के अस्वीकार करने का चौबीसवां २४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ बासठ २६२ मयूख हुए ॥
४ आदर सहित ५ उदयपुर ॥ १ ॥ ६ मुकाम

*अट्टाल सीस इक दीह आय, बैठे दुश्मूप †सिख्वद बनाय ॥ २ ॥
‡प्रासाद नामके हट्ट पास, इक नटिय आय किन्नौं §नभ्मास ॥
कोटेस कुजस करि कहि कुवत्त, बुल्लिय सालम जन चढिव त्त ३।
सो सुनत भीम कर मुच्छ घाल्लि, लै सिक्ख आय बुंदिय उभ्भाल्लि ॥
रट्ठोर सुभट जयसिंह नाम, सालम सिर पल्लयो जय सकाम ॥४॥
दल्ल सहँसबीस२०००० लै नय दुहह, जयसिंह विविध साजि सोपजूहै
करउर सु जाय विंटिय सजोर, इक १मास रहिय घमसान घोर ।५।
करउर रजपूतन इम उगंत, सर पूर सँगधि जिम सोम दंत ॥
जयसिंह पुर सु दुज्जन नजानि, मन सोचि श्रेय सामहिं प्रमानि ॥६॥
सालम समीप लिखि दल्ल पठाय, अब साम हमहिं तुम मिल्लहु आय॥
अरु तुमरे गुन सौ है अनेक, मम दुहिता सगपन है विवेक ॥ ७ ॥
सालम कहाय तब इम अनीक, पुरतोरन अंदर मिलनठीक ॥
मन्नी यहैहु रट्ठोर तत्थ, पुर द्वार गयो लै दुल्लसत्थ ॥ ८ ॥
उनसौं चाढसालम सदैल आय, रट्ठोर लियउ अंदर बुलाय ॥
सालम सु मिल्यो जालम अनूप, हुव घाटय अरु बैठक दुहून ॥९॥

(दोहा)

बीससहँस२००००दलनि बचैं, औसी करउर होन ॥
यहैं नजानैं क्यौं मिल्यौ, मारै कबंध सिरयौ न ॥ १० ॥
सालम सुन परनापसौं, स्वीपै सुता संबंध ॥
करि बुंदिय सो कुंचकरि, सु जयसिंह तहं संधि ॥ ११ ॥

---

*अन्तःकारी रत्ना काके ।२। ‡रत्नी महल के नीचे §नाम ॥३॥ १मूँछ पर हाथ रख कर खड़ कर जय की कामना सहित ॥४॥ ४काठनाडे से नखोना में जावे ऐसा २नमूद ॥५॥ ३सहित (संयुक्त) ७जैसे चारों ने पूर्ण आशाओं सा देखे हैं स ८ मास ठहरा ॥ ६ ॥ ९ पत्र ॥ ७ ॥ १० कोटा की सेना में ११ शहर के द्वार के भीतर मिलना ठीक है 'बाहर निकलने में पकड़ लेने का भय था इसकारण" ॥ ८ ॥ १२ सेना सहित १३ जुल्म करने वाले क्रोध से ॥ ९ ॥ १४ काग्र-र ॥ १० ॥ १५ आपनी (जयसिंह राठोड़ की) पुत्री का १६ विजय करने का प्र-

जायो जुग्गियगगको, अंकुरि कग्उर एम ॥
जेरे न दोरह बर मो, भावी मिटै सु केम ॥ १२ ॥
इत कूरम कहि संभरहिं, उज्जइनी हम जात ॥
जोलों तुम अत्थहि रहहु, हम करिहैं सुव हात ॥ १३ ॥
यह कहि वह उज्जैन गो, सूबापति मग्साय ॥
गाम नाम कायत्थिया, रह्यो सु बुंदिय राय ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

इत मरुपति निज भटन पुच्छि लखि समय मंत्र किय ॥
मिलि अप्पन कूरमन अग्ग गंभरपुर लुट्टिय ॥
अब कूरम पनि फुट्टि भयो सूबा सिर स्वामी ॥
ऐकाकी अप्पनहि रहे दिल्लीस हरामी ॥
अवर न उपाय सुज्झत अबहि उचित आहि दिल्लिय गमन।
सुंदर बिबाहि साहहि सुता रहैं सदा सिर कूरमन ॥ १५ ॥

(दोहा)

अमर लिखाई उदय पुर, मेटि रीति वह शुद्ध ॥
पुत्रिन संटैं पहुमि पुनि, लग्गो रक्खन लुद्ध ॥ १६ ॥
निज तनया तब मंगले, यह कुमंत्र उपजाय ॥
आजितसिंह दिल्लिय गयो, पर्यो साहके पाय ॥ १७ ॥
तब हिंदुन जिम तासैकी, सुता बिबाह्यो साह ॥
अजितसिंहकों इक्कठ, किन्नैं माफ गुनाह ॥ १८ ॥
साह बनायो सय्यदन, यातैं वे[12] हमगार ॥
हुसनअली इच्छित[13] करैं, बाहिजेमात्र वजीर ॥ १९ ॥

निशा छोड कर ॥ ११ ॥ १ उदय [खडा] होकर २ आधीन (नहीं झुका) ॥ १२ ॥ ३ बुधसिंह को ॥ १३ ॥ १४ ॥ ४ अकेले ५ बादशाह की बेटी परना कर ६ कछवाहों के मस्तक पर रहैं ॥ १५ ॥ ७ महाराणा अमरसिंह ने बादशाहों को पुत्री नहीं देने की रीति लिखवाई थी उसको मेट कर ८ सूर्य ने ९ बदले में १० लोभी ॥ १६ ॥ १७ ॥ ११ उसको ॥ १८ ॥ १२ सय्यद १३ चाहा हुआ (चाहे सो) करैं

तिनसों साहहु दबि रहत, सन्मुह सजत न सत्थ ॥
हुसनअलीके हुकमकों, मिट्टन कोन समत्थ ॥ २० ॥
हुसनअली काह मुकल्यो, यह मरु भूपति पास ॥
सांभर पुर भाई हनैं, बैर बिमंगों तास ॥ २१ ॥
यह सुनि तब मरुपति गयो, हुसनअलीके गह ॥
करन जोरि अरु साथ करि, अक्खो तिहिं प्रति एह॥२२॥
मैं करम बरज्यो बहुत, सांहस तदपि सम्हारि ॥
जयसिंहहि पुर लुट्टिगो, भ्रात रावरे मारि ॥ २३ ॥
सपथ झूठ करि इन लियो, सद्यादमौं मरुमोर ॥
सद्याद तब मगौस गिन्यों, जयसिंहहिं बरजोर ॥ २४ ॥
जयसिंहहु यह सब सुन्यों, मरुपति सद्याद मेल ॥
तब उज्जइनी नीति तकि, अंकुश रहिय अठेल ॥ २५ ॥
इहिं बिच दक्खिन देसकी, पत्ता आनि पुकार ॥
मरहट्टे लुट्टत मुलक, करि करि बिबिध बिगार ॥ २६ ॥

(षट्पात्)

हुसनअली सय्यद नबाब दक्खिन पुकार लहि ॥
पुर अवरंगाबाद चल्यो दरकुंच विजय चहि ॥
सारधलक्ख७५००००तुरंग संग सत दोय२००तोप साजि ॥
आवत घन जिम उमडि बंब निकरंब तनितें बजि ॥
उज्जैन निकट आयो जबहि कूरमपति इक नीति करि ॥
पैंतीस३५कोस दरकुंच गो दुलहनि ब्याहनव्याज दौरि॥२७॥

(दोहा)

॥ १९ ॥ २० ॥ १ उनका बैर मांगता हूँ ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हठ ३ मोर्चा ॥ २३ ॥ ४ झूठे सोगन ५ मारवाड़ का मुकुट ६ अपराध सहित ॥ २४ ॥ ७ नहीं छिनै ऐसा होकर ॥ २५ ॥ २६ ॥ ८ यहां अजहत् स्वार्था लक्षणा से सवार जानने चाहिये ९ नगारों का समूह १० मेघ की गर्जना के समान बज कर ११ बिवाह के मिस से १२ दौड़ कर ॥ २७ ॥

सो लखि४कोस उज्जैनतैं, इक चतुरानन ग्राम ॥
तिन तनया सगपन कियउ, कूरमसों सह साम ॥ २८ ॥
वह सगपन मन चिंति अरु, सय्यद गिनि बरजोर ॥
बिनुहि लगन ब्याहन गयो, कूरम कुल सिरमोर ॥ २९ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

वंशस्थः ॥

लग्नं विनोद्वाहचिकीर्षया गतो नीतिस्थ आमेरपुरो नरेश्वरः ॥
ततस्य पत्नी खलु चाहुवाणजा पल्लैकपाणा वलयान्यधारयत् ॥३०॥

प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

कूरमकों परिनाय इम, सय्यद दक्खिन पंत ॥
नवाँबर तव उज्जैनपुर, आयो परनि उमत्त ॥ ३१ ॥

[षट्पात्]

नब्बर आय अवंति जानि सय्यद दक्खिन गत ॥
लिखि बिनति मुक्कलिय साह फरुक हजूर नत ॥
बुंदावनि आवंत स्वामि आयस लुप्यो किन ॥
आलमके अनिसोक नाँहिं फरमान लये इन ॥
बुंदिय लिखाय अब अमहु इनहिं सिर सब हुकम चढायहै ॥
फरमान देरु बुल्लहु बुधहिं अब हजूर हुत आयहै ॥३२॥

दोहा ॥

यह सुनि साह नवाब इक, नाम दलावरखान ॥

---

१ विवाह के म.ध।२॥२० ॥ नीति में स्थित, आमेर का राजा बिना लग्न ही विवाह की इच्छा से गया इस कारण से उसकी स्त्री, चहुवाण की पुत्री ने निश्चय ही लाख की चूड़ियें धारण की, अर्थात् बिना लग्न अचानक विवाह के कारण दांत का चूड़ा उपस्थित नहीं होसका ॥ ३० ॥ २ [illegible] के को ३ [illegible] नवाब का [जयसिंह] ॥ ३१ ॥ ४ [illegible] हुआ ७ आपके अधीन है ८ [illegible] का हुकम किसने लोपा ॥ ३२ ॥

लिखित पटा जुत मुक्कल्यो, कूरम आरज प्रमानै[1] ॥ ३३ ॥
आय दलावरखान तब, कूरम[2] सचिव समेत ॥
बुंदी लै हुत भीमसौं, अप्पी इनहिं सहेत ॥ ३४ ॥
प्रथम साह किय खालसै, बुधहिं तदनु समप्पि ॥
कोटाकैं उठवायकैं, थानौं इन निज थप्पि ॥ ३५ ॥
सुता भनाय अधीसकी, रानी जो रठोरि ॥
सुतौ[3] नाम सूरज कुमार, हुत ताकैं गुनगोरि ॥ ३६ ॥
सक अंबर हय सत इक १७७०, असौ रु फग्गुन मास ॥
कोटापति बुंदियल्लई, गिल्यो सु दुज्जर ग्रास ॥ ३७ ॥
सक जामल हय सत इक १७७२, अगहन द्वादसि स्याम[6] ॥
आई पुनि बुंदीसकैं, अनधा कुलटा वाम[7] ॥ ३८ ॥
बुल्लि सचिव बुंदीसके, फेरि बुद्ध नृप आन ॥
दै बुंदी दिल्लिय गयो, जवन दलावरखान ॥ ३९ ॥
अवर देस बुंदीसकैं, आयो सबहि बहोरि ॥
भीम[8] नगर वारैं मऊ, द्वै परगना न छोरि ॥ ४० ॥
तदनंतर[9] फरमान पुनि, पठये साह जरूर[10] ॥
बुधसिंह जयसिंह नृप, बुल्ले उभय[11] हजूर ॥ ४१ ॥

(षट्पात्)

फरमानन हुंन फेलि सज्यो कूरम नरेस जब ॥
बुंदीसहिं बुलवाय कह्यो अं हून उभय अब ॥
ए दिखरहु[12] फरमान चलहु दिल्ली हम सत्थैं ॥
लैहैं साह रिझाय मुकुट ठेहैं अरि मत्थैं[13] ॥

१ माफिक ॥ ३३ ॥ २ जयसिंह के कामदार सहित ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३ पुत्री ॥ ३६ ॥ ४ अनाचारिणी ५ दुर्जर ग्रास ने ॥ ३७ ॥ ६ कृष्णपक्ष की ७ स्त्री ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ८ भीमसिंह ने ॥ ४० ॥ ९ जिस पीछे ॥ ४१ ॥ १० शीघ्र ११ दोनों को बुलाये हैं १२ देखो १३ शत्रुओं के मस्तक पर

कूरम नरेस यह कहि चढ्यो बुंदीपति तदपि न चढत ॥
आलस[1] अचेत मतिमंद[2] अति पल पल प्रति चालिहें पढत ४२
सुनत एह जयसिंह आसु[3] बुंदिय दलं[4] आयो ॥
जामिय बुद्धहिं कहिय साल[6] गजि मंद सिवायो ॥
अब नृजान आरूढहु चलहिं धरि खंध भृत्य हग ॥
निज असु सौंथ दिवाय एह आकखय नृप कूरम ॥
संकोच तास चहुवान तव चढि तरंग तिन संग हुव ॥
इहिं रीति छोरि मालव अवनि दक्खिन चल्लिय भूप हुव ॥४३॥

[दोहा]

कढि मुकुंद दर उत्तर, चम्मल्लि पट्टन ओर ॥
लक्खैरिय गिरि लंघि, आग ग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥
कछुदिन तत्थ मुकाम करि, चर मुकल्लि हित चाप ॥
संभरि निजउमराव सव, दे दल लिय बुल्लाय ॥ ४५ ॥
प्रथम इंद्रमल्लान भट, नगर इंद्रगढ नाह ॥
मग्ग सुवन छिल्वर मरद, आयो अधिक उछाह ॥ ४६ ॥
छिल्वरसों जयसिंह नृप, मिल्यो न वत्थन घल्लि ॥
इन अक्खी तुम आमई, हम मिलिहे अब हल्लि ॥ ४७ ॥
इम कहि कूरमसों मिल्यो, दे पय गहिय सीस ॥
इक सुरपन अनुसरयो, अनखि इंद्रगढ ईस ॥ ४८ ॥
करउरपति आयो नदनुं, मिल्यो उँरर उद्योत ॥
सालम जुग्गीराम सुव, भट मुहुकमसिंहोत ॥ ४६ ॥
रन करउर पाचि पाचि रह्यो, मु नृप भीम हन संध[17] ॥

१ तोर्मा २ मंद बुद्धिवाला ॥ ४२ ॥ ३ शीघ्र ४ सेना में ५ वाहिन के पति बुधसिंह ने ६ साले ने ७ पालकी पर चढो. ८ अपने प्राण का ९ सौगन ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १० हलकारे भेज कर ११ पत्र देकर ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १२ हाथ पकड़ा कर नहीं लिया १३ रोगी ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १४ जिस पीछे १५ उरड़ (घमंड) प्रकाश करके १६ पुत्री ॥ ४६ ॥ १७ प्रतिज्ञा छोड कर

यातैं दोउन अड्यो, सालम थप्पालि खंघ ॥ ५० ॥
सुभट बैरिसल्लोत सजि, नगर पल्लोधी नाह,
जैतसिंह जाजव जर्यो, आयो गरम सिपाह ॥ ५१ ॥
बैरिमल्ल कुल उद्धरन, हड्डा रन हमगीर ॥
बलवनपति आयो बहुरि, अभयसिंह अति वीर ॥ ५२ ॥
पुर खातोली पति प्रबल, अमरसिंह अभिधान ॥
इंद्रसिंह कुल उद्धरन, चाप मिल्यो चहुवान ॥ ५३ ॥
मिल्यो आनि उद्धत गुमर, चंडं समर चहुवान ॥
सेरसिंह सागंत हर, भजनेरी पुर भान ॥ ५४ ॥
नाथाउत नगराज है, नगर गुढाको नाह,
पुनि हूओ निम्वान पति, आयो मिलन उछाह ॥ ५५ ॥
सबल मिलि उमराव सब, इम स्वामी ढिग आय ॥
सबहि सिराह सूरपन, जगसिंहहु जस गाय ॥ ५६ ॥
दोहा—सबन कह्यो दिल्लीस दिय, बुंदिय लाग्दत लिखाय ॥
ते कूंगार पिक्खैं हमहु, तब इन दिन्न दिखाय ॥ ५७ ॥
पिक्खि पटा सबहिन कह्यो, कूरम नृपहि सिराहि ॥
मरु नगर वागैं मुल्क, ए न पटानिन्ह मांहि ॥ ५८ ॥
कूरम नृप सुनि काम कहि, बुध र हम दिल्लिय जान ॥
अब लौं कछि माहमीं गेरीं मुल्लक वसु जानि ॥ ५९ ॥
इम कहि अवरन सिक्खरे, चल्ल उभय नृप तार्थ ॥
सालमसिंह रु जैतसी, सुभट लगे दुव ७ सत्थ ॥ ६० ॥
इम दुव २ नृप आनेरपुर, दरकूंचन चलि आय ॥
जामिप सालक प्रीति जुत, रहे कछुक दिन गायें ॥ ६१ ॥

---

१ जयसिंह और बुधसिंह इन दोनों ने आदर किया ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ २ नाम ॥ ५३ ॥ ३ युद्ध में भोकर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ४ पत्र ॥ ५७ ॥ ५ देखे ॥ ५८ ॥ ६ पाकी का देश ७ मन का समूह ॥ ५९ ॥ ८ तहां से ॥ ६० ॥ ९ बहिनोई और साला १० राजा

तहँ करउत रन रीझ तकि, सालम हित दखसीस ॥
नैननगरको[1] परगनौं, सब दिन्नौं[2] बुंदीस ॥ ६२ ॥
सालमके इकत[3] भई, पहुमि दम्म नवलक्ख१००००० ॥
कतिकन तब योंहू कह्यो, बनिहै कबहु विपक्ख[3] ॥ ६३ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

करी इम सालमकों बखसीस, गये पुनि दिल्लिय दरवानसीस[4] ॥
उभै हित संग गये पुनि आम, गजी नृप दोउन[5] साह सलाम ॥६४॥
अनामय[6] दोउनको जवनेस, लिमनाधीप[7] पुच्छिय प्रीति विसेस ॥
उभै २ नृप अप्पन अप्पन ओंक, सिराइहिं पाय खरे हत सोक ॥६५
उभै २ भट सालम जैत समत्थ, बुलायउ एहु सभा विच तत्थ ॥
नवीवनकी इनमैं म उझल्ल, परी लकरी इक१ सालम हल्ल ६६
दई पुनि साह समग्गन सिक्ख, रह्यो नृप कूरमको थान तिक्ख ॥
रहे इम दिल्लिय दरनरनाह, सदा खिलिवत्त बुलावन साह ६७
लयो नृप कूरम साह रिझाय, प्रसन्न कहे सु करे हित पाय ॥
सुसाहब सालमकों करि सुद्द[12], पठायउ बुंदिपपैं तब कुद्ध ॥६८॥
सभा दिन इक्क वडी रचि साह, बुलायउ आम सबै नरनाह ॥
गयो जयसिंहह कूरम ईस, गयो बुध हड्डन वंस अधीस ॥ ६९ ॥
गयो तत सालनके स तुरंत, गयो मरु ईस अजिंसह[14] तत्त ॥
गयो नृप संभर[15] भीम सबंध, गयो पुनि रूपपुरेस[16] कबंध ॥ ७० ॥
गये इम हिंदुव मिच्छ असेस, गयो पहिलौं तहँ बुद्ध नरेस ॥
सलाम करी कसि पट्टि[17] ढलक्क, लई नृप बुंदिप पट्ट मिसल्ल ७१

॥ ६२ ॥ १ नैणवा नगर का ॥ ६२ ॥ २ दाणों की आमदनी की ३ शत्रु ॥ ६३ ॥ ४ आम दरबार में ॥ ६४ ॥ ५ कुशलता ६ हमने पूछा दोनों से ७ स्थान पर ८ प्रशंसा पाकर ॥ ६५ ॥ ६ समर्थ १० गांव पहानेवाली ११ ढाल पर ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ १२ सूर्य (बुधसिंह) ने ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १३ बादशाह का नसुग होने में घमंड करता हुआ १४ अजितसिंह १५ सांभर का भीमसिंह १६ रूपनगर का पति राठौड़ ॥ ७० ॥ १७ कमर १८ बुधसिंह १९ कटारी ॥ ७१ ॥

गये तदनंतर सबहि आम, सजी हित पूरब नम्म्र सलाम ॥
बिलंब कछू करि आयउ भीम, तक्यो हिय हेत रची तसलीम[2] ।७२।
सिरे लखि बुद्धहिं मुद्द गिराय, जग्यो मनमाँहिं सु क्यों मिटिजाय॥
दई उठि साह समस्तन सिक्ख, रही तँहँ बुद्ध बलापति तिक्ख७३

(शुद्धप्राकृतभाषा)

(मालिनी)

इय उअयउराणो तत्थ सङ्गामराणा,
णरवइजयसिंहे पेसिअं ग्गेहपत्तम् ॥
जइ कुणइ पसाअं फूरुओ तुब्भ धीए,
वसइ णणु तदो मे पट्टणं चित्तऊडम् ॥ ७४ ॥
णयसमयजयसिंहो तं क्खु दट्ठूण पत्तं,
समयबलविएगी णीइ एकत्तु बुद्धिम् ॥
दडवडहि गयो सो साहकामम्मि कुम्मो,
कहिउ जवणणाहं फूरुअं राणवत्तम् ॥ ७५ ॥

॥ प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(षट्पात्)

---

१ जिस पीछे सब आम दरबार से गये २ आदाब ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

॥ संस्कृत अनुवाद ॥

इत उदयपुरात् तत्र संग्रामराणानरपतिजयसिंहं प्रेषितं स्नेहपत्रम् ॥
यदि करोति प्रसादं फूरुकस्तव बुद्धौ वसति ननु तदा पत्तनं चित्रकूटम्॥७४॥
नयसमयजयसिंहः तं खलु दृष्ट्वा पत्रं समयबलविवेकी नीत्वा एकत्र बुद्धिम्॥
शीघ्रं गतोऽसौ शाहकार्ये कूर्मः कथयितुं यवननाथं फूरुकं राणवार्ताम् ॥ ७५ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इधर राणा संग्रामसिंह ने वहां राजा जयसिंह को प्रीति पत्र भेजा कि जो तुम्हारी बुद्धि से फूरुकशाह कृपा करै तो निश्चय ही चित्तोड़ वस जावै।७४। उस समय को और बल को जाननेवाला जयसिंह नीति के पत्र को निश्चय देख कर बुद्धि को एकत्र करके बादशाह के कार्य में शीघ्र वह कछवाहा फूरुकशाह से राणा की वार्ता कहने को गया ॥ ७५ ॥

अग्गैं अकब्बर साह लियउ चित्तोर दुग्ग बर ॥
पच्छो आदिय बहुरि रह्यो तब्बैं वह उज्जर ॥
साह हुकम बिनु रान जाय स्वच्छंद बसैं किम ॥
यातैं पठई अत्थ अरज संग्रामसिंह इम ॥
अप्पहु निदेस बसवाय अब चित्रकूट हमहू रहैं ॥
सतपंच५००सुभट परखेंत मम कथितकरो तँहँ निब्बहैं॥७६॥

[दोहा]

नजरि द्रव्य करिहै कितो, यहैं कही जब साह ॥
तबहि दम्म त्रयलक्ख३००००० मित, अक्खे कूरमनाह॥७७॥

(षट्पात्)

सुनि सु रान मुकलिय नजरि हुंडी लय३लक्खन ॥
कूरम किन्नी नजरि साह पिक्खी सु मोद मन ॥
लियउ पाट लिखवाय रही महुरहि अवसेसह ॥
अरज इक्क पुनि करिय नगर आमेर नरेसह ॥
बुधसिंह भीम बिग्रह बिरचि छिज्जहिं लरि लरि परसपर ॥
दोउन मिलाय अब अप्प द्रुत मेटि बइर मंडहु महर॥ ७८ ॥

[दोहा]

सुनत एह कोटेसकों, दिन्नी साह कहाय ॥
करहु मत्त बुंदीस मन, जयसिंहह ढिग जाय ॥ ७९ ॥
जो तुम किन्न्यो हुकम लहि, सो सब पच्छो देहु ॥
उभयरभ्रात एकत्त जुरि, सनय साम करि लेहु ॥ ८० ॥

(हरिगीतम्)

बरजोर आयस साहको सुनि भीम भो जुत धी भई ॥

---

१ शून्य २ स्वतंत्र ३ कहना करो वहाँ ॥ ७६ ॥ ४ कछवाहों के पति ने ॥७७॥ मुहर लगाना ५ बाकी रहा ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ६ बलवान् आज्ञा ७ भय सहित ८ बुद्धि

जयसिंहके घन रूप डेरन जाय बिन्नति मंडई ॥
कछवाह कहि बारी मऊ अब छोरि इन लिखि दीजिये ॥
बुंदीसमौं मिलि सामकैं इकथाल भोजन कीजिये॥ ८१ ॥
तब साह औ कछवाह द्वैरमन मंत्र इक्कत जानिकैं ॥
कोटेस वह तजि देस दोनौं लेख करगार ठानिकैं ॥
करि असन इक्कथहि थाल औ भूपाल त्रय दिन बिथ्थरयो॥
नृप भीम उप्पर ओर औ मनमांहिं दोख भरयो जरयो॥८२॥
सक तीन हय रिखि इंदु१७७३ मैं यह बत्त तीनन कैं भई ॥
इहिं बीच जट्टनकी पुकार अपार दिल्लिय उन्नई ॥
इक नैर थूहनि ईस जट्ट सु नाम चूडामनि रहैं ॥
धन जोर औ मन जोर जो रन जोर फौजन निब्बहैं ॥८३॥
तब साह जट्ट पुकारपैं कछवाह भूपति पिल्लयो ॥
बुंदीस बिनु सब संग नृप करि सेन संचय ठिल्लयो ॥
इन जाय तोपन माल कैं रांच जाल थूहनि बिंटई ॥
इत साह बुंदिय नाह बुल्लिं रु रोन बत्त सु पुच्छई ॥८४॥
बुधसिंह रान पठाय बिन्नति चित्रकूट बसावहीं ॥
किय भेट दम्म त्रिलक्ख३००००० औ अपनो निदेस उठावहीं ॥
नयसंद हड्ड नरिंद यौं सुनि कुंम्म कानि हु नौकरी ॥
जयसिंह उक्त प्रपंचें जानत हू यहै कथ उच्चरी ॥ ८५ ॥
वह दुर्ग अकबर साह रन करि अब्द द्वादस१२ मैं लयो ॥
हम आदि बहुतन रान तजि तब सीस साहनकों नयो ॥
वह चित्रकूट बसायकैं पुनि रान फैल प्रचारिहैं ॥

१ साम उपाय [सुलह] करके ॥ ८० ॥ २ और ३ पत्र लिख कर ४ भोजन ५ विस्तारा [फैलाया] ॥ ८२ ॥ ६ जाटों की उठी ॥ ८३ ॥ ८ भेजा ९ एकत्र करके १० बुला कर ११ राणा की वार्ता ॥ ८४ ॥ १२ हे बुधसिंह १३ नीति में सुर्व १४ जयसिंह को १५ जयसिंह को कहीहुई यह रचना जानता था तो भी ॥ ८५ ॥ १६ राणा को छोड कर बादशाहों को शिर झुकाया है

अवनीप हिंदुन[1] फोरि अंकुरि[2] साह नाह बिसारिहैं ॥ ८६ ॥
यह गाह फूरुक साह सुनि वह पत्र भीतैं[3] बिदारयो ॥
जयसिंहपैं इत भीम थूहनि जंग मोह प्रमारयो ॥
करजोरि कहि मम गेह पुत्रिय अप्प उपनयँ[4] कीजिये॥
कछवाह तब जयसाह कहि कछु दीह[5] अंतर दीजिये॥८७॥
नृप बुद्ध सोदरकी[6] सुता हम पुब्ब[7] सगपन कैं बरी ॥
वहव्याह करि द्रुत[8] रावरे गृह बत्त उपनय[9] अद्दरी ॥
जयसिंह यह कहि भीमसौं बुधसिंह प्रति दल[10] पिल्लयो ॥
तुम व्याह मंडहु बेग मैं पुनि भीमको बच[11] भिल्लयो॥८८॥
बुधसिंह यह सुनि साहसौं लहि सिक्ख थूहनि संक्रम्यो[12] ॥
जल घोर सिंधु हिलोर ज्यौं दल[13] जोर जट्टनपैं जम्यो ॥
लिखि पत्र बुंदिय जोधँ[14] सोदरकी सुता नृप बुल्लई[15]॥
उम्मेदकुमरि सु नाम जो परिनाय कूरमकौं दई ॥ ८९ ॥
कोटेस भीमहु अप्पनी तनया[16] सु तत्थ बुलायकैं ॥
बरजोर[17] कूरम मोर कौं दिय प्रीति सह परिनायकैं ॥
सक आगि हय रिखि इंदु१७७३हायन नेर थूहनि जंगमैं ॥
कछवाह इम दुव व्याह कीने वीर सींचि[18] रस रंगमैं[19] ॥९०॥
करि व्याह कूरम नाह यौं पुनि ताव जट्टनपैं दयो ॥
हरिमंथँ[20] भ्राष्ट्र[21]कैं गैत्र[22] ज्यौं तरकाव तोपनको भयो ॥
उहि कोट अट्ट[23]नि थट्ट यौं गढ बैट्ट[24] जट्टनकैं परे ॥

---

१ हिन्दु राजाओं का २ उदय होकर बादशाह का स्वामी पन भूलेगा ॥ ८६ ॥ ३ डर कर फाड़डाला ४ विवाह ५ दिन की छेटी ॥ ८७ ॥ ६ बुधसिंह के सगे भाई की बेटी ७ पहिले ८ शीघ्र ९ विवाह की वार्ता स्वीकार करी १० पत्र भेजा भीमसिंह का ११ वचन ॥ ८८ ॥ १२ चला १३ सेना का १४ छोटे भाई जोधसिंह की बेटी को १५ बुलाई ॥ ८९ ॥ १६ पुत्री को १७ बलवान् उस वीर कछवाहे को १८ युद्ध में १९ शृंगार रस किया ॥ ९० ॥ २० चनों का २१ भाड़ में २२ शब्द होवै तैसे २३ बुरजें २४ मार्ग .

कढि वेग तब गहि तेग वे सब सेन सम्मुह ह्वै मरे ॥ ९१ ॥
जयसिंह थूहनि तोरिकैं इम जट्ट चूडामनि हन्यौं ॥
अरु वदनसिंहहिं रक्खि सरनैं *अप्प जय छक उप्फन्यौं ॥
जिहिं बदनसिंह †निकेत सूरजमल्ल जट्ट सु पुत्तभो ॥
‡जर बंटिकैं सिर §संटि लै भुव फोज लक्खन जुत्तभो ॥९२॥
द्वै कोटि[1] २००००००० आमद मुलक दक्खि रु ताव साहनपैं दयो ॥
धरि बीस[2] २०००००००० कोटि स्वकीय कोस सरोस सत्रुनकौं जयो॥
लरि आगरा लहि मारि दिल्लिय साह कोसन[3] लुट्टिकैं ॥
किय भरतपुर निज राजधानी जंग मिच्छन[4] जुट्टिकैं ॥९३॥
गढ भरतपुर कुम्भेर डिग्घ रु बैर ए चउ४निर्मये[5] ॥
ऐसान सिर आमेरको भुल्ल्यो न जोहु इते भये ॥
वाकै जवाहरमल्ल पुत्त सहाय सूरहु[6] जाहिलै ॥
बैठो सु मरुपति[7] विजयसिंहहु इक्क गद्दिय ताहिलै ॥ ९४ ॥
जिहिं पुत्र नातिय[8] ए भये तिहिं सरन कूरम स्वीकरयो[9] ॥
गढ फोरि थूहनि तोरि सब नृप जोरि[10] दिल्लिय संचरयो॥
रस.राहसौं रु सिराहसौं मिलि साहसौं जय अप्पयो ॥
सिरमोर भूप समस्तमैं बरजोर कूरम यौं भयो ॥ ९५ ॥
कछवाह साह उभैरहि इक्क गिनि व्याज[11] भीम बिचारयो॥
जामात[12] पर रचि घात जड नृप सक्ख मंत्र सम्हारयो ॥
पुनि रूपनगर नरेस अरु मरुदेसपति दुव बुल्लिकैं ॥
मिलि इक्क सम्मति मंत[13] मंडिय भूप तीनन भुल्लिकैं ॥९६॥

॥ ९१ ॥ * आप † घर में ‡ धन बांट कर § बदले में मस्तक लेकर ॥ ९२ ॥ १ अपने खजाने में २ जीता ३ बादशाह के खजाने को ४ म्लेच्छों से ॥ ९३ ॥ ५ बनाये ६ वीर भी जिसकी सहायता लेते थे ७ मारवाड़ का राजा ॥ ९४ ॥ ८ पोते ९ स्वीकार किया १० सब राजाओं को एकत्रित करके ॥ ९५ ॥ भीमसिंह ने ११ छल विचारा १२ जमाई (जयसिंह) पर १३ सलाह की ॥ ९६ ॥

लिखि पत्र सय्यदपैं *ततक्खिन देस दक्खिन मुक्कल्यो ॥
इत साहकी हित चाहसौं कछवाह भूपति †उज्झल्यो ॥
जयसीह यह कछु दीहमैं अधिकार[1] अप्पन पायहै ॥
बनिकैं वजीर समग्ग मस्तक चंड[2] घात चलायहै ॥ ९७ ॥
रहनौं तुम्हैं जु वजीर ह्वै अरु बंधु बैर निवेरनौं[3] ॥
तो बेग आवहु तेग मंडि घुमंडि कूरम घेरनौं ॥
द्रुत पिक्खि यह छद[4] सज्जि सय्यद सेन सम्मद[5] उप्पर्यो ॥
सजि अग्ग तोपन मग्ग कोपन लज्ज लोपन संचर्यो[6] ॥ ९८ ॥
उज्जैन आय रु साहकौं[7] दल्ल मंडि दूतन[8] अप्पये ॥
हम आनि पूरब देससौं तुम पट्ट दिल्लिय थप्पये ॥
जयसिंह नृप मम भ्रात मारक[9] ताहि निज हिय लायकैं ॥
मम तुल्लय अद्दर[10] किद्दर्यो सु दये हि अप्प[11] भुलायकैं ॥ ९९ ॥
कछु त्रास[12] नहि बिसवासहै अब पास आय रु अक्खिहौं[13] ॥
रन चाय[14] आयस पाय मैं निज बंधु बैर न रक्खिहौं ॥
सुनि साह यह निज मातसौं सब बात सय्यदकी कही ॥
तब मात आक्खिय घात यह जयसिंह उप्पर है सही ॥ १०० ॥
तिहिं देहु सादर[15] सिक्खसौं आमेर नेर पठायकैं ॥
तब चूक[16] अप्पनमांहिं नांहिं लरैं जु सय्यद आयकैं ॥
सुनि साह यह कछवाहसों हित चाह आक्खिय सबही ॥
तुम जाहु बेगहिं सिक्खि लै अति फैल सय्यदको मही ॥ १०१ ॥
जयसिंह आक्खिय भो वजीर जु मोजदीनहिं मारिकैं ॥
तौहैं सु आवत बेर ये सब चौंर छत्र उतारिकैं ॥

---

* इसी समय † बढ़ा १ आपके वजीर पन का २ भयंकर ॥ ९७ ॥ ३ भाइयों का बैर मिटाना होवे तो ४ पत्र ५ हर्ष सहित ६ चला ॥ ९८ ॥ ७ पत्र लिख कर ८ हलकारों को दिया ९ मारनेवाला १० आदर से मेरे बराबर किया ११ आपने ॥ ९९ ॥ १२ डर १३ कहूंगा १४ हुकम पाकर युद्ध की चाह से ॥ १०० ॥ १५ आदर के साथ १६ दोष (भूल) ॥ १०१ ॥

तसमात सज्जहु सेन सम्मुह सत्रु सय्यद मारिहैं ॥
सबहिंदु पायन लाय हिंदुसथान आन बिथारिहैं ॥१०२ ॥
कहि साह तुम गृह जाहु जो अति जोर सय्यद जानिहैं ॥
पुनि तुमहिं बुल्लि प्रपंच करि तिहिं मारि खैर[2] प्रमानिहैं ॥
तब कहिय कूरम रानहित फ़रमान जो वह निर्भयो[3] ॥
चित्तौर दुग्ग बसायबेहित सो समुद्दहु नाँभयो ॥ १०३ ॥
बुंदीस नैनन चिंति तब यह साह नाँहिं न स्वीकरी[4] ॥
कछु और मंगहु रान हित देहैं सु यह पुनि उच्चरी ॥
आमेरपति तब एह अक्खिय रामपुर लिखिदीजिये ॥
करि मान[5] भूपति रान सर्वसमान सेवक कीजिये ॥१०४॥

[दोहा]

मालवधर अंतर मुल्लक, नगर रामपुर नाम ॥
चंद्राउत सीसोद तँहँ, स्वामि नाम संग्राम ॥ १०५ ॥
याकै पुरुखन अग्ग अति, सेये दिल्लिय साह ॥
किये सुभट तब राव कहि, राज बख्खि हित राह ॥ १०६ ॥
तबतैं बुंदिय जोधपुर, पुर आमेर समान ॥
सनमानित[7] सीसोदहू, सेवत रहि सुलतान ॥ १०७ ॥
तिन कुल यह संग्राम नृप, रह्यो सुररि लहि काल ॥
छिद्र यहै तकि गहन छिति, कहि कूरम भूपाल ॥ १०८ ॥

पद्धरी ॥

कहि कूरम करजोरि सुनहु मम वत्त साह श्रुतैं ॥
रामपुर पैं[12] संग्राम रहिय अब सुररि जोर जुत ॥

१ इसकारण मे ॥ १०२ ॥ २ कुशलता ३ लिखागया था सोमुद्रा [छाप] सहित नहीं हुआ अर्थात् छाप नहीं लगी सो लगवादेवें ४ स्वीकार नहीं करी ५ आदर करके ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ ७ सन्मान पाकर ८ पादशाह को ॥ १०७ ॥ ९ समय १० भूमि लेने के लिये ॥ १०८ ॥ ११ कान में १२ पनि

जनपद लेहु उतारि रहैं मुरैं न ठिकानाँ ॥
रानहिं देहु लिखाय रचहि सेवन यह रानाँ ॥
सुनि यह लिखाय फरमान दिय करि समुद जयसिंह कर॥
रान तुम दक्खि गढ रामपुर सज्जहु सेवन सुभट बर ॥१०९॥

दोहा ॥

रामपुरहिं लिखवाय इम, रान अरथ हित राह ॥
सजव सिक्ख करि साहसौं, नीति चतुर कछवाह ॥११०॥
जामिपं डेरन आय कहि, चलहु अप्प करि सिक्ख ॥
इहाँ समय कछु औरभो, रहैं न राजस तिक्ख ॥ १११ ॥

षट्पात् ॥

सुनत एह बुंदीस दियउ कूरम प्रति उत्तर ॥
तुम आयउ लहि सिक्ख सजव सज्जित पद्धति पर ॥
हमहि सिक्ख अब होत कछुक अंतर परिजैहैं ॥
चलहु अप्प तस्मात सिक्ख लै द्रुत हम ऐहैं ॥
जयसिंह सु सुनि आमेरपुर आय कटक बहुसज्ज किय ॥
इत संदल आय दिल्लिय उमँडि हुसनअली अनखात हिय॥११२॥
स्वसुर साहको गूढ अजित अभिधानं धन्वपति ॥
रूपनगर रट्ठोर जनक मातुल विमंदमति ॥
योंहोको जामात भीम कोटेस राम सुत ॥
बंधुवरग त्रय जानि बीच डारिय बिसास जुत ॥
कहि साह साम सय्यद विरचि राजकाज निवहहु सकल ॥

१ देश २ छाप (मुहर) लगाकर ॥ १०९ ॥ ११० ॥ ३ पहिनोई [बुधसिंह] के डेरे पर ४ राजापन की वा रजोगुन की ॥ १११ ॥ ५ मार्ग पर ६ इसकारण से ७ सेना सहित ॥ ११२ ॥ अजितसिंह ८ नाम ९ मारवाड़ का पति १० बादशाह फ़र्रुखसियर के पिता का ११ मामा १२ विशेष मूर्ख बुद्धिवाला १३ इसी राजसिंह का जमाई भीमसिंह कोटा के राजा रामसिंह का पुत्र १४ इन तीनों को सम्बन्धी जानकर

इन दियउ डारि सय्यद श्रवनं उन सब फोरिय मंतबल॥११३॥
ए तीन ३ हि [2]अवनीप लचिग अति भुम्मि लुभाये ॥
बदलि साहसौं छन्न अधम सय्यद बिच आये ॥
साहहिं दै बिसवास इक्क [3]बासर जुरि इक्कत ॥
बैठे करन [4]रहस्य साह पंचम५ करि सम्मत ॥
तब [5]साह तीन [6]भूपनं पकरि बंधि जाँहिकी पग्घ करि ॥
[8]मखतूल पासि गल डारिकैं मारि गिरायउ गारि लरि ११४

हरिगीतम् ॥

सक बेद हय गिरि इंदु १७७४ [10]हायन मास फग्गुन [11]गोरमैं॥
हनि साह त्रय [12]नरनाह सय्यद चाह हुव अति जोरमैं ॥
परि कूक दिस दिस हुरमखानन नारि [13]तोबह उच्चरैं ॥
आतंक सय्यदको अतीव सु द्रव्य [14]गोपनहू करैं ॥ ११५ ॥
लै सबन हुरमन द्रव्य [15]धन्वं [16]धवसैं [17]धी गृहमैं धरयो ॥
मरुईस सुनि [18]बसुजुत्त [19]पुत्तियं बुद्धि लोभहि अहरयो ॥
सह बित्त मुक्कलि [20]धन्वं दिय तनया सु यों मरु ईसनैं ॥
अरु [21]भीमैं सय्यदसौं कही बुधसिंह वैर रचैं घनैं ॥ ११६ ॥
जयसिंह [22]जामिप है यहै तुमसौंहु छल करि तोरिहै ॥
[23]तस्मात मारहु याहि सब मिलि जोर छल यह जोरिहै ॥
सुनि एह सय्यद फेरि फोजन [24]बट्ट बुंदिय बंधयो ॥

१यह वार्ता सय्यद के कानों में डाल दी॥११३॥२भूमि के लोभ से ये तीनों राजा नम गये३एक दिन एकत्र होकर४एकान्त सलाह करने बैठे५बादशाह को६तीनों राजाओं ने७उसी (बादशाह) की पगड़ी से ८ रेसम की फांसी ९ गालियां से लड़कर अर्थात् बादशाह को गालियें देकर॥११४॥१०सम्वत् के११शुक्लपक्ष में १२ राजा १३ 'तोबा तोबा' करने लगीं १४ धन छिपाने लगीं ॥ ११५ ॥१५ मारवाड़ के१६पति की १७ पुत्री के घर में१८धन१९सहित पुत्री को २० बेटी को धन सहित मारवाड़ में भेज दी२१कोटे के महाराव भीमसिंह ने ॥ ११६ ॥ २२ बहिन का पति २३ इसकारण से २४ बुन्दी का मार्ग

अवनीस तीनन[1] अप्प लै बुधसिंह डेरनपैं गयो ॥ ११७ ॥
बुंदीस यह सुनि सेन सज्जि रु सेन सम्मुह संक्रम्यौं[2] ॥
तव जैत[3] आक्खय घोर यह अति जोर सय्यदको जम्यौं ॥
लाहोर तोरन[4] होय नृप तुम जाहु कूरम देसमैं ॥
हम धीर रन हमगीर जुज्झहिँ बीर जरठ[5] बेसमैं ॥ ११८ ॥
यह कहत आतुर[6] आय खल दल जानि बद्दल लुंबये ॥
बजि बीर आनक[7] यौं अचानक राग सिंधुव लग्गये ॥
बजि डेरु डिंडिम डक्क अो बहरक्क[8] अंभ[9] फरक्कई ॥
अहि भोग[10] लेत लचक्क अो धरनी सु धक्कन धक्कई ११९
परि ओर ओरन रोर[11] दिल्लिय जोर जालम जंग भो ॥
हटनारि हट्टन लागि पट्टन[12] अंग रंग बिरंग भो ॥
पजरात जात बजार बीथिनैं[13] यौं अलात[14] सु उच्छरैं ॥
जिम मास बाहुल[15] दरसपैं[16] नेहास[17] कास[18] करैं जरैं ॥१२०॥
आकास धूम रु धूलि धुंधुरि भान भासन[19] लुप्पयो ॥
बजि कंक गिद्ध सिचान पच्छि[20] ति रारि सय्यद रुप्पयो ॥
अनिरुद्ध सुव[21] तव तेग झारत मीर मारत निक्कल्यो ॥
कुल बैरिसल्लज[22] जैतसिंह सु सेन सम्मुह उज्झल्यो[23]॥१२१॥
पुनि जोधराज प्रधान ऊरुज[24] आय ए रन अंकुरे[25] ॥
लहि रोक कोकन[26] सोक भो पुरलोक ओकन[27] मैं दुरे ॥

१आप (सय्यद) तीनों राजाओं को साथ लेकर ॥ ११७ ॥ २ चला ३ जैतसिंह ने कहा ४लाहोरी दरवाजे होकर ५ वृद्धावस्था में ॥ ११८ ॥६शीघ्र वा घबराया हुआ कि बुधसिंह भाग नहीं जावें ७ ढोल ८ ध्वजा ९ आकाश में १० फण ११९ ॥ ११ भय १२ हाटों के किवाड लग कर १३ गलियों में १४ अग्नि १५ कार्तिक मास की १६ अमावास्या पर १७ दीपक १८ प्रकाश ॥ १२० ॥१९सूर्य का दीखना छुपगया २० पंछी २१ पुत्र (बुधसिंह). बैरीसाल के कुल में २२ जनमा हुआ २३ चढा ॥ १२१ ॥ २४ वैश्य २५ खड़े हुए २६ सूर्य की रोक देखकर चकवा पक्षियों को शोक हुआ २७ घरों में छिपे.

कमनैत फोजनमैं पग्यो भट जैत हड्ड हकारिकैं ॥
रन नैंर[1] दिल्लियकी रही तिय जालरंध्र[2] निहारिकैं ॥ १२२ ॥
तरवारि नागिनि जैतकी बिस मोह[3] सत्रुनकौं[4] दयो ॥
दल जुद्ध जाँव प्रबुद्ध ह्वै नृप तोंव[5] तोरन[6] लंघयो ॥
निकसाय स्वामिय संकरैं वान श्रोट तोरनपैं अरयो ॥
बजि हक्क रन धमचक्क यों बिनु मत्थ जैत लरयो परयो ॥१२३॥
परि बीर सत्रह १७ संगके दल जाँम इक्क १ सु रुक्कयो[7]॥
लगि क्रोध कैं[8] परि जोध[9] ऊरुज स्वामि क्रन सत्र चुक्कयो ॥
लाहोर पंद्धति[10] भूर कढि कछवाह [11]जनपद संक्रम्यो[12] ॥
इत जीति संगर घोर सय्यद जोर दिल्लिय मैं जम्यौं ।१२४।
किय साह नाम रफैलदाला मास छह्द बिच सो मरयो ॥
तब श्रोर किय दुत्र२ मास बिच तजि सोहु संचैर[13] संचैरयो[14] ॥
तब किय मुहुम्मदसाह सोंह[15] सु चाह सय्यदकी भई ॥
यह यों छह्दहायनमैं[16] छ ६ साहन थाँपि दिल्लिय भुग्गई[17]।१२५।

(षट्पात्)

सक बसु खट हय इंदु १७६८मरिग आलम ओरँग सुंव[18] ॥
गुनहत्तरि ६९ हनि मोजदीन फूरक पट्ट हुव ॥
किय रफीलदोला सु ताहि हनि सक चउहत्तरि७४ ॥
पचहत्तरि५७ यह मरत अवर किय सोहु गयो मरि ॥
सय्यद वजीर पुनि मंत्र सजि आलम नाँतो[19] जानि जिय ॥
तक्कत रफीलकदरह तनय साहमुहुम्मद साह किय ।१२६।

१ दिल्ली नगर की स्त्रियें २ जालियों के छिद्रों में ॥ १२२ ॥ ३ मूर्छा ४ सेना से जब तक युद्ध हुआ ५ तब तक राजा सचेत होकर ६ शहर का द्वार लांघ गया ॥ १२३ ॥ ७ सेना को एक पहर तक रोकी ८ करके ९ जोधराज वैश्य १० मार्ग ११ देश में १२ चला ॥ १२४ ॥ १३ शरीर को छोड कर १४ चला (मरा) १५ बादशाह १६ छः वर्ष में छः बादशाहों ने १७ दौड़कर (शीघ्रता से) ।१२५।
१८ पुत्र १९ आलम का पोता

(दोहा)

सक्क सर छय सत्रह१७७५समय, सय्यद थप्पि सु लाह ॥
पुर दिल्लीके पट्टपर, धग्यो मुहुम्मदसाह ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे महाराणासंग्रामसिंहभणानबुन्दीमुक्त्यस्वीकाराप-राधक्षमापनमहारावभीमसिंहोदयपुरगमन १ करवरसमरनिराश-कोटाकटकप्रत्यागमन २ मरुधराधीशाजितसिंहदिल्लीन्द्रफूरुकसिय-रस्वसुतापरिणायन ३ आत्तसैन्यहुसनअलीसय्यददक्षिणादिग्गमन ४ वैवाहिकनक्षत्रमन्तरापिहुसनअलीभीतत्यक्तोज्जयिनीनगरशरगु णक्रोशान्तरजयसिंहस्वविवाहार्थगमन ५ जयसिंहप्रार्थनापत्रागम भीमसिंहत्याजितबुन्दीबुधसिंहप्रत्यर्पण ६ यवनेन्द्राह्वानजयसिंह बुधसिंहदिल्लीसरण ७ जयसिंहद्वारामहाराणासंग्रामसिंहस्य पुन-श्चित्तोड्वासहेतुफूरुकसियराज्ञाग्रहण ८ चूडामणिजट्टविजयार्थज-यसिंहाधिकारथूहणपुरयवनेन्द्रसैन्यप्रेषण ९ थूहणपुरसमरविवाह द्वयकरणानन्तरजयसिंहजट्टविजयन १० जयसिंहाविरोधेन कोटाधी-

॥ १२६ ॥ १ अपना श्रेष्ट लाभ ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बुधसिंह के चरित्र में, महाराणा संग्रामसिंह के कहने से बुन्दी नहीं छोडने का अपराध क्षमा कराने को महाराव भीमसिंह का उदयपुर जाना १ करवर के युद्ध में कोटा की सेना का निरास होकर पीछी आना २ मारवाड़ के राजा अजितसिंह का दिल्ली के पादशाह फूरुकसियर को बेटी विवाहना ३ सय्यद हुसनअली का सेना लेकर दक्षिण में जाना ४ हुसनअली के भय से उज्जैण को छोड कर पैंतीस कोस के अंतर पर जयसिंह का विना ही लग्न विवाह करने को जाना ५ जयसिंह की अरजी जाने पर भीमसिंह से छुडा कर बुधसिंह को बुन्दी पीछी देना ६ पादशाह के बुलाने पर जयसिंह और बुधसिंह का दिल्ली जाना ७ महाराणा संग्रामसिंह का जयसिंह द्वारा पादशाह फूरुकसियर से चीतोड़ बसाने की आज्ञा मांगना ८ चूड़ामनि जाट को विजय करने के अर्थ पादशाह का जयसिंह के अधिकार में थूहणपुर पर सेना भेजना ९ थूहणपुर के युद्ध में राजा जयसिंह का दो विवाह किये पीछे

लंघि पहर खट६असनं लिय, पुनि सुनि कुसल प्रसंग ॥३॥
दिल्लीतैं इहिं बिच निकसि, रन करि बुंदिय नाह ॥
मिलिय आनि जयसिंहसौं, टोडा अधिक उछाह ॥ ४ ॥
कोटापति अग्गैं लियउ, सोपुर मुलक छुराय ॥
इंद्रसिंह सोपुर अधिप, निकस्यो प्रान बचाय ॥ ५ ॥
गोर बंस अवतंस यह, सोपुर पुर अधिराज ॥
आयो मिलि बुंदीससौं, कूरम ढिग भुवकाज ॥ ६ ॥

उद्धुर ॥

इत उदयपुर पति एस, संग्रामसिंह नरेस ॥
पुर रामपुर लहि पत्तं, सजि सेन पिल्लिय तत्त ॥ ७ ॥
तिन रामपुर नरनाह, संग्रामसिंह सचाह ॥ ८ ॥
कर बंधि नैरं बिहाय, पय रान लग्गिय आय ॥
तब रान लखि नंत एस, दिय मंडि अद्धह दंस ॥ ९ ॥
लहि अद्ध भुव तब राव, हुव रानको उमराव ॥
बराव १ मराव २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
भुव अद्ध छिन्निय रान, थित च्यारि४ पुर जुतथान ॥१०॥
जिन्नोद १ जीरन २ द्रंग, सजि कुक्कुटेश्वर३संग ॥
लिय नैर नीमचि४नाम, किय तत्थ सेन मुकाम ॥ ११ ॥
भुव अद्ध लै इम रान, दिय फेरि अप्पन आन ॥
भुव अद्ध पत्तिहिं रक्खि, लिय बंदगी रस चक्खि ॥ १२ ॥
खट सत्त हय इक्क१७७६मान, लिय रामपुर इम रान ॥
इत जोर सय्यद किन्न, गहि हत्थ दिल्लिय लिन्न ॥ १३ ॥
निज पति मुहुम्मदसाह, ताकी न कछु जिय चाह ॥

१भोजन॥३॥॥४॥५॥२गौड़ वंश का मकुट३पति ॥ ६ ॥ ४ पत्र ५ भेजी तहां॥७॥ ॥ ८ ॥ ६ नगर को छोड़ कर ७ नम्र देख कर ८ आधा देश लिख दिया "यह रामपुरा वाले पहिले से चीतोड़ के राव थे परन्तु उस महाराणा की विपत्ति में स्वतंत्र राजा होगये थे" ॥ ९ ॥ १०॥ ६ नीमच ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

कोटेस अरु मरुनाह, किय दोहु[1]बुल्लि सु लाह ॥ १४ ॥
तुम जाय निज निज देस, सज्जहु अनीक[2] बिसेस ॥
खगमार धारन खग्गि, लैहैं ब कूरम घेरि ॥ १५ ॥
दुवरसाल[3] जाँमिप मारि, आमैर बुंदिय धारि ॥
रहिहैं निरंकुस होय, पिच्छैं न कंटक कोय १६ ॥
मरुईस सुनि यह बत्त, मरुदेस आयउ मत्त ॥
लगि सेन सज्जन अंध, कछवाह सीस कबंध ॥ १७ ॥
इत भीम भुम्मि उमंग, ब्रज आय गोकुल दंग ॥
गुरु गोकुलस्थ बिचारि, लिय मंत बल्लभ[5] धारि ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

बल्लभमत चहि मंत्र लहि, रजत[6]तुला किय दान ॥
हुव सेवक ब्रजनाथको, कोटापति चहुवान ॥ १९ ॥

(पादाकुलकम्)

कृष्णदास निज नाम कहायो, नंदगाम कोटा लिखवायो॥
सेरगढ़[7] सु थप्पिय बरसानों, इन नामन व्यवहार चलानो ॥२०॥
कोटकोट अंतर कोटापुर, किय ब्रजनाथ निवेदित आतुर ॥
दान रु द्विज भोजन बहु दिन्नौं, चिक्कनमाँहिं रहनौं पुनि लिन्नौं २१
दुर्यो कितव[8] डेनरके अंदर, बाहिर नांयो[9] पंद्रह१५बीसर ॥
रोग रोग कहि मृत्यु उडायो, कोटापुर सुनि सोक अघायो ।२२।
माधोंनी[12] मिलि चाहि जुद्ध चित, सावधान कोटा किय सज्जित॥
द्वारन अर्गर[13] लगाय धीर ध्रुव, बुर्ज बरन सिर मरन मंडि हुव २३
जान्यौं मृत भीमहिं सुनि ऐंहैं, बुंदिय कटक छिन्नि गढ लैंहैं ॥
सोहि भई सालम सुनि धायो, लुट्टन कोटा मुल्क लगायो ।२४।

१मारवाड़ का पति ॥ १४ ॥ २ सेना ॥ १५ ॥ ३ साला ४ बहिनोई॥१६॥१७॥५ वल्लभ संप्रदाय को ॥ १८ ॥ ६ चांदी की ॥ १९ ॥७सेरगढ का नाम बरसाना रक्खा ॥ २० ॥ ८ भेद ॥ २१ ॥ ९ छली१०नहीं आया११दिन ॥ २२ ॥ १२ माधोसिहोत हाड़ा १३ किंवाड़ ॥ २३ ॥ २४ ॥

दिल्लीमैं नृप साल्ह विहल्लिं२७, सालम पठयो मुकुन्द मति ल्हाि॥
इहि नव बूँदी राज यँवेल्यो, ॐकिन्यो एसपुन्कि विनु फेरयो फेर्यो॥२५॥
यव गढ़ै साल्ह छहनारि छ थंगर, मृत मूृत सुनि भीमहिं श्रानि नवरन
बुंदियमैं चढ़ि वेग कुकुर्दी, कपि सालम कोटा पर मूरर्दी ॥ २६॥
तिनु नृप आगम डोंक बढायो, मार लूट करि फैल मचायो॥
सु सुनि भीम गोकुल सन चल्ल्यो, गिनि यागमे मुच्छन कर घल्ल्यो
कोटापुर पैनो निम चेन्ता, हार आप सुभटन दिय हेला ॥
स्वुरछत यार्र तिपत हम ग्राये, पात सबहि करिहैं मनभाये ॥ २८ ॥
यह सुनि अजबसिंह माधानी, प्रेम रुबन वानी पहिचानी ॥
हुमि नव आपउ हार कीन्ह हूग, अवर सुखिछ भूपहिं लिय अंदर।२९।
दैटिग गर नव कुसल बधाई, इस सु भीम बढ रीति बिढाई ॥
पानहिं कटक यापालक सज्ज्यो, गढि गुमान साल्हमसिर गज्ज्यो।३०
पुर यादौन तनो अरु सालम, पहुँच्यो भीम जोरि दल आलम ॥
सालम दल दोलिखित थिंथर सह, सबन सुनाय भीम ग्रद खी पह।३१

मत्तगयन्द ॥

सालम दल दह साजि सुनाक निज मारयो ॥
यापन नाथ हठ खेत लरन ललकारयो ॥
हुन मोपनि बलवान तनो हम जिनिहैं ॥
कोटापति सकुहै ननों पैहैं चिनिहैं ॥ ३२ ॥

(दोहा)

भीम कहिय जित्ते बिनाँ, अप्पन जियत रहैं न ॥
अप्पन बिनु यह उग्रहै, लैहैं बुंदिय[1] अैंन ॥ ३४ ॥
यह कहि बाजिन बग्गलै, पर्यो भीम पबि[2] पात ॥
खरकोनन[3] मनु चुगत खिन, घल्ली सेनन घात॥ ३५ ॥

मरुभाषा डिंगलभाषेत्येके ॥
अस्मिन्सजातीयेष्वेवप्रसिद्धंगीतनामकं मरुदेशीयं छंदः ॥
गीतेष्वपिसुपङ्खीगीतः ॥

भूमी लागरै लुँभाणाँ[4] डाणाँ[5] संपाति रूपरा भड़ाँ,
लेताँ[6] ताणाँ बागरै भूपराँ[7] लग्गी लीह[8] ॥
अंधायो[9] खागरै बीसँ[10] मागरै ऊपरा आयो,
सालमेग नागरै धूँपरा[11] भीमसीह ॥ १ ॥
घटा बीज घाँटकी[12] उतोळे खागाँ वीर घाँचै,
रटा[13] त्रंबाटकी बागाँ घोळे नागाँ राड़ि ॥
दै[14] काँवो रामरै छटा बिहंगराटकी दोळे,
फँटा सेना [15]सिरोळे झाटकी फाड़ि फाड़ि ॥ २ ॥

१बुन्दी का स्थान लेवैगा॥३४॥२वज्र पड़ने के समान३मानों चुगते हुए तीतरों पर शिचाख (सिकरे) ने घात डाली॥३५॥मरुभाषा जो डिंगल भाषा कहलाती है उसमें हमारी जाति में ही प्रसिद्ध है ऐसा गीत नामक मारवाड़ी छन्द, जिन गीतों में भी यह सुपंखरा गीत है ॥ भूमि का ४ लोभ लाग कर ५ डाणा लगा हुआ (मस्त) संपाति रूप के वीरों से घोड़ों की बागें ६ खींचते ही ७भूमि पर ८ लकीरसी लग गई खड्ग मे ९ अतृप्त [भूखा] १० वी [पची] तिन के ईस (गरुड़) के मार्ग से सालमसिंह रूपी सर्प के ११ मस्तक पर भीमसिंह आया ॥ १ ॥ घाटा में बिजुली के १२ रूपवाले खड्ग को हाथ में तोल कर, वीरों को घेर (धकेल) कर १३ तासों के निरन्तर शब्द होने पर सर्पों से युद्ध करके रामसिंह के पुत्र ने १४ घेरा देकर, पत्तियों के राजा [गरुड] की शोभा से चारों ओर, सेना रूपी १५ फणों को१६उडाये, और उसके नाकों को फाड़ फाड़ कर पछाट डाली ॥२॥ डांणां लगेहुए (उस डाकी वीरों का विशेषण है)

डांगाँ ओक ओक *जाँगी जैतरा रुड़ाया डाकी,
तोक चंचाँ केवाणाँ छुडाया बीर ताळ ॥
†पाँणाँ झोक संभरी असंखाँ के उडाया प्राँणाँ,
वाणाँ सोक पंखाँ के उडाया बूंदीवाळ ॥ ३ ॥
काटी पूंछ झंडा ले ‡किसोर दूजे दाटी कोपि,
सेना फटा फाटी मैं कटार पंजाँ साजि ॥
वैनतेय भीमसी लपाटी तेग आगैं वचे,
भोगी जोगीरामरो त्रिपाटी गयो भाजि ॥ ४ ॥ ३६ ॥

प्रायोदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

§अहि सालम इम भज्जिगो, फोज फटा सु फटाय ॥
व्यौंधि महिन कृमि वेर की, अतिजव बुंदिय आय ॥३७॥
कोटेसहु इनँ पिछि लगि, लिन्नी बुंदिय घेरि ॥
सठ सालम इक दीह लरि, गो भाजि आयुध गेरि ॥ ३८ ॥
जाओ जुग्गियरामको, आयो नगर झलाय ॥
कोटापति इत लुट्ट करि, बुंदिय दिन्न जराय ॥ ३९ ॥
फग्गुन विसद चउत्थि४सक, रस हय सत्रह१७७६मानँ ॥
बहुरि भीम बुंदिय लई, इम फेरी निज आन ॥ ४० ॥

ने घर घर में विजय के * नगारे बजाए और तरवारों रूपी चंचुओं से उठा कर चक्रों की मूठों से वीरों की तालियां [हथेलियें] छुड़ाई, इसकारण हे बहु-भाण तुम्हारे † बाणों को धन्य है कि जिन से असंख्यों के प्राण उडाए और बाणों के सोक रूपी पांखों से बुन्दीवालों को उडाये ॥ ३ ॥ उस सेना के झं-डे लेने रूपी पूंछ को काटा और ‡ दूसरे किशोरसिंह ने क्रोध करके दबाई कटार रूपी पंजों का अग्र सज कर सेना रूपी फण को फाड़ा, इसप्रकार गरुड़ रूपी भीमसिंह की शीघ्र चलनेवाली तेग के आगे बच कर, जोगीराम का पुत्र रूपी सर्प शीघ्रता की दौड़ से भाग गया ॥ ४ ॥ ३६ ॥ § सर्प १ फण २ रोग सहित ३ वढ पैर का बदला ४ बहुत शीघ्र बुन्दी आया ॥ ३७ ॥ ५ शीघ्र ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ शुद्ध पक्ष की ७ समान आज्ञा ॥ ४० ॥

सबहि देस बुंदीसको, अंदर भीम अपनाय ॥
लूट माँहिं बहु द्रव्यलै, इम पुनि कोटा आय ॥ ४१ ॥

(पादाकुलकम्)

अवरहु भीम देस बहु छिन्नैं, चउदह सहँस१४००० गाम निज किन्नैं
अग्गैं लिखित *कूरमहिं अप्यो, सो सब लुप्पि लोभ हिय थप्यो ४२
हुलसि एह अक्खिय सुभटन हित, अब ब्रजनाथ करहि सब इच्छित ॥
रन जयसिंह †बुद्ध लरि मारहिं, ‡बसुमति आन §अमोघ बिथारहिं ४३
इक पुत्रहिं बुंदिपगढ अप्पहिं, थिर इक्कहिं कोटागढ थप्पहिं ॥
इक्क सुतहिं सोपुरगढ दैहैं, हम उज्जैन राज अब लैहैं ॥ ४४ ॥
तदनंतर सय्यद प्रति कग्गर, पठयो द्रुत लिखि भीम अप्पंकर ॥
इत दल सजव सज्जि हम आवत, उत तुम आवहु कटक अमावन ४५
पकरि बुद्ध जयसिंह बिपक्खन, लैहैं पहुमि मारि भट लक्खन ॥
यह लिखि संगर भीम उमाह्यो, चमु सजि सहँस बीस २०००० जय चाह्यो ॥ ४६ ॥

[दोहा]

इत सय्यदसौं सिक्ख लहि, अजितसिंह मरु आय ॥
जहँ सुभटन एकत्त जुरि, अक्खिय छल उपाय ॥ ४७ ॥

[षट्पात्]

मिसल अठ उमराव जबहि इक ठौर इक्क जुरि ॥
अजितसिंह प्रति अक्खि अनर्थ किन्नौं तुम अंकुरि ॥
कूरमपतिसौं तोरि अप्प सय्यद चाह्यो उर ॥

॥ ४१ ॥ * कछवाहा जयसिंह को दिल्ली में लिख दिया था कि बुन्दी के परगने छोड़ देवेंगे, उसको ॥ ४२ ॥ † बुधसिंह को ‡ पृथ्वी पर § फांसी नहीं फिरै ऐसी आज्ञा फैलावेंगे ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ जिस पीछे २ पत्र ३ अपने हाथ से ४ नहीं मावै ऐसा ॥ ४५ ५ शत्रुओं को ६ भूमि ७ युद्ध पर उत्साह युक्त हुआ ८ सेना ॥ ४६ ॥ ९ मारवाड़ में १० एकत्र ॥ ४७ ॥ ११ अनीति करी १२ बड़े होकर

अज्ज गई आमैर कल्हि जैहैं सु जोधपुर ॥
स्वामिकों मारि सप्पद सबल कानि न रक्खहिं अप्पनी ॥
तसमात[2] जोरि जयसिंहसौं धन्व[3] पहुमि रक्खहु धनी ॥४८॥

दोहा–कूरमसौं सगपन बिरचि, मरुधर बुल्लहु ताहि ॥
रुचिर सुता[4] अब रावरी, बिधिजुत देहु बिबाहि ॥ ४९ ॥
मरुपतिसौं यह मंत्र करि, पठयो सुभटन[5] पत्त[6] ॥
नृप कूरम आवहु निडर, यँहँ ब्याहन अनुरत्त[7] ॥ ५० ॥
कूरम सुनि पच्छी कहिय, धरा अलप तुम धाम[8] ॥
रक्खहु पुत्रिन जतन रचि, परहिं साहसौं काम ॥ ५१ ॥
यह सुनि इन पच्छी लिखिय, हम तुम बिच हरि[9] आहिं ॥
आवहु अप्पन इक्कहैं, जावहु ससुख बिबाहि ॥ ५२ ॥
सु सुनि कूंच जयसिंह किय, साजि दल सबल सिपाह ॥
बुंदी सोपुर नृप उभय२, चलिय संग हित चाह ॥ ५३ ॥

(पादाकुलकम्)

रस हित बिनय[10] परसपर रत्ते[11], तब नृप तीन३जोधपुर पत्ते ॥
रट्ठोरन आक्खिय कूरम सैन[12], लगनबेर अब चलहु बिबाहन[13]॥५४॥
मरुपति सौं तब सबन सँमक्खी[14], कूरमपति सुभटन यह अक्खी ॥
हँम[15] नृप परानि पधारहिं जोलौं, हमबिच रहहु धन्वपति[16] तोलौं ॥५५॥
अजितसिंह यह मन्नि रह्यो यँहँ, कूरमपति गो तब ब्याहन कँहँ ॥
रन[17] जिम सज्जि कवच धारन करि, बर[18] दुलहनि रट्ठोरि लई बरि५६

१ उसके पति बादशाह को मार कर बलवान् हुआ है २ इसकारण से ३ मारवाड़ की भूमि ॥ ४८ ॥ ४ सुन्दर पुत्री ॥ ४९ ॥ ५ उमरावों ने ६ पत्र भेजा ७ प्रीति युक्त ॥ ५० ॥ ८ तुम्हारे घर में ॥ ५१ ॥ ९ विष्णु भगवान् हैं ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १० नम्रता ११ रक्त प्रीतियुक्त हुए १२ जयसिंह से कहा १३ विवाह करने को ॥ ५४ ॥ १४ समक्षी सामने, रोबरू १५ महाराजा [जयसिंह] १६ हे मारवाड़ का पति [अजितसिंह] तब तक हमारे बीच में रहो "भीतर जयसिंह को चूक करके न मार सकै इसकारण से" ॥ ५५ ॥ १७ जैसे युद्ध में सज्जित होकर जाता है तैसे १८ श्रेष्ठ दुलहनि राठोड़ी को बरी ॥ ५६ ॥

(दोहा)

इक्क नवाब कलीजखाँ, इहिँ अंतर लहि *काल ॥
दक्खिन सन आयो दुसह, दिल्लीपर रचि जाल ॥ ५७ ॥

(षट्पात्)

हुसनअली सय्यद वजीर सुनि एह बंटि †जर ॥
नाम दलावरखान मुगल ‡पिल्ल्यो तिहिँ उप्पर ॥
नरउर पति गजसिंह संग सह सेन दयो सजि ॥
कटोपति प्रति पत्र त्वरित लिखवाय [1]गव्व तजि ॥
मारहु कलीजखानहिँ [2]मरद [3]खानदलावर संग रहि ॥
जयसिंह जेर पिच्छैं करहिँ यह करि जेर कलीज [4]अहि॥५८॥

(दोहा)

सु सुनि भीम सिर धुन्निकैं, दिय [5]दल अधिक छुराय ॥
जान्यौं तप[6] जयसिंहके अंत अप्पनौं आय ॥ ५९ ॥
बुड्ढे बीरन संग लै, तब यह मरन बिचारि ॥
सम्मुह खानकलीज सौं, रचन चल्यो अब रारि ॥ ६० ॥
खानदलावर भीम अरु, नरउरपति कछवाह ॥
दरकुंचन चलि भिंटये, सत्त्रुन सबल सिपाह ॥ ६१ ॥
[7]मेकलजाके पार इक्क, [8]तटिनी कोढी नाम ॥
तीनन३ खानकलीज सौं, सजिय तत्थ संग्राम ॥ ६२ ॥

षट्पात् ॥

सल्ली जुरि दुव[9]सेन हुलसि जुज्झन बढि हल्ली ॥
[10]कादंबिनि चल्ली [11]किँ बाढ चमकत [12]घनबल्ली ॥

---

* समय पाकर ॥ ५७ ॥ † धन बांट कर ‡ भेजा १ घमंड को छोड कर २ हे वीर ३ दलावरखां जैसा धरह कर ४ कलीजखां रूपी सर्प को ॥ ५८ ॥ ५ जयसिंह के मारने को अधिक सेना रक्खी थी जिसको छोड कर ६ जयसिंह के तप से ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ७ नर्मदा नदी के पास ८ नदी ॥ ६२ ॥ ९ घोड़ों के सवार १० मेघमाला ११ मानों १२ विद्युत (बिजुली)

दिट्ठि जुगत हय दपटि मिले रनरसिक महाभट ॥
तब वज्जिग तरवारि भीरु भज्जिग बट *उब्बट ॥
गिद्धनि सिचान †संकुलि गगन रचि ‡मयूख अवरोध किय॥
खुरतार मार §जब धार खुदि दिसदिस ¶पुहवि दरारदिय ६३
लग्गे जिम जिम लोहँ[1] छोहँ[2] तिम तिम उर छायो ॥
धायो जिम जिम धीर बीरँ[3] तिम तिम प्रकटायो ॥
जिम खादित जैपालँ[4] मथत अंत्रन द्रुत दुँज्जर[5] ॥
इम कलीज दलँ[6] अतुल मथ्यो सायुध सँय[7] संभर ॥
हैदराबाद भट बहुल हनि चिर[8] अच्छरि रस चक्खयो ॥
भूपाल भीम काटस सिर रुद्रमाल नैन[9] रक्खयो ॥ ६४ ॥
हत्थी भज्जत हडु चढ्यो हयबर रँय[10] चंचल ॥
हय कट्टत पयचाँर[11] बन्यों खयकाँर[12] महाबल ॥
तोमँर[13] तुट्टत तंग तेग तुट्टत करि कत्तियँ[14] ॥
कत्तिय कट्टत काँरद[15] घोर छत्तिय अरि घत्तिय ॥
देख्यो कलीज जीवन दुलभ मिलत भीम भद्दव सुदिरँ[16] ॥
जिम जिम स्वँसीस[17] रज रज रचिय तिम तिम धुन्निय संभु सिर[18] ६५

दोहा ॥

मुनि हय मत्त रु इक्क १७७१ सक, जेठ रु पुण्णिम दीह ॥

---

*बिना मार्ग †आकाश में भर कर ‡सूर्य की किरणों को रोक दी §शीघ्र दौड़ने के वेग से ¶भूमि ने ॥ ६३ ॥ १ शस्त्र २ क्रोध वा उत्साह ३ वीर रस ४ जिसप्रकार दुःख से जरनेवाला खाया हुआ ५ अजैपाल्या [जमालगोटा] आंतों को शीघ्र मथ डालता है तिसीप्रकार महाराव भीमसिंह ने ६ कलीजखां की बड़ी सेना को मथी ७ आयुध सहित हाथ से चहुवाण ने ८ बहुत ९ राजा भीमसिंह ने अपने मस्तक को शिव की मुंडमाला के अर्थ नहीं रक्खा, अर्थात् टुकड़े टुकड़े होगया १० वेग में चपल घोड़े पर चढ़ा ११ पैदल होकर १२ नाश करनेवाला [यमराज] १३ भाला १४ खड्ग विशेष १५ कटारी अथवा मतांतर से छुरी १६ भाद्रवा के मेघ के समान १७ अपने मस्तक को १८ मुंडमाला के योग्य नहीं रहने के कारण शिव ने मस्तक धुना ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

परयो दलावरखान रन, सहित *भीम गजसिंह ॥ ६६ ॥
नागउरपति जाजव भज्यो, पर्‌यो इहाँ तजि प्रान ॥
मारि हजारन भीम जिम, परयो भीम चहुवान ॥ ६७ ॥

(षट्पात्)

सुनि कोटापुर भयउ †भीत मरतहि निज भूपति ॥
धाइभ्रात भगवान हुतो बुंदी सु जानि ‡हति ॥
बुंदिय बिच बुधसिंह आन फिरवाय सोधि उर ॥
अप्पन सब थानाँ उठाय आयउ कोटापुर ॥
सुनि खबरि एह मतिमंद सठ सालम आय स्फलाय सन ॥
बनि सचिव मुख्य बुंदिय बहुरि राजकाज लग्गो करन ।६८।

[दोहा]

तनय तीन ३ नृप भीमकैं, जेठो अर्ज्जुन १ नाम ॥
अमरगान भानेज यह, तब भूपति हुव ताम[2] ॥ ६९ ॥
स्यामसिंह २ मध्यम सुवन[3], लघु सुत दुरजन साल३ ॥
राज लोभ निसदीह रखि, कहत एहू काल ॥ ७० ॥

[षट्पदी]

हुसनअली इत सज्जि छोह कूरम सिर छायो ॥
साह मुहम्मदकों चढाय आमेर चलायो ॥
सय्यद्द अति बरजोर साह दुम्मॅन इहिँ कारन ॥
चिंतत रहत उपाय मन्नि निहचै तिहिँ मारन ॥
तब नाम मुहम्मदखान इक तूरानी तक्यो प्रबल ॥
रचि मंत्र साह तासौं रहँसि माग्यो सय्यद छेदि छल ।७१।
दोहा—तब पच्छे दरकुंच करि, हुसनअलीकों मारि ॥

---

* भीमसेन के समान ॥ ६७ ॥ † भय ‡ भीमसिंह का नाश जानकर ॥ ६८ ॥
१ महाराणा अमरसिंह का २ तहां [कोटा में] ॥ ३६ ॥ ३ पुत्र॥७०॥ ४ उद्दाम
५ एकान्त में सलाह करके ॥ ७१ ॥

बनि स्वतंत्र इम साहहू, पुर दिल्लिय*पगधारि ॥ ७२ ॥
बरस तीन३ नृपकैं बच्यो, भावतसिंह कुमार ॥
हुवरशानिन उर दोय२सुत, बहुरि भये इहिं बार ॥ ७३ ॥
नाम भवानीसिंह सुत, कछवाही गृह१जात ॥
पदमसिंह दूजो२ भयो, बुंडाउति जठरांत ॥ ७४ ॥
कुमर बधाई जोधपुर, पत्ता संभर पास[३] ॥
जयसिंहहु तत्थहि सुन्यौं, सय्यद सत्रु बिनास ॥ ७५ ॥
सुनत कुंच जयसिंह किय, बिनस्यो[४] सय्यद बैर ॥
सोपुर बुंदिय नृपन सह, आयो पुर आमैर ॥ ७६ ॥
संभर[५] किय बुंढाहरहि, बसवा निवसथ[६] बास ॥
अनाहूत जयसिंह गो, साह मुहम्मद पास ॥ ७७ ॥
अठ मत्त हय इक्क १५७८ लक्ख, चित्त मिहर[८] करि चाह ॥
अकबरपुर सूबा दियउ, कुम्मपतिकों साह ॥ ७८ ॥

पज्झटिका ॥

पुनि कहिय साह कछवाह राय, क्यों नांहिं अत्र[९] बुंदीस आय ॥
जयसिंह कहिय सालम[१०] नरेस[११], आबाद रखत पुनि नहिं असेस ७९
कोटेस भीम करि जोर दौंय[१२], बारां मऊ सु लिन्नैं छुराय ॥
बिनु खरच नांहिं निवहत प्रवास, जग कोस सबहि हुव नैठु[१३] जास ॥
सतपंच ५०० सुभट सांदी[१४] सुमंत[१५], प्रभ संग दिय सु हाजरि रहंत ॥
सुनि साह दयो अमरख[१६] निवारि, ऐसी[१७] अनेक दिय कुम्म टारि ८१
चूडामनि सुत मुहकम्म जट्ट, इन दिनन बहुरि लग्गो कुबट्ट[१८] ॥

* पधारा ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ कछवाही के घर में १ जन्मा २ जठर (उदर) से ॥ ७४ ॥ ३ बुधसिंह के पास ॥ ७५ ४ नाश हुआ (मिटा) ॥ ७६ ॥ ५ बुधसिंह ने ६ बसवा नामक ग्राम में ७ बिना बुलाया ॥ ७७ ॥ ८ कृपा ॥ ७८ ॥ ९ यहां १० सालमसिंह ११ राजा (बुधसिंह) का ॥ ७९ ॥ १२ जोर की रीति से [बल पूर्वक] १३ नष्ट ॥ ८० ॥ १४ सवार १५ श्रेष्ठ बुद्धिवाले १६ क्रोध १७ जयसिंह ने ऐसी अनेक आपत्तियां टाल दीं ॥ ८१ ॥ १८ कुमार्ग

करि लूट मुलक सिर घल्लि घत्त[1], मरुईस सरन मरुदेस पत्त[2] ॥ ८२ ॥
जयसिंह बदन जट्टहिं सहेत, बहुभुत्र दिवाय थूहानि समेत ॥
व्है साह हिंतु मुहुकम हराम, यातैं पलाय गय धन्व[3] धाम । ८३ ।
तब साह कहाई है नरेस, आतुर[4] गहि भेजहु जट्ट एस ॥
मन्न्यो न हुकम यह मरु[5] महीस, रचि साह मुहुम्मद सुनत रीस ८४
इत लहि प्रमाद आलस अनंत, बुंदीस गाम बसवा बसंत ॥
तहँ किय अनीति लोकन अपार, दब्बिय अनेक परकीय[6] दार ८५
ताड़न[7] रु लूट तर्ज्जन[8] विधाय[9], पत्तन प्रजा सु[10] किय दुखित प्राय[11] ॥
पुरजन सब लहि तब दुख अपार, कूरम प्रति दिल्ली किय पुकार ८६
सुनि कहिय भूप कूरम हसंत, बसवा सु गाम अबहू[12] बसंत ॥
कहि पुनि वे जामिप अस्मदीय[13], सहनों समस्त दुक्खहु गरीय[14] ८७
तुम माँहिं अबहु जो परहिं त्रास, तो कहहु जाय बुंदीस पास ॥
मम ढिग जो ऐहो बहुरि भज्जि, दैहों निकासि तो ताड़ि[15] तज्जि ८८
यह कहि पुरवासिन सिक्ख दिन्न, कूरम इम जामिप[16] हितहि किन्न ॥
मन्न्यो न हुकम इत मरु[17] नरेस, दल[18] सजिय साह तिहिं सिर बिसेस ॥ ८९ ॥
मरु पिल्लि[19] बहादुरखान मीर, पिल्ल्यो पुनि कूरमपति प्रवीर ॥
इम दुव २ चलाय मरु दिस अमान[20], मरुप[21] हु सुनि सम्मुह किय प्रयान ९०
मगरूर पूर बनि मरु महीप, सजि आय मनोहरपुर समीप ॥
इततैं ससेन[22] मारन उपाय, जयसिंह बहादुरखान आय ॥ ९१ ॥
मरु ईस अतुल्ल[23] लखि साह सैन, भजिगो तजि डेरन अप्प ऐन[24] ॥

१ घात २ मारवाड़ गया ॥८२॥ ३ मारवाड़ में भाग गया ॥८३॥ ४ शीघ्र ५ मारवाड़ के पति ने ॥८४॥ ६ पराई स्त्रियों को ७ पीटना ८ धमकाना ९ करके १० उस नगर की प्रजा को ११ बहुत दुखी की ॥ ८५ ॥ १२ काकुभाषा से कहा कि क्या अब भी वह ग्राम बसता है १३ हमारे बहिनोई हैं १४ भारी दुःख होवें सो भी सहना चाहिये ॥ ८७ ॥ १५ ताड़ना और तर्जना करके ॥ ८८ ॥ १६ बहिन के पति का १७ मारवाड़ के राजा ने १८ सेना ॥ ८९ ॥ १९ मारवाड़ में भेजा २० अमाप २१ मारवाड़ के पति ने भी ॥ ९० ॥ २२ सेना सहित ॥ ९१ ॥ २३ अनंत (बहुत) २४ अपने घर (जोधपुर)

सक अंक सप्त हय इक्क१७७९बीच, रन छोरि लगाई गालिनीच९२
सुनि साह कटक[1] अति जव[2] चलाय, रट्ठोर बिभव लिय लुट्टिआय
संभर[3] बिनु कहुँ लरतहु सुन्यौं न, भजि भजि गो संगर छोरि भौंन९३
अग्गैं जब आलम गो चलाय, अल्हनपुर लग्गो पयन आय ॥
पुनि अमर[4] रान कर लिखित[5] दिन्न, सो मेटि साह जामात[6] किन्न९४
अरु बहुरि सद्यदन मिलि अधर्म,जामात साह हनि[7] किय कुकर्म
पुनि तब तृतीय३रन समय पाय, पृतना[8] तजि कातर गो पलाय९५
जयसिंह बहादुर लगिय पिट्ठि, इन रचिय मंत्र गृह्य जाय निट्ठि ॥
रघुनाथ सचिव रट्ठोर सर्व, मिलि कहिय राज गय अप्प[9] गर्व ९६
कर बंधि परहु अब साह पाय, जो[10] यह नं देहु कुमरहिं पठाय ॥
भट सचिव मंत इम तब बिचारि, जयसिंह नरेसहिं बीच डारि९७
सुन अभयसिंह पट्टप समत्थ[11], पठयो पुर दिल्लिय कुम्म[12] सत्थ ॥
रघुनाथ सचिव दिय संग तामें[13], लहि साह जाय इन किय सलाम९८
गृह जाहु कुमर यह कहिय साह, आवत हम मंडहु रन उछाह ॥
तब कुम्म कहिय यह गिनत आन,याको न दोस जनकहि अमान[14]९९
पुनि कहिय साहजो यह प्रपन्न[15], तो जनक[16] हनहु तब हम प्रसन्न॥
यह सुनि उवाचैं[17] कछवाह ईस, व्हैहैं जु हुकम धरिहैं सु सीस १००
प्रल्हाद ऐंह[18] तुम हरि प्रमान, मरुपति हिरण्यकसिपुव समान ॥
यह सीस साह सेवन वहंत, चित जनक इंहि[19] न यातैं चहंत १०१

॥ ९२ ॥ १ बादशाह की सेना २ बडे बेग से ३ सांभर नगर के बिना ॥ ९३ ॥ ४ राणा अमरसिंह के हाथ में ५ लिखावट लिखकर दी थी उसे मिटाकर ६ जमाई ॥ ९४ ॥ ७ जमाई बादशाह को मारकर ८ सेना छोडकर भगगया ॥ ९५ ॥ ९ आपके घमंड से ॥ ९६ ॥ १०जो यह नहीं करो तो ॥ ९७ ॥ ११समर्थ १२कछवाहा जयसिंह के साथ भेजा १३ तहां ॥ ९८ ॥ १४ नहीं माननेवाला इसका पिता ही है ॥ ९९ ॥ १५शरणागत है तो १६ पिता (अजितसिंह) को मारडालै तो १७ बोला ॥ १०० ॥ १८ यह [अभयसिंह] १९ इसकारण से पिता इसको नहीं चाहता ॥ १०१ ॥

*प्रल्हादवत्त कूरम सुनाय, इम अभयसिंह हित रिस उडाय ॥
कहि साह हमहिं जो गिनत ईस, सुत तो अब आनहु जनकसीस१०२
रघुनाथ सचिव किय अरज तत्थ, सब करहिं पाय [२]आयस समत्थ॥
डेरन बहोरि लहि सिक्ख आय, [३]दल अभयसिंह पठयो लिखाय१०३
निज [४]अनुज भ्रात [५]बखतेस नाम, तिहिं प्रति [६]उदंत सब लिखिय [७]ताम
यह मिच्छ जनक सिर कुपित आज, लैहैं उतारि ध्रुव धन्वराज ॥
लहि राज भोग जो चहत लाल, तो भ्रात हनहु जनकहिं [१०]उँताल
देहौं तब तोकहँ अद्ध देस, नागोरपुर पै करिहौं नरेसैं [१२] ॥ १०५ ॥
बखतेस [१३]मुंढ यह पत्र पाय, जनक सु निज मारयो [१४]सुप्त जाय ॥
हाकार जोधपुर नगर होय, रनवास अचानक उठिय रोय।१०६।
सुनि मिसल अट्ठ ८ उमराव एह, गहि तेग कुमर बिंट्यो [१५]स्वगेह
बखतेस [१६]भीत तब [१७]नीति बिधाय, दिय अभयसिंह [१८]कग्गर दिखाय॥
गिनि तब समस्त यह मंत्रगूढ, अब किय नरेस चितिको [१९]अरूढ
नाजरन सहित [२०]सुद्धांत नारि, चिति[२१]आगि भस्म हुव असिह च्यारि ८४
सक गगन अट्ठ हय इक्क१७८०साल, यह खबरि भई दिल्लिय उताल

---

*प्रल्हाद की वार्ता १ पिता का मस्तक ॥१०२॥ २समर्थ आज्ञा पाकर ३पत्र ४ अपने छोटे भाई ५ बखतसिंह के नाम ॥१०३॥ ६ वृत्तान्त ७तहां ८ पिता के ऊपर ९ निश्चय ही मारवाड़ का राज्य उतार लेवैगा ॥ १०४ ॥ १० शीघ्र ११नागोरपुर का पति करके १२ राजा करदूंगा ॥ १०५ ॥ १३ मूढ १४ सोते हुए पिता को ॥ १०६ ॥ १५ अपने घर में घेरलिया १६ भय से १७ नम्रता करके १८ पत्र ॥ १०७ ॥ १९ चिता पर चढाया २० जनाने की स्त्रियां २१ * चिता की अग्नि में चोरासी जन भस्म हुए ॥ १०८ ॥

---

* इसके लिये राजपूताने में ऐसा प्रसिद्ध है कि नाजर आदि जिन जिन का बखतसिंह को अपने से विरुद्ध होने का खटका था उन ८४ जनों को चिता की अग्नि में बलात्कार डाल कर भस्म कर दिये इस बखतसिंह की बुराई का यह छप्पय छंद प्रसिद्ध है ॥

छप्पय ॥ प्रथम तात मारियो, मात जीवती जळाई ॥ असीच्यार आदमी, हत्या चोरी पण आई ॥
कर गाढो इकळास, वेग जैसिंह बुलायो ॥ मिट मुरधर मरजाद, भरम गांठ को गुमायो ॥
कवियणां हूंत केवाकरे, धराउदक लेवण धरी ॥ बखतसी जनम पायां पछे, कसाइयांत आछी करी ।१।

सुनि रीझि मरातब बखसि साह, किय अभयसिंह मरुदेस नाह[1]॥१०९॥
अरु कहिय राज्य जमत्राय जाय, पुनि आवहु सेवन मोद पाय ॥
मरुपति[2] उवाच तब नाय मत्थ, नागोर देत मैं अनुजं[3] अत्थ ।११०।
सो सुभट मोहि नहिं दैन देन, करि लिखित [4]अप्प पठवहु निकेत[5]
राजाधिराज पद वाहि देहु, अप्पहु निदेस करि महर एहु ।१११।
इम अभयसिंह कहि धन्व आय, पुनि दियउ साह लिखित सु पठाय
राजाधिराज उपपद समेत, नागोर देहु बखतेस हेत ॥ ११२ ॥
यह सुनि रट्ठोरन तजिय टेक, कट्टिय दिन मरु[6]पति मरु कितेक
हनि अजितसिंह पितु बुद्धि हीन, इम बखतसिंह नागोर लीन ॥
पट्टप कुमार गजसिंह जाम[7], हुव अग्ग बीर अमरेस नाम ॥
नृप इंद्रसिंह नाती[8] जु तास, सो करत पट्ट नागोर बास ॥ ११४॥
नृप अभयसिंह ताकँहँ निकारि, नागोर दई अनुजहिं बिचारि ॥
इत कुंरम्म[9] साह सेवन बिधाय[10], लहि सिक्ख पहहु आमेर आय ॥
आमेर हुतो बुंदी नरेस, पुनि कियउ भूप कूरम प्रवेस ॥
मिलि तबहि साल जामिप समोद, बिरचिय दुहून२कति दिन बिनोद

दोहा ॥

सक ससि बसु सत्तह१७८१समय, कहि बुद्धहिं कछवाह ॥
बिरचहु राज्य प्रबंध तुम, वा हम रचहिं सुलाह ॥ ११७ ॥
बिनु प्रबंध आलस बहत, रहत न सुरपुर[11] राज ॥
कहत होत बुंदिय [12]कुनय, [13]अह प्रति महत अकाज ।११८।
बुंदीपति आक्खिय तबहि, अच्छी करहु बिचारि ॥
पठवहु कोऊ नीति पटु, सब जो करहि सम्हारि ॥ ११९ ॥

---

१ मारवाड़ का पति ॥१०९॥ २ अभयसिंह ने कहा ३ छोटे भाई बखतसिंह को ॥ ११० ॥ ४ आप ५ हमारे घर [जोधपुर]॥ १११ ॥ ११२ ॥ ६ मारवाड़ में ॥ ११३ ॥ ७ गजसिंह का पुत्र ८ उसका पोता ॥ ११४ ॥ ९ जयसिंह १० करके ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११ स्वर्ग का १२ अनीति १३ दिन प्रति ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

नाथाउत नगराज तब, नृप[1] मातुल कुल[2] जानि ॥
पठयो वह कूरम सु पहुँ[3], बुंदी विभव बखानि ॥ १२० ॥
आय लंघि रक्ख्यो नृपति, द्विरगुन खरच निज सत्थ ॥
सब मेट्यो नगराज सो, अधिप खिज्यो इम अत्थ ॥१२१॥
कछवाही सेवन करत, श्रीहरि मूर्त्ति सुमंत[3] ॥
कउलं[4] भूप बरजत कुढत[5], तदपि न टेक तजंत ॥ १२२ ॥
पति पतनीकैं पाहि पर, बनैं न हितकी बत्त ॥
इह्न न लोपैं तिय हुकम, तदपि कउल मत रत्त ॥ १२३ ॥
अग्गैं नव हय सत्त इक१७७९, कछवाही यह किद्ध ॥
लै सालमसौं सचिवपन, निज अनुचरकौं दिद्ध ॥ १२४ ॥
राम नाम निज दास इक, सो करि सचिव सु भाय ॥
इम रानी पति हुकम बिनु, रही राज्य अपनाय ॥ १२५ ॥
अब खरच कहत लग्यो, नाथाउत बिख रूप ॥
रानी प्रति तब प्रीति रचि, भाखी बुंदिय भूप ॥ १२६ ॥
निज अनुचर प्रति लिखहु तुम, रनं[6] करि रक्खहु गेह ॥
नाथाउत नगराजकौं, द्रंग[7] न प्रविसन देहु ॥ १२७ ॥
रानीहू समुझी तबहि, रुक्कहिं मोर निदेस ॥
सो करिहैं[8] नगराज जो, कहिहैं कुम्म नरेस ॥ १२८ ॥
यातैं अनुचर राम प्रति, दिय लिखि पत्र पठाय ॥
नन सौंपहु नगराजकौं, अप्पन गृह ठेपय[9] आँय[10] ॥ १२९ ॥
तब बुंदिय नगराज तिन, दिन्नौं प्रविसन नाँहिं ॥
महुरछाप दैंहिं न कह्यो, अधिप निदेस न आँहिं[11] ॥१३०॥

---

१ बुधसिंह के मामा के २ कुल में श्रेष्ट राजा ने १२० ॥ १२१ ॥ ३ श्रेष्ठ बुद्धि ४ वाममार्गी राजा [बुधसिंह] ५ जलता [क्षीजता] था तो भी ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ स॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ ६ युद्ध करके ७ पुर में मत घुसने देना ॥ १२७ ॥ ८ जयसिंह कहैगा सो करैगा ॥ १२८ ॥ ९ खरच १० आमद ॥ १२९ ॥ राजा की आज्ञा नहीं ११ है ॥ १३० ॥

तिनहिँ *ठिल्लि नगराज तब, प्रविस्यो बुंदिय आय ॥
राजकाज लग्गो करन, †नूतन छाप धराय ॥ १३१ ॥
आय खरच सब लिखिलियउ, ‡खंधावार सम्हारि
स्वामि समुझि बुधसिंहकों, बिगरत लिन्न सुधारि ॥१३२॥
द्विगुन खरच सेहत कियउ, मातुल[1] पर नृप रोस ॥
अच्छीमैं उलटी समुझि, किय कूरम सिर सोस ॥ १३३ ॥
इत द्रुत जामिय राज्यको, करि प्रबंध कछवाह ॥
दरकुंचन दिल्लिय गयो, सविनयँ भिंट्योसाह ॥ १३४ ॥
तदनंतर मरुईसहू, जय नयँ राज्य जमाय ॥
दिल्लिय भिंट्यो मुगल हुत, साहमुहम्मद आय ॥ १३५ ॥
कूरम प्रति मरुपति कहिय, मम भट अति मगरूर ॥
जमन देत नहि राज्य जुरि, करहु अप्प मचकूर ॥ १३६ ॥
पठयो कूरम जोधपुर, तब निज कटक उताल ॥
रट्ठोरन समुझाय रहि, कट्यो तँहँ बहुकाल ॥ १३७ ॥
हुते भूप जयसिंहकैं, सुतौ[11] दोय२सुत दोय२ ॥
सुनहु रामनृप[12] नाम तिन्ह, सावधान श्रुति होय ॥ १३८ ॥
जेठो सुत सिवसिंह१जो, मारयो जनक प्रमत्त[13] ॥
अनुज ईश्वरीसिंह२तस, तात कथितैं[14] कर तत्त ॥ १३९ ॥
सुता बिचित्रकुमारि१इक१, दूजी२कृष्णा कुमारि ॥
सु पहु[15] रान संग्रामकी, जामेयी[16] निरधारि ॥ १४० ॥

*ठेल (हटा) कर † नवीन ॥ १३१ ॥ ‡ स्कंधावार [राजधानी] को ॥ १३२॥ १ मामा पर ॥ १३३ ॥ २ शीघ्र ३ बहिनोई के राज्य की ४ नम्रता सहित ५ बादशाह से मिला ॥ १३४ ॥ ६ जिसपीछे ७ नीति से जीतकर ॥ १३५ ॥ ८ उमराव ९ विचार ॥ १३६ ॥ १० सेना ॥ १३७ ॥ ११ पुत्रियां १२ हे राजा रामसिंह कानों से सावधान होकर सुनो ॥ १३= ॥ १३ उन्मत्त होने के कारण पिता (जयसिंह) ने मारडाला १४ पिता जयसिंह का कहना करनेवाला ॥ १३९ ॥ १५ सो प्रभु राणा संग्रामसिंह की १६ भानजी ॥ १४० ॥

भयो बिचित्रकुमारिको, बय*उपयम अनुसार ॥
जानि जनक जयसिंह जब, रचिय व्याह व्यवहार ॥१४१॥
अभयसिंह मरुईससौं, करि सम्पन्न कछवाह ॥
सामग्री किय उचित सब, नय[1]पट्टु जैपुर[2] माँह ॥ १४२ ॥
सिक्ख तबहि लहि साहसौं, दुवन्नृप मथुरा आय ॥
अंतहपुर आमेरतैं, लिन्नौं सकल बुलाय[3] ॥ १४३ ॥
सक ससि बसु सत्रह१७८१ [4]असित, अट्ठमि८[5]भद्द बिचारि ॥
तनया व्याही मरुपतिहिं, कुम्भ बिचित्रकुमारि ॥ १४४ ॥
माता नृप संग्रामकी, रानाँ अमर कलत्र[6] ॥
चाहुवान पुरबेदला, पतिकी तनया तत्र ॥ १४५ ॥
सस्सू वह जयसिंहकी, गंगा न्हावन आय ॥
सुरत मग्ग मथुरा मिली, लीनी कुम्भ बधाइ ॥ १४६ ॥
चाहुवानि पिक्ख्यो रुचिर, बिट्टी तनयाँ[7] व्याह ॥
बरनि[8] बिचित्रकुमारि नव, नव दुल्लह मरुनाह ॥ १४७ ॥

[षट्पात्]

सस्सूकी जयसिंह कानि किंकर जिम किन्नी ॥
इक दिन गोकुल जात खंध सिविका[10] तस लिन्नी ॥
इक्क बंस गहि अप्प[11] मैरूप कर इक्क गहायो ॥
मातासौं गिनि मैंहत[12] बिहितैं[13] सतकार बढायो ॥
अप्पनौं गिनहु मोकौं अनुगँ[14] यँहँ तीरथ हरि अवंतरिय[15] ॥

* बिवाह के ॥१४१॥ १ नीतिचतुर २ जयपुर का पति "अब थोड़े ही समय में जयपुर बसावेगा इससे जयपुर का पति कहा है" ॥१४२॥ ३ बुलाना ॥१४३॥ ४ कृष्णपक्ष ५ भादवा की ॥१४४॥ ६ उदयपुर के राणा अमरसिंह की स्त्री ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ ७ बेटी की पुत्री [दौहित्री] का ८ बींदनी (दुलहिन) नवीन ॥ १४७ ॥ ९ अग्रज १० पालकी ११ एक बांस तो आप [जयसिंह] ने लिया और दूसरा बांस जोधपुर के राजा [अभयसिंह] को पकड़ाया १२ बड़ी १३ उचित १४ सेवक १५ विष्णु भगवान् ने अवतार लिया सो तुम यहां

तुम देहु बैठि हाटक्क तुला करन जोरि इम अरज किय ॥१४८॥

दोहा ॥

यह सुनि महिषी अमरकी, बोली नयमय बैन ॥
दुहिताके वँसुतैं तुला, हमको उचित यहै न ॥ १४९ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

श्रुत्वैवम्मुदिताऽमरस्य महिषी प्रोवाच जामातरं,
वस्वस्माकमकब्बरादनुचितञ्जातन्तथाप्यायतम् ॥
भावत्कम्भुवनम्भवेद्यदि सुभूभृद्भूरि भर्म्माकरं,
पौरटयो बहुशस्तुलास्तदिह कार्या जामिजामेययोः ॥१५०॥

स्रग्विणी ॥

एवमाकर्ण्य कूर्म्मेश्वरः साहसी स्वस्वसारन्तदोवाच कार्या तुला ॥
बुन्दीभृज्जाययाऽपीति नोरीकृतन्तत्कृता भागिनेयस्य राज्ञा हठात् ॥

प्रायोदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नाम भवानीसिंह निज, हो जामेयहु तत्थ ॥
ताकी तब हाटक्क तुला, किय कूरम हठ सत्थ ॥ १५२ ॥
रैंन मात जामातै प्रति, पुनि अक्खिय चित प्रेयँ ॥

१सोने की तुला दो २दोनों हाथ जोड़ कर ॥१४८॥ ३पटरानी ४राजा अमरसिंह की ५नीतिमय ६बेटी के ७धन से ॥१४९॥ प्रसन्नता से ऐसा सुन कर अमरसिंह की पटराणी जमाई से बोली कि हमारा धन तो पादशाह अकबर से युद्ध होने में अनुचित गया अर्थात् ऐसे पुण्य में नहीं लग सका और उसी प्रकार उस [अकबर] के आधीन गया. हे उत्तम राजा जो आप की भूमि बहुत सोने की खान वाली होवे तो आपके बहिन और भानजी की सोने की बहुत तुला करो ॥१५०॥ ऐसा सुन कर उस साहसवाले कछवाहों के पति ने उस समय अपनी बहिनको तुलादान करनेको कहा पर बुन्दीके राजाकी स्त्रीने भी इसी कार नहीं किया तब वह तुला राजाके हठसे भानजेकी कीगई॥१५१॥ ८भानजा ९स्वर्ण की तुला॥१५२॥१०राजा की माता ने ११जमाई जयसिंह से १२प्यार से

पुल *कालिंदी सरित पर, बंधौं सुगम †बिधेय ॥ १५३ ॥
इन तब लिखि दिल्लीससौं, लिन्नौं हुकम मंगाय ॥
सट्ठि सहँस६०००० ‡मुद्रा खरचि, §इन पुल दिय बंधाय १५४
कुमर रान संग्रामकैं, जगतसिंह ¶अभिधान ॥
ताहूकै तिहिं दिन तनय, भो प्रताप कुलभान ॥ १५५ ॥
सुत सुत सुतकी मधुपुरहि, सुनी खबरि चहुवानि ॥
दिय हाटक लक्खन द्विजन, मुदित वधाई मानि ॥ १५६ ॥
कूरमपति पठयो तदनु, अंतहपुर आमेर ॥
इत पत्ती चहुवानिहू, निज उदयादिकनैर ॥ १५७ ॥
अभयसिंह जयसिंह ए, दुव२पुनि दिल्लिय आय ॥
हाजरि साह हजूर हुव, लाह बिनय हित लाय ॥ १५८ ॥
सक दृग बसु सत्रह१७८२समय, सेयं रिझ्झायो साह ॥
सोहि करत दिल्लीस सब, कहत जोहि कछवाह ॥ १५९ ॥
सूबा दुव २ जयसिंहकैं, आगरा रु उज्जैन ॥
अब सूबा अजमेरको, बहुरि दयो हित बैन ॥ १६० ॥
मतिमैं नयमैं मंत्र मैं, सबमैं कूरम सेर ॥
बिनु बजीर दव्वे बहत, जवन हिंदु सब जेर ॥ १६१ ॥

[षट्पात्]

अभयसिंह मरुईस सुन्यो निज देस दंवर दुख ॥
सिक्ख साहसौं मंगि रचिय दरकुंच गेह रुख ॥

---

* जमुना नदी पर † सुगमता से बंध सके तो पुल बनाओ ॥ १५३ ॥ ‡ रुपये § महाराणा की माता ने ॥ १५४ ॥ ¶ नाम १ पुत्र २ प्रतापसिंह नामक ॥ १५५ ॥ ३ पड़पोते की ४ मथुरा में ही ५ लाखों ब्राह्मणों को सोना दिया या ब्राह्मणों को लाखों मुहरें दीं ॥ १५६ ॥ ६ जिस पीछे ७ जनाने को ८ प्राप्त हुई (पहुंची) ९ उदय है आदि में जिनके ऐसा नगर अर्थात् उदयपुर॥ १५७ ॥ १० लाभ ॥ १५८ ॥ ११ सेवन करके ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १२ बुद्धि में १३ नीति में १४ सलाह में १५ सिंह (बलवान्) ॥ १६१ ॥ १६ उपद्रव (लूट खसोट)

संग दियउ जयसिंह सेन वसुसहँस८०००जुत्त बर ॥
राजामल निज सचिवकेर सिवदास *सहोदर ॥
†कहि जाय राज्य मरुईसको सजव जमावहु जोर सन ॥
समुझाय सबहि रठौर सठ पारहु तुम मरुपति पयन ।१६२।

[दोहा]

आयो मरुपति गेह इम, सत्थ सचिव सिवदास ॥
इत मेट्यो कूरम अधिप, तँहँ इक हिंदुन त्रास ॥ १६३ ॥
दिल्लीमैं यह दुसह दुख, सहि सब कट्टत काल ॥
गहि गहि हिंदुन बरस प्रति, कर मंगत चंडाल¹ ॥ १६४ ॥
बीस २० दम्म वसुमान² सौं, इक्क१ अवसु³ सौं लेत ॥
जन⁴ प्रति हेरत स्वपच⁵ जर, दिन प्रति यों दुखदेत ॥ १६५ ॥

पादाकुलकम् ॥

दिवाकिंत्ति तिनमैं इक नायवँ⁶, स्वपच और तस कथित करैं सब ॥
दिन प्रति करि हिंदुन हरवल्लो, स्वपच कहँ स्वामिहिं जुरि संल्लो१६६
हमरी यह गैरपत हे नायव⁷, आई हासिल दैन इहाँ अब ॥
तब वह आक्खि स्वामि जिम उत्तर, कथितँ रीति सब हिंतु गहैंकर१६७
कर गहि लिखि बंधैं दैल कंठन, यह लखि स्वपच तजैं इक हौयन
दूजे बरस बहुरि गहि लावैं, प्रेह प्रति दैदैं मदंध उपावैं ॥ १६८ ॥
हिंदुन हेरन फिरत हीन दैल, करत ¹¹रोहि दिन प्रति कोलाहल॥

---

* सगा भाई | फता ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १ भंगी (चांडाल) ॥ १६४ ॥ २ धनवान् से दाम रुपये सालियाना ३ निर्धन से एक रुपया ४ मनुष्य प्रति ५ भंगी [चांडाल] धन लेता था ॥ १६५ ॥ ६ उन भंगियों में एक नाई ७ हाकिम [सरदार] था ८ सब भंगी [चांडाल] उसका कहना करते थे ९ आगे करके १० सवार होकर ॥ १६६ ॥ ११ स्वामी [मालिक] कहै तिस प्रकार १२ ऊपर [illegible] रीति में १३ से ॥ १६७ ॥ १४ यह कर लेकर कंठ में पत्र बांध देते १५ एक वर्ष तक उसको चांडाल छोड़ देते थे १६ दिन प्रति १७ उपद्रव ॥ १६८ ॥ १८ बिना पत्र वालों को १९ रोक कर

स्वपचन मनति करहिं हिंदू सब, तदपि दंड अप्पहिं छुट्टहिं तब१६९
दिल्लिय यह दिनप्रति दुस्सह दुख, सब कर दयैं विना न लहैं सुख॥
कूरम नृप यह माफ करायो, लिखित लिखाय साह सन लायो१७०
छाप वजीर करैं नहिं उद्धत, वहुत वेर सुनि टारि गयो वेत ॥
द्विज इक दया बहादुर नागर, सो जावत दक्खिन सूबापर ॥१७१॥
जाको मनसुब सत्त७हजारी, तीन अयुत३००००भट संग तुखारी॥
वासों मिलि कूरम यह अक्खी, रहैं कानि हिंदुन तब रक्खी१७२
कहि द्विज करन सिक्ख हम जैहैं, तब छयाय वल करि दल लैहैं॥
जो वजीर सम्मुह पिल्लैं दल, तो तुम करहु सहाय खंडि खल१७३
यह कहि विप्र तास गृह पत्तो, संग सबहि सुभटन अनुरत्तो ॥
वह वजीर वरखानमुहुम्मद, हुसनअली सुहन्यों जिहिं सय्यद१७४
मद१पद२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सुभट संग सहँसन तूरानी, इम वरजोर रहैं अभिमानी ॥
यह द्विज वीर गयो तस आलय, रोके भट सु रुके न वडे रंय१७५
दे पय खान मुहुम्मद गाहिय, इहिं दल छाप करहु यह चहिय ॥
लखी वजीर छाप यह लैहैं, जोर करैं अतिवल हनि जैहैं॥१७६॥
इम बिचारि पत्र सु छप्यो उन, हटि भग्गो तवतैं दुख हिंदुन ॥
सक गुन अठ सत्त इक१७८३अंतर, किय वरजोर समुंदसु कंगर१७७
यह जगसिंह अपूरव किन्नी, नागर कित्ति वंटि इम लिन्नी ॥
वहु ऐसी किन्नी कूरम वेर, कहि साहहि मिटवाय गया कर१७८

[पटूपात]

---

१ लोभी॥ १६९॥१७०॥२घोर्ती ॥ १७१ ॥ ३घोड़ों के सवार ४ आदर॥१७२॥५पत्र ६ सन्मुख सेना भेजें तो ॥ १७३ ॥ ७ वजीरों में श्रेष्ठ ॥ १७४ ॥ ८ उसके घर ९बड़े वेग से ॥ १७५ ॥ १० इस पत्र पर छाप करो यह ११ कहा ॥ १७६ ॥ उस १२पत्र को १३मुद्रा (छाप) सहित किया ॥ १७७ ॥ १४ श्रेष्ठ ॥ १७८ ॥

कौटिक¹ अरु कांदविक² द्रव्य विक्रय³ ढिग धारैं ॥
अनुक्रम आपन⁴ अवलि⁵ क्रेय⁶ निज निज बित्थारैं ॥
सोहू साहहिं आक्खि प्रबल मेटी कूरमपति ॥
इम करि कित्ति⁷ अनेक साह सेयो नय सम्मति ॥
लहि धरम मग्ग मनुमत⁸ समुझि श्रुति निदेस⁹ कछु अनुसरिय ॥
पटु बुद्धि भयो इहिं समय¹⁰पै कहिंहैं दंस१०अनुचित करिय ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरिते उदयपुराधीशराणासंग्रामसिंहरामपुरविजयन १ कोटाधीशमहारावभीमसिंहस्य वल्लभसंप्रदायानुयायिताहेत्वन्तर्हितत्वकारणमरणप्रख्यापन २ महारावमरणज्ञानकोटाहरणहेतुबुन्दीनगरसालमसिंहकोटानगरगमन ३ अकस्मादात्रिसमयगोकुलागतभीमसिंहसमरपराजितसालमसिंहपलायनभीमसिंहबुन्दीहरण ४ आमेराधीशजयसिंहस्ययोधपुराधीशाजितसिंहकनीविवाहन ५ कोटामहारावभीमसिंहदलावरखांसमरमरण ६ पुनर्बुधसिंहा-

---

१खटीक [कसाई] और २कंदोई हलवाई ३ वेचने की वस्तु पास पास रखते थे अर्थात् मांस और मिठाई पास पास बिकती थी अनुक्रम से ४बाजार में ५पंक्ति बांधकर ६ अपनी अपनी बेचने की वस्तु को फैलाते थे ७ कीर्ति ८ मनु के मत [मनुस्मृति] को समझकर ९ कुछ वेद की आज्ञा के साथ चला १० परन्तु ११ जयसिंह ने दश बातें अनुचित कीं सो आगे कहैंगे ॥ १७९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के पति बुधसिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा संग्रामसिंह का रामपुरा विजय करना १ कोटा के महाराव भीमसिंह का वल्लभ मत धारण करके पड़दा में रहने के कारण मरना प्रसिद्ध होना २ महाराव को माराहुआ जानकर कोटा लेने के अर्थ बुंदी से सालमसिंह का कोटे जाना ३ गोकुल से अचानक रात्रि के समय आये हुए भीमसिंह से सालमसिंह का पराजित होकर भागना और भीमसिंह का बुंदी लेना ४ आमेर के राजा जयसिंह का जोधपुर के राजा अजितसिंह की पुत्री से विवाह करना ५ कोटा के महाराव भीमसिंह का दलावरखां के युद्ध में दक्षिण में मारा जाना ६ बुन्दी का फिर बुधसिंह

धिकारबुन्दीगमन ७ अर्जुनसिंहकोटापट्टप्रापण ८ जयसिंहमारणार्थसयवनेन्द्रप्रयाणकर्तृसय्यदहुसनअलीछलमारकयवनेन्द्रमुहम्मदशाहपुनर्दिल्लीगमनजयसिंहार्थाकबरपुराधिकारसमर्पण ९ मरुदेशोपरियवनेन्द्रसेनायानभीतपलायिताजितसिंहनिजज्येष्ठात्मजाभयसिंहदिल्लीप्रेषण १० यवनेन्द्रनिदेशनिजानुजबखतसिंहकरमारितजनकाजितसिंहाभयसिंहयोधपुरपट्टाधिगमन ११ गृहीतयवनेन्द्राज्ञाभयसिंहनिजानुजबखतसिंहार्थराजाधिराजपदसहितनागोरदंगराजप्रदान १२ अभयसिंहस्य जयसिंहकनीपाणिग्रहण १३ जयसिंहस्यानुचितहिन्दुकरमोचन १४ जयसिंहानेकप्रशंसनीयकार्यगणनासहितदनुचितदशकार्यप्रदर्शनप्रतिज्ञानं षड्विंशो मयूखः ॥ २६ ॥

आदितश्चतुःषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६ ॥

[दोहा]

इत कोटा अर्जुन नृपति, पायो त्रि¹बरस प्रान ॥

के अधिकार में होना ७ कोटा में अर्जुनसिंह का गद्दी बैठना ८ जयसिंह को मारने के लिये बादशाह सहित चढ़ाई करनेवाले सय्यद हुसनअली को छल घात से मार कर बादशाह मुहम्मदशाह का पीछा दिल्ली जाना और जयसिंह को आगरे का सूबा देना ९ मारवाड़ पर बादशाही सेना जाने के कारण डरकर भागेहुए राजा अजितसिंह का अपने बड़े पुत्र अभयसिंह को दिल्ली भेजना १० बादशाह की आज्ञा से अपने छोटे भाई बखतसिंह के हाथ से पिता अजितसिंह को मरवाकर अभयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना ११ बादशाह की आज्ञा लेकर राजा अभयसिंह का अपने छोटे भाई बखतसिंह को राजाधिराज की पदवी के साथ नागोर का राज्य देना १२ राजा अभयसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करना १३ जयसिंह का हिन्दुओं के ऊपर से अनुचित कर का छुड़ाना १४ जयसिंह के अनेक प्रसंशनीय कार्यों की गणना के साथ उनके दश अनुचित कार्य बताने की प्रतिज्ञा का छव्वीसवां २६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौसठ २६४ मयूख हुए ॥

१ तीन वर्ष जीवित रहा

स्याम रु दुज्जनसल्लके, भो भू हित घमसान ॥ १ ॥
अग्रज स्यामहिँ मारिकैं, भो नृप दुज्जनसल्ल ॥
बुंदीपर दावा बिरचि, हठि सु बिचार तहल्ल ॥ २ ॥
इत दिल्लिय कूरम अधिप, साह त्रि३हायन सेय ॥
सक चउ४वसु सत्रह१७८४समय, आयो निलय अजेय ।३।
करि असात्य नगराज दिय, बुंदिय कुम्भ पठाय ॥
बुंदीपति इहिँ पर बिमन, रक्खत बिरस रिसाय ॥ ४ ॥
कछवाही प्रति नृप कहिय, अनुज प्रबोधहु आज ॥
राज तुम्हैं जो दव्वनौं, तो रक्खहु नगराज ॥ ५ ॥
भ्रातहिँ इम रानी भनत, कह्यो तमकिँ कछवाह ॥
भगिनी तुमरी भुम्मिकी, चित्त न रक्खत चाह ॥ ६ ॥
जामिय अलस प्रमाद जुत, अरु तुमरी मति एह ॥
गेह द्विर भूपन बिगरतें, बिगरयो इक्क१हि गेह ॥ ७ ॥
हम जान्यौं बिगरत बिभव, लैंहैं अबहु सुधारि ॥
तुमरी मति भ्रम माँहिँ तो, हमहु दयो हित टारि ॥ ८ ॥
यह कहि नृप जयसिंह तब, लिय नगराज बुलाय ॥
रंच सिरोही रोगिनी, इहिँ पर बुंदिय गाय ॥ ९ ॥
चुंडाउति उर जो भयो, कुमर पदम अभिधान ॥
आमय बस तिहिँ इन दिनन, किन्न महाप्रस्थान ॥ १० ॥
नाथाउत कूरम नृपति, बुल्ल्यो बिबिध रिसाय ॥
राजकाज लग्गो करन, बुंदिय सालम आय ॥ ११ ॥

१ स्यामसिंह और दुर्ज्जनशाल के भूमि के अर्थ २ युद्ध हुआ ॥ १ ॥ ३ बड़े भाई स्यामसिंह को ॥ २ ॥ ४ बादशाह की तीन वर्ष सेवा करके ५ अपने घर (आमेर) आया ॥ ३ ॥ ६ प्रधान (कामदार) ७ जयसिंह ने ८ उदास ॥ ४ ॥ ९ बुधसिंह ने कहा १० छोटे भाई [जयसिंह] को समझाओ ॥ ५ ॥ ११ क्रोध करके १२ह बहिन ॥ ६ ॥ १३बहिनोई ॥ ७ ॥ ८ ॥ १४ रानी को ॥ ९ ॥ पद्मसिंह १५नामक १६रोग के वश १७परलोक गया ॥ १० ॥ १८ बुलाया ११ ॥

कछवाही सन याहिपर, कछु प्रसन्न बुंदीस ॥
चुंडाउति रट्ठोरि सिग, यहहि रही बनि ईस ॥ १२ ॥
दिल्लीसन बुंदीस जब, ढुंढाहर धर आय ॥
चुंडाउति रट्ठोरि तब, लिन्नीही बुलवाय ॥ १३ ॥
कछवाहीके डर दुहुँन२, रक्खि *निवाई नैर ॥
पटरानीके बचन बसि, अप्प रहिय आमैर ॥ १४ ॥
नाम भावानीसिंह निज, पटरानी किय पूत ॥
औरस वो कृत्रिम यहै, सु हम[3] न जान्यौं सूत ॥ १५ ॥

पादाकुलकम् ॥

सिख तब रानी सुतहिं सिखावहिं, पति ढिग भोजन काल पठावहिं
अरज कुमार असनहितें अक्खहिं, भिन्न थालभोजन तब रक्खहिं १६
उर भ्रम सबन यहै लखि आन्यौं, पै काहू न तत्व पहिचान्यौं ॥
छित्वरसिंह इंद्रगढ स्वामी, नृप ढिग मिलन आय भट नामी ।१७।
भुज्जन नृप बैठो छित्वर सहँ, रानी तबहु पुकल्यो सुत वह ॥
छित्वर लग्गि ताहि बैठावन, दिय तब नृप उत्तर छल दावन।१८।
खलु सुर अर्चन कछुक रह्यो खिल, करि वह इक्क थाल भुंज्जहिं कैल ॥
दिन प्रति इम बढि बढि भ्रम दोर्यो, सोतिन आदि सबन मन मोर्यो ॥ १९ ॥
रानी अब नृप सीस रिसावैं, पुत्रहिं असनकाल न पठावैं ॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ * निवाई नामक नगर में ॥ १४ ॥ १ कछवाही ने २कछवाही के उदर से उत्पन्न हुआ था या करतबी (बनावटी) था सो ३ ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि यह हमने भी नहीं जाना ॥ १५ ॥ ४ भोजन करने के अर्थ ५ जुदे थाल में ॥ १६ ॥ १७ ॥ ६ भोजन करने को ७ छीतरसिंह के साथ ॥ १८ ॥ ८ निश्चय ही ९ देवपूजन(कुमर के अर्थ देवताओं की कबूलायत करी थी सो) करना १० बाकी है सो ११ वह पूजन करके १२ एक थाल में कुमर के साथ १३ निश्चय ही भोजन करेंगे ॥ १९ ॥ १४ भोजन के समय

नृप जयसिंह यहैं नहि जानैं, मिथ्याही भगिनी रिस मानैं ॥२०॥
प्रीति दिखाय रह्यो नृप उप्पर, अरुचि धरैं रानीपर अंतर ॥
*कुम्महिं नहिं बुंदीस कहावैं, †पुत्तहिं लखि ‡संतत दुख पावैं॥२१॥
सक चउ४बसु सत्रह१७८४संवच्छर¹, घल्ल्यो यह बिग्रह बुंदियघर॥
लोकहु बहु बदनीति मचाई, सुनि सुनि सब जयसिंह पचाई।२२।

(षट्पात्)

बुंदी लोकन बहु अनीति आमेर मध्य किय ॥
सठ नाजर किसतूर नगर कुतवाल मारि लिय ॥
पकरि पकरि परदार² जार बहुतन गहि रक्खी ॥
मार लूट मचवाय नगर लज्जा सब नक्खी ॥
सुनि सुनि अनीति कूरम सहिय कहिय कछु न बुंदीस पति ॥
जिम जिम सही सु तिम तिम जुलम अनय³ प्रचार्‌यो नरनअति२३

(दोहा)

दिन दिन अब कूरम दुमन⁴, कह्यो कछूहुन जाय ॥
अंधु छाँह⁵ जिम कछु अनख, राखी हृदय समाय ॥ २४ ॥
सुता रान संग्रमकैं, ईडरपति भानेज ॥
स्वसा⁶ सहोदर नाथकी⁷, उपयम⁸ उचित अजेज⁹ ॥ २५ ॥
लै चर ताके लाँगली¹⁰, आये जैपुर अत्थ¹¹ ॥
सुभट केसरीसिंह पुर, सलूमरिप¹² के सत्थ ॥ २६ ॥
सगपन ईश्वरिसिंहसौं, कूरम सुतसौं ठानि ॥
कछवाही भ्रातहिं कह्यो, मम सुत ब्याह प्रमानि ॥ २७ ॥

॥ २० ॥ * जयसिंह को † पुत्र का ‡ निरंतर ॥ २१ ॥ १ सम्वत्सर (वर्ष) में ॥ २२ ॥ २ पराई स्त्रियों को ३ अनीति ॥ २३ ॥ ४ उदास ५ कुए की छाया के समान ॥ २४ ॥ ६ सगी बहिन ७ नाथसिंह की, जिसको मेवाड़ में नाथजी' कहते हैं ८ विवाह के उचित ९ विलंब रहित शीघ्र ॥ २५ ॥ १० नारियल ११ यहां १२ सलूँबरके पति के साथ ॥ २६ ॥ २७ ॥

भ्रात[1] स्वीय[2] भानेजहू, व्याह उचित अब एह ॥
करिये सगपन रानके, कुमर सुतां[3] तस गेह ॥ २८ ॥

(गीर्व्वाणभाषा)

(इन्द्रवज्रा)

श्रुत्वैवमाहूय सलूमरीशं चुण्डाउतं केसरिसिंहसंज्ञम् ॥
राणेशसामंतचयोडुचन्द्रं प्रोवाच ढुंढारधराधवस्तत् ॥ २९ ॥

[स्रग्धरा]

बुंदीधीशात्मजोयञ्ज्वलनकुलमणिर्भागिनेयोऽस्मदीयो,
युष्मज्जामातृभावंगमितमुचित इत्येवमालोच्य तस्मात् ॥
अस्मायष्टाऽब्दकायाप्युदयनगरनाथेन षड्वायनी सा,
राणेशेनादिराज्ञा लवजननभृता संविवाह्या स्वपौत्री॥३०॥

(स्रग्विणी)

इत्थमाकर्ण्य बुन्दीनरेशस्तदाऽऽहूय चुण्डाउतम्प्रावदत्स्वम्मतम् ॥
राणराजा ध्रुवनप्त्रिकोद्वाहकृत्नोररीकार्यमस्मन्निदेशं विना ॥ ३१ ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

कूरमपति यह बत्त सुनि, संभर भूप[4] समीप ॥

---

१ हे भाई २ तुम्हारा भानजा भी ३ राणा के कुमर के पुत्री है॥२८॥ऐसा सुन कर केसरीसिंह नाम सलूमर के पति को बुलाया जो राणा के तारों रूपी उमरावों में चन्द्रमा रूपी था उससे ढुंढाहड़ के पति ने विवाह सम्बन्धी वार्ता कही ॥ २९ ॥ यह अग्नि वंश का मणि बुन्दी के पति का पुत्र और हमारा भानजा है, इसकारण से निश्चय करके तुम्हारा जमाई होने के योग्य और उचित है सो विचारो इसका शरीर आठ वर्ष का है और वह उदयपुर के पति की कन्या छः वर्ष की है महाराणा लव के वंश को धारण करनेवाले आदि राजा हैं, सो अपनी पोती को अच्छे प्रकार से विवाहने योग्य हैं ॥ ३० ॥ इस प्रकार सुन कर बुन्दी के राजा ने उस सलूँबर के पति चुंडाउत को बुला कर अपना सिद्धान्त कहा कि मेरी आज्ञा के बिना राणा की पोती के विवाह का कार्य स्वीकार मत करना ॥ ३१ ॥ ४ राजा बुधसिंह के पास

कूरम पुच्छन मुक्कल्यो, *कुंभानी भट †दीप॥ ३२ ॥

[षट्पात्]

दीपसिंह कछवाह जाय बुंदीस निकट तब ॥
यह सगपन ‡अवरोध संधि §अंजलि पुच्छ्यो सब ॥
कह्यि बुद्ध सुनि कुमर आँहिं मम ¶जात नाँहिं यह ॥
रानी कृत्रिम रचिय सोति सुत +जानि गव्व सह ॥
जो चहत भूप जयसिंह अब वंस बरनसंकर करन ॥
तो उदयनैर १ब्याहहु सुतहिं निगम रीति यह उचित नन॥३३॥

दोहा ॥

यह कहि मुद्रा २रजतमय, सत्तरि सँहँस७००००मँगाय ॥
दिन्नी ३कूरम दीप हित, न्याय तथा अन्याय ॥ ३४ ॥
न लिय दीप तब कहिय नृप, जंपि सपथ छल जोरि ॥
इम थिति रक्खहु सख्य हित, लैहैं मंगि बहोरि ॥ ३५ ॥
दीपसिंह जान्यों बहुरि लैहैं द्रव्य मँगाय ॥
४पत्तो पुनि नृप पास ५पै, जुलम कह्यो नहि जाय ॥ ३६ ॥
कूरम नृप ६सुभटहिं कह्यो, पुच्छी सो कहिदेहु ॥
कहिय दीप तिन अलस करि, अबही कह्यो न एहु ।३७।
आक्खिय तब जयसिंह यह, रखत ७जामि पर रीस ॥
कुमरहिं ८इम कृत्रिम कहत, बिरचि ९अनर्थ बुंदीस ॥ ३८ ॥
यह कहि बुंदी ईस प्रति, कहि पठई कछवाह ॥
मम जनपद१० अब रहहु मति, चलहु ११जैत्थ चित चाह ॥ ३९ ॥

---

*कुंभावत शाखा के कछवाह उमराव †दीपसिंह को भेजा ॥३२॥ ‡रोकने का कारण § हाथ जोड़ कर ¶ यह कुमर मुझ से उत्पन्न हुआ नहीं है + सौत को पुत्र वाली समझ कर गर्व सहित १ वेद की रीति से यह उचित नहीं है ।३३। २ चांदी के रुपये ३ कछवाह दीपसिंह के अर्थ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ गया ५ परन्तु वहां जाकर यह जुलम की वार्ता नहीं कही ॥ ३६ ॥ ६ उमराव को ॥ ३७ ॥ ७ बहिन पर ८ इसकारण ६ अनीति ॥ ३८ ॥ १० मेरे देश में ११ जहां जी-

गीर्वाणभाषा ॥

इन्द्रवज्रा ॥

श्रुत्वेति बुन्दीनरपः प्रमादी कूर्म्मेश्वरम्प्रत्यवदद्दलेन ॥
युष्माभिरीहे प्रथमं रहस्यं तद्युष्मदुक्तं सकलं करिष्ये ॥ ४० ॥

अनुष्टुप् ॥

रहस्याहूय बुन्दीशं जयसिंहस्तदा नृपः ॥
पप्रच्छ जामिजोदन्तन्नम्रो नीतिपरायणः ॥ ४१ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

आर्य्या ॥

सोऊण चविउ रण्णा स्सालं दुट्ठकुलं क्खु चिय होइ ॥
णणभे ओरसविद्धो राणीए कित्तिमो किद्धो ॥ ४२ ॥

गीर्व्वाणभाषा ॥

शालिनी ॥

शृण्वन्नित्थङ्कूर्म्मराजो महात्माप्यामर्षी प्रोन्नद्धभोगोवसर्प्पः ॥
तर्जन्नुग्रो जामिपम्प्रत्युवाचास्मज्जामेये ऽनौरसे कोत्र हेतुः ॥४३॥

चाहे वहां जाओ ॥ ३९ ॥ यह सुन कर उन्मत्त बुन्दी के राजा ने कछवाहों के पति को पत्र से उत्तर दिया कि मैं पहिले आपके पास एकांत चाहता हूं फिर आपका कहा हुआ सब करूंगा ॥ ४० ॥ तब बुन्दी के राजा को एकांत में बुला कर उस नीतिनिपुण जयसिंह ने नम्र होकर भानजे का वृत्तान्त पूछा ।४१।

संस्कृत अनुवाद ॥

श्रुत्वा ऊचे राज्ञः शालं दुष्टं कुलं खलु एव भवति ॥ नन भूत औरसपुत्रो राज्या कृत्रिमः कृतः ॥ ४२ ॥

भाषानुवाद ॥

यह सुन कर राजा बोला कि हे साला मेरा अष्टकुल दुष्ट (दूषित) होजावेगा क्योंकि यह औरस पुत्र नहीं हुआ है राणी ने कृत्रिम किया है ॥ ४२ ॥ इस प्रकार सुन कर महाशय कछवाहों के राजा ने क्रुद्ध होकर फण उठाये हुए सर्प के समान उग्र तर्जना करके बहिनोई (बुधसिंह) से कहा कि हमारे भानजे के अनौरस होने में यहां क्या कारण है ॥ ४३ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ।

(षट्पात्)

कह्यो प्रकट कछवाह प्रीति तुमरी न जामिपर ॥
सेवत श्रीगोविंद बीज इत्यादि कउलबर ॥
चुंडाउति पर चित्त तास जो होहिं तनय अब ॥
देहो ताकँहँ राज्य सोधि हमहू लिन्नी सब ॥
बसु८बरस पालि पुत्रहिं सविधि धिक मन सिसु मारन धरिय॥
अभिसाप अप्प अप्पत अब सु किन अलीक जनमत करिय ।४४।

दोहा ॥

संभर अक्खिय एह सुनि, हमहिं कालिका आन ॥
कछु करि संकट टारिहौ, सो सब करहिं प्रमान ॥ ४५ ॥
कूरम अक्खिय कउल तुम, सपथन नहिं विस्वास ॥
लिखि स्वहस्थ अप्पहु लिखित, तब लैहैं असुतास ॥४६॥
चुंडाउति रट्ठोरि कै, निपजहु पुत्र निसंक ॥
वाहि न दैहैं राज्य अब, अवरहिं लैहैं अंक ॥ ४७ ॥

(षट्पात्)

सुनत एह बुंदीस कूर निज हत्थ लिखित किय ॥
चुंडाउति रट्ठोरि जनित पैहैं नहि बुंदिय ॥
तुम कर अप्पहि ताहि करहु अप्पनै मन इच्छित ॥
कहिहो जिहि कछवाँह सूनु थप्पहि करि सिच्छित ॥

१बहिन पर२कारनाा३हे वाममार्गियों में श्रेष्ठ४उस चुंडाउति के अब आप ५मिथ्या दोष देते हो सो जन्मते ही६नाश क्यों नहीं करादिया ॥४४॥४५॥७तुम वाममार्गी हो इसकारण तुम्हारे सौगनों का विश्वास नहीं है ८ अपने हाथ से लिखावट लिखकर दो ९ तब उस लड़के के प्राण लेवेंगे ॥ ४६ ॥१० दूसरे को गोद लेवेंगे ॥ ४७ ॥ ११ क्रूर (मूर्ख) ने यह लिख दिया कि १२ चुंडाउति और राठोड़ी के पुत्र होवेंगे सो हम तुम्हारे हाथ में देवेंगे फिर तुम १३ अपना मन का चाहा करना १४ हे कछवाह १५ शिक्षित

दल¹ दियउ एह जयसिंह कर सक्खी² लिखि हद्दुन सबन॥
कोऊन लिखत ऐसी कुबिधि लिप्प्यो जिम संभर³ लिखन४८

(शुद्धप्राकृतभाषा)

इम लिहिअं कत्तु तदो प्पिअवयणेहिं णिहाय संबन्धम्‌ ॥
रराणा जयसिंहाणं सुज्जकुमारी णिअप्पजा दिण्णा ॥ ४९ ॥

(षट्पात्‌)

याहि बरस जयसिंह नगर जयपुर बसवायो॥
सित सहस्यं⁴ द्वादसिय १२ मकर रवि लगन मिलायो ॥
सिलप तंत्र⁵ अनुसार सबहि व्यवहार सधाये ॥
बारह१२कोस बिंथार⁶ बिविध प्राकार⁷ बधाये ॥
रचि जुकति⁸ दम्म⁹ कोटिन खरचि पुर अपुब्बं¹⁰ किन्नौं प्रकट॥
हिंदुवसथानं¹¹ दूजो नहिन सहर प्रातिबिंबंक¹² सुघट ॥ ५० ॥

गीर्व्वाणभाषा ॥

भुजङ्गप्रयातम्‌ ॥

विधायैवमग्र्यम्पुरं कूर्मराजः श्रुतीर्धीर आसेव्य लब्ध्वा स्मृतीश्च॥
द्विजेन्द्रान्‌ समाहृत्य धर्मानुगस्तत्सवर्णाश्रमश्रेय आविश्चकार ५१

---

१ पत्र २ साक्षी ३ बुधसिंह ने लिखा जिसप्रकार ॥ ४८ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

एवं लिखितं कृत्वा तदा प्रियवचनैर्निधाय सम्बन्धम्‌ ॥ राज्ञा जयसिंहाय सूर्यकुमारी निजात्मजा दत्ता ॥ ४९ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

तब ऐसा लिखित करके प्रिय वचनों से सम्बन्ध स्थापन करके उस राजा (बुधसिंह) ने जयसिंह को सूरजकुमारी नाम अपनी पुत्री दी ॥ ४९ ॥

४ पौष सुदि बारस ५ शिल्प शास्त्र के अनुसार ६ विस्तार ७ कोट ८ युक्ति ९ रुपये १० अपूर्व ११ हिन्दुस्थान में १२ इसके सुडोल प्रतिबिंबवाला ॥ ५० ॥ धर्म को धारण करनेवाले कछवाहों के राजा जयसिंह ने इसप्रकार प्रधान नगर [जयपुर] बसाकर वेद विहित कर्म करके स्मृतिशास्त्र पाकर ब्राह्मणों को एकत्र करके धर्म शास्त्र की मर्यादा से चलकर चारों वर्ण और आश्रम के कल्याण कारी मार्ग को प्रकट किया ॥ ५१ ॥ यह अग्रणी राजा बुद्धि

धिया रत्न१४विद्याःसमाकर्ण्य धौर्य्यस्ततो नीतिमेत्य प्रकृष्टाः कलाश्च।
यतद्वृद्धराज्यांगसप्तोपपुष्टो जनेनानन्नूनान्समाक्रम्य तस्थौ ॥५२॥
मुखस्पृशस्य भूमीश्वराः प्रक्ष्यमाणा वजीरश्च यद्बुद्धिवेगन्न जग्मुः ॥
विहायैव तन्म्लेच्छपोऽप्यन्यभूपानियायोच्चमालंबमामेरमौलिम्५३
विधायाऽग्निहोत्राऽध्वराद्येकयज्वा नियम्याऽप्यधर्मं हृषीकेशभक्तः॥
सितारेशदिल्लीशसंपृष्टमंत्रः कृती पुण्यभूमौ बभूवाग्रनामा॥५४॥
कृतो धीसखः खानदौराऽभिधेन प्रणास्यैव दिल्लीन्द्रसेनाधिपेन ॥
महात्मा स विष्णवात्मजः कूर्मराजो रराजाखिलेष्वर्य्यमेको यथाह्नि

(कामक्रीड़ा)

तंत्रावापोपेतं स्कन्धावारं सर्व्वोच्चीकुर्वन्,
वव्राज श्रीविष्णुत्रातो नीत्या दिल्लीशोन्मुख्यम् ॥
आन्वीक्षिक्या धर्म्मार्थार्थी चक्रे राज्यं कृत्तारि,
भोजाचारं भेजे भूम्यूर्व्वाशीर्भ्राजद्भूभर्त्ता ॥ ५६ ॥

से चौदह विद्याओं को पढ नीति शास्त्र को प्राप्त हो चौसठ कलाओं को सीख यत्न करते हुए और बढे हुए राज्य के सातों अंगों से पुष्ट होकर अपने से न्यून नहीं ऐसे राजाओं को दबाकर रहने लगा ॥ ५२ ॥ आर्यावर्त के राजा उसका मुंह ताकते थे और बडे बडे वजीर उसकी बुद्धि के वेग को नहीं पहुँचते थे बादशाह भी दूसरे राजाओं को छोडकर आमेर के मुकुट (जयसिंह) को ऊंचा [बडा] आलंबन समझते थे ॥ ५३ नित्य यज्ञ करके नैमित्तिक यज्ञ का एक ही कर्ता पापों का निवारण करके ईश्वर का भक्त जिससे सितारा और दिल्ली के पति सलाह पूछते थे ऐसा चतुरों का अग्रणी (जयसिंह) आर्यावर्त में हुआ ॥ ५४ ॥ बादशाह के सेनापति खांनदौरां ने बडी नम्रता के साथ उस राजा को अपना मंत्री (सलाहकार) बनाया. विष्णुसिंह का पुत्र महात्मा वह कछवाहों का राजा सब में ऐसा प्रकाशमान हुआ कि जैसे दिन में अकेला सूर्य होता है ॥ ५५ ॥ राज्य वृद्धि और शत्रु वश करने की चिन्ता सहित, राजधानी को सब से उच्च बना कर श्रीविष्णुभगवान् से रक्षित जयसिंह नीति से दिल्लीश के सन्मुख गया और ब्राह्मणों के आशीर्वाद से राज नीति के अनुसार, धर्म और अर्थ [पुरुषार्थ] को चाहता हुआ यह तेजस्वी राजा शत्रुओं का नाश करके भोज के समान राज्य करता था ॥ ५६ ॥

(नर्कुटकम्)

मतिरुडुराश उल्बणदारिद्रतमिस्रहरिः,
समिदतलस्पृगर्णवविलङ्घन एकतरिः ॥
जयनयधार्य्यकार्य्यमननार्य्य उदग्रगति,
भुवि यशसा रराज जयसिंह इलाधिपतिः ॥ ५७ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[षट्पात]

इम कूरम जयसिंह हिंदु सिच्छन उप्पर हुव ॥
जाप धरम श्रुति जजन भूरि अध्वरं विस्थरि भुव ॥
निंदत निगम पिछानि जोर तुरकान प्रजारन ॥
सहर सितागधीस मंत्रि बुल्ल्यो तिन मारन ॥
साहू नरेस लहि तब समय दिल्लीपति उप्पर दुसह ॥
सिंधिया बहुरि हुलकर सुभटं पिल्ले दुबरे दल अमित मँह ॥ ५८ ॥

दोहा ॥

नृप साहू नवलक्ख ९००००० दल, सहर सितारा ईस ॥
पिल्ले हुलकर सिंधिया, दब्बन भुव दिल्लीस ॥ ५९ ॥
इन अवरंगाबाद लगि, पहिलैं अमल प्रचारि ॥
वहँ नागर सूबा अधिप, दयाबहादुर मारि ॥ ६० ॥

भूपति राजा जयसिंह अपने यश से पृथ्वी पर प्रकाशता था जो बुद्धि के लिये चन्द्र रूप और उत्कट (उग्र) दरिद्र रूपी अथवा अनीति रूपी अन्धकार का नाश करने को सूर्य रूप, युद्ध रूपी अथाह समुद्र को लांघने के लिये अद्वितीय नौका [नाव] रूप जय और न्याय से धारण करने योग्य कार्य का विचार करने में श्रेष्ठ और बड़े ऊंचे पदवाला शोभायमान हुआ ॥ ५७ ॥ १ यज्ञ २ देवपूजन ३ बहुत यज्ञ ४ भूमि पर विस्तार [फैला] कर ५ वेद की निंदा करने वाले समझ कर यवनों का बल जलाने के अर्थ ६ सितारा के दोनों उमरावों को भेजा ७ सेना के अत्यन्त उत्साह से ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ८ वह हिंदुओं के कर छुडाने के पत्र पर छाप करानेवाला नागर जाति का ब्राह्मण ॥ ६० ॥

इत *गुज्जर धर जवन इक, सरबिलंद †सप्रसाद ॥
सूबापति वह साहको, नगर अहमदाबाद ॥ ६१ ॥
सु[1] वसु[2] गाम सत्तरिसहँस७००००, आयस[3] जास अधीन[4] ॥
मरहठन सोहू मिल्यो, लिखि पत्रन अघ लीन ६२ ॥
उज्जइनी अकबरनगर[5], अरु पत्तन अजमेर ॥
सूबा त्रय३ जयसिंहकैं, सो बुल्लत[6] बल[7] सेरँ ॥ ६३ ॥
इत खटकत दिल्ली उदर, साह मुहुम्मद सूल ॥
कंटक अरि काजीनकौं[8], अनय अैस अनुकूल[9] ॥ ६४ ॥
मंद[10] नपुंसक[11] रत मुदित, यौंही पुनि अनुचार[12] ॥
रक्त काँपिसायन[13] रहत, सचिवँहु[14] मंद समार[15] ॥ ६५ ॥
मौजदीनतैं इक्कसे, भये पंच५ दिल्लीस ॥
दिन दिन बोरि कुरान दिय, रचिय नबी[16] पर रीस ॥ ६६ ॥
इत बुंदिय पति लिखित करि, रचि सालकैं[17] सन साम ॥
बिट्टी[18] हित जयसिंह बरि, आरंभिय उपयाम[19] ॥ ६७ ॥
नगर निवाई हिंतु[20] लिय, रानी उभय२ बुलाय ॥
सुंजकुमरि[21] जयसिंहकौं, प्रथित[22] दई परिनाय ॥ ६८ ॥
संगानेर समीप यह, बुंदीपति किय व्याह ॥
दायज वसु[23] त्रय लक्ख३०००००दिय, अधिक दिखाय उछाह ६९
सक चउ वसु सत्रह१७८४समय, तिथि तपस्य[24] सित आदि ॥

---

*गुजरात में †प्रसन्नता सहित ॥ ६१ ॥ १ सौ २ धनवान अथवा श्रेष्ट धनवाले ग्राम ३ जिसकी आज्ञा में ४ पाप में ॥ ६२ ॥ ५ आगरा. उस जयसिंह ने ७ बलवान सेना को ६ बुलाई २ ॥ ६३ ॥ ८ काजियों का शत्रु ९ आसक्त ॥६४॥ १० वह मूर्ख ११ हींजड़ों से रत[मैथुन]करने में प्रसन्न १२ चलन [बरताव]१३ मद्य में आसक्त १४ उसका वजीर भी मूर्ख १५ कामी था ॥ ६५ ॥ १६ खुदा [यावनी भाषा का ईश्वरवाची शब्द है] ॥ ६६ ॥ १७ साले जयसिंह से मिलाप[सुलह]१८ बेटी [पुत्री] के अर्थ १९ विवाह ॥ ६७ ॥ २० से २१ सूरजकुमारि २२ प्रसिद्ध ॥ ६८ ॥ २३ धन ॥ ६९ ॥ २४ फाल्गुन सुदि एकम

कूरम इम *जामात किय, पति चहुवान †प्रमादि ॥ ७० ॥

पादाकुलकम् ॥

यह बिचार संभर उर आयो, कूरम ‡रिस बसि लिखित करायो ॥
अब रिस गयें लिखित मुहिं अप्पहिं, थिर सुत §अंक लैन नहिं थप्पहिं
बिट्टी निज यह सोधि बिबाही, सत्य लिखित कूरम यह साही ॥
औरस सुत होहि सु हम लैहैं, दायादजहि अंक धरि दैहैं ॥७२॥
मम जामिज कृत्रिम जिहिं मानत, मारहिं तिहिं अब न्याय लि-
खित मत ॥
जामिंप अंक अवर कोउ रक्खहिं, चुंडाउति न पुत्र फल चक्खहिं ७३
यह जयसिंह नियम अवगाह्यो, सत्य लिखित उप्पर हठ साह्यो॥
बुंदीपति अब दुमर्न बिचारैं, टेक न यह कूरम नृप टारैं ॥ ७४ ॥
बुंदी लिखित संग इम बौरी, जुलम भयो चलहिं न अब जोरी ॥
उर दयिता भव सुत अंकूरी, सुरयो नृप लौ इम ठग मूरी ॥७५॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे कोटामहारावार्जुनसिंहस्वर्गमागिनाग्रजश्यामसिंहदुर्जनशालनृपीभवन १ महाराणासंग्रामसिंहसुतायाः जयसिंहपुत्रेश्वरीसिंहेन सह संबंधप्रदान २ बुंदीमहारावराजबुधसिंहस्य स्वात्मज-

---

* जमाई † भूल से [बुधसिंह ने समझा था कि इस संबंध और डायजा देने के कारण जयसिंह प्रसन्न होकर मेरे हाथ का लेख मुझे पीछा दे देवैगा, इस भूल से) ॥ ७० ॥ ‡ क्रोध के वश § गोद ॥ ७१ ॥ १ पुत्री २ कछवाहे ने इस बात को पकड़ा कि यह लिखावट सत्य है ३ सपिंडी में से ४ गोद रख देवेंगे ॥ ७२ ॥ मेरे ५ भानजे को ६ लिखावट के मत से ७ बहिनोई की गोद ॥ ७३ ॥ ८ उदास ॥ ७४ ॥ ९ कुमोई १० प्यारी चुंडावति के उदर में पुत्र के जन्म का अंकुर हुआ ११ ठगकीसी मूली [झूठी आशा] लेकर ॥ ७५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराव अर्जुनसिंह के मरे पीछे बड़े भाई श्यामसिंह को मार कर दुर्जनशाल का राजा होना १ महाराणा संग्रामसिंह की पुत्री की राजा जयसिंह के पुत्र ईश्वरीसिंह से सगाई होना २ बुंदी के महा-

भवानीसिंहकृत्रिमत्वप्रदर्शनपूर्वकोदयपुरसंबंधनिवारण ३ भवानीसिंहमारणावस्थायां दत्तजयसिंहचुण्डाउतिराष्ट्रकूटीजठरजातजयसिंहदत्तदत्तकपुत्रार्थबुंदीराज्यप्रदानप्रतिज्ञाविषयबुधसिंहहस्ताक्षरकरण ४ जयसिंहजयपुरनगरनिर्माण ५ दिल्लीन्द्रपञ्चयवनेन्द्रनिन्दनजयसिंहमन्त्रागतमहरट्टदिल्लीधराक्रमण ६जयसिंहस्य बुधसिंहपुत्रीविवहनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥

आदितः पञ्चषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६५ ॥

नाराचः ॥

इतैं अरीन जावदाख्य नैर रानको हन्यों ॥
सुनी अवाज कूर्मराज सज्ज भीरकौं बन्यों ॥
भनंकि भौंर झौंर के ठनंकि अंदु गै गुरे ॥
कुँदार नैंन चारके तुखार सज्ज संजुरे ॥ १ ॥

रावराजा बुधसिंह का अपने पुत्र भवानीसिंह को कृत्रिम बताकर उसके उदयपुर संबंध होने को रोकना ३ भवानीसिंह को मारडालने की अवस्था में चुंडाउति और राठोड़ी के उदर से पुत्र उत्पन्न होवें उन पुत्रों को जयसिंह को देकर जयसिंह के दिये हुए दत्तक पुत्र को बुंदी का राज्य देने की प्रतिज्ञा का बुधसिंह का अक्षर करना ४ राजा जयसिंह का जयपुर नगर बसाना ५ दिल्ली के पांच बादशाहों की निन्दा और जयसिंह की सलाह से आएहुए मरहटों का दिल्ली की भूमि को दबाना ६ जयसिंह का बुधसिंह की पुत्री से विवाह करने का सत्ताईसवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौपैंसठ २६५ मयूख हुए ॥

इधर महाराना के १ जावद नामक नगर को शत्रुओं ने मारा [लूटा] जिसकी २ खबर कछवाहों के राजा (जयसिंह) ने सुनी इसकारण ३ सहाय करने को सज्जित हुआ सो ४ भ्रमरों का समूह उडकर ५ जंजीरें बजकर ६ हाथी जुड़े (हाथियों को सज्जित करते समय उनको जमीन पर लेटाकर रज झाड़ने हैं इसी कारण उनका जुड़ना लिखा है) ७ कुलटा (खोटी) ८ स्त्री के नेत्र चलने के समान चपल ९ घोड़े सज्जित होकर एकत्र हुए; अथवा कु (पृथ्वी) जिसको विदारण करनेवाले "दृविदारणे" इस धातु से दार शब्द का अर्थ विदारण है अर्थात् अपने चरणों के आघात से भूमि को विदारण करनेवाले, और नेत्रों के

चमू हजार अश्व बान५० लै कृपान भानकी ॥
रिसाय कुम्मराय यों चल्यो सहाय रानकी ॥
बुलैं नकीब दोयसै २००हुलैं हरोल[2] हाँकरैं ॥
भुकैं भँटालि भीर त्यों रुकैं समीर साँकरैं ॥ २ ॥
बजैं निसान नाद सो दिसा दिसान बित्थरैं[6] ॥
सँकूक दंदसूककी फँटा हजार फुंकरैं ॥
मवासं बास आसपास जास त्रास कंपये ॥
चकार चीस कैं पुरीसं दिक्करीसं[12] चंपये[13] ॥ ३ ॥
चले मतंग अद्रि अंग स्याम रंग सज्जके ॥
कुरंग[14] फाँद के चले तुरंग जंग कँज्जके[15] ॥
चले दुबाह[16] के सिपाह स्वामिधर्म संगलै ॥
चली सु तोप सट्ठि६० त्यों चँटट्ठि[17] चक्र चीसलै ॥
मिले प्रबीर पैलबाह[18] पत्रवाह[19] बेधते ॥
कमान पंत्थके[20] कमान पत्थकी[21] निसेधते ॥
भिरे भुँवाल[22] भुम्मियाँ सु भागधेयं[23] भेटलै ॥

समान चलनेवाले [चपल] नेत्रों का धर्म ही चपल है इसकारण यह दूसरा अर्थ भी संगत है ॥ १ ॥ १ सूर्य के समान तेजवाली अथवा चमकती हुई तरवारें लेकर २ सेना के अग्रभाग को बढाने की हाक करके ३ वीरों की पंक्ति बढती है जिनकी सकड़ाई [भीड़] से ४ पवन रुकता है ॥ २ ॥ ५ नक्कारों का शब्द बजकर दिशा दिशाओं में ६ फैलता है जिससे ७ शंका सहित ८ शेषनाग के हजार ६ फण फुंकार करते हैं "यहां हजार फणों के योग से सामान्य सर्प शब्द के होने पर भी शेषनाग का ग्रहण है" जिनकी त्रास से आस पास के १० चोरों और लुटेरों के स्थान धूजते हैं और चीस और ११ लाद [विष्टा] करके १२ दिशाओं के हाथी १३ दबे ॥ ३ ॥ १४ हिरणों की छलांग भरनेवाले १५ युद्ध के काम के १६ वीर १७ गाड़ियों के खिचने की चीस करके [यह यत्न पूर्वक खिचने के शब्द का अनुकरण है] ॥ ४ ॥ अत्यन्त वीर १८ बाणों से १९ पक्षियों को बेधते हुए मिले २० धनुष के मार्ग में (बाण विद्या की रीति में) २१ अर्जुन के धनुष का निषेध करते हुए २२ भूपाल (राजा) और [illegible] भोमिये २३ हासिल [illegible] खिराज, भेट ले लेकर मिले

कहाँन ओज उन्नयो जु तास फोज भेटलै ॥ ५ ॥
फरक्कि केतु गैंन यों विजेय बैंन वित्थरी ॥
सहाय दैंन कुम्म सैंन रान औंन संचरी ॥
सुनी सु रान कान त्यों प्रयानँ सम्मुहो कियो ॥
हिले मिले दुहूँ २ नरेस हेत हुल्लस्यो हियो ॥ ६ ॥

[षट्पात]

मिच्छन धाटि प्रपात रान जनपँद जावद सुनि ॥
पृतना सँहँस पचास ५०००० चंड क्रोधन जोधन चुनि ॥
आमेरो नरनाह पैंत हित चाह उदैपुर ॥
दहवारी लग रान आय सम्मुह सुर आतुर ॥
महिपाल उभय हिय लाय मिलि सुख सह पत्तन संचरिग ॥
करि दल मिलान कूरम गहिय सुपहु रान महलन सरिगँ ॥

[दोहा]

सक सर वसु सत्रह १७८५ समा, लहि कूरम निज भीर ॥
अति आदर रानाँ कियउ, अै प्रणमन हमगीर ॥ ८ ॥
इक जामिप पुनि दल अतुल, बहुरि बढ्यो लहि काल ॥
यातैं तँहँ प्रति नम्र अति, भयउ रान भूपाल ॥ ९ ॥
इक १ थाल किन्नौं असन, पुव्व रीति सब पेलि ॥

---

१ किसीमें तेज [पराक्रम] २ नहीं उठा कि ३ उस जयसिंह की सेना से टक्कर लेवै ॥ ५ ॥ आकाश में ४ ध्वजा उड़कर ५ विजय करने के वचन फैले ६ राणा के घर में कछवाहे की सेना चली ७ महाराणा ने सम्मुख गमन किया ॥ ६ ॥ म्लेच्छों का ८ धाड़ा ९ पड़ना १० राणा के देश में ११ सेना १२ भयंकर क्रोधवाले १३ प्राप्त हुआ १४ पुर में गये १५ सेना का मुकाम करके १६ वह प्रभु राणा १७ चला ॥ ७ ॥ १८ विक्रम के शक में सत्रहसौ पिच्यासी के सम्वत् में १९ विशेष नम्र होकर ॥ ८ ॥ २० जामाता (जमाई) यहां 'जामि' शब्द का अर्थ 'पुत्री' है सो ही शब्दार्थ चिन्तामणि कारने लिखा है "जामिः. दुहितरि" बहुत २१ सेना २२ समय पाकर ॥ ९ ॥ २३ पहिले की जुदा भोजन करने की रीति को हटाकर

कछु अंतर हिनपैं[1] न किय, हिय तब हिंदुन हेलि ॥ १० ॥
कूरमहू करजोरि कहि, प्रति[2] नति करि पलटाव ॥
मन्नहु अप्पन सुभटं[3] मुहिं, जिम सोलह१६ उमराव ॥ ११ ॥
मैं इनहूसौं अनुगतम[4], मम[5]हित नहिं मरजाद ॥
विधि सब कैहौं बंदगी, पैहौं रान प्रसाद[6] ॥ १२ ॥
यह कहि कूरम चमर गहि, कियउ रान सिर उट्ठि ॥
रचि अंजलि[7] तब रानहू, बरजि निट्ठि हित बुट्ठि ॥ १३ ॥
इत्यादिक किय अनुगपन[8], कूरम हित निकरंब[9] ॥
जामिपं[10] बिनु रानहु जप्यो, अवर न मम आलंब ॥ १४ ॥
(षट्पात्)
कूरम प्रति दिन इक्क कहिय सीसोद जोरि कर ॥
रामपुरप[11] संग्राम बदलि अब रहत टेक बर ॥
नैंकन करत निदेस सुस्मि अद्धी पुनि सुग्गत ॥
सुनि अक्खिय जयसिंह वाहि हनिहौं रन उद्धत ॥
रामपुर देहु मोकौंहूँ नृपति मैं सेवन करिहौं मुदित[12] ॥
कहि यह सलाम जयसिंह किय मुलक लेन लक्खन प्रमित[13] ॥१५॥
महासुंदरी ॥
सुनि यौं मन रानौं खिसानौं महा अहिग्रस्त[14] छुछुंदरि ज्यौंनौं परयो ॥
दुवखेर कही हमरोही हुतो तव दम्म[15] त्रिलक्ख३०००००० दैनौं परयो
सुनि यौंहू सलाम करी जयसिंह नयो तब रानकौं नैनौं[16] परयो ॥

१ हिन्दुओं के सूर्य ने (यह महाराणा का विशेषण है) ॥ १० ॥ २ उत्तर में नम्रता का पलटा करके ३ आपका उमराव. जिसप्रकार सोलह उमराव हैं तिसी प्रकार ॥ ११ ॥ इनसे भी अधिक ४ सेवक ५ करूंगा ६ प्रसन्नता ॥ १२ ॥ ७ हाथ जोड़कर ॥ १३ ॥ ८ सेवकपन ९ हितका समूह १० जमाई के विना ॥ १४ ॥ ११ रामपुर का पति १२ प्रसन्न होकर चाकरी करूंगा १३ लाखों की आमद के प्रमाणवाला ॥ १५ ॥ छछुंदर को पकड़नेवाले १४ सर्प के समान छछुंदर को पकड़कर छोडने से सर्प अंधा होजाता है और खाने से मरजाता है १५ रुपये १६ जयसिंह झुका तब राणा को भी झुकना पड़ा

लिय साहकों सेय जो रामपुरा सु कृती कछवाहकों दैनों परचो१६

(दोहा)

नीति निपुन भुव लोभ लगि, इम कूरम तँहँ आय ॥
लियउ रामपुर रानसों, करि नुति[2] लिखित कराय ॥ १७ ॥
रान सचिव कायस्थ तँह, कग्गरं छाप करी न ॥
तब कूरम गृह जाय तस, पाई नीति प्रवीन ॥ १८ ॥
पटु प्रपंच इम रामपुर, लियउ नीति लगि लाह ॥
बहुरि रान सन अनुग[6] बनि, किय रहस्यँ कछवाह ॥१९॥

(षट्पात्)

कहिय मंत्र कछवाह दइव हिंदुन सुभ दायक ॥
मिटत जानियत मिच्छ निगम निंदक भुव नायकं ॥
कबहु न सुनत कुरान नहिंन कलमाँ निमाज नत[11] ॥
काजिन उप्पर क्रुद्ध मुद्ध[12] नन जात महज्जत ॥
रत पान कापिसायन[13] रहत मासूकन[14] जानत मँहत[15] ॥
विधि थप्पि संड मोहन[16] वहत चित प्रपंच[17] कछुहु न चहत ॥
अब विचारि हम एह मंत्रि[18] बुल्लत मरहट्ठन ॥
सजि प्रपंच तिन संग बोरि तुरकान हिंदु बन ॥
हे नृप हिंदुन हेलि[20] अप्प इक१ छल रहहु अब ॥

१ वह चतुर कछवाहे को ॥ १६ ॥ २ स्तुति ॥ १७ ॥ राणा के प्रधान बिहारीदास कायस्थ ने ३ पत्र पर छाप नहीं की ४ उस विहारीदास के घर ५ छाप कराई ॥ १८ ॥ ६ सेवक बनकर ७ एकांत में सलाह की ॥ १९ ॥ ८ भाग्य ९ वेद की निन्दा करनेवाले १० भूमि के पति ११ झुकते हैं (यावनी भाषा में परमेश्वर के वाक्य को कलमा कहते हैं अर्थात् धर्मोपदेश को नहीं झुकते) १२ मूढ १३ मद्य पीने में १४ यावनी भाषा में प्रीति करनेवाले को आशक और जिस पर प्रीति कीजावे उसको माशूक कहते हैं उस माशूक को ही १५ महत् जानते हैं १६ नपुंसकों से मैथुन करते हैं १७ राज्य प्रबंध को चित्त पर कुछ नहीं चाहते ॥ २० ॥ १८ सलाह करके बुलाते हैं १९ हिन्दुओं रूपी जल में यवनों को डुबोकर २० हे हिन्दुओं के सूर्य

मुग्गहु दिल्लिय मुम्मि सचिव हम करहिँ जेर सब ॥
मरहठ पार[1] संडहिँ अमल अप्पन चम्मलि वार[2] इत ॥
यह अक्खि बहुरि कूरम अधिप लियउ हत्थ जामिपै[3] लिखित ॥२१॥

दोहा ॥

लिखवायो पहिलैं लिखित, संभरतैं[4] जयसीह ॥
सो दिखाय संग्रामकौं, अक्खी सम्मत ईह[5] ॥ २२ ॥

[षट्पात्]

सुनहु रान संग्राम साल खट हय सत्रह १७७६ जब ॥
संभरपतिकैं[6] सूनुँ[7] भयो मम जामि जठर[8] तब ॥
रखत जामिपर रीस कउल जामिप बिनु कारन ॥
कृत्रिम कहि सु कुमार मोहि सौंपत अब मारन ॥
हम कहिय क्यौं न जनमत हन्यौं अब इहिँ हनन प्रपंच अति॥
पापहु तथापि तुम करहु पै मम जनपद[9] अब रहहु मति।२३।
उत्तर पुनि उच्चारिय कउल जगदंब सपथ[10] करि ॥
मैं नहिँ हनन समत्थ[11] अप्प यह हनहु वंस अरि[12] ॥
जुलमसीलँ[13] तुम जामि[14] कलह हमसह वह कत्थहिँ ॥
कछु तुमतैं नन कहहिँ अप्प थप्पत श्रुति[15] अत्थहिँ[16] ॥
यह अघ अरिष्ट[17] तसमात अब कूरम[18] जिम तिम मेट करि ॥
कहिहो जु सीस धरिहैं कथितैं[19] नहिँ स्वतंत्र रहिहैं निवारि।२४।
हठ उत्तर सुनि हमहु हेतुँ[20] कृत्रिम बिच हेरे ॥

---

१ चामल नदी के उधर २ चामल नदी के इधर ३ बहिनोई [बुधसिंह] की लिखावट हाथ में ली ॥ २१ ॥ ४ बुधसिंह से ५ राय देने की चेष्टा करी ॥ २२ ॥ ६ बुधसिंह के ७ पुत्र ८ मेरी बहिन के उदर से ९ मेरे देश में ॥ २३ ॥ १० सौगन ११ समर्थ १२ वंश के शत्रु को (वर्णसंकर होने के कारण यह भवानीसिंह का विशेषण है) १३ जुलम करनेवाला स्वभाव १४ तुम्हारी बहिन का १५ आप वेद के १६ अर्थ का स्थापन करते हो इसकारण १७ पाप का उत्पात १८ हे कूरम (जयसिंह) १९ कहना ॥ २४ ॥ उस लड़के के जाली होने के २० कारण

पै[1] इक्क[2]न तँहँ पत्त[2] बहुत ऋत[3] माँहि निवेरे ॥
कह्यो बुद्ध नृप कबहु निकट रानी मम नाँई[4] ॥
यह जो तो किम अग्ग भये तदुदर[5] दुवरभाई ॥
पुनि कउल[6] एह वह[7] हरि मनत करैं न अघ इर्म कोप कित॥
बसु[8]बरस बहुरि न सुन्यौं वितथ[9] पुनि चुंडाउति अधिक प्रिय ॥२५॥
कुंभाँनी[10] भट दीप बहुरि पुच्छन पठयो हम ॥
रूप्पय सत्तरि सँहँस ताहि दिन्नैं प्रछन्नतम[11] ॥
तब मैं भंडारेज[12] छिन्नि भट दीप निकास्यो ॥
पंच हेतु इम पाय भगिनि पुत्रहि कर[13] भास्यो ॥
हम तब बिचारि चहुवान हठ प्रतिवैच[14] अक्खिय नीति पर ॥
करि लिखित देहु जिम हम कहत कृत्रिम तब मन्नहि कुमर ।२६।

(दोहा)

सीसोदनि रठोरि सुत, होहि सु तुमकों देहिं ॥
जुं[15] तुम अंक[16] धरि थप्पिहो, सु सुत सन्नि हम लेहिं ॥२७॥
हम जान्यौं यह लिखित हठि, न लिखहिं बुद्ध नरेस ॥
हत्यातैं तब टरहिं हम, इहिं भल मारहु एस ॥ २८ ॥
लिखि पठहु दुक्कर[17] लिखित, मम कर दिन्नौं मुंझ[18] ॥
सब हठुनकों सिक्खि[19] धरि, बालिस[20] पुंगव[21] बुद्ध ॥ २९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आर्या)

---

१ परन्तु २ एक भी प्राप्त नहीं हुआ ३ ऋतना में ४ नहीं आई ५ उसके उदर से ६ बुधसिंह तो वाममार्गी और ७ राणी वैष्णव है ८ इसकारण ९ यह झूठ वचन ॥ २५ ॥ १० कुंभावत शाखा के उमराव दीपसिंह को ११ अत्यन्त छाने १२ नगर का नाम है १३ मस्त दीखा १४ फीका वचन [प्रत्युत्तर] ॥ २६ ॥ १५ जो १६ गोद ॥ २७ ॥ २८ ॥ १७ दुष्कर [कठिनाई से किया जावे ऐसा] १८ मुझे १९ शिक्षा २० मूर्खों में २१ श्रेष्ठ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

तह्मा लिहि अवकज्जं कज्जं अह्मेहिँ सच्चवयणेहिम् ॥
तिम चेयवि तुह्मेहिं कज्जाकज्जं वियज्ज सीकज्जम्।३०।

इन्द्रवज्रा ॥

सोऊण संगामणरिस्सरोवि होऊण सक्खी लिहिअम्मि तह्मि ॥
घेत्तूण णीइं णिअलेहिणीए सो अप्पऊरीकरणं लिलेह ।३१।

उपजातिः ॥

खु पास्सए बिन्दुमईसपट्टे अणोरसो तस्स धियं कुबिट्टो ॥
दिट्ठूण लेहं बुहसीहकिद्धं संगामराणा लिहिअं मए वि॥३२॥

(इन्द्रवज्रा)

ताणं भडाणं बिजिसोलहाणं१६लेहं दले सो इय लेहिऊण ॥
दिद्धं तदो कुम्मकरम्मि पण्णं लिद्धं हि तह्मा पिहुलं पसाअम्।३३।

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

तस्मात् लिख अपकृत्यं कृत्यमस्माकं सत्यवचनेन ॥ तथैव युष्माभिरपि कार्याकार्यं विचार्य स्वीकार्यम् ॥ ३० ॥ श्रुत्वा सङ्ग्रामनरेश्वरोऽपि भूत्वा साक्षी लिखिते तस्मिन्॥गृहीत्वा नीतिं निजलेखिन्या सोऽपि आत्मोरीकरणं लिलेख॥३१॥खलु पार्श्वके विन्दुमतीशपत्रे अनौरसस्तस्य बुद्धौ कुपुत्रः॥ दृष्ट्वा लेखं बुधसिंहकृतं सङ्ग्रामराणेन लिखितं मयापि॥३२॥ तेषां भटानामपि च षोडशानां लेखन्दले स इति लेखयित्वा ॥ दत्तं तदा कूर्म्मकरे पत्रं लब्धस्तस्मादपि प्रचुरः प्रसादः ॥ ३३ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इसकारण से हमारा कृत्य अकृत्य होवे सो आप सत्य वचन से लिखो. तैसे ही आप भी इस कार्य अकार्य का विचार कर स्वीकार करो ॥ ३० ॥ यह सुनकर राणा संग्रामसिंह ने भी उस लिखित पर आप साक्षी होने का नीति ग्रहण करके अपनी लेखिनी से स्वीकार लिखदिया ॥ ३१ ॥ निश्चय ही बुन्दी के पति के पत्र को देखा. उस (बुधसिंह) की बुद्धि में वह पुत्र अनौरस है सो बुधसिंह के किये हुए लेख को देखकर मुझ (संग्रामसिंह) ने भी लिख दिया है ॥ ३२ ॥ उन सोलह उमरावों से भी उस [संग्रामसिंह] ने वह लेख लिखवाकर वह पत्र कछवाहे [जयसिंह] के हाथ में दिया जिससे बहुत प्रसन्नता हुई ॥ ३३ ॥

(दोहा)

*सभट रानकी †सक्खि इम, ‡बहुल्ल प्रपंच बनाय ॥
बुद्ध लिखित §दल सिर सबिधि, लिय कूरम लिखवाय॥३४॥
कछु दिन रहि कौतुक करत, नृप कूरम तिहिं नैर ॥
पाय रान सन सिक्ख पुनि, आयो पुर आमैर ॥ ३५ ॥
गो कूरम जब रान गृह, ¶बुद्ध तबहि बुंदीस ॥
सह कुटुंब आमैर सन, १रचिय प्रयान सँरीस ॥ ३६ ॥
द्विजबर गुरु जयसिंहको, रतनाकर २अभिधान ॥
कानीखोह ३मुकाम तँस, दिन्नैं ४तत्थ मिलान ॥ ३७ ॥

(षट्पात्)

जिहिं रतनाकर बिप्र सुगुन जयसिंह सिखायो ॥
स्मृति रु निगम ५खट६ सत्थ बिबिध नृप धर्म बतायो ॥
चउदह१४पुनि चउसट्ठि६४ कला बिद्या पटु किन्नों ॥
जयसिंह ग दारिद्र जोग भूसुरँ जिहिं भिन्नों ॥
धारन कराय सब कुल धरम ८कलि भूपन सिरमोर किय ॥
जिम जिम प्रताप कूरम जग्यो आचारिज तिम अद्दरिय।३८।
बिनु त्रि३संध्यं जलपान जँग्य पंचक५ बिनु भोजन ॥

* उमरावों सहित † साचि ‡ बहुत § बुधसिंह के लिखे हुए पत्र पर ॥३५॥ ॥ ३५ ॥ ¶ बुधसिंह ने १ क्रोध सहित गमन किया ॥ ३६ ॥ २ नाम ३ उस रत्नाकर का काणीखोह ग्राम था ४ तहां मुकाम किये ॥ ३७ ॥ ५ वेद ६ जयसिंह की जन्मपत्री में दारिद्र योग गया हुआ [प्राप्त] था जिसको ७ इस ब्राह्मण ने मिटाया ८ कलियुग के राजाओं में ॥ ३८ ॥९ तीनों सन्ध्या किये विना जल नहीं पिया १० गृहस्थी के प्रति दिन करने के * पांच यज्ञ किये बिना

* पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ इत्यमरः ॥ अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ अर्थ—विधि पूर्वक वेदपढाना ब्रह्मयज्ञ कहाता है. तर्पण करना है सो पितृयज्ञ है, वैश्वदेव का होमहै सो देवयज्ञ कहाता है बलि अर्थात् जीवों को अन्न देना है सो भूतयज्ञ कहाता है और घर में आएहुए अतिथि की सेवा करके , खान पानादि से सत्कार करना है सो मनुष्ययज्ञ कहाता है इन्हीं प्रतिदिन कियेजानेवाले पांच यज्ञों का नाम महायज्ञ है.

बिनु स्मृतीन[1] व्यवहार ख्यात नय[2] बिनु वसु[3] खोजन ॥
द्विज सुपात्र बिनु दान ध्यान हरि हर बिनु धारन ॥
बिनु बिधि काल व्यवाय[4] मंत्र नय बिनु अरि मारन ॥
बिन न्हान निगम[5] पाठन बहुरि बिनु प्रपंच[6] संगर बिकट ॥
इहिं द्विज प्रसाद कूरम इते नन रक्खे निज भुव निकट ॥
जब कूरम जोधपुर चल्यो व्याहन नय चातुर ॥
तब सव्यद डर ताकि पुब्ब[7] पठयो अंतहपुर[8] ॥
नगर[9] करोली नाह भूप जदुवंस जासभुव ॥
द्रंग[10] बहादुरदुग्ग[11] धीर रक्ख्यो सु तत्थ ध्रुव ॥
अवरोध[12] संग हो द्विज पहहु तिहिं तहँ दिन्नो देह तजि ॥
तब कुम्म तास जेठो तनय भूसुर[13] गंगाराम भजि ॥ ४० ॥

दोहा ॥

गंगारामहु अमित[14] मति, भो द्विजराज सुभाय ॥
बहु मख[15] नृप किय जास बल, बलि जैपुर बसवाय ॥ ४१ ॥
निवसथ[16] कानीखोह तस, रहिय आय बुन्दीस ॥
कछवाही आमैर रहि, रचत स्वामिपर रीस ॥ ४२ ॥

(षट्पात्)

इत कूरम गृह आय कालकोविद[17] प्रपंचकिय ॥
मरहट्ठन छन्न मिलि दई अरजी पुनि दिल्लिय ॥

भोजन नहीं किया १ धर्म शास्त्र के विना जिसका व्यवहार प्रसिद्ध नहीं हुआ २ विना नीति के ३ धन नहीं लिया. सुपात्र ब्राह्मण के विना दान नहीं दिया, विष्णु और शिव के विना ध्यान नहीं किया, उचित समय के विना ४ मैथुन नहीं किया, नीति की सलाह के विना शत्रुको नहीं मारा. विना स्नान किये ५ वेद का पाठ नहीं किया, विना ६ रचना [व्यूह] के भयंकर युद्ध नहीं किया ॥३९॥ ७ कूच ८ जनाने से पहिले ही ९ जनाने को १० नगर ११ बहादुर गढ नामक १२ जनाना के साथ १३ ब्राह्मण गंगाराम का सेवन किया ॥४०॥ १४ अपार बुद्धिवाला १५ यज्ञ ॥ ४१ ॥ १६ घर ॥ ४२ ॥ १७ समयचतुर

रचत दौर[1] मरहट्ठ लूट मंडत चम्मलि लग ॥
जो भेजहु बल[2] वित्त[3] प्रबल हम लरहिं[4] मंडि पग ॥
सुनि साह पुच्छि सचिवन सबन उचित मंत्र यह उच्चरहु ॥
कथ ताँव खानदोराँ कहिय कहत कुम्म जिम तिम करहु ॥४३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे महाराणासंग्रामसिंहजावदनामनगरधाटीपतनोदन्तश्रवणसमकालससैन्यजयसिंहोदयपुरगमन १ महाराणासकाशाज्जयसिंहरामपुरप्रापण २ दत्तकपुत्रबुन्दीदानबुधसिंहलेखविषयसाक्षीकृतमहाराणाजयसिंहजयपुरागमन ३ जयसिंहगुरुरत्नाकरप्रशंसया सह महाराजजयसिंहप्रशंसावर्णनमष्टाविंशो मयूखः ॥ २८ ॥

आदितः षट्षष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६६ ॥

[दोहा]

इत कोटापति नृप उमँडि, संभर[5] दुज्जनसल्ल ॥
पायो कुम्म[6] जु रामपुर, हठि लुट्ट्यो रन हल्ल ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

पंच अठ्ठ मुनि ससि१७८५सम्मित सक, इक विग्गह कोटा हुव औचक

---

१ दौड़ अथवा फैलाव २ सेना ३ धन ४ तहां ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बूंदीके भूपति बुधसिंहके चरित्र में महाराणा संग्रामसिंह के जावद नामक पुर में धाड़ा पड़नेकी खबर सुनने से सेना सहित जयसिंह का उदयपुर जाना १ महाराणा से राजा जयसिंह का रामपुरा पाना २ दत्तक पुत्र को बूंदी देने के बुधसिंह के लेख पर जयसिंह का महाराणा की साक्षी कराकर जयपुर आना ३ जयसिंह के गुरु रत्नाकर की प्रशंसा के साथ महाराजा जयसिंह की प्रशंसा के वर्णन का अठाईसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छासठ २६६ मयूख हुए ॥

५ चहुवाण ६ जयसिंह ने राणा संग्रामसिंह से पाया वह ॥ १ ॥

मेवाउत हड्डा भट *छित्वर, प्रबल सिपाह वहयो छक्क उप्पर ॥२॥
महाराव भट यहै मत्त मन, घंटीपति राउत्त [1]गब्ब घन ॥
कछुक बत्त उप्पर वह कोप्यो, लज्ज रु स्वामिधरम सब लोप्यो।३।
करउर अग्ग लग्यो जो रनकरि, तिहिँ कबंध जयसिंहहिँ [2]संहरि॥
रत्ति निकासि हड्डा सु बडेरय, रामपुरप संग्राम सरन गय ॥ ४ ॥
कोटापति सुनि एह कहाई, सरन न रक्खहु घोर सहाई ॥
चंद्राउत सु सुनी न धरी चित, तब धकि दुज्जनसल्ल वढयो तित।५।

हरिगीतम् ॥

करि हल्ल दुरजनसल्ल नृप तब रामपुर पर उप्परयो ॥
बजि नद्द[2] मद्दल[3] हद्द सद्दल[4] भद्द बद्दल ज्यौं भरयो ॥
उडि केतु दंतिन[6] पंति पंतिन सिंधु तंतिन[7] लग्गये ॥
नखराल[8] चालन[9] बाजि जालन[10] ज्वाल नालन[11] जग्गये ॥६॥
ठननंकि घंटन घोर त्यौं रननंकि कोचेंन[12]की करी ॥
सननंकि सैंत्तिन[13] नास सास झनंकि पक्खर झल्लरी ॥
बिरुदैत[14] बीर पटैत[15] कइ कैमनैत[16] सज्जित संक्रमे[17] ॥

*छीतरसिंह ॥ २ ॥ [1]बहुत गर्व से ॥ ३ ॥ [2]मारकर॥४॥१क्रोध करके उधर चढा ॥ ५ ॥ तब राजा दुर्जनशाल हल्ला करके रामपुरा के ऊपर उठा जब ५ भादवा के भरे हुए मेघ के समान ४ पूर्ण शब्दायमान होकर ३ मर्दल [ज्यों मृदंग के आकार 'मादल' नाम से वाद्यविशेष प्रसिद्ध है] का २ शब्द हुआ ६ हाथियों पर ध्वजा की अनेक पंक्तियें उडकर ७ तांत के बाजों पर सिंधवी [बड़ाराग] रागनी लगी ८ नखरावाली ९ चालों से घोड़ों के १० समूह की ११ नालों [खुरतालों] से * अग्नि जगी ॥ ६ ॥ हाथियों के घंट और १२ कवचों की कड़ियें बजीं १३ घोड़ों के नाकों (फुरणों) से श्वास बजकर झालरों के समान पाखरें बजीं १४ विरुदायें (स्तुति किये) हुए कितने ही १५ पटा फैंकनेवाले वीर और कितने ही १६ कमानवाले [धनुषधारी] सज्जित होकर १७ चले

* अग्नि शब्द पुल्लिंग है परन्तु लोकरूढी से जहां तहां हमने स्त्रीलिंग लिखा है जिसको अशुद्ध नहीं जानना चाहिये, इसीप्रकार देवता और दोहा आदि कितने ही स्त्रीलिंग शब्दों को लोकरूढी के कारण पुल्लिंग करके लिखे हैं उनको भी शुद्ध ही जानें क्योंकि "यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीयम्" यह प्राचीनों का मत है सो ही समीचीन है ॥

रन सैंन[1] लखि लागि लैंन[2] के गैंन[3]-गैंन[4] गिद्धनके ग्रसे ॥७॥
डगमग्गि अद्रिन कूट[5] तूटत सेतु सागर लुप्पयो ॥
दर[6] दिट्ठिदै भुव पिट्ठि कच्छप निट्ठि निट्ठिन रुप्पयो ॥
नउबत्ति नादन[7] बीर बादन[8] छोनि[9] छादन वित्थरयो ॥
जिम भद्द संबर[10] धूलि डंबर[11] एम अंबर उच्छरयो ॥ ८ ॥
फटकारि सुंडिन मत्त गै नभ घत्त पच्छिन के करैं ॥
जिन मान[12] पव्वय प्रान गैब्बय[13] दान निज्झर[14] निज्झरैं ॥
असवार तोकें[15] तुखार के भट चक्रचारैं[16] फिरावहीं ॥
अबलौं सु सिक्खत पौंन[17] पै वह गौंन रंचन आवहीं ॥ ९ ॥
तिन धौंर[18] मार भेंपार[19] भार हजार भोगप[20] जंक्कयो[21] ॥
खुरतार अग्गन[22] भुम्मि फूटत ज्यों उदुंबर[23] पक्कयो ॥
खुरली[24] सु खिल्लत बीर के मुरली[25] सु सिंधुव उच्चरैं ॥

---

१ युद्ध करनेवाली सेना को देखकर ग्रीधनियों के ३ समूह की २ पंक्तियें लगकर ४आकाश में भ्रमन उडने)लगीं ॥७॥ पर्वत हिलकर ५ शिखर तूटनेलगे और समुद्र ने मर्यादा छोडी ६भय की दृष्टि देकर भूमि को पीठ पर लियेहुए कच्छप कठिनाई से खड़ा रहा ७ नौबतों के शब्द ८ वीरों के वचन ९ भूमि को ढकनेवाले होकर फैले १० भादवे की मेघधारा "यहां शम्बर शब्द सामान्य जल का वाचक है परंतु भाद्रपद के योग से मेघधारा का ग्रहण है" के समान धूल [रज] का ११ आडंबर होकर आकाश में उछला ॥ ८ ॥ मस्त हाथी सुंडों को फटकार कर आकाश में कितने ही पक्षियों की घात करते हैं १३ बल के गर्ववाले जिन हाथियों का १२ प्रमाण पर्वतों के समान है उनके दाण (मदधारा) १४ झरणा के समान झरता है कितने ही घोड़ों को १५ बागों में उठाकर वीर १६ चक्र के चलने के समान [गोलकुंडा] फिराते हैं उस गति को १७ पवन अब तक सीखता है "पवन वात्या(घघूल्या)होकर गोलाकार फिरता है.सो मानो इसीकी नकल करता है" परन्तु गति कुछ भी नहीं आती ॥९॥१८ उन घोड़ों की गति [दौड़] की मारके १९ भयंकर भार से हजार २०फणों का पति[शेषनाग]२१ गिरा. उन घोड़ों की खुरतालों के२२अग्रभाग से पके हुए २३ ऊमर वृक्ष के फल की भांति भूमि फटी कितने ही वीर, २४ शस्त्राभ्यास के खेल खेलते हैं.और २५घोडियों में बड़े राग का उच्चार करने

किलकारि जुग्गिनि संग ह्वै हलकारि भैरव हुंकरैं ॥१०॥
भट भीमलों निज सीमतैं सुत भीम यों चढि संचरयो ॥
लिय घेरि दुग्ग सु रामपुर दल फेरि संगर बित्थरयो ॥
लगि अग्गि तोपन काल कोपन नैर लोपन मंडयो ॥
खगि गोख जालन सौध सालन दुग्ग गोलन खंडयो ।११।
जरि हट्ट पट्टन बट्ट वट्टन धूम धोरनि धुंधरे ॥
दुरि ओक ओकन सोक के पुरलोक संसयमैं परे ॥
प्रांकार गिरि गिरि जात कहुँ छिकि बप्र कपिसिरैं उच्छटैं ॥
कहुँ फुट्टि खोमैंन तोमैं गिरि परिखान पूरि सु उप्पटैं ।१२।
दगि दाव तुट्टि लदाव मंडव ग्राव गिद्धनि ज्यों चढैं ॥
प्रासाद पत्थर सोर सत्थैं ह्वै थरत्थर के कढैं ॥
छकि छिन्न तोपन छूट के परिकूट गोपुरतैं गिरैं ॥
फुल्लिंग फालन जग्गि ज्वालन चित्रसालन के किरैं ।१३।

हैं, किलकार करके योगनियें साथ होती हैं और वीरों को ललकार कर भैरव हुंकार करते हैं ॥ १० ॥ १ भीमसेन के समान वीर होकर अपनी सीमा से महाराव भीमसिंह का पुत्र चढ कर २ चला ३ सेना का घेरा लगा कर ४ युद्ध फैलाया ५ काल के कोप के समान तोपों से ६ अग्नि लगा कर नगर का नाश रचा और गोले लग कर झरोखे, जालियें ७ महल और शालाओं को गिराई ॥ ११ ॥ हाटों में वस्त्र जल कर मार्ग मार्ग में धुआं की धोर से अंधेरा होगया शोक के साथ ८ घरों घरों में छुप कर पुर के लोग ९ जीवन के संदेह में पड़गये कि जीवित रहेंगे या नहीं १० छोटा कोट गिरता है और कहीं पर ११ बड़ा कोट छिक कर १२ कांगरे उछटते हैं 'जो कोट बीस हाथ से नीचा होवे उसको प्राकार और इससे बड़ा होवे उसको वप्र कहते हैं और मतांतर से धूल कोट का नाम भी वप्र है' कहीं पर १३ बुरजों के १४ स्तम्भ गिर कर १५ खाइयों को पूरण करके उफलते हैं ॥ १२ ॥ अग्नि लग कर लदाव और मंडप (गुंमज) टूट कर उनके १६ पत्थर गीधनियों के समान आकाश में चढते हैं और १७ बारूद के साथ धुज कर महलों के पत्थर निकलते हैं, तोपों से कट कर १८ नगर के द्वारों से छूट कर उन के शिखर गिरते हैं और अग्नि लग कर १९ अग्निकण उड़ने से कितनी ही चित्रशालियें गिरती हैं ॥ १३ ॥

छहरात गोलन थंभ के थहरात छत्रिन छुट्टिकैं ॥
छिकि जात छप्पर छज्ज के टिकि जात टप्पर तुट्टिकैं ॥
अंगार छार[3] अगार द्वार बजार बीथिन उच्छरैं ॥
न रहैं निवानन छिज्जि नीर समीर[5] ग्रीखमलौं सरैं[6] । १४ ।
जरि जात पर परि जात गिद्धनि डोरि तुट्टत चंगज्यों ॥
झरिजात झंडन दंड के गिरिजात केकिय भंगज्यों ॥
धंकि धाम धामन धुम्मतैं पुररामैं बिब्भल कुक्कयो ॥
इम हल्ल दुरजनसल्ल करि हरवल्ल झेल्लन[11] झुक्कयो ॥ १५ ॥
दै दै निसैनिन बीर के हमगीर अट्टनपैं[12] चढे ॥
के दोरि अररन[13] तोरि अग्गलौं पोरि मग्ग लगे बढे ॥
वह हड्ड छित्वर आय चैत्वर[15] धीर धारनमैं धस्चो ॥
करि जंग कछु विधि झारि खग्ग सु फारि फोजहिं निक्खस्यो१६
संग्राम नृप यह काम[16] सुनि तब रामपुर तजि भज्जयो ॥
इत जित्ति दुरजनसल्ल हत्तन[17] लुट्टि पत्तन[18] गज्जयो ॥
बरजोर कूरममोर कौं गिनि भीति मानससौं भिरी ॥
जयसिंह वह लिय रानसौं इम आन अप्पन नाँ फिरी ।१७।

१गोलोंके गिरने[बरसने]से छतरियोंके थंभ धूज कर छूटते हैं, कितने ही छपरे और छाजे छिकते हैं और कितने २ टापरे तूट कर ठहरजाते हैं दरवाजों के बाहर बजार में और ४ गलियों में अंगारे और ३ भस्म उछलती है निवाणों में छीज कर पानी नहीं रहा और ग्रीष्मऋतु के समान (गरम) ५ पवन ६ चलने लगा ॥ १४ ॥ जैसे डोरी तूट कर ७ पतंग [कनकउवा] गिरै तैसे पंख जल कर गीधनियें गिरती हैं कितने ही ध्वजाओं के दंड जल कर ऐसे गिरते हैं जैसे मरेहुए ८ मयूर ऊपर से गिरैं ९ घर घर जल कर धुवां से घबराया हुआ १०रामपुर फूका इसप्रकार दुर्जनशाल हल्ला करके सेना के अग्रभाग को ११ झेलने को बढ़ा॥१५॥१२बुरजों पर चढे और कितने ही १३ कँवाड़ों को और १४ आगळों (अर्गला, भागळ) को तोड़ कर द्वार के मार्ग लाग कर बढ़े वह हाडा छीतरसिंह १५ चौक में आकर ॥ १६ ॥ १६ छीतरसिंह के निकलजाने का कार्य सुन कर १७ हाथों से १८ नगर को लूट कर १९ कछवाहों के पति (जयसिंह) को बलवान जानकर २० मन में भय हुआ [डरा] ॥ १७ ॥

(दोहा)

कोटापति नहिं अमल किय, कूरम नृप भय भार ॥
लुट्टि रामपुर *जाम लग, आयउ अप्प †अगार ॥ १८ ॥

[षट्पात्]

चंद्राउत सीसोद नृपति संग्रामसिंह इत ॥
पुर बिंझोली आय रह्यो चिंतत प्रपंच चित ॥
मातुल[1] हो परमार नाम विक्रम बिंझोली[2] ॥
इहिं कारन[3] तँहँ आय खूब भज्जत कटि खोली ॥
धनकुमरि नाम जननीहु तस ही पीहर[4] इम तत्थ रहि ॥
दिन कछु बिहाय दिल्लिय गयो साहमुहम्मद सरन गहि ।१९।

(दोहा)

कछु बसु[5] हुंडी नजरि करि, लिय निज भुम्मि लिखाय ॥
दिय कोटा आमैर दुव, बनि बनि पिसुन बताय ॥ २० ॥
कछु दिन रहि निज पुर क्रम्यौं[6], पटा मुलक सब पाय ॥
सरँनि[7] मध्य जयसिंह सो, मार्यो चूक[8] कराय ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

तदनंतर[9] सक बान अठ्ठ सत्रह१७८५ संवच्छर ॥
अँमा[10] अहर्गन[11] पोस भयउ सुत पुनि कूरम घर ॥
रानाउति जैठरज[12] नाम माधव नृप नंदन ॥
सुनत खवरि जयसिंह घुम्मि मंडिय उच्छव घन ॥
दिय द्विजन दान रुप्पय अयुत१००००कथित[13] रीति जप जज्ञ करि ॥
सुत प्रसवकर्म[14] साद्धिय सकल आमनाय अनुसार[15] सरि ।२२।

---

*एक पहर पर्यन्त †घर ॥ १८ ॥ १मांमा २बीझोली नामक नगर में ३इसकारण ४पिता का घर ॥ १९ ॥ ५ धन ॥ २० ॥ ६ चला ७ मार्ग में ॥ २१ ॥ ८ जिस पीछे ९ विक्रम के शक के १७८५ के वर्ष में १० अमावास्या के ११ दिन १२ उदर से उत्पन्न १३ कहीहुई रीति से १४ जातकर्म १५ वेद के अनुसार चलकर ॥ २२ ॥

(दोहा)

कछवाही भ्रातहिं कहिय, उदयनैर तुम *पत्त ॥
†भामजको संबंध भो, वा नहिं अक्खहु ‡अत्त ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहि कूरम तब कुप्पि §भाम कृत्रिम तिहिं भाखत ॥
हमतैं ¶इम नहिं होय बदहु पतितैं जु करहिं वत ॥
कछवाही सुनि कहिय तुमहु कृत्रिम हम जानत ॥
बिजयसिंह मम अनुज¹ सत्य पै जग नहिं मानत ॥
यह अक्खि अनुज कटिबंध² गहि खंजर³ खैंचन करिय कर ॥
झंझटि⁴ छुराय कूरम झटिति⁵ आयो बाहिर दै अरर⁶ ॥२४॥

दोहा ॥

कछवाही पिच्छैं निकसि, द्रुत⁷ निज सत्थ⁸ बुलाय ॥
चढि सपुत्र⁹ स्यंदन चली, स्वामी¹⁰ निकट रिसाय ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

जामिपै¹¹ प्रति जयसिंह तबहि चर¹² भेजि कहाई ॥
पहुँचे सब तुम पास भलैं बिरचहु मनभाई ॥
हत्या देत जु हमहिं ततो हम करहिं लिखित तक्कि ॥
नतो अप्प गृह जाहु करहु चित चाह पाप पक्कि ॥
यह सुनत भूप पच्छी कहिय अप्प निवेरहु कलह यह ॥
हैं सदा लिखित अनुसार हम अवर न मन जानहु असह ।२६।
सुनत एह जयसिंह मुख्य मंत्रिय गजामल्ल ॥
पठयो आक्खि प्रपंच लैन भानेज छन्न छल ॥

---

* गये सो † भानजे का ‡ यहां कहो ॥ २३ ॥ § बहिनोई [बुधसिंह] इसको करतबी कहते हैं ¶ इसप्रकारका १ मेरा छोटा भाई २ कमरबंधा पकड़कर ३ शस्त्र विशेष ४ झिटका देकर ५ शीघ्र ६ किवाड़ देकर बाहिर आगया ॥ २४ ॥ ७ शीघ्र ८ अपने साथ को ९ पुत्र सहित रथ पर चढ़के १० बुधसिंह के पास ॥ २५ ॥ ११ बहिनोई बुधसिंह से १२ हलकारा भेजकर ॥ २६ ॥

तब खत्री तँहँ जाय कह्यो कारन रानी प्रति ॥
सुरझ्यो कलह समस्त *अनुज तुम पक्ष करिय अति ॥
कहिहो तँहाँहि सगपन करहिँ बुंदीसहु नहिँ अब[1] भिमन॥
करि लिखित छिन्न जयसिंह कर किन्न सबहि उररीकरन । २७ ।

पादाकुलकम् ॥

तब रानी नृप हिंतु कहाई, भाँनज[2] निजहिँ बुलावत भाई ॥
सुरझ्यो जो बिग्रह हित सत्थहि, तो भेजहिँ अप्पन सुत तत्थहिँ।२८।
तब बुंदीस कह्यो रानी प्रति, तुमरो अनुज बलिष्ठ बढ्यो अति॥
हम सुरझी उरझी सुन चिन्ही, अक्खी उन जिमतिम लिखि दिन्ही
यह सुनि जान्यौं साम भयो अब, समुझ्यो रानी द्रोह मिटयो सब॥
तबहि भवानीसिंह स्वीय सुन, मातुल ढिग पठयो खत्री जुत।३०।
राजामल्ल लै तिहिँ तहँ आयो, कुम्म सु ताकँहँ हतन कहायो ॥
दुर्ग माँहिँ इक दुर्ग भयंकर, नाम चिल्हटोला काराघर ॥ ३१ ॥
तहँ चढाय बालक वह मार्यो, नृप कूरम काहू न निवार्यो ॥
एह कुमार हमहु अँनुमान्यौं[10], पै असत्य सत्य न पहिचान्यौं ॥३२॥
कुटिल कुसील[11] लखत कछवाही, इम हम मति कृत्रिम अवगाही[12]
पुनि बुंदीस नष्ट[13] मति पिक्खत, देखि हेतु अवरहु ऋत[14] दिक्खत ३३
प्राचीनन[15] यह कथ इम रक्खी, यातैं हमहु अनिश्चय[16] अक्खी ॥

---

*तुम्हारे छोटे भाई [जयसिंह] ने तुम्हारा बहुत पक्ष किया १ उदास ? अंगीकार [स्वीकार] ॥ २७ ॥ २ बुधसिंह से मेरा भाई जयसिंह ३ अपने भानजे को बुलाता है ४ तहां ॥ २८ ॥ ५ बलवान् ६ नहीं देखा ॥ २९ ॥ ७ अपने पुत्र को मामा के पास राजामल्ल खत्री सहित भेजा ॥ ३० ॥ ८ कैद [जेल]खाना॥३१॥ ९ राजा जयसिंह को किसीने नहीं रोका १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि इस कुमार के लिये हमने भी अनुमान किया ॥ ३२ ॥ ११ बुरे स्वभाववाला १२ कृत्रिमपन का ही थाह लिया अर्थात् कारनंची ही जाना १३ नष्ट बुद्धि वाला १४ सत्य दीखना है ॥ ३३ ॥ १५ ख्याति लिखनेवाले प्राचीन लोगों ने इस कथा को इसीप्रकार रक्खी है ॥ ३४ ॥ १६ इसकारण हमने भी संदेहवा-

*सुत सुनि सूनु कैद हिय दाही, किन्नौं कलह कुप्पि कछवाही३४
पति सन कहिय हन्यौं तुम पुत्रहि, यातैं तजिहौं देह अमुत्रहि ॥
इम कहि अन्न त्याग अवधार्यो, व्याकुल नृप तब सोक बिचार्यो३५
मतिजड़ भूप कँउल निश्चित मन, नारिन नैंक उदास सहैं नन ॥
बिनयादिक करि कोप बहावैं, अंतर तबहि इष्ट सुख आवैं ।३६।
ललना माल कहैं सु न लुप्पैं, करैं प्रनंति जब जब कोउ कुप्पैं ॥
यह बुंदीपति सील अपूरब, तातैं करि करि प्रनति कही तब ३७
सत्रुन हत्थ तुमहि सौंप्यो सुत, अब क्यौं रिस हम किय उ कहा उत
कहिहौ पुनि सोही हम करिहैं, असन लेहु इच्छित अनुसरिहैं३८
यह सुनि दिय रानी प्रतिउत्तर, कुमर सु मम मंडहु यह कग्गरं ॥
तब नृप लिख्यो कलह दुख टारक, कछवाहीको एह कुमारक३९
कलह उग्र रानी पुनि किन्नौं, निर्छिनै अन्न दिनैंन बिच लिन्नौं ॥
इत पुनि गरभ धर्यो चुंडाउति, होवत जास जग्य जप आहुति ।४०।

उति १ हुति२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अब तक्कत कूरम नृप याकँहँ, कब सुत होय मंगिहौं ताकँहँ ॥
कुमर भयँ जामिजँ गति कैंहौं, दुहिता जो स्वसुतहिं तो दैहौं ।४१।

चोपाई ॥

कूरम इम हेरत जानि कौंल, रक्खे भट जामिकँ रक्खवाल ॥
घुमडि रहे डेरन जे घेरि, नृप सुत लोभ लयो मन फेरि ।४२।

ली ही रक्खी है * शीघ्र पुत्र को कैद सुनकर ॥ १ परलोक के अर्थ २ धारण किये ॥ ३५ ॥ ३ मूर्ख बुद्धिवाला ४ वाममार्ग में मन का निश्चय करनेवाला ५ नहीं चाहता ॥ ३६ ॥ ६ स्त्रीमात्र ७ विशेष नम्रता ॥ ३७ ॥ ८ तुम्हारा चाहा हुआ करेंगे ॥ ३८ ॥ ९ वह कुमर मेरा था १० यह पत्र लिख दो ११ टालने [मेलने] वाली ॥ ३९ ॥ १२ कठिनता से १३ कई दिनों में ॥ ४० ॥ १४ भानजे की गति हुई सो ही करूंगा अर्थात् मार डालूंगा १५ बेटी हुई तो अपने बेटे ईश्वरीसिंह को परणादूंगा ॥ ४१ ॥ १६ बालक जन्मने के समय को १७ पहरायत १८ बुधसिंह ने पुत्र के लोभ से जयसिंह से मन फेर लिया॥४२॥

[षट्पात्]

तदनु ईश्वरीसिंह सुपहु जयसिंह पट्ट सुत ॥
रान कुमर जगतेस सुता ब्याह्यो हिन संजुत ॥
सर बसु सत्रह१७८५ साल माघ सित लगन मिलायो ॥
जयहि उदैपुर जाय उचित उपयम करि आयो ॥
इत दक्खि मुलक्क मालव किय इ मरहट्ठन मंडू अमल ॥
आजलौं दूर सुनते इनहिं पविसन अब लग्गे प्रबल ।४३।

दोहा ॥

रन अवरंगाबाद रचि, पहिलैं कटक प्रचारि ॥
दयाबहादुर बिप्र वह, सूबापति लिय मारि ॥ ४४ ॥

(षट्पात्)

इहिं द्विज दिल्लिय अग्ग मेटि हिंदुन दुख दिन्नौं ॥
साह हुकम पुनि पाय कुंच दक्खिन सिर किन्नौं ॥
तीन अयुत३०००० तुरंगसवार सुभट निज संग सिधारे ॥
सहँस बीस२०००० पुनि साह कटक भट दिन्न करारे ॥
कोटा नरेस प्रति पत्र लिखि दुज्जनसल्लहु संग दिय ॥
इन जाय सरित रेवा उतरि कछुदिन पार मुकाम किय४५
कोटापति करि कपट तत्थ कछु काल बितायो ॥
द्विज ढिग निज दल रक्खि अप्प कोटा चलि आयो ॥
उत अवरंगाबाद लुट्टि मरहट्ट चलाये ॥
द्विज त्रिउ बेर दल पिल्लि पिल्लि रंचक ठहराये ॥
अति जोर बढिय मरहट्ठ अरि तब द्विज सम्मुह झिल्लये ॥
पासक कृपान चोपरि प्रथित खेत प्रान पँन खिल्लये ।४६।

---

१ जिस पीछे २ राणा संग्रामसिंह के पुत्र जगतसिंह की पुत्री ३ सुदि ४ विवाह ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ५ आगे ६ घोड़ों [सवार] ७ सेना ८ नर्मदा नदी ॥ ४५ ॥ ९ तहां कुछ समय बिताया १०अपनी सेना ११ब्राह्मण तीन वार सेना भेजकर १२ खड्ग रूपी पासों से युद्धक्षेत्र रूपी १३ प्रसिद्ध चोपड़ में १४ प्राणों का दाव

दयाबहादुर बीर बिप्र नागर सूबा पति ॥
खूब झारि रन खग्ग मारि बहु सत्रु महामति ॥
तिल तिल तेकन तुट्टि बिरचि अच्छरि लगबाँहीं ॥
गंजि अरिन करि गरद मरद पत्तो दिवे[1] माँहीं ॥
जिम जिम प्रमाद मिच्छन जगिय भोगेन[2] जिम जिम भुल्लये ॥
तिम तिम कटाच्छ[3] तिरछे बिरचि दिल्ली जारन बुल्लये ।४७।

(दोहा)

मारि द्विजहिं मंडत अमल, रेवा लंघि रिसाय ॥
मरहट्ठन मालव लयो, उज्जइनी लग आय ॥ ४८ ॥
लै मंडू दसउर लियउ, निज निज थानाँ रक्खि ॥
सूबापति गुजरातको, सोहु मिल्यो हित सँक्खि[4] ॥ ४९ ॥
तबके आवत दक्खिनी, भुव दब्बत बरजोर ॥
अब कूरम कहि मुक्कल्यो, तजहु रामपुर मोर ॥ ५० ॥
जानि इनहु जयसिंहको, रामपुर सु दिय छोरि ॥
अवर[5] देस उज्जैन लग, बढि बढि लिन्न बहोरि ॥ ५१ ॥
कूरम तब मुक्कलि कँटक[6], अमल रामपुर किन्न ॥
मरहट्ठन सँन छन्न मिलि, दिल्ली सिर भरदिन्न[7] ॥ ५२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावदुर्जनशल्यरामपुरलुण्टन १ रामपुरपलायितदिल्लीगतरावसंग्रामसिंहपुनारामपुरलेखन २ प्राप्तरा-

---

लगाकर खेला ॥ ४६ ॥ १ स्वर्ग में गया २ भोग भोगने में ३ कटाक्ष ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ४ हित की साक्षी [गवाही] से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५ अन्य ॥ ५१ ॥ ६ सेना भेजकर ७ से ८ भार ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराव दुर्जनशाल का रामपुर को लूटना १ रामपुरा से भागेहुए राव संग्रामसिंह का दिल्ली जाकर पीछा रामपुरा लिखाना, २ जयपुर के राजा जयसिंह का रामपुरा पाकर पीछे आते हुए राव

मपुरप्रत्यागच्छज्जयपुराधीशजयसिंहस्य रावसंग्रामसिंहच्छलघात-मारण ३ जयसिंहकनिष्ठसूनुमाधवसिंहजनन ४ जयसिंहस्य स्वभागिनेयबुन्दीपट्टराजकुमारभवानीसिंहमारण ५ जयसिंहपट्टकुमारेश्वरीसिंहादयपुरविवाहन ६ गृहीतोज्जयनीकमहरवदशपुरपुरावध्याक्रमणवर्णनमेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितः सप्तषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६७ ॥

[दोहा]

अभयसिंह मरुईस इत, मरुधर राज जमाय ॥
स्वामिधरम वेहि साहको, अतिजव दिल्ली आय ॥ १ ॥
इत नृप कानीखोह रहि, तज्यो वचन गहि गाढ ॥
सक खट वसु सतह१७८६समय, आयउ अब आषाढ॥२॥

[पद्धात]

असित पक्ख आषाढ मास सनिवार चउद्दसि१४ ॥
चुंडाउति उर कुमर भयो दहमास जठर वसि ॥
धात्रेयी नृप निकट उल्व सहितहि गहि आन्यों ॥
कुल्ली नीति विचारि जनन अबलग नहिं जान्यों ॥
पै अब न छन्न रक्खन उचित कोउ न पुनि काहिं कुमर॥
॥ ३ ॥

अग्गैं जबहि *भीम लुट्टी भुव, †तनया तब सूरजकुमारि हुव ॥
रिपु[1]भयसौं सुत सुत करि राखी, भावतसिंह भये[2] सुत भाखी ॥ ४ ॥
जहँ[3] सुताहिं सुत सुत कहि ठानैं, तिहिं पुनि सुता कहैं जग मानैं ॥
सुत[4]हिं सुता[5] कहि कहि जहँ रक्खहिं, ताहि बहुरि कोउ न सुत अक्खहिं[6] ॥
हुव संतान सबन यह जान्यौं, पुत्री सुत अबहि न पहिचान्यौं ॥
पै[7] छन्नैं रक्खैं नहिं भल मत, ख्याति[8] कियैं कूरम[9] इहिं मंगत ॥ ६ ॥
हमरी मति[10] सु फुरत प्रकटावन, पुनि कहिहो सु करहिं किंकरपन[11] ॥
धात्रेयैं[12] जु अनिरुद्ध नरेसह, देवकरन अभिधान[13] हुतो वह ॥ ७ ॥
ताकी इहिं तनया[14] धातेई, कोबिद[15] नीति कही इम कोई ॥
सुहि पुनि नाजर अमर सुनाई, बंटहु सुत भव[16] प्रकट बधाई ॥ ८ ॥
भावसिंह नृपको यह नाजर, बय नय[17] वृद्ध रु राजकाज बर[18] ॥
अग्गैं नृप अनिरुद्ध समय जब, अंतहपुर[19] कोउ बेलैं[20] चल्यो तब ॥ ९ ॥
सिबिका छोरि अपुब्ब[21] सयानी, रथहि चढी राजाउति रानी ॥
चिक्कन ओट कछु लखत प्रपंच[22]कें, बाहिर कढी अंगुली रंचकें[23] ॥
कहि तब नाजर अमर करौरी[24], छरी[25] तीन३ अंगुलि पर मारी ॥
उपालंभ[26] अनिरुद्ध भूप दिय, नाजर तबहि जोरि कर अक्खिय ११
दासी जन अंगुलि मैं मानी, रानी रथ आरूढ न जानी ॥

है ॥ ३ ॥ * कोटा के महाराव भीमसिंह ने † पुत्री १ शत्रु के इस भय से कि अब इनके पीछे कोई पुत्र नहीं है इसकारण बूंदी को दबालेना चाहिये २ यह कह कर प्रसिद्ध किया कि भावतसिंह नामक पुत्र हुआ है ॥ ४ ॥ ३ जहां पुत्री को ही पुत्र पुत्र कहकर रखते हैं ४ तो पुत्र को ५ पुत्री कहकर रक्खेंगे तो ६ उसको फिर कोई पुत्र नहीं कहेगा ॥ ५ ॥ ७ परन्तु ८ प्रसिद्ध करने से ९ जयसिंह इसको मांगता है ॥ ६ ॥ १० हमारी बुद्धि प्रसिद्ध करने में ही चलती है ११ नौकरपन के कारन १२ धायभाई १३ नाम ॥ ७ ॥ १४ बेटी १५ नीति चतुर ने कई वार्ता कही १६ पुत्र के जन्म की ॥ ८ ॥ १७ अवस्था और नीति दोनों में वृद्ध १८ श्रेष्ठ १९ जनाना २० किसी बाग में ॥ ९ ॥ २१ अपूर्व २२ शहर आदि की रचना देखने को २३ थोड़ी सी ॥ १० ॥ २४ करड़ी (कठिन) २५ छड़ी २६ ओलंभा ॥ ११ ॥

यातैं रही अंगुली अक्खय[1], नहिं तो लैतो कट्टि रीति नय[2] ॥ १२ ॥
अैसो तुंजक[3] हुतो वह नाजर, किन्नौं तिहिं यहँ अरज जोरि कर
बुंदिय जो बारिधिं बिच बोरहु[4], छन्नैं रक्खि ततो नय[5] छोरहु ॥१३॥

(षट्पात्)

सु[6] सुनि भूप बुंदीस कुमर जाहिर तब किन्नौं ॥
दुंदुभि[7] बज्जिग द्वार द्रव्य बिप्रन बहु दिन्नौं ॥
गणकन[8] अरु नेगिन[9] कुम्भ नृपसौं हु कहाई ॥
सत१०० सत१०० रूप्पय सबन दई जयसिंह बधाई ॥
बुद्धहि[10] कहाय पठई बहुरि सौंपहुँ अब हम हत्थ सुव[11] ॥
गहि लिखित रीति[12] लखि बंधुगन धारहु अवरहि अंक ध्रुव[13] १४

[दोहा]

कहि पठई बुधसिंह तब, पच्छी छलपाज बिसास[14] ॥
करन देहु जातक करम[15], पुनि भेजहिं तुम पास ॥ १५ ॥

(षट्पात्)

जातकरम सब करिय तनय उच्छव[16] तदनंतर[17] ॥
सुन्यौं कुमर संसार नाम उम्मेदसिंह वर ॥
बहुरि कुम्भ इक बनिक[18] सचिव पठयो हीरामल ॥
कह्यो देहु मुहिं कुमर छोहि[19] तब कियउ रंपात[20] छल ॥
अक्खिय रिसाय बुंदिय अधिप पुत्रहु कहिँ मंगे मिलत ॥

---

१ क्षय रहित २ न्याय की रीति से अंगुली काटलेता ॥ १२ ॥ ३ प्रबंधकर्ता (यह यावनी शब्द अनेकार्थ वाची है, जिसके अर्थ दबदबा शान शोकत प्रबन्धकर्ता आदि कई हैं) ४ समुद्र में डुबोना होवे तो ५ नीति ॥ १३ ॥ ६ सो ७ नगारे बजे ८ ज्योतिषियों और ९ नेग पानेवालों ने जयसिंह से भी १० बुधसिंह का ११ सुत [पुत्र] १२ लिखावट की रीति से भाइयों के समूह में से १३ निश्चय किसीको गोद रखलो ॥ १४ ॥ १४ छल से विश्वास देकर कहलाई १५ जन्म समय के वेद विहित कार्य ॥ १५ ॥ १६ पुत्र के उत्सव का १७ जिस पीछे १८ बनिया १९ क्रोध करके २० प्रसिद्ध

बरजोर लेहु हो तुम प्रबल हम रन इच्छत[1] खग्ग हत[2] ।१६।
सुनत एह जयसिंह घल्लि कर मुच्छ रिसायो ॥
पन्नग[3] पय दब्यो किं[4] छुधित सद्दूल खिजायो[5] ॥
तमकि[6] भूप ततकाल[7] सचिव राजामल बुल्लयो[8] ॥
कह्यो कहा करतव्य[9] खिज्जि अब उन छल खुल्लयो ॥
करि उचित लेहु खत्री कहिय गृहबासिन[10] इन हनहु नेन[11] ॥
इच्छितहिं[12] राज बुंदिय अरपि प्रथित[13] निबाहहु लिखित पन[14]१७

(दोहा)

तब छित्वर[15] प्रति इंद्रगढ, कुम्म लिखी यह चाहि ॥
देवसिंह भेजहु कुमर, बुंदी अप्पहिं ताहि ॥ १८ ॥
प्रथम राज तुमको मिलत, जो यह तुमहिं रुचै न ॥
तो हम अवरहिं अप्पिहैं, बदहु न पिच्छैं बैन ॥ १९ ॥
छित्वरसिंहहु तबहि लिखि, पठई कूरम गेह ॥
हम किंकर बुंदीसके, अनुचित करहिं न एह ॥ २० ॥
अवरहु गोपीनाथ कुल, नट्यो अनुक्रम पाय ॥
बुंदीतैं[16] कूरम तबहि, सालम[17] लिन्न बुलाय ॥ २१ ॥
कह्यो धरहु तुमरो कुमर, बुंदी गद्दिय बीर ॥
लखहु एह जामिर्प लिखित, हम सहाय हमगीर ॥ २२ ॥
सठ सालम यह लोभ सुनि, बुल्ल्यो[19] कुमर प्रताप ॥

---

१ युद्ध करना चाहते हैं २ तरवार मारकर ॥ १६ ॥ ३ सर्प को पैर से दबाया ४ किंधौं ५ भूखे सिंह को क्रोधित किया ६ क्रोध करके ७ तुरन्त ८ बुलाया ९ क्या करना चाहिये १० अपने घर में बास किये हुओं को ११ मारो मत "यहां अधिक निषेध के लिये दो नकारों का प्रयोग है सो अन्य स्थानों में भी जहां 'नन' शब्द आवै वहां अधिक निषेध समझना चाहिये" १२ चाहे जिस को बून्दी का राज्य देकर १३ प्रसिद्ध लेख [लिखावट] की १४ प्रतिज्ञा निबाहो ॥ १७ ॥ १५ छीतरसिंह के नाम १६ जयसिंह ने ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ १७ सालमसिंह को ॥२१॥ १८ बहिनोई[बुधसिंह]की लिखावट ॥२२॥ १९ बुलाया

नय बिचारि सोहू नट्यो, उच्चारि दुरित[1] अमाप ॥ २३ ॥
जड़ सालम बुल्ल्यो जबहि, मध्यम कुमर दलेल[2] ॥
करउरतैं आयो कुटिल, मन इच्छित लहि मेल ॥ २४ ॥
अभयसिंह इत मरुअधिप, बखसि साह बसु[3] जात,
सरबुलंद सिर मुक्कल्ल्यो, दै सूबा गुजरात ॥ २५ ॥
दिल्लीतैं मारव[4] नृपहु, आयो जैपुर अत्थ ॥
वरखनलग[5] जैपुर बस्यो, हो जयसिंहहु तत्थ ॥ २६ ॥
तब दरकुंचन[6] आय तँहँ, मरुपति दिन्न मिलान[7] ॥
इहिं सुनि कानीखोहतैं[8], चढि आयो चहुवान ॥ २७ ॥
मरुपतिसौं अति हेत मिलि, कहि सब लिखित कुकाम ॥
जयनिवास[9] उपबन निकट, किय बुंदीस मुकाम ॥ २८ ॥

मुक्तादाम ॥

मिले मरुभूप रु बुद्ध बिनोद, परस्पर डेरन आय प्रमोद ॥
सु हेतकरि गोठिनं[10] जिम्मन साजि, दये लिय दोउन रथ्थारन[11] बाजि २९
मरू प्रभु डेरन कुम्महु आय, सुतापति[12] जानि मिल्यो सरसाय[13] ॥
कह्यो करि पावन जैपुर जेवँ, मंभालय[14] भोजन[15] कैं[16] चलिये वँ[17]।३०।
कह्यो मरुभूपहु यौं सुनि तत्थ, चलैं हम बुद्ध बलापति[18] सत्थ ॥
ठगे इनकौं तुम जानि प्रमत्त, हमैं इनतैं हित हेय[19] न अत्त ॥ ३१ ॥
यहै सुनि कूरम अक्खिय एह, चुक्यो मिलि जामिपतैं[20] यह देह ॥
यहै कहि लै मरुभूपहिं जाय, दई बिनु जामिपै[21] गोठि जिमाय॥३२॥

---

१ पाप ॥ २३ ॥ २ दलेलसिंह को ॥ २४ ॥ ३ बादशाह ने धन का समूह देकर ॥२५॥ ४ मारवाड़ का राजा ५ यहां से कई वर्षों से वास किया हुआ ॥२६॥ ७ मुकाम ॥ २७ ॥ ८ जयसिंह को लिखावट कर देने का खोटा कार्य कह कर ९ बाग के समीप ॥ २८ ॥ १० गोठें ११ हाथी घोड़े ॥ २९ ॥ १२ अपनी पुत्री का पति जानकर १३ रस युक्त [प्रसन्न होकर] १४ शोभा १५ मेरे घर १६ भोजन करने पर १७ अब चलिये ॥ ३० ॥ १८ यह बुधसिंह का विशेषण है १९ त्याज्य नहीं है ॥ ३१ ॥ २० जामाता से यह देह मिल चुका अर्थात् अब कभी नहीं मिलसक्ता "यह कछवाहा का कथन है" २१ बिना बुधसिंह के ॥३२॥

चल्यो लहि कूरम सिक्ख कबंध, बयो नृप बुद्धहि[1] फेरि प्रबंध ॥
रहो तुम कूरमको यह जानि, कछू करिहै मम भद्र[2] प्रमानि ।३३।
सु तो सब गो तुमरी लिपि[3] संग, अबै नँन[4] रक्खहु राज्य उमंग ॥
चलो मम सत्थहि जो चहुवान, ततो इन्द्र[5] ठिल्लहिं लै तुम थान ३४
यहै हु न मन्निय बुंदिय ईस, रची मरुभूपतिहू कछु रीस ॥
क्रम्यो[6] करि कुंचन धँन्व[7] कबंध, रच्यो धर गुज्जर[8] लैन प्रबंध।३५।
इतैं सठ संभर[9] मोह[10] अरोहैं, क्रम्यौं निज डेरन कानियखोह ॥
दई पुनि बुद्धहिं कुंम्म[11] कहाय, भयो सुत औरस सौंपहु भाय[12]।३६।
रु लै सुत सालम[13] अंक दलेल्लैं[14], मनौं इहिं पुत्र गिनौं लहि मेल ॥
न मन्निय फेरिहु बुंदिय नाह, कुप्यो गहि मुच्छ तबै कछवाह ३७
दलेल बुलायउ सालम नंद, मिल्यो नृप कूरम प्रीति अमंद[15] ॥
बरब्बर गद्दिय पैं बइठारि, कह्यो तुम बुंदिय भूप हँकारि[16] ॥३८॥
अबैं तुमकों दुहिता हम अप्पि, थिरा[17] निज भुग्गन भेजहि थप्पि।
बिराजहु बुंदिय गद्दिय जाय, सबै हम रान[18] समेत सहाय ॥३९॥
रह्यो अभिसेक सुतो लहि कौल[19], सबै साधिहैं पुनि सत्रुनसाल।
यहै कहि सालमसिंह बुलाय, प्रबोधितँ[20] बुंदिय दिन्न पठाय ।४०।
कह्यो बुधसिंहहिं आन न देहु, सबै तस राज्य रजू करिलेहु ॥
सज्यो तब सालम बुंदिय सीस, हराम[21] तजी नय धर्म हदीसँ[22] ४१

(दोहा)

---

१ बुधसिंह से कहा २ कल्याण ॥ ३३ ॥ ३ लिखावट के साथ ४ नहीं ५ जयसिंह को हटाकर ॥ ३४ ॥ ६ चला ७ मारवाड़ में ८ गुजरात की भूमि लेने का ॥ ३५ ॥ ९ बुधसिंह १० अज्ञान [भूल] पर सवार होकर ११ जजसिंह ने कहलाया १२ लिखावट की रीति पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ सालमसिंह के पुत्र १४ दलेलसिंह को गोद लेकर पुत्र मान कर रहो ॥ ३७ ॥ १५ बहुत प्रीति से १६ ललकार करके कहा ॥ ३८ ॥ १७ अपनी [बुन्दी की] भूमि भोगने को १८ उदयपुर के राणा सहित ॥ ३९ ॥ १९ समय पाकर २० समझाकर ॥४०॥ २१ उस हरामी ने नीति और धर्म की २२ सीमा [मर्यादा] छोड़ दी ॥ ४१ ॥

यह सुनि कानीखोहतैं, बुद्ध नरेसहिं छोरि ॥
मुरि मुरि सालममैं मिले, बहु भट सचिव बहोरि ॥ ४२ ॥

पद्धतिका ॥

इक बनिक नाम बानाँ१ अधर्म, किय मुख्य सचिव जोरत कुकर्म
यह जोधराज *जामिज अनीति, पलट्यो सठ सालमपैं सप्रीति ४३
सुखराम२ नाम कायत्थ स्वान, भरि लोभ चोधरी उदयभान३ ॥
नागर द्विज इक जगदीस४ नाम, हड्डा पुनि भ्रितुव५ हुव हराम ४४
भट अनय पुंज हड्डा भवान६, थित नैर दुघारी जास थान ॥
पुनि धाइभ्रात सुभराम पाप, मुरि कियउ दुष्ट सालम मिलाप ४५
अरु सठ अलोदपुर पति अमान, मातुल सु महारामाँ[?]भिधान ७ ॥
इत्यादि सचिव भट सठ अनेक, टरि टरि सालम विच गय सटेक ४६
इत किय प्रपंच कछवाह राय, दिल्ली सु अरज पठई लिखाय ॥
बुंदीस बुद्ध आलस बहंत, चित अब न साह सेवन चहंत ॥४७॥
नहिं पुत्र[८] आहि इनके निकेंत, तँसमात भ्रातजहिं[९] राज्य देत ॥
मुहुकम्म बंस सालम अठेल, बर कुमर तास मध्यम दलेल ।४८।
अति गुन प्रपंच रन पटु उदार, विक्रांतँ सुभग बर मति बिचार ॥
बुंदीस राज्य अब देत ताहि, अरु मरुप रान हम मतिहु आहि४९
तसमात पटा मुद्रितँ कराय, मम निकट देहु हजरत पठाय ॥
सुनि साह मुहुम्मद अरज एह, लिखवाय पटा पठये सनेह ।५०।
बुंदिय दलेलसिंहहिं समप्पि, बुधसिंह पट्ट इहिं देहु थप्पि ॥
तुम जाहु[११] कुम्म मालव सु देस, आवत गिनी[१२]मैं रोकहु असेस ५१
पठये हम रुप्पय त्रि सासि१३०००००लक्ख, इन बल अनी[१३]कें विरच-

---

*भानजा ॥४३॥ ४४ ॥ १ अनीति का समूह ॥ ४५ ॥ २ नाम ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ३ है ४ घर में ५ इसकारण से ६ भतीजे को ॥ ४८ ॥ ७ वीर ८ मेरी सलाह भी है ॥ ४९ ॥ ९ इसकारण से १० छाप कराकर ॥ ५० ॥ ११ हे जयसिंह १२ सब दावुओं को ॥ ५१ ॥ १३ सेना

हु अपक्ख[1] ॥

उज्जैन वार आवन न देहु, लगि पिठ्ठि समस्तन मारि लेहु॥५२॥

कूरम नरेस तव भुज भरोस, हैं हम निचिंत अति मुदित होस ॥

इम लिखि पठाय फरमान साह, कछवाह बंचि मंडिय उछाह॥५३॥

॥ षट्पात् ॥

बंचि साह फरमान हरखि जयसिंह महीपति ॥
रुप्पय तेरह१३लक्ख पाय मंडिग दल[2] दुम्मति[3] ॥
मनतैं मिलि दक्खिनिन अक्खि उप्पर साहायस[4] ॥
किय मालव पर कुंच बुत्थि आमिख[5] जिम बायस[6] ॥
संगहि दलेल सालम सुवन लै मंडिग दक्खिन चलन ॥
बुंदीस इत सु बिगरयो बिबिध मन्नि न उग्गन अत्थमन॥५४॥
किय बुंदीस[7] बिचार जान मालव सालक[8] जिय ॥
बिजयसिंह निज अनुज कुम्म[9] कारागृह[10] रुक्किय ॥
जाहि कह्हि बरजोर थिरहि जैपुर नृप थप्पहिँ ॥
करि फोजन एकत्त यौंहि दारिद अब अप्पहिँ ॥
यह किय प्रपंच बुधसिंह इत सो सब नृप जयसिंह सुनि॥
वह बिजयसिंह सोदर[12] अनुज पठयो[13] हानि करि अनय पुनि५५
धरमधार[14] जयसिंह करम अनुचित यह किन्नो ॥
बिजयसिंह हनि अनुज भेजि जामिप[15] ढिग दिन्नो ॥

---

१ मरहठों का पक्ष नहीं करनेवाला ॥५२॥५३॥ २ सेना ३ दुर्मति (बादशाह से रुपये लेकर उसीके शत्रु मरहठों से मिलजाने के कारण यह विशेषण दिया है)४ बादशाह की आज्ञा ५ मांस के टुकड़े पर ६ काकपक्षी की भांति ॥ ५४ ॥ ७ बुधसिंह ने ८ अपने साले (जयसिंह) के मालवे में जाने के विचार से ९ जयसिंह ने अपने छोटे भाई विजयसिंह को १० कैद कर दिया था ११ जयसिंह को १२ सगे छोटे भाई को १३ अनीति करके मारकर बुधसिंह के पास भेजदिया ॥ ५५ ॥ १४ धर्म को धारण करनेवाले १५ बुधसिंह के पास

कहिं पठई पुनि कुम्म जामि भ्रात रु तव सालक ॥
आयउ यह मम ईस प्रथित ढुंढाहर पालक ॥
इहिं विधि कहाय वह निज अनुज कटक बुद्ध ढिग दगध किय॥
पुनि लिखि पठाय बुंदिय पुरहि प्रति सालम यह मंत्र प्रिय ।५६।

(दोहा)

हम जावत मालव पहुंसि, मिलि रुक्कन मरहट्ठ ॥
बुंदिय धर तुम जतन बल, करि रक्खहु नहिं कट्ठ ॥५७॥
साह मुहुम्मद तुमहि सब, बुंदिय धर दिय बीर ॥
सठ बुद्धहिं देहु न धसन, हड्डुन पति हमगीर ॥ ५८ ॥
सालम प्रति यह लखि सबल, लै निज संग दलेल ॥५९॥
मालव उप्पर उप्परयो, मरहट्ठन हिय मेल ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपुत्रोम्मेदसिंहजयसिंहयाचन १ बुधसिंहपुत्रदाननिषेधबुधसिंहदत्तकीकृतकरवरपतिसालमसिंहमध्यात्मजदलेलसिंहार्थजयसिंहबुन्दीसमर्पण २ प्रदत्तानल्पवित्तमरुधराधीशाभयसिंहयवनेन्द्रमुहुम्मदशाहाहमदाबादोपरिप्रस्थापन ३ प्रेषितपा-

---

१ जयसिंह ने २ बहिन [कछवाही] का भाई और तुम्हारा साला ३ मेरा पति [जिसको तुम मेरा स्वामी बनाना चाहते थे वही] ४ प्रसिद्ध ढूंढाड़ देश की पालना करनेवाला ५ बुधसिंह की सेना के पास जलाया ६ यह प्यारा मंत्र ॥ ५६ ॥ ७ कष्ट नहीं है अर्थात् बादशाह की आज्ञा मंगवा देने के कारण अब बूंदी की भूमि का यत्न करना कुछ कठिन नहीं है ॥ ५७ ॥५८॥ ८ सेना सहित ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बूंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के पुत्र उम्मेदसिंह के जन्म होने पर उसको जयसिंह का मांगना १ पुत्र के देने से बुधसिंह के नाहीं करने पर करवर के पति सालमसिंह के मध्यम पुत्र दलेलसिंह को बुधसिंह की गोद रखकर राजा जयसिंह का उसको बूंदी देना २ मारवाड़ के राजा अभयसिंह को बहुत धन देकर बादशाह मुहम्मदशाह का अहमदाबाद भेजना राजा ३ जयसि-

र्थनापत्रजयसिंहदलेलसिंहार्थवुन्द्याधिकाराज्ञापत्रलेखन ४ मरहट्टवारणार्थोज्जयिनीप्रस्थातृजयसिंहस्य स्वानुजविजयसिंहमारणं त्रिंशो मयूखः ॥ ३० ॥

आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६८ ॥

दोहा ॥

सक खट बसु सत्रह१७८६समय, उज्जं मास अवदात ॥
कूरम मालव कुंच किय, मनसिज तिथि१३ उमहात ॥१॥
सुता भनाय अधीसकी, बुंदिय पति लघु बाम ॥
संगानेर समीप सो, ही असती रु हराम ॥ २ ॥
सरसू यह जयसिंह की, सुज्जकुमारि प्रसूति ॥
पलटाई कूरम नृपति, अब नवीन रचि ऊँति ॥ ३ ॥

पज्झटिका ॥

रठोरि निकट जयसिंह राय, पहु दिय दलेलसिंहहिं पठाय ॥
कहि यह सु पुत्राय तुमरो कुमार, इहिं गिनहु राज्य थंभन उदार॥४॥
सुनि यह दलेल सन अति कसूर, कहि पुत्र मिली रठोरि कूर ॥
इम कूरम संगानैर आय, सैरसू पलटाई छल सहाय ॥ ५ ॥

ह का वादशाह को अरजी देकर दलेलसिंह के नाम पर बूंदी का फरमान मंगाना ४ मरहठों को रोकने के अर्थ उज्जैण जाते हुए राजा जयसिंह का अपने छोटे भाई कैदी विजयसिंह को मारने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अड़सठ २६८ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक के २ शुक्ल पक्ष में ३ कामदेव की तिथि [ज्योतिषियों में त्रयोदशी तिथि का स्वामी कामदेव है] ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह की छोटी स्त्री ५ कुलटा [यहां अत्यन्त कुलटा होने के कारण असती, और हराम एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग किया है] अथवा पति से विरुद्ध होने के कारण हराम पद दिया है तो यह अर्थ है कि वह कुलटा और स्वामी हरामी [अधर्मिणी] सांगानेर के समीप थी ॥ २ ॥ ६ सूर्यकुमारी जननेवाली ७ क्रीड़ा [नया खेल रचकर] ॥ ३ ॥ ८ राजा दलेलसिंह को भेजा ९ यह तुम्हारा धर्म पुत्र है ॥ ४ ॥ १० बड़े अपराध सहित था तो भी ११ सासू को ॥ ५ ॥

इम दुव २दलेल कूरम *अमान, मिलि नैर निवाई दिय †मिलान॥
बुंदिय लिखि पठई पुनि बिचारि, सालम तुम मंडहु घर सम्हारि६
हम मिलन प्रथम आवहु हजूर, पुनि भुग्गहु बुंदिय ‡कटक पूर ॥
सुनि यह सठ सालम अनय सीम, कूरम ढिग आयउ मिलन काम७
मिलि उभय१गाम फ्लुड़वा मिलान, दिय कुम्म सालमहिं सिक्खदान
कहि जावहु बुंदिय तुम निसंक, अब तव कुमार सिर पट्ट२अंक८
इहिं लै हम मालव जात आज, सूबा अवंति रक्खन समाज ॥
सालम तुम जावहु गृह सधीर, बुद्धहि नन ३प्रविसन देहु बीर ॥ ९ ॥
यह अक्खि सालमहिं सिक्ख अप्पि, मालव चलि कूरम कुंच मप्पि
दल ४भरन भुम्मि फुट्टत दरारि, चंचल मतंग हल्लिय ५चिंकारि ॥१०॥
बहि सजव ६तरारन लेत बाजि, उद्धत भट मंडन कपट ७आजि ॥
रचि इम दरकुंचन कूर्मराज, कोटा धर ८संक्रमि ९प्रथित काज ।११।
नदि कुसक तीर परि दल अनंत, दिस दिसन फुट्टि गय यह १०उदंत
कोटा नृप दुज्जनसल्ल कूर, हित सचिव दोय२पठये हजूर ॥ १२ ॥
नागर द्विज बेणीराम नाम, रन चतुर व्यास दौलत्तराम ॥
इम दुव पठाय कूरम ११अनीकिं, कोटेस रचिय १२प्रनतिय कितीक १३

[षट्पात्]

कुसक छोरि पुनि कुंच करिय अग्गैं नृप कूरम ॥
सिंधु १३सरितें १४निवसथ बड़ोद किय तँहँ मुकाम क्रम ॥
उज्जइनीके १५अनुग गोड़१ उम्मट १६संभर गन२ ॥
अरु कबंध४ कछवाह६ सुपहु खिच्चिप७सुनि सेवन ॥

---

*अमाप (अत्यन्त) †मुकाम॥६॥‡पूर्ण सेना से१अनीति का मिलाप करने को ॥७॥२बुन्दी के पाट का लेख॥८॥३बुधसिंह को कदापि मत घुसने देना ॥ ९ ॥ ४ सेना के भार से ५ चीत्कार शब्द [चीसली] करके ॥ १० ॥ ६ वेग सहित ७ सेना के उद्धत वीर मार्ग में कृत्रिम युद्ध करते जाते थे ८ चला ९ प्रसिद्ध कार्य के लिये ॥ ११ ॥ १० वृत्तान्त ॥ १२ ॥ ११ कछवाहे की सेना में १२ विशेष नम्रता ॥ १३ ॥ सिंधु नामक १३ नदी १४ ग्राम १५ सेवक १६ चहुवाण

सूबाधिनाथ[1] कुम्भहिँ समुझि नृप ये सब आयउ निकेट[2] ॥
सजि सजि मिलाप जयसिंहसैन[3] किय सासन सृंणि[4] सिर करेँट[5]१४

(दोहा)

निज गढ सोपुर गोड़ नृप, उम्मट पट्टनि ईस ॥
कोटापति चंडासि कुल, संभरवाँर[6] बलीस ॥ १५ ॥
गढँराघव[7] बज्जंगगढ, ये खिचिय चहुवान ॥
नरउरपति कछवाह नृप, सुत गजसिंह सयान ॥ १६ ॥
पति ईडर रतलामपति, दुव रट्ठोर दलेस[8] ॥
इत्यादिक उज्जैनके, आये अनुग[9] असेस ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

सूबानुंग[10] नृप समय सयाने, मिलि जयसिंह सबहि सनमाने ॥
अरु कोटेस पटालय आयो, भीम जनकैं[11] भव सोक भुलायो॥१८॥
जान्यौँ दई दलेलहिँ बुंदिय, होय यहै इनकैं स्वीकृत[12] हिय ॥
इम विचारि कोटा अवनायउँ[13], बहु मुद डेरन जाय बढायउ ॥१९॥
जयैहरि[14] लै इम सबन बडे जँव[15], मंडुवपुर प्रविस्यो[16] धर मालव ॥
प्रकट दिखान लाइ किंकरपन, मिल्यो कितव[17] अंतरैं[18] मरहट्ठन२०
कछुदिन संगर[19] व्याज तँहँ कहे, बहुल[20] पिक्खि दक्खिन दल बड्डे॥
लुंबिभ[21] कटक अप्पन लुटवायो, मरहट्ठन कहँ विजय मिलायो२१
कछु धन बसनैं[22] निवेदन किन्ने, लोभ छन्न तिनके वचैं[23] लिन्ने ॥

१सूबा का पति [स्वामी] २समीप ३सेना ४जैसे अंकुश को ५अपने मस्तक पर हाथी सहन करें तैसे ॥ १४ ॥ ६ चहुवान ॥ १५ ॥ ७ राघवगढ ॥ १६ ॥ ८ सेना के ईश ९ सेवक ॥ १७ ॥ १० सूबा के साथ चलनेवाले ११ पिता भीमसिंह के मरने का शोक मिटाया ॥ १८ ॥ १२ कोटावालों को स्वीकार होजावे इसकारण १३ कोट का खणना किया ॥ १९ ॥ १४ जयसिंह १५ शीघ्रता से १६ प्रवेश किया १७ छली १८ भीतर के मन से मरहठों से मिला हुआ था ॥ २० ॥ १९ युद्ध के मिस से २० बहुत देखकर २१ उस [जयसिंह] लोभी ने अथवा लोभ करके अपनी सेना को लुटवाई ॥ २१ ॥ २२ वस्त्र २३ वचन

रहे कूरम इम साह हरामी, किय मरहट्ठ मेल भुव *कामी॥२२॥

(दोहा)

†तदनंतर करि सिक्खगो, कोटापुर कोटेस ॥
अवर रहे हाजरि अखिल, नरउर आदि नरेस ॥ २३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जयसिंहकोटागमनपूर्वकोज्जयनीगमन १ मण्डूपुरमरहट्टमिश्रितकपटिजयसिंहस्वानीकलुण्टनमेकत्रिंशो मयूखः ॥३१ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २६९ ॥

(षट्पात्)

इत बुंदिय ‡अवनीस चाहि §बुद्धह नृप चल्लिय ॥
कानीखोह मुकाम छोरि बुंदिय दिस छल्लिय ॥
रस बसु सत्रह१७८६संवत पाय अगहन सित पंचमि५ ॥
किय स्वदेसपर कुंच भुल्लि ज्यौं मृगथल जल भ्रमि ॥
चट्ठसू निवाई मग्ग चलि भगवतगढ भोरा रहिय ॥
इत सुनि उदंत सालम यह सु बुंदिपताजि सम्मुह बहिय॥१॥
उग्र अधिक कछवाह समय सरधि रु सर साहस ॥
हठ गुन साह निदेस चाप चतुरंग रंगरस ॥

---

* भूमि की कामनावाला ॥ २२ ॥ † त्रिस्पर्धी के ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह का कोटे होकर उज्जैण जाना १ मंडूपुर में मरहठों से मिलकर छली राजा जयसिंह का अपनी सेना को लुटवाने का इकतीसवां ३१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ उनहत्तर २६९ मयूख हुए ॥

‡ बूंदी का राजा § बुधसिंह १ उज्जैणा [यहां] २ सम्वत् ३ मृगतृष्णा के जल से भ्रम कर मृगस्थल में जावैं जैसे ४ चाटसू ५ समाचार ६ सालमसिंह ॥१॥ जयसिंह तो इस ७ शिकारी और समय है सो ८ भाथा है जिसमें हठ है सो ही बाण है बादशाह की आज्ञा ही हठ९ प्रत्यंचा है १० युद्ध के रसवाली सेना है

बन हड्डोतिय बिकट स्वान सालम दलेल सह ॥
लिखित बागुरा[1] लग्गि गाढ मत[2] कउल फंद ग्रह ॥
मुढ्ढपन अलस लहि मोह मन बुद्ध सु मंत्र बिबेक[3] बिन ॥
उनमत्त एँन संभर अधिप इच्छत जल बुंदिय इरिनैं ॥ २ ॥

[दोहा]

सुनि इत आवत संभरहिं[6], बनि सालम बुंदीस ॥
लै दल सम्मुह उल्लटयो, स्वामि हराम सँरीस ॥ ३ ॥
लहि सीमा बुंदिय मुलक, अड्डो ठड्ढो आय ॥
यह सुनि सठ बुंदिय अधिपं, बाम मुरयो बिहसाय ॥ ४ ॥
जैतसिंह जाजव जयी, दिल्लिय रन अँसु दिन्न ॥
तास देवसिंहह तनय, भकति स्वामि रस भिन्नैं[11] ॥
नगर पलोंधी धाम निज, वैरिसल्ल भव बंस ॥
कुसथल पंचोलास पुनि, ये दुव पुर उँत्तंस[12] ॥ ६ ॥
साह समप्पे संभरहि, चोवनगढ गाहि बाँहँ ॥
कुसथल पंचोलास ए, उभय रइजाफों[13] माँहिं ॥ ७ ॥
लब संभर दिय जैत हित, कुसथल पंचोलास ॥
सय्यद सैंन[14] दिल्लिय समर, बिरच्यो जिहिं दिव[15] वास ॥ ८ ॥
तास देवसिंहह तनय, स्वामिधरम रत सूर ॥
ताके पुर कुसथल तवहि, आयउ बुद्ध जरूर ॥ ९ ॥

सो ही धनुष है हाडोती देश रूपी विकट वन और सालमसिंह सहित दलेलसिंह ही श्वान [कुत्ते] हैं. बुधसिंह ने जयसिंह को लिखावट कर दी वह लिखावट ही १ बागर [फंदा) है जिसमें २ बाममार्ग की दृढता ही फंदों की गांठें हैं मन पर मूर्खपन और आलस्य रूपी मोह लेकर ३ बिना सलाह और बिना विचार का यह चहुवाण राजा बुधसिंह रूपी उन्मत्त ४ मृग बूंदी रूपी ५ ऊपर भूमि [मृगतृष्णा] का जल चाहता है ॥ २ ॥ ६ बुधसिंह को ७ क्रोध सहित ॥ ३ ॥ ८ बुधसिंह ॥ ४ ॥ जाजव के युद्ध में ९ जय पानेवाला १० मारागया ११ भीगा हुआ ॥ ५ ॥ १२ नगरों के मुकुट ॥ ६ ॥ १३ सिवाय (तरफी) में दिये ॥ ७ ॥ १४ से १५ स्वर्ग को गया ॥ ८ ॥ ९ ॥

बिष्णुसिंह तनया[1] बहुरि, अनुपम तनया[2] आय ॥
ये संगहि रानी उभय२, पति प्रमत्त गति पाय ॥ १० ॥
पुरबाहिर पृतना परिग[3], घन जिम डेरन घेर ॥
देवसिंह महिमानि दिय, बुद्धहिँ गोठि द्विरचेर ॥ ११ ॥
परि डेरन लग पाँमरे[4], धाम स्वीय[5] पधराय ॥
निज सरबस्व निवेदयो, देवसिंह हित दाय[6] ॥ १२ ॥
यह सुनि पुर बल्लवन अधिप, अभयसिंह अति धीर ॥
निज दल साजि आयउ निडर, बुंदियपति ढिग बीर ॥ १३ ॥
अभयदेव ये भट उभय२, बैरिसल्ल भव वंस ॥
सम्मलि हुव बुंदीसकैं, देह अरपि साजि दंस[7] ॥ १४ ॥
यह उदंत[8] सुनि इंद्रगढ, सुभट इंद्रसद्योत ॥
देवसिंह छित्वर सुवन, आयउ दल उद्योत ॥ १५ ॥
कछु किसोर बय बसि कछुक, कूरम भय लहि कूर ॥
देव[9] पृथक डेरा दये, दल संभरँ[10] तजि दूर ॥ १६ ॥
इत सठ सालम पिछि परि, कृतघन चिंति कुकाम ॥
पत्तन[11] पंचोलास ढिग, किन्ने लरन मुकाम ॥ १७ ॥
कुल बंधव सुहुकँम्मके[12], मिलि सब सालम माँहिँ ॥
पट्टोलीपुर पति प्रथित[13], मिल्यो जवान सु नाँहिँ ॥ १८ ॥
तोप इक्क १ जंबूर सत १००, ढैसत १०० साजि बंदूक ॥
मिल्यो आनि बुधसिंहमैं, अनुचर धरम अचूक ॥ १९ ॥
त्यौंही इक १ नगराज तँहँ, सुहुकम वंस वतंस[14] ॥
सालममैं न मिल्यो सुभट, पहु बिख्यात प्रसंस ॥ २० ॥

१विष्णुसिंह की पुत्री२बेघम के रावत अनोपसिंह की पुत्री ॥ १० ॥३पड़ाव से (सेना का डेरा) हुआ ॥ ११ ॥ ४ पांवड़े (पगमंडे) ५ अपने स्थान पर६स्नेह की रीति से ॥ १२ ॥ १३ ॥ ७ कवच पहनकर ॥ १४ ॥ ८ वृत्तान्त ॥ १५ ॥ ९ देवसिंह ने १० बुधसिंह की सेना को दूर छोड़कर ॥ १६ ॥११पुर ॥ १७ ॥ १२मोकमसिंह के कुल के १३ विदित ॥ १८ ॥ १९ ॥ १४ मुकुट ॥ २० ॥

[षट्पात्]

सुनि इत रन जयसिंह भीर सालम दल भेजिय ॥
तीन सहँस३०००तुक्खार पंच५उमराव सुरूप धिय ॥
ईसरदापुर ईस नाम कोजु१निसंक नर ॥
सारसोपपुर स्वामि विदित फतमल्ल२वीरवर ॥
साँवल३सुहाड़पुर पति सबल प्रबल अचल४नानेड़ि पति ॥
बहादुरसिंह५कूरम बहुरि बुद्धानीपुर पति बिमति ॥ २१ ॥

[दोहा]

ब्रजभुव बासी सुभट बलि, नरुव बंस कछवाह ॥
नामधेय सिरदार१निज, सो दिय संग सिपाह ॥ २२ ॥
पृथ्वीसिंह२रु कनक३पुनि, उभय नरुव अवतंस ॥
घासीराम४रसोरपति, बलि भट कूरम बंस ॥ २३ ॥
सेरसिंह खिच्चिय सबल, पुनि जहत्र परताप२ ॥
हरि१तोंवर भल्ला हुकम१, मारन करन१मिल्लाप ॥ २४ ॥
उदयसिंह१पुनि रूप२अरु, जोध३सुरत४भट जत्थ ॥
सालम हित कूरम सजे, सोलंखी चउ४सत्थ ॥ २५ ॥
आमेर पैं पठये इते, लरि बुंदिय भुव लैंन ॥
बिग्रह बहुरि प्रवास बसि, सब रक्खिय ढिग सैंन ॥ २६ ॥
नरउरपति गजसिंह सुव, जयसिंहहिं तहँ जंपि ॥
समर प्रपंची मम सचिव, चाहत जय अरि चंपि ॥ २७ ॥
भेजहु तिहिं इनसंग भल, कूरम तब मुसिकाय ॥
संगहि दिय नरउर सचिव, नाम सु खंडेराय ॥ २८ ॥

१इधर युद्ध सुनकर २घोड़े (घोड़ों के सवार) ३ विशेष बुद्धिवाला ॥ २१ ॥ ४ ब्रज की भूमि में रहनेवाले उमराव ५ फिर ६ नरू के वंश का [नरूका] कछवाहा ७ नाम ॥ २२ ॥ नरूकों के मुकुट ९ पुनि ॥ २३ ॥ १० बुधसिंह को मारने और ११सालमसिंह से मिलाप करने को ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ आमेर के पति ने १३मरहठों से युद्ध और१४विदेश में चलने के कारण ॥ २६ ॥ १५ छल १६दबाकर

(षट्पात्)

सुभट मानसिंहोत कलह इम पंच५मुख्य किय ॥
अवरहु सुभट अनेक सेन सम्मलि द्रुत सज्जिय ॥
करि यह दल दरकुंच मुलक मालव तजि मंडुव ॥
जुरि आयउ जंधाल भीर सालम कुसथल भुव ॥
करि दल मिलान सालम कटक हडुन पति ढिग मिलन हित ॥
इन पंच५भटन आय रु कहिय बुद्ध श्रवन धारहु बिदित २९

(दोहा)

अभयसिंह बलवन अधिप, पट्टनि भज्जिग एह ॥
भीम हिंतु अति मन्नि भय, दुल्लभ मन्नत देह ॥ ३० ॥
जाके बल जयसिंहतैं, अब रन रचहु न एहु ॥
दिनप्रति रुप्पय दोयसत२००, रहि वृंदाबन लेहु ॥ ३१ ॥
नहिं बुल्ल्यो बुंदिय नृपति, क्रम सब सहित कुवैंन ॥
राजाउत पंचन सरिस, निठुर दिखाये नैंन ॥ ३२ ॥

(षट्पात्)

कूरमपति भट कुबच प्रकट सुनि सुनि बलवन पति ॥
अभयसिंह अति वीर भयउ धकि प्रलय रुद्र भंति ॥
करखि मुच्छ डसि अधर निरखि पंचन५उफनायो ॥
पन्नगं पय चंप्यो कि मत्त मृगराज खिजायो ॥
बुल्लयो विदित भुज ठोकि वल गल्ल बजत गीदर डरैं ॥
बुधसिंह आन कूरम बलहिं केहरि हम गैंडुरिकरैं ॥३३॥

(दोहा)

॥ २७ ॥ २८ ॥ १ ये मानसिंहोत राजावतों के नाम से प्रसिद्ध हैं २ शीघ्र ३ शीघ्र चलनेवाले ४ सालमसिंह की सेना में ५ हे बुधसिंह सुनो ॥ २९ ॥ ६ पाटन के युद्ध में भगा था ७ कोटा के राजा भीमसिंह से ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ८ रीस (क्रोध) सहित ॥ ३२ ॥ ९ भांति १० सर्प को पैर से दबाया ११ बुधसिंह के सौगन है कि १२ कछवाहे की सेना को हम सिंह होकर १३ गाडर (भेड़) के स-

[illegible]तन अग्गैं हम भजत, मुहैं रन अनुचित गाय ॥
अवरनतैं रन आहुरत, पच्छयैं हतुन पाय ॥ ३४ ॥
इम हकारि चक्कवन अधिप, मुरि उट्ठिग गहि मुच्छ ॥
फटाटोप मंडिग मनहुँ, पन्नग दब्बत पुच्छ ॥ ३५ ॥
तब कूरन कुभटन तमकि, गजिय जाय निज सैन ॥
जुत सालम सब इक जुरि, लगि दल्ल बंधिय लैन ॥ ३६ ॥
देवसिंह छिल्वर सुवन, इंद्रगढप सुनि एह ॥
भीरु मन्नि जगसिंह भय, गयो सपरिकर गेह ॥ ३७ ॥
हड्डपनगपन हरिय कुल, ए वंक्षुव उमराव ॥
करन सीर बुंदीगर्का, हुत आये रन दाव ॥ ३८ ॥
इह गेव सामंत हर, साधव हर भट मोर ॥
कुल वेक्खन अरु नाथ कुल, ये चोलुक न्नैं ओर ॥ ३९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आर्या)

विउहअसोहविएणी अनुअं बुंदीसपहुवं पिक्ख ॥
सालमउत्तपयावो जिट्ठो गिल्लिओ बुंदरा भूवइणा ॥ ४० ॥

प्रायो देशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[illegible] ॥ ३३ ॥ १ यह का [illegible] अनुचित [illegible] के [illegible] के [illegible] [illegible] ॥ ३४ ॥ ४ मानों सर्प ने पूंछ दबाने [illegible] फण का आटोप [illegible] [illegible] ॥ ३५ ॥ ५ [illegible] सेना की पंक्ति (पंक्ति) बांधी ॥ ३६ ॥ ७ [illegible] ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ [illegible] [illegible] ॥ ३९ ॥

संस्कृत अनुवाद

[illegible] [illegible] बुन्दीशपहस्मवेक्ष्य ॥ सालमपुत्रप्रतापः [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ४० ॥

[illegible] सालमसिंहका [illegible] [illegible] बुन्दीश के [illegible] [illegible] सालमसिंहका बड़ा पुत्र प्रतापसिंह राजा बुधसिंह ने [illegible]

(दोहा)

राजसिंह अन्वय[1] रतन, बंधव निज बरवीर ॥
दौलतसिंहहु सज्जि दल, भट आयउ नृप भीर ॥ ४१ ॥
हाजरि भट प्रथमहि हुते, महासिंह कुल मोर ॥
असित पक्खके[2] इंदु जिम, लग्यो घटन दल ओर ॥ ४२ ॥
दस हजार पृतना[3] बदलि, सब हुव सालम संग[4] ॥
दस हजार१०००० नृप निकट दल, रहिय रचावन रंग[5] ॥४३॥
उभय[6] पक्ख अरि मित्र तजि, समय जोर दरसाव ॥
रहिय इंद्रगढ आदि बहु, उदासीन[7] उमराव ॥ ४४ ॥
सालम ढिग तेरह सहँस१३०००, नृप ढिग दस निरधार ॥
इत कुप्यो बलवन अधिप, भुज धरि बुंदिय भार ॥ ४५ ॥
बुद्ध नृपति बरजत रह्यो, दोउन सपथ[8] दिवाय ॥
हड्ड भज्जन नाँ सुनैं, लग्गी अंदर लाय ॥ ४६ ॥
अभयसिंह अरु देव इत, अरु कछु संभर[9] सैंन ॥
जिहिं बिच जे भट सज्ज किय, बरनत तिन्ह कवि बैंन ॥४७॥
महाराम मातुल[10] कुलज, मुरयो जु सालम मेल ॥
वाको सुत संग्राम १ इत, सोहि सज्यो गहि सेल ॥ ४८ ॥
प्रेमसिंह२सज्ज्यो प्रथि[11]तैं[12], नाथाउत रन नूर ॥
बखतसिंह३जगभानु४ बलि, सजे हड्ड अति सूर ॥ ४९ ॥
साँवलदास५ सजोर सजि, गौर[13] बंस उजियार ॥
जोरावर६कछवाह जुरि, परसुराम७ परिहार ॥ ५० ॥
बरजत नृप बुंदीसकौं, सहठ दिवावत सौंहँ ॥

---

१ वंश ॥ ४१ ॥ २ कृष्ण पक्ष के चंद्रमा के समान ॥ ४२ ॥ ३ सेना ४ बुधसिंह के पास ५ युद्ध करने को ॥ ४३ ॥ ६ दोनों पक्षवालों से शत्रुता और मित्रता छोड़कर ७ तटस्थ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ सौगन दिलाकर ॥ ४६ ॥ ९ चहुवाणा सेना ॥ ४७ ॥ १० बुधसिंह के मामा के कुल में उत्पन्न ॥ ४८ ॥ ११ प्रसिद्ध १२ पुनि ॥ ४९ ॥ १३ गौड़ वंश का प्रकाशक ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अभयदेव संगहि इते, भटन तनंकिय भौंहँ ॥ ५१ ॥
देवसिंह अभमल्ल दुव, दुल्लह ललित उदार ॥
अच्छरि दुलहनि अद्दरिय, जन्य इते जुझार ॥ ५२ ॥
अवर भटन पिक्ख्यो सभय, सालम अद्भुत अनीक ॥
छोरहु नृपहि न इक्क छिन, को जानैं वे कितीक ॥ ५३ ॥
जो भूपहु सिर घात जउ, कूरम घल्लहिं कूर ॥
तो सब स्वामि समीपही, सत्रुन गंजहिं सूर ॥ ५४ ॥
स्वामि दये न लरन सपथ, वलि नृप तजन न वेस ॥
नय बिचारि इम इन निकट, सकल रहे सुभटेस ॥ ५५ ॥
वीर जिते पहिलैं वदिय, तिन नंन मन्निय मौंहँ ॥
अभयसिंह संगहि उठिय, भयद फुरावत भौंहँ ॥ ५६ ॥
कहि कुवैन उठि कूरमन, निजदल पिल्लिय जाय ॥
यह संही न बलवन अधिप, लगिय सोर बिच लाय ॥५७॥
अभयसिंह अरु देव इत, कुप्पि चलिय जिम काल ॥
सिर घेरसत अंजलोकसौं, पय परसत पायाल ॥ ५८ ॥
सालम अरु कूरम सुभट, जुरि इत प्रबल जरूर ॥
बुंदिय दल सिर बग्गलै, सकल चढे बढि सूर ॥ ५६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणगतजयसिंहत्यक्तकाणोखोहग्रामबुधसिंहबुन्दीदिग्गमन १ आत्तसैन्यसालमसिंहबुधसिंहसंमुखसरण २

॥५२॥ १जानैं २ अब ॥५३॥ ३मारेंगे ॥५४॥ ४सौगन ५पुनि ६उत्तम नहीं है ॥५५॥ ७कहे ८सौगन नहीं माने ९भय देनेवाले ॥५६॥ १०अपनी सेना को भेजी ॥५७॥ मस्तक १२ब्रह्मलोक से ११घिसता है और पैर १३पाताल का स्पर्श करते हैं ॥५८॥५९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह को दक्षिण में गया हुआ जान कर रावराजा बुधसिंह का काणोखोह नामक ग्राम को छोड़ कर बुंदी की ओर आना १ सालमसिंह का बुन्दी से सेना लेकर बुधसिंह के सम्मुख जाना २

सालमसिंहसहायजयसिंहसैन्यसहितजयपुरसामन्तपञ्चकक्रूसथलाख्यनगरनिकटसालमसिंहसंमिश्रण ३ प्रत्यहद्विशतमुद्राग्रहणपूर्वकबुधसिंहवृन्दावनवासार्थजयपुरसामन्तभणन ४ जयसिंहभीतित्यक्तबुधसिंहकतिपयबुन्दीसैन्यसालमसिंहमिलनकतिपयसामन्तोदासीनभावतटस्थतासादन ५ सालमसिंहसैन्यभीतबुधसिंहस्य युद्धाकरणार्थंस्वसामन्तशपथदापन ६ देवसिंहाभयसिंहादिकतिपयसामन्तशपथभंगपूर्वकसमरसज्जभवनवर्णनं द्वात्रिंशोमयूखः ॥३२॥

आदितः सप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७० ॥

[दोहा]

सक हय बसु सत्रह१७८७समय, माधव दरस३०मिलाप ॥
घटिय रुद्र११रविके चढत, उलटि समुद्रन आप ॥ १ ॥

[दुर्मिला]

दुव सेन उदग्गन खग्ग समग्गन अग्ग तुरग्गन बग्ग लई ॥
मचि रंग उतंगन दंग मतंगन सज्जि रनंगन जंग जई ॥

सालमसिंह की सहायता पर राजा जयसिंह की भेजी हुई सेना सहित जयपुर के पांच उमरावों का क्रूसथल नामक नगर के समीप सालमसिंह के सामिल होना ३ जयपुर के उमरावों का प्रतिदिन दोसौ रुपये लेकर वृंदावन वास करने की बुधसिंह से कहलाना ४ जयसिंह के भय से बुन्दी की बहुधा सेना का बुधसिंह को छोड कर सालमसिंह में मिलना और कितने ही उमरावों का उदासीन भाव से तटस्थ रहना ५ सालमसिंह की सेना से डरेहुए बुधसिंह का अपने उमरावों को नहीं लड़ने के सौगन दिलाना ६ देवसिंह और अभयसिंह आदि थोड़े से उमरावों का सौगन नहीं मान कर युद्ध के अर्थ तैयार होने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्तर २७० मयूख हुए ॥

१वैशाख मास की२अमावास्या के मिलने पर ग्यारह घड़ी दिन चढे पर समुद्रों का ३ पानी उलटा ॥ १ ॥ ४ उदग्र [उछलते हैं अग्रभाग जिनके ऐसे] खड्ग लेकर दोनों सेना के ५ सब लोकों ने घोड़ों की वागें आगे लीं अर्थात् घोड़े उठाये उस युद्ध में युद्ध जीतनेवाले सजेहुए ऊंचे हाथियों का ६ युद्ध हुआ

लगि कंप लजाकन[1] भीरु भजाकन बाक्क कजाकन[2] हाक वढी ॥
जिम मेह[3] ससंबर यौं लगि अंबर चंड अडंबर खेहचढी ॥ २ ॥
फहरक्कि दिसान दिसान वडे[4] वहरक्कि[5] निसान उडैं विथरैं ॥
रसना अहिनायक[6]की निकसैं कि परा झल होरियकी प्रसरैं ॥
गज घंट ठनंकिय भेरि[7] भनंकिय रंग रनंकिय कोंच[8] करी ॥
पखरान झनंकिय वान सनंकिय चाप तनंकिय ताप परी ॥ ३ ॥
धमचक्क रचक्कन लगि लचक्कन कोल[9] मचक्कन तोल कढ्यो ॥
पखरालन[10] भार खुभी खुरतालन[11] पाल कपालन साल वढ्यो ॥
डगमग्गि सिलोच्चय[12] शृंग डुले झगमग्गि कृपानन[13] अग्गि[14] झरी ॥
बजिखल्ल तबल्लन[15] हल्ल उझल्लन भुम्मि हमल्लन घुम्मि भरी ॥४॥
मचि घोरन दोर दुअोर समीरन[16] जोर उमीरन घोर जम्यौं ॥
अभमल्ल उछाहन हड्ड हठी कछवाहन गाहन चाह क्रम्यौं[17] ॥
सुव[18] जैत इतैं भट देव सही करि स्वामि[19] महीहित संग सज्यो ॥

जिस से १ लज्जित होनेवाले और भागनेवाले कायरों को कंप [धुजनी] लग कर २ युद्ध करनेवाले वीरों के वचनों की हाक वढी और ३ जल सहित मेघ के समान भयंकर आडंबर से आकाश में खेह [रंजी] चढी ॥ २ ॥ ४ बडी ध्वजायें और छोटी ध्वजायें फरक कर दिशा दिशा में उड कर फैलीं सो मानों ५ शेषनाग की जिव्हा निकलती है अथवा होली की झाल फैलती है उस युद्ध में हाथियों की घंटा ६ नौबत और ७ कान्यों की कड़ियें बजीं ८ घोड़ों की पाखरों का झणकार बाणों का झणकार और धनुषों के खिचने से भय हुआ ॥ ३ ॥ उस युद्ध में टक्कर लेने से भूमि में लचक लग कर भूमि को धारण करनेवाले ९ वाराह के झुकने का तोल कढा १० पाखरों वाले घोड़ों के भार से खुभी खुरतालों से ११ शेषनाग के कपाल में साल वढा १२ पर्वत हिल कर उनके शिखर डुलने लगे और १३ तरवारों से चमकी हुई १४ अग्नि गिरी, उस हल्ले के बढाव में ख्याल के ऊपर १५ तबलें (कुठार विशेष] बज कर भूमि हमल्लों से घूमने लगी ॥ ४ ॥ घोड़ों की दौड़ से दोनों ओर का १६ पवन चल कर अमीरों [सरदारों] का भयंकर बल जमा उस समय हठवाला राजा अभयसिंह कछवाहों को मारने की चाह से १७ चला इधर जैतसिंह का १८ पुत्र देवसिंह निश्चय ही अपने १९ स्वामी [बुधसिंह] की भूमि के अर्थ स-

दुहुओर कुलाहक्क तोप दगी लगि भद्द[2] बलाहक[3] नद[4] लज्यो ॥५॥
उततैं कछवाहन उग्र उछाहन बेग सु बाहन[5] बग्ग लई ॥
बनि बुंदिय बालम[6] जंग सु जालम संगहि सालम दौरि[7] दई ॥
परि रिंठि[8] कृपानन चंड चुहानन गिद्धि उडानन गूद गहैं ॥
गन[9] धीर गुमानन पीर प्रमानन बीर कमानन तीरबहैं ॥ ६ ॥
बढि बुत्थिन बुत्थि छई बसुधा[10] लगि लुत्थिन[11] लुत्थि परैं प्रजरैं ॥
घटैं[12] सेल घमाकन रंग[13] रमाकन हड्ड सु हाकन होस हरैं ॥
लखि खग्ग उदग्गन[14] मग्ग लगी जुरि अच्छरि जग्ग प्रजापतिज्यौं[15]।
गलबाँहँ करैं करि बीर बरैं गमनैं गन गैवरकी[16] गतिज्यौं ॥ ७ ॥
छननंकि उडानन बान छये ठननंकि गयंदन[17] घंट घुरे ॥
फननंकि दुबाहन[18] टोप फटे रननंकि सिपाहन कोच[19] रुरे ॥
डुलि भैरुव डैरुवतैं डहकी[20] डरि डाकिनि साकिनि चौंकिचली ॥

ज्जित हुआ उस समय दोनों ओर १ कोलाहल करनेवाली अथवा खोटा लाभ करने (मारने) वाली अथवा कु (पृथ्वी) का लाभ करनेवाली तोपें चलीं जिनसे २ भाद्वा के ३ मेघ की ४ गर्जना लज्जित हुई ॥ ५ ॥ उधर से बडे उत्साह वाले कछवाहों ने ५ घोड़ों की शीघ्र बागें उठाई और उनके साथ ही युद्ध में जुल्म करनेवाला सालमसिंह ६ बुन्दी का पति बन कर ७ दौड़ा. भयंकर चुहाणों के खड्गों के ८ निरंतर प्रहारों से उडते हुए गीधों ने गूद ग्रहण किया. धीर लोगों के ९ समूह के घमंड की पीड़ा का प्रमाण करने के लिये वीरों की कमाणों से तीर बहते हैं ॥ ६ ॥ जिनसे बूंथे [मांस के टुकड़े] बढ कर १० भूमि ढक गई और ११ लोथ (मृतक शरीर) पर लोथ गिर कर जलने लगी १३ युद्ध में क्रीड़ा करनेवाले वीरों के १२ शरीरों पर भालों के घमाके होकर हाडा क्षत्रियों की हाक उनकी चाहना मिटाते हैं १४ उदग्र तरवारों को देख कर अप्सरायें १५ जिसप्रकार दक्ष पजापति के यज्ञ में गईं तिसप्रकार इस युद्ध के मार्ग में लगीं, वे गलबांहीं करके वीरों को वरती हैं और उनका समूह १६ हाथियों की चाल के समान चलता है॥७॥ छनंक शब्द करके उडने वाले बाण छागये और ठनंक शब्द करके १७ हाथियों के घंटे बजे फनंक शब्द करके १८ वीरों के टोप फटे और रणंक शब्द करके १९ सिपाहों के कवच बजे भैरव के डैरू से २० चमकी हुई डाकनियें और शाकनियें (देवी की दासी विशेष) डर कर इधर उधर डुल कर चोंक कर चलीं

नचि नारद *नच्चविसारद व्हाँ बिदि बारद भाँति मिले खुरली ॥८॥
कटि खग्ग कलाप[1] रु दंत कढैं कटि कुंभ[2] मउत्तिन मेह फुरैं ॥
तरिता[3] तनु[4] तेग तहाँ तरकैं घन गज्ज मतंगज गज्ज घुरैं ॥
बंक[5] पंतिय दंतिय[6] दंत बढे चहुँओर अचानक अंभ[7] चढे ॥
कटिकैं उडि चातक घंट कढे भति पक्खर भेक अनेक पढे ॥९॥
यह आनि सुमाकर[8]मैं बरखा बढि माधव[9]मास अमा[10] बिथुरयो ॥
लखि नायक[11] सूरन हूरन हूरन[12] अंगन[13] अंग अनंग[14] फुरयो ॥
इत सूरन चंदन अस्स[15] चढे रस कैं इत हूरन राग रचे ॥
उमहे इत सिंधुन[16]की ध्वनितैं समुहै[17] इत सिंजित[18] सद्द मचे ॥१०॥
इत डाकिनि दूति कंजाकिनि[19] ओ इत साकिनि नाकिनि[20] या ससखी ॥
सब हूर सुहागिनि इक्क अभागिनि बुद्ध विभागिनि[21] सो बिलखी[22] ॥

*नाचने में चतुर नारद नाचा और दो मेघों के समान शस्त्र विद्या जाननेवाले वीर मिले।८।हाथियों के१कलाचे [गरदनें] कट कर दंत निकलते हैं और२कुंभस्थल कट कर मोतियों का मेह होता है३बीजली के४विस्तार वाले खड्ग चलते हैं और मेघ की गर्जना के समान हाथी गर्जना करते हैं५बुगलों की पंक्ति के समान ६ हाथियों के दंत कट कर अचानक चारों ओर ७ आकाश में चढते हैं और हाथियों के घंटे कट कर चातक [पपीहा] के समान निकलते हैं और पाखरों रूपी अनेक मींडक बोलते हैं ॥ ९ ॥ इसप्रकार ८ पुष्पों की खान ऐसी वसंत ऋतु में ९ वैशाख मास की १० अमावास्या के दिन वर्षा बढी, जहां ११ वीरपतियों को देख कर १२ अप्सरा अप्सरा प्रति १३ प्रत्येक अंग में१४ कामदेव बढा इधर वीरों के चंदन रूपी १५ रुधिर चढा और उधर प्रीति करके अप्सराओं ने गाना रचा इधर वीर लोग१६सिंधवीरागनी [बडाराग] की ध्वनि पर उत्साहित हुए और उधर १७ सम्मुख [अप्सराओं में] १८ भूषणों का शब्द हुआ ॥ १० ॥ १९ युद्ध कराने वाली इधर डाकिनी और इधर साकिनी दोनों सखियों सहित २० अप्सराओं ने यात्रा की. यहां 'य' शब्द यात्रा वाचक है यथा 'या यात्रायाम्' इति शब्दार्थचिंतामणौ॥ वे सब हूरें सुहागिनी हुईं उनमें जो बुधसिंह के २१ बंट में आई वही एक अप्सरा दुहागिन रही सो २२ रोई (बुधसिंह डर कर युद्ध में नहीं आया इसकारण उसके बंट में आईहुई अप्सरा ही निर्भाग्य रही।) उस अभागिनी ने

द्रुत हार सिंगार बिगारि दये धुपि अंजन[2] रोदन[3] वारि बह्यो ॥
कर कंकन फोरि मरोरि कलापहिं[4] छोरि अलापहिं[5] ताप सह्यो॥११
यह आइय डाकिनि[6]की सिखई धव[7]हीन भई अब छोहि[8] छई ॥
अति आरति अच्छरिकी लखिकैं हसि डाकिनि डिंडिम डक्क दई॥
सहनाइय सुंडिनि[9]की करिकैं गन बावन५२गावनमैं गहकैं ॥
कटि मुंड रु रुंड किरैं[12] इतकौं[13] चंउसष्ठि६४न झुंड नचैं चहकैं ।१२।
पखराल[14] तुरंगन पूर किते नखगोल[15] कुरंगन[16] फाल मचैं ॥
भट वार कटारन पार करैं असि[17] झार अँगारन मार मचैं ॥
फटकारि मतंगज सुंडि फिरैं[18] कटकारि[19] चुहानन झुंड क्रमैं ॥
हलकारि चुरेलिनि होस हरैं ललकारि भयंकर भूत भ्रमैं ॥१३॥
खग[21] धारन धार खिरैं खटकैं पलचारिन[22] झुंड झटैं झपटैं ॥
खुरतारन भार खुदैं पहुमी असवारन वार दटैं दपटैं[23] ॥

---

१ शीघ्र हार शृंगार बिगाड़ दिये और २ रोने का पानी (अश्रु बहने से उसका २ कज्जल धुप गया, हाथों के कंकणों को फोड़ कर ४ कटिमेखला (कणागती) को मरोड़ (तोड़) कर और ५ गाना छोड कर दुःख सहा ॥ ११ ॥ यह अप्सरा ६ डाकिनी के सिखाने से बुधसिंह को वरने को यहां आई थी सो ७ पति से हीन होकर ८ अत्यन्त क्रोध में हुई इस अप्सरा की अत्यन्त ९ पीड़ा देख कर डाकिनी हस कर अपनी डिमडिमी [वाद्य विशेष] बजाई और उधर हाथियों की कटी हुई १० सूंडों की सहनाइयें बना कर बावन भैरव गाने में ११ प्रसन्नता की बोली बोलते हैं, रुंड और मुंड कट कर १२ गिरते हैं और इधर १३ चौंसठ योगिनियों का झुंड नच कर बोलते हैं ॥१२॥ कितने ही १४ पाखरों वाले घोड़ों का समूह १५ नखरा करनेवाले १६ हिरणों की छलांगें भरते हैं वीर लोग वार से कटार पार करते हैं और १७ तरवारों की ज्वाला से अंगारों की मार मचती है १८ हाथी सूंड को फटकार कर फिरते हैं और १९ सेना के शत्रु चुहाणों के समूह २० चलते हैं उन चुहाणों की हलकार [ललकार] चुड़ैलों की चाह को मिटाती है भयंकर ललकार से भूत फिरते हैं ॥ १३ ॥ २१ तरवारों की धार पर तरवार की धार लग कर खिरती और खटकती है और २२ मांस खाने वालों का समूह शीघ्रता से झपटते हैं घोड़ों की खुरतालों के भार से भूमि खुदती है और असवार अपने वार से २३ दौड़ते और दबाते हैं कितने ही वी

उपकारन कार[१] किते उमहे[२] सिव धारन काज गहैं सिरकौं ॥
दल मारन मार मिले दुवघाँ[३] मद बारन[४] वार चले चिरकौं ॥ १४ ॥
घमसानन[५] बान उडाननलै अरि प्रानन पीवत काल अही[६] ॥
चहुवाननके करकी उपमा पवमान[७] न मानस[८] ह्याँ निवही ॥
करवालन[९] चंड उडी चिनगी भट जालन[१०] भीर भिरैं भुंगसैं[११] ॥
बढि ज्वाल करालन लोक बरैं[१२] दिकपाल कपालन साल बसैं ॥
गजराजन ढाल[१३] ढहैं ढरवैं रत[१४] भाजन घाय भरैं भभकैं ॥
लगि लाजन सूर लरैं लटकैं छटकैं भुव[१५] काजन लोह[१६] छकैं ॥
कटि कालिक[१७] पीह[१८] किरैं[१९] कलिमैं[२०] फटि मस्तक खंड उडैं फबिकैं[२१]
जिम सैलनशृंग खिरैं बिखरैं प्रतिमल्ल[२२] पुरंदरके[२३] पबिकैं ॥ १६ ॥
मथि मंथनि[२४] मत्थ[२५] गहैं गतिसौं गन गिद्धनि गोद[२६] गिलैं गहकैं[२७] ॥
मनु ग्वालिनि मट्ट[२८] दही मथिकैं[२९] नवनीत निकारन बारनकैं[३०] ॥

---

२ उपकार के १ काम पर २ उत्साह युक्त होते हैं और शिव को धारण कराने को मस्तक उठाते हैं सेना को मारने की मार से ३ दोनों ओर से मिले और ४ मस्त हाथियों के मद का पानी बहुत समय तक चला ॥ १४ ॥ ५ युद्ध में उडान लेकर बाण ६ काले सर्पों के समान शत्रुओं के प्राण पीते हैं. वहां पर चहुवाणों के हाथों की उपमा ७ पवन और ८ मन से भी नहीं निभी ९ खड्गों से भयंकर अग्निकण उडकर १० वीरों के समूह से भिड़कर ११ जलते हैं भयंकर ज्वाला बढकर लोक १२ जलते हैं और दिग्गजों के कपालों में शाल बसते हैं ॥ १५ ॥ हाथियों के ऊपर से १३ बडे झंडे गिरकर पड़ते हैं और भरेहुए घाव १४ रुधिर के पात्र होकर उछलते हैं भागने की लज्जा लगकर सूरवीर लड़कर लटकते हैं और १५ भूमि के अर्थ गिरकर १६ शस्त्रों से छकते हैं १७ कलेजा और १८ प्लीहा [तिल्ली] कटकर १९ युद्ध में २० गिरते हैं और जिसप्रकार २१ शत्रु २२ इन्द्र के २३ वज्र से पर्वतों के शिखर खिर खिरकर विखरें तिसप्रकार फटे हुए मस्तकों के टुकड़े उडकर २१ शोभा देते हैं ॥ १६ ॥ २५ बिलोवणी रूपी २६ मस्तक को लेकर ग्रीधनियों का समूह उनको मथकर २७ भेजी [मास्तिष्क] खाकर २८ प्रसन्नता की बोली बोलती हैं सो मानों ग्वालनी दही के २९ मटके को मथकर ३० मक्खन निकालने में

चहि मार दुधार¹ चलैं चमकैं असवार तुखार² कटैं उलटैं ॥
फटि मक्कुन³ ऊरु⁴ फटैं उछटैं कटि बाहुल⁵ बाहुल⁶ बाहु कटैं॥१७॥

(दोहा)

इहिं रन बिच बलवन अधिप, अभयसिंह अति बीर ॥
फतमल्लहिं खोजन फिरत, हुलसि हड्ड हमगीर ॥ १८ ॥
जबहि पंच५जयसिंहके, ये कूरम उमराव ॥
बुंदीपति अग्गैं बिदित, बुल्ले कुबच⁷ बढाव ॥ १९ ॥
इनहूमैं फतमल्ल पँहँ, सारसोप पति सूर ॥
कहि कातर⁸ अभमल्लकौं गह्यो बहुत मगरूर ॥ २० ॥
इहिं कारन अभमल्ल अब, तिहिं हेरत गहि तेग ॥
दुरयो कहाँ कूरम दरित⁹, बीर बतावहु बेग ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

जिम नाग¹⁰हिं खगराज¹¹ मृगहिं मृगराज¹² महाबन ॥
जंभहिं जिम जंभारि¹³ मधुहिं मानहुँ मधुसूदन¹⁴ ॥
पानी जिम पावकहिं¹⁵ तृनहिं पावक जिम तक्कत ॥
सजव कपोतहिं सेन¹⁶ हनन हेरन जिम हक्कत ॥

विलंब नहीं करती है. मारना चाहकर दो १ धारोंवाले चमकते हुए खड्ग चलते हैं जिनसे सवार और २घोड़े कटकर उलटते हैं उन खड्गों से३जंघात्राण फटकर ४ जंघायें कटकर उछलती हैं और ५ दस्ताने [बाहुत्राण] कटकर ६ बहुत बाहु कटते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ खोटे वचन ॥ १९ ॥ ८ कायर ॥ २० ॥ ९ डरकर ॥ २१ ॥ जिसप्रकार १० सर्प को ११ गरुड़ और मृग को बलवान् १२ सिंह. जंभासुर को जैसे १३ इन्द्र और जैसे मधु दैत्य को १४ विष्णुभगवान् १५ अग्नि को जैसे पानी और तृणों को जैसे अग्नि, कबूतर को जैसे वेगवान् १६ शिकरा (बाज पक्षी) मारने को हेरकर * चले तैसे अथवा

---

* इस छन्द में "हनन हेरन जिम हक्कत" इस क्रिया पद के आये पीछे फिर उपमा दी है सो समाप्तपुनरात्त दोष है परन्तु क्रिया के आये पीछे एक ही उपमा फिर दी जावे वहां यह दोष होता है किन्तु क्रिया आये पीछे फिर अनेक उपमा आजावे वहां यह [समाप्तपुनरात्त] दोष नहीं रहता सो ही यहां जानना चाहिये ॥

आखुहिं[1] बिडाल[2] तिमिरहिं[3] अरुन[4] नर रंकहिं दारिद्र निभ ॥
फतमल्ल रूप पोमिनि फिरत इम हेरिय अभमल्ल इभ॥२२

(दोहा)

समुख पिक्खि फतमल्लसों, इम अक्खिय अभमल्ल ॥
गीदर गाल बजायकैं, अब किन करत उफल्ल ॥ २३ ॥
इम हक्कारि बलवन अधिप, मंडत बानन मेह ॥
उफनावत आयो उमँडि, दँस[7] न मावत देह ॥ २४ ॥

(पद्धरी)

पय दब्बत अहि[8] पुच्छ मुच्छ अँचत मयंद[9] जिम ॥
सोर मनहुँ साबांत अग्गि लग्गत प्रचंड इम ॥
हेलि[12] मयूख हजार १००० जेठ दुपहर जनु जग्गिय ॥
प्रलय उग्र जिम प्रथित[13] लाय अंखिन अति लग्गिय ॥
कानन प्रमान बानन करखि कूरम देह सु सेह किय ॥
मदमत्त लखहु हट्ठे मरद गड्डे पँइ[14] अंगद गतिय ॥ २५ ॥

[मुक्तादाम]

जुरयो अभमल्ल इतैं रुपि जुद्ध, अरयो फतमल्ल उतैं कलि क्रुद्ध ॥
उभै निज स्वामिनकी सुव आस, तकावत अक्कहिं चक्क तमास॥२६॥
उभै रन दच्छ बडे उमगाय, उभै उमँडे रसवीर उगाय ॥

१चूहे को २बिल्ली ३अंधेरे को ४सूर्य ५रंक मनुष्य को दरिद्र हेरे तैसे फतहसिंह रूपी प्रद्मनी को अथवा पद्मिनी (कमलनी) को अभयसिंह रूपी हाथी ने हेरा॥२२॥ ॥ २३ ॥ ७ कवच में ॥ २४ ॥ ८ सर्प ९ सिंह १० रजक का बारूद [तोड़ादार बंदूक के कान में डालने के लिये बारूद को दुबारा करके तेज करते हैं उसको 'सापात' कहते हैं और मतान्तर से जामकी [तोड़ा] को भी साबात कहते हैं जो डिंगलभाषा में प्रसिद्ध है; अथवा रजक और साबात दोनों ही बारूद के नाम हैं जो अत्यंत प्रबलता दिखाने के अर्थ वीप्सा के अर्थ में एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग किया है]११ अग्नि १२ सूर्य १३ प्रलय का शिव जैसे प्रसिद्ध हैं १४ अंगद के समान चरण रोपे ॥ २५ ॥ १५ युद्ध में क्रुद्ध होकर १६ सेना का तमासा ॥ २६ ॥

उभै जय थप्पनहारि उथप्पि, उभै उफनायँ[1] कुबेनन अप्पि ॥ २७॥
उभै दल दुल्लह सज्जित अंग, उभै भर[2] खैंचत सुच्छ अभंग ॥
उभै अनुरूप[3] रिझावत रंभ[4], उभै रन अंगनके जय खंभ ॥२८॥
उभै सिव दारिद मिट्टनहार[5], उभै पलचारनके[6] उपकार ॥
उभै झमकावत खग्ग उदग्ग[7], उभै चलि प्रेत हसावत अग्ग॥२९॥
उभै भवतैं[8] तजि मोह अलुब्ध[9], उभै मन वृत्ति लगावत उंर्द्ध[10] ॥
उभै तुम वाहहु वाहहु अक्खि, उभै करि सूरजकौं निज सक्खि[11] ३०
उभै कनकाचलकौं[12] पावन बंधि, उभै दंम[13] उद्धत संहरि संधि[14] ।
उभै तुलसी धरि मस्तक आय, उभै जल गंग उमंग अचाय[15] ॥३१॥
उभै वृखजानि[16] जुरे इक धेनु[17], उभै करिराज कि इक्क करेनु[18] ॥
उभै इक सिंहनि[19] ज्यौं वनईस, जुरे इम कूरम हड्ड जपीस ॥ ३२ ॥
मिले पहिलैं दुव तीरन मार, कढे सर दोउनरभेदि करार ॥
चटक्कहिं चंड प्रतंचन चाप, उड्डैं सलभा[20] जिम रोप[21] अमाप ॥ ३३ ॥
जहाँ करि बानन यौं रन जोर, मिले पुनि सेलन ह्वैरभट सोर ॥
सु कंकट[22] भेदि कढे घँट[23] सारि, किधो तरु तेजँन[24] अग्ग[25] कुदारि[26]।३४।
चली अभमल्ल बरच्छिय अच्छ, पर्यो छिदि कूरम बाजि[27] दुपच्छ॥
वहाँ हय ओर चढ्यो कछवाह, रुप्यो अभमल्लहु पब्बय[28] राह॥३५॥

---

१ बढ़े ॥ २७ ॥ २ भड़ ३ अपने सदृश ४ रंभा नामक अप्सरा को 'डिंगल भाषा में सामान्य अप्सरा को भी रंभा कहते हैं' ॥ २८ ॥ ५ शिव का अन्नकों रूपी दरिद्र मिटानेवाले ६ मांस खानेवालों के ७ उदग्र (उछलते) हुए अग्रभाग वाला ॥ २९ ॥ ८ संसार से ९ निर्लोभी १० ऊपर ११ साक्षी ॥ ३० ॥ १२ सुमेरु पर्वत को १३ दंड देने में १४ नीति के प्रथम संधि गुण का संहार करके १५ पीकर ॥ ३१ ॥ १६ वृषभ १७ गऊ पर १८ हथिनी पर १९ सिंह ॥ ३२ ॥ २० टीड्डियों के समान २१ बाण ॥ ३३ ॥ २२ कवच को और २३ शरीर को फोड़कर २४ मानों बांस के वृक्ष का २५ अग्रभाग २६ भूमि को फोड़ कर निकला ॥ ३४ ॥ २७ कछवाहे का घोड़ा दोनों बाजू से छिद कर गिरा २८ पर्वत की भांति ॥ ३५ ॥

लराच्छिन जंग अपुव्व बिधाये, लई अब खापन[2]तैं हिमलाय[3] ॥
किधौं घनतैं काढि बिज्जु[4] कराल, किधौं बिलतैं किल[5] कुंडलिकाल[6]॥३६॥
किधौं नभतैं ससि द्वैज[7] कला कि, कढी जमके मुखतैं दसना[8] कि॥
हली कि हुतासन[9]तैं कढि हेति[10], मयूख नभोमनि[11]तैं अथवेति[12]॥३७॥
कढी ध्वनि ब्याकृति[13]तैं कि सकास[14], कढे मत गोतमतैं कि समास॥
कटाच्छ किधौं कुलटा हग कुंज[15], पयोभव[16] कोरकतैं अलि[17] पुंज॥३८॥
कलिंद[18]कतैं निकसी जमुना[19] कि, प्रजापति[20]तैं परिपूरि प्रजा कि॥
गुनलैय[21]तैं कि चले महदादि, महानट[22]की जटतैं प्रमथादि[23]॥ ३९ ॥
हिमालयतैं जिम गंग हिलोर, किटीश्वर[24]के मुख दंतुलि कोर॥
अनंतक[25] आननतैं जिम जीह, सटाधुनि[26] थंभहितैं नरसीह[27]॥ ४० ॥
नवोढनके उरतैं कि उरोज[28], उदैगिरितैं कि दिवाकर ओज[29]॥
कि अंजनिके उरतैं हनुमान, पराखरनंदन[30]तैं कि पुरान ॥ ४१ ॥
सुराधिप[31]के करतैं जिम संब[32], कढे धनु गांडिवतैं कि कलंब[33]॥
सही कपिला[34]ननतैं जनु[35] साप, लयग्य[36]न गायनतैं कि अलाप॥४२॥

अपूर्व युद्ध१करके २ म्यानों में से ३ ठंढी अग्नि ली (यह तरवार का विशेषण है) ४ मेघ से विद्युत् [बिजुली] की कांति ५ निश्चय६काला सर्प [यह आंधी हुई तरवार की उपमा है] ॥ ३६ ॥ ७ दोज के चंद्रमा की कला [जहां जहां अकेला 'कि' आवै वहां किधौं,किंवा मानों अर्थ जानना चाहिये. प्रत्येक स्थान पर इसका अर्थ लिखने से विस्तार होता है] ८ दाढ ९ अग्नि से १० ज्वाला [झाल] १२ अथवा ११ सूर्य से किरणें प्रकाश करैं जैसे ॥ ३७ ॥ १३ व्याकरण की १४ समीपता से शब्द कढे जैसे १५ नेत्रों के कोनों से १६ कमल की कली से १७ भ्रमरों का समूह ॥ ३८ ॥ १८ पर्वत विशेष १९ जमुना नदी २० ब्रह्मा से परिपूर्ण प्रजा निकले तैसे २१ सत, रज, तम, इन तीन गुणों से महदादि चौबीस तत्त्व निकले तैसे २२ शिव की जटा से २३ गण निकले जैसे ॥ ३९ ॥ २४ वाराह के मुख से २५ शेषनाग के मुख से २६ गरदन के केश धुजा कर थांभे से २७ नृसिंह निकले ऐसे ॥ ४० ॥ २८ कुच २९ सूर्य का तेज३०वेदव्यास से ॥ ४१ ॥३१इन्द्र के हाथ से३२वज्र३३बाण ३४ कपिलदेव के मुख से ३५ मानों श्राप निकला ३६ लय को जानने वाले कलावंत से ॥ ४२ ॥

धपी जनु नीरद[2]तैं जल[3]धार, महाबल [4]माधवतैं मनु मार ॥
त्रिलो[5]चनके करतैं कि निसूल, मउत्तिप सुत्ति[6]पतैं कि अमूल ॥४३॥
कढे इम दोउन२खापन खग्ग, मिले [7]प्रलयानल [8]ह्वै रन मग्ग ॥
उभै करि लाघर्व दाव दिखात, परस्पर देत प्रहार निपात ॥ ४४ ॥
उभै फिरि [9]मंडल टारत वार, मचावत झार दुधारन मार ॥
[10]दई धपि संभर दाहिन अंस, पर्‌यो कटि कूरम [11]ख्यात प्रसंस ॥४५॥

(दोहा)

हठि कूरम फतमल्ल हनि, अभयसिंह चहुवान ॥
कूरम कोजुवरामकों, पिक्खत गाहक प्रान ॥ ४६ ॥
ईसरदा पुरपति अतुल, वह कोजुव कछवाह ॥
अप्पहिं खोजत इक्खकैं, [12]अभिमुख रच्चिग उछाह ॥ ४७ ॥
मिलि दोउन२किन्नी मुदित, नाग[13]फेन मनुहारि ॥
अक्खी पुनि अभमल्ल इम, कूरम सुनहु हकारि ॥ ४८ ॥
सब तुम मिलि हमरे सुनत, भूपहिं डारी [14]भीति ॥
तुमहूँ फतमल्ल तँहँ, अक्खी अधिक अनीति ॥ ४९ ॥
काको[15]दरहिं कुापयकैं, कोउन जियत सकोप ॥
फनन[16] हन्यों फतमल्लकों, अब तव सिर [17]आटोप ॥ ५०॥
फबत[18] बान फतमल्लके, छत्ति अभय [19]छेत छेक ॥
[20]जनु छानन जय अरु अजय, बन्यों [21]तितउ सविवेक ॥५१॥

मानों २ मेघ से ३ जलधारा १ दौड़ी. बड़े बलवान् ४ श्रीकृष्ण से मानों कामदेव ५ शिव के हाथ से ६ जिसप्रकार सीप से मोती निकले तिस प्रकार दोनों ने म्यानों में से तरवार लेकर ॥ ४३ ॥ ७ प्रलय की अग्नि के समान ८ शीघ्रता से ॥ ४४ ॥ ९ चक्राकार (गोलकुंडा) १० दौड़के चहुवाण ने दहिने कंधे पर दी ११ प्रसिद्ध प्रशंसावाला ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ १२ सामने ॥ ४७ ॥ १३ अफीम की ॥ ४८ ॥ १४ भय ॥ ४९ ॥ १५ सर्प को कोपित करके १६ फणों से १७ उठाव ॥ ५० ॥ अभयसिंह की छाती में १८ घावों के छिद्र करके फतहसिंह के बाण ऐसे १९ शोभा देते हैं २० मानों इस युद्ध के जय और अजय छानने के लिये विचार पूर्वक २१ चालनी [चलनी] बनी है ॥ ५१ ॥

यातैं कोजुवराम अब, मिलि बुल्ल्यो रन माँहिं ॥
जिनके वानन तुम छिदे, तिनतैं गब्बहु नाँहिं ॥ ५२ ॥

[षट्पात्]

यहै सुनत अभमल्ल खग्ग कोजुव[2] सिर झारिय ॥
सजि कोजुव इत संगि हड्ड उर तकि प्रहारिय ॥
याके खग्ग उदग्ग कट्टि बाहुत्त[3] कर कट्यो ॥
वाकी संगि अपुब्ब चक्खि हिय राँढक चट्टयो ॥
अरि तब सिराहि बलवन अधिप पुनि असि झारिय मत्थ पर ॥
कटि टोप सीस कट्टिय सकल मनहुँ बिरबंधव बंटि घर ॥ ५३॥

(दोहा)

कोजुवराम सु सिर कटत, वेग वसन सन[6] बंधि ॥
कर इक्क[7]हि असिबर करखि, सिर झारिय जय संधि ५४
कोजुवको दक्खिन कर सु, इम कट्यो अभमल्ल ॥
यातैं गहि कर वाम असि, झारी बहुरि उझल्ल ॥ ५५ ॥
टोप कट्टि तिरछी तरकि, तुट्टि परिय तरवारि ॥
अक्खिय तब अभमल्ल इम, बाहहु नैंक विचारि ॥ ५६ ॥
जिहिं करतैं असिवर जुगत, तिरछी तरकत तुट्टि ॥
जनि ताकों हरखैं जननि, क्यों बहु थालन कुट्टि ॥ ५७ ॥
कहि इम कोजुवराम पर, असि झारिय अभमल्ल ॥
सिव गहि लिन्नौं उडत सिर, ढर्यो यह[9]हु रन ढल्ल[8] ॥५८॥
ईसरदाके पतिहिं इम, बलवन पत्ति हनि वेग ॥
साँवलदास सुहाड पति, तक्क्यो झारत तेग ॥ ५९ ॥

१गर्व मत करो॥५२॥२कोजूराम के मस्तक पर ३ दस्ताना काट कर ४ पीठ को ५ मानों दो भाइयों ने घर का बंट किया ॥ ५३ ॥ वस्त्र ६ से शीघ्र बांध कर ७ श्रेष्ठ तरवार खेंच कर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ९ वह युद्ध की ढाल ८ गिरा ॥ ५८॥

(मुक्तादाम)

चवी यह दूतन भूतन चार[1], सुनी सब कूरम साँवलदास ॥
उदायुध[3] उग्र दिवाकर[4] अंस, रहैं इतनी सहि क्यों रघुबंस ॥६०॥
मिल्यो अभमल्लहु उद्धत मान, धपावत धारहिं दै बलिदान ॥
धप्यो[5] कुवलाश्व[6] कि धुंधुहि[7] धागि, किधौं रन रावन राम हकारि६१
किधौं बलपै[8] बल बासव क्रुद्ध, जटासुरपै कि वृकोदर[9] जुद्ध ॥
कुं[10] अत्थ[11] भ्रमावत हत्थ कृपान, दिखावत संकरकौं अति दान ६२
सुहाडपै[12] हू इततैं गहि संगि, मिल्यो अभमल्लहिं भल्ल[13] उमंगि ॥
नची तँहँ तालिन[14] चौसठि६४ नारि, रची इम हल्लरु कूरम रारि ६३
जहाँ तँहँ आवहिं आवहिं जाप, जहाँ तँहँ खूटत खग्गन खाप[15] ॥
जहाँ तँहँ प्रेत डकारत जोर, जहाँ तँहँ घायन घायल घोर ॥६४॥
जहाँ तँहँ नारदको अति नच्च, जहाँ तँहँ सूरन हूरन सच्च ॥
जहाँ तँहँ भूतन भूख प्रकास, जहाँ तँहँ गिद्धिनि गूद बिलास ६५
जहाँ तँहँ डाकिनि डिंडिम डक्क, जहाँ तँहँ धारन[16]को धमचक्क ॥
जहाँ तँहँ हत्थिन चंड[17] चिकार, जहाँ तँहँ फेरविकौन[18] फिक्कार ।६६।
जहाँ तँहँ फुट्टत भूं[19] अति जोर, जहाँ तँहँ त्रंबक[20] तंडव[21] तोर ॥
जहाँ तँहँ दिग्गज कातर[22] गज्ज, जहाँ तँहँ सोहत सूरन सज्ज ॥६७॥
जहाँ तँहँ कातर कूकत कूक, चहाँ तँहँ चाहत चंचल चूक[23] ॥
जहाँ तँहँ फुट्टत फालिन[24] सत्थ, जहाँ तँहँ सूरन हूरन[25] हत्थ ॥ ६८ ॥

दूतों रूपी भूतों ने यह २ खबर १ कही ३ ऊंचे किये हैं शस्त्र जिसने ४ सूर्यवंशी ॥ ६० ॥ मानों ६ कुवलयाश्व नामक राजा ७ धुंधु नामक राक्षस को देख कर ५ दौड़ा ॥ ६१ ॥ ८ बलवान् इन्द्र क्रोधित हुआ ९ भीमसेन का युद्ध १० भूमि के ११ अर्थ हाथ में तरवार फिराना हुआ ॥ ६२ ॥ १२ सुहाड़ का पति १३ अच्छे उत्साह से मिला १४ वहां पर तालियें देकर चौसठ योगिनियें नचीं ॥ ६३ ॥ १५ तरवारों से म्यान खूटते हैं ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ १६ तरवारों की धाराओं की. हाथियों की १७ भयंकर चीस १८ फेकरियों [स्यालनियों] के फत्कार ॥ ६६ ॥ १९ भूमि २० ताम्रे [वाद्य विशेष] २१ नृत्य की रीति के. दिग्गजों की २२ कायर गर्जना ॥ ६७ ॥ २३ छलघात २४ हाथियों के साथ २५ अप्सराओं का हाथ [हथलेवा जुड़ता है]

जहाँ तहँ खग्गन खंड[1] खिरंत, जहाँ तहँ गैवर[2] गंज गिरंत ॥
जहाँ तहँ जुग्गिनिको जयकार[3], जहाँ तहँ रुंडन मुंडन मार ।६९।
जहाँ तहँ साकिनि सोर[4] सुनाव, जहाँ तहँ पंडित जंग प्रभाव ॥
जहाँ तहँ हत्थन बत्थन[5] जुट्टि, जहाँ तहँ तेग तरक्कत[6] तुट्टि ॥ ७० ॥
जहाँ तहँ सोनित सोँ[7] बढि साँद, जहाँ तहँ प्रेतन भच्छ[8] प्रमाद ॥
जहाँ तहँ चाल चुरैलिनि चौंकि, जहाँ तहँ भैरव भैरव[9] भौंकि[10] ७१
जहाँ तहँ हड्डन जालम[11] जोर, इतैं तहँ दुस्सह[12] कूरम ओर ॥
सुहाड़प[13] कूरम साँवलदास, मिल्यो अभमल्लहिं पुंज[14] प्रकास ॥७२॥
कहैं दुव बाहहु बाहहु कत्थ, रचैं रन त्यों रवि रुक्कत रत्थ ॥
[15]सरैं जलजंत्र कि घायन सोन[16], जुरैं इन दोउनतैं तहँ जोन ॥७३॥
लरैं अभमल्ल सु बुंदिय लाज, करैं उत कूरम जैपुर काज ॥
बहैं असि बान बरच्छिन व्रात[17], परैं मनु भद्दव विज्जुव पात ॥७४॥
थेइ त्थेइ नच्च कबंधन[18] थूल[19], बनैं तहँ कातर[20] पत्त बघूल[21] ॥
मलंगत भैरव सोनित[22] मत्त, छलंगत गिद्ध बनैं सिर छत्त[23] ॥ ७५ ॥
नचैं निकसे हियपैं[24] कढि नैन, सरोज[25] कि सोन सिलीमुख[26] सैन ॥
कढैं फाटे बुक्कन[27] टुक्क बिकास, मनौं सुम[28] किंसुक[29] माधव[30] मास ७६

१टुकड़े २हाथियों के समूह ३जय हो जय हो ऐसा शब्द॥६९॥४कोलाहल ५बाथों से [दोनों हाथों को फैला कर अंक में भर कर बाहुयुद्ध होता है] लड़ते हैं ६ तरवारें फिसल कर टूटती हैं ॥ ७० ॥ ७ लोही का कीचड़ ८ खाने का ९ भयंकर १० गाजते हैं ॥ ७१ ॥ ११ जुल्म करनेवाला १२ वह जुल्म कछवाहों की तरफ नहीं सहने योग्य है १३ सुहाड़ का पति १४प्रकाश का समूह ॥ ७२ ॥ १५ फुंहारा चले जिस प्रकार १६घावों से रक्त चलता है ॥ ७३ ॥ १७समूह ॥ ७४ ॥१८बिना मस्तक वाले क्रियावान् शरीरों का १९समूह २० कायर २१बघूले (वायु के गोटे) के पत्तों के समान २२ रक्त से मस्त होकर २३ छत्र ॥ ७५ ॥ २४ छाती पर नेत्र निकस कर नाचते हैं सो मानों २५ लाल कमल पर २६ भ्रमर शयन करते हैं २७ बुक्कों (गुरदों) के टुकड़े होकर फट कर निकलते हैं सो मानों ३० वैशाख मास में २९ ढाक के (केसूला के) २८ पुष्प फूले हैं ॥ ७६ ॥

उडैं सिर अंबर पच्छिन पेलिं, करैं जनु कालिय कंदुक केलि ॥
उछट्टहिं ढालनमैं कढि अंत, भुजंग टिपारनमैं कि भ्रमंत ॥७७॥
रुरैं सिर अद्ध फट्यो इहिं रारि, दयो जनु जुग्गिनि खप्पर डारि॥
सिखा कटि सूरनकी फहरात, किधौं जयकेतु प्रभंजन पात॥७८॥
किरैं फटि टोपनतैं करवाल, फटा बिनु लेत भुजंग कि फाल ॥
सुहावत के झरि नक्क समूल, फबैं इसमास मनौं तिलफूल॥७९॥
लगैं असि ओठ झरैं कटि लाल, पके जनु बिंब कि पुंज प्रवाल,
उडैं कटि दंतन ओघ अखंडैं, खिरैं फटि हीरनके जिम खंड॥८०॥
किरैं सह मुत्ति प्रहारनें कान, बनैं सह मुत्ति सु सुत्ति बिधान ॥
जहाँ झरि हत्थ गिरैं अति जुद्ध, किधौं फन पंचकके अहि क्रुद्ध॥८१॥
तिरैं बहु खेटक सोनित ताल, मनौं कि सरस्वति कच्छप माल॥
झुकैं बहु सूर झटक्कन झार, गिरैं जिम आसव मत्त गमार॥८२॥

पच्छियों को २ हटाकर आकाश में १ मस्तक उडते हैं सो ३ मानों कालिका गेंद ४ खेलती है, ढालों के ऊपर ५ आंतें गिरती हैं सो मानों टिपारों में ६ सर्प फिरते हैं ॥ ७७ ॥ इस युद्ध में आधा फटा हुआ मस्तक ७ गुडता [लुढकता] है सो मानों योगिनी ने खप्पर डाल दिया है ८ वीरों की चोटियें कट कर उडती है सो मानों ९ विजय की ध्वजा १० पवन से पडती है ॥ ७८ ॥ टोपों के ऊपर से टूट कर ११ तरवारें १२ गिरती हैं सो मानों १३ बिना फरा सर्प उछलते हैं १४ मूल सहित नासिका कट कर ऐसी दीखती है कि मानों १५ आसोज मास में तिलों के फूल शोभा देते हैं ।७९। ११ तरवार लग कर लाल होट कट कर गिरते हैं सो मानों १७ बिम्बफल (रक्त फल विशेप] और १८ मूँगों (नग विशेष) का समूह है १९ बिना तूटे हुए दांतों के समूह कट कर उडते हैं सो मानों हीरों के टुकडे होकर खिरते हैं॥८०॥२२ प्रहारों से २१ मोतियों सहित कान २० गिरते हैं सो विधान पूर्वक मोतियां सहित २३ सीपें बनती हैं ॥ ८१ ॥ उस २५ रुधिर के तालाव में बहुत २४ ढालें तेरती हैं सो मानों २६ सरस्वती नदी में कच्छपों की पंक्ति तिरती है (सरस्वती नदी के पानी का रंग लाल प्रसिद्ध है)२७ तरवारें चला कर 'डिंगल भाषा में तरवार के एक वार में दो टुकडे होजावें उसको झटका कहते हैं परन्तु लौकिक में इसकी रूढी खड्ग में होगई है इसीकारण यहां तरवार लिखा है'

डरावत डाकिनि दंत दिखाय, जरावत साकिनि लावत लाय ॥
तिन्हैं भट नाटकके नट तोर, गिनैं रस अद्भुतही नहिं घोर॥८३॥
गिरैं कहुँ भज्जतैं भीरुन सीस, उठावत पूर्व बिहावत ईस ॥
गिलैं तिनको नन गूदहु गिद्ध, बुरे इमैं जे कि मरे भय बिद्ध॥८४॥
मिले दुवरया गतिके रन माँहिं, जचैं जुरनौं तँहँ नाँहिं सु नाँहिं॥
लगी गर बुंदिय जैपुर लाज, करैं नहि अंग्घ सरैं नहिं काज ८५
भयो बल साँवलको बल भाव, दयो अभमल्ल पुरंदर दाव ॥
चली पबिकी छबि ते असि चंड, खुल्यो सिर साँवल ज्यौं गिरि खंड८६

(षट्पात्)

अभयसिंह सुत अत्थ प्रबल सुशतेस१रु पूरन२ ॥
दासी औरस हुव रहि चले चाहत अरि चूरन ॥
सारसोपके सुभट बढ्ढि पहुंचे सुहाड़ बल ॥
भट साँवल के भंजि दब्बि नाँनेड़ि दयो दल ॥
इन्ह हनत पिक्खि कूरम अचलैं दोउनशभुग्गन हूर दिय ॥
उभैं पुत्र मरत अभमल्ल अब लरि अचलेस समीप लिय८७
अचलसिंह तरवारि परिय अभमल्ल बाँजि पर ॥
झरत खंध हय झुक्किय इनहु झारिय इहिं अवसर ॥
सूर अचलको सीस तरकि तुट्ट्यो असि उच्छट ॥

॥ ८२ ॥ १ अग्नि लाकर वीर लोग उसको नटों के २ खेल की भांति अद्भुत रस ही मानते हैं ३ भयानक रस नहीं गिनते ॥ ८३ ॥ ४ भागते हुए फिर कायरों के मस्तक समझ कर ५ छोड देते हैं, और वे भय से बिंध कर मरे ६ इसकारण बुरे हैं अथवा उन का स्वाद (मजा) बुरा है ॥ ८४ ॥ ७ वहां बहुत कायरों के मस्तक गिरते हैं जिनको पहिले तो महादेव उठालेते हैं परन्तु नाहीं करने की ही नाहीं थी ८ प्राणों का आघ नहीं करते अथवा पाप नहीं करते ॥ ८५ ॥ सांवलदास का बल राजा ९ बलि की भांति होगया उस समय अभयसिंह ने १० इन्द्र के समान दाव दिया ११ वज्र की छवि से तरवार चली ॥ ८६ ॥१२सुहाड़ की सेना में१३नानेड़ी की सेना को१४अचलसिंह ने१५दोनों ॥ ८७ ॥ १६ घोड़े पर

लिपउ झेलि लगि लाह नंखि बहु मंडि *महानट ॥
अचलहिं बिदारि अभमल्ल इम सुतन बैर कढ्यो सकल ॥
बिनु बाजि जाय गंज्यो बलिय बुद्धानीपुर पति प्रबल॥८८॥

दोहा ॥

बीर बहादुरसिंह तब, बुद्धानी पुर नाह ॥
अश्व रहित अभमल्लकों, इक्खत रचित उछाह ॥ ८९ ॥
बेग हयहिं झपटाय बलि, सम्मुह झारिय सांगि ॥
अभमल्लहिं पह लगिय इम, अंग सिर पबि कि उमंगि ९०

॥ षट्पात्॥

लगत सांगि अभमल्ल छत्ति फुट्टन नन छोहिंउ ॥
बिरचि बंपा बखसीस डंकिं कूरम दल डोहिंउ ॥
बिनाँ तुरग हठ बंधि तुमुल कोऊ नहिं तक्कत ॥
यह अचिंज्ज सहि सांगि बढ्यो सम्मुह जय बंक्कत ॥
जिम तुला दंड खंभहि जुरत उर प्रबिद्ध अभमल्ल इम ॥
बुद्धानि नगर ईसहिं सन्निधि तुल्लि पटक्किय अवनि तिम९१

[दोहा]

पर्‌यो बहादुरसिंह इत, इत सु पर्‌यो अभमल्ल ॥
इम कूरम भट पंच५ अरि, हनि सुत्तो हरवल्ल ॥ ९२ ॥

पज्झटिका ॥

चहुवान देवसिंहहिं बिचारि, सिरदार कुम्म नौरव सम्हारि ॥
नाथाउत चौलुक प्रेम नाम, किय आहव नरउर सचिव कॉम९३
संग्राम नाम चालुक्य संग, जुरि करनसिंह कछवाह जंग ॥

---

* शिव ने ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ १ बरछी २ पर्वत पर ३ वज्र । ९० ॥ ४ मूर्छित नहीं हुआ ५ मज्जा ६ कूद कर ७ मथा ८ आश्चर्य है कि बरछी को सहन करके ९ पोलता हुआ १० तकड़ी की डांडी किसी खंभे से बांधी जावै जैसे ११ वेधन होकर १२ तोल (उठा) फर भूमि पर पटकी ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ १३ नरूका १४ सोलंखी १५ कार्य ॥ ९३ ॥

परिहार*परसुधर बल प्रचंड, किय जोध चालुकहिँ दुसह दंड ९४
गंजन अरि साँवलदास गोर, उडि रूपसिंह चालुक्य ओर ॥
जोरावर †नारव कुम्म जत्थ, सुरतेस वीर चालुक्य सत्थ ॥ ९५॥
बखतेस हड्ड असि करत वाह, चलि उदयसिंह चालुक्य चाह ॥
जगभानु हड्ड अति ‡चित्र जंग, सजि कूरम पृथ्वीसिंह संग॥९६॥

(दोहा)

इम बुंदिय आमेर भट, रचिग परस्पर रारि ॥
जुद्ध मिले जल §दुद्ध जिम, ¶अब्बन वग्ग उपारि॥ ९७ ॥

[मुक्तादाम]

चली असि बान बरच्छिन चोट, लगे कति लेत कबुत्तर लोट९८
उलट्टिग सत्त समुद्दन आप[1], प्रकट्टिय कूरमको यहँ पाप ॥
थरक्किय त्यों अतलादिक थान, लरक्किय सेस फटा लचकान९९
तरक्किय कच्छप पिट्ठि सत्रास, बनैं जनु अंडकटाह[4] विनास ॥
टिक्यो किरि[5] तुंडहिँ दंतुलि टारि, चिक्यो दिक[6]कुंजर पुंज चिकारि
छुटैं सिर छत्तिन[7] छत्तिन छोकि, कढैं बनतैं जिम कुक्कत[8] केकि[9] ॥
करक्कहिँ कोंचनकों[9] असि[10] कट्टि, फरक्कहिँ विज्जुव[11] ज्यों घन फट्टि १०१
खरक्कहिँ ढालनके कटि खंड, दरक्कहिँ तालनसे[12] ध्वजदंड ॥
छरक्कहिँ छोनियँ[13] छिंछिन रत्त[14], बरक्कहिँ वाहुल[15] टोप विघत्त[16]॥१०२॥
झरक्कहिँ इक्कहिँ इक्क झटक्कि, थरक्कहिँ रुंड लरक्कहिँ थक्कि ॥
गरक्कहिँ खंजर[17] पंजर[18] गोदि, जरक्कहिँ जोर महाभट मोदि[19] ॥१०३॥

---

* परशुराम ॥९४॥ †नरूका कछवाह ॥ ९५ ॥ ‡आश्चर्य युक्त युद्ध करनेवाला ॥ ९६ ॥ § दुग्ध ¶ घोड़ों की वागें उठा कर॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ जल २ जयसिंह का ३ फण ॥ ९९ ॥ ४ मानों ब्रह्मांड का विनाश (प्रलय) होवेगा।५वाराह का मुख ६ दिग्गजों का समूह चीसकी करके हटे ॥ १००॥७चत्रियों की छातियों को फाड़कर८मयूर९कवचों को काट कर१०खड्ग११बिजुली॥१०१॥१२ताड़ वृक्ष के समान १३ भूमि को १४ रक्त की झीछों (पिचकारियों] से १५ दस्ताने १६ विशेष घात से ॥ १०२ ॥ १७ शस्त्र विशेष [एक प्रकार की छुरी] १८ शरीर को खोद कर १९ प्रसन्न होकर गिराते हैं ॥ १०३ ॥

प्लवंगन[1] प्रोथ[2] सनंकिय स्वास, भनंकिय भेरि[3] बलाहक[4] भास ॥
रनंकिय कोचन[5] रोचन रुंड, झनंकिय अक्खर[6] पक्खर झुंड।१०४।
खनंकिय हड्डन[7] हड्डन[8] खग्ग, फनंकिय फेनिल[9] सेस समग्ग ॥
छनंकिय बान उडानन छूट, ठनंकिय घंट करी कटि[10]कूट ।१०५।
इतैं तँहँ देव उतैं सिरदार, हमल्लन भल्लन देत प्रहार ॥
उभै २ झपटावत सत्तिन[11] सूर, उभै अंधिवीर[12] महा मगरूर ॥ १०६।

(दोहा)

महाचंड अरु चंड मनु, दोऊ भट जम दास ॥
अंसु[13] दल गाहक अंकुरे[14], रन मोरी[15] भव रास ॥ १०७ ॥

[षट्पात्]

देवसिंहके सुभट हनिय सिरदारसिंह खट्ट ॥
नारवके रन रुप्पि देव सद्दिय द्वादस भट ॥
द्विगुन जोर लखि द्रुतहि अक्क[16] पहिलैं तिन्ह अंदरि ॥
अरु मंडल भिर्देवाय प्रथम पठये स्वधर्म परि ॥
डाकिनि पिसाच यह कूक दिय सु सुनि सोर नारव[17] सुभट
दस१०मांन[20] उग्र अड्डे दुसह बहुरि आनि ठट्ठे[21] बिकट।१०८।

---

१ घोड़ों के २ फुरणों[नासिका. ओं] से ३ नोबत ४ मेघ की शोभा से बजी ५ कवचों से शोभायमान धड़ ६ नहीं गिरे हुए अर्थात् हाथी घोड़ों पर लगे हुए पाखरों के समूह बजे॥१०४॥७हाडा क्षत्रियों के खड्ग८शरीर के हाडों पर बजे; वा हडों के शस्त्र हाडाओं पर ही बजे [क्योंकि यहां दोनों ओर के युद्ध करने वाले हाडा ही थे] ९ झागों सहित शेष के सब फरा फेन [झाग] सहित होकर फूत्कार करने लगे [यहां फेनों के योग से फणों का ग्रहण है]१०हाथियों के कुंभस्थल कट कर ॥ १०५ ॥ ११घोड़ों को१२वीरों के पति [स्वामी] ॥१०६॥ १३सेना के प्राणों के ग्राहक१४खड़े हुए१५युद्ध में महामारी (प्लेग) का नृत्य हुआ अर्थात् मनुष्यों के समूह का नाश करनेवाली महामारी का नृत्य हुआ ॥ १०७ ॥१६सूर्य ने१७देवसिंह के वीरों का आदर करके१८सूर्य मंडल का भेदन कराकर १९ मल्लके २० दश का प्रमाण वाले अर्थात् दश भट था २१ खड़े हुए ॥ १०८ ॥

(दोहा)

सुभट अट्ठ८निज संटिकैं, देवसिंह द्रुत दाय ॥
नारचके ते दस१०निगलि, नारच लिय निपराय ॥ १०९ ॥

(षट्पात)

अब उन्नततम अंस उपर दिनकरैं आरोहत ॥
चित्र जंग द्विप चँच्छु मुदित सारथि सह मोहत ॥
देवसिंह सिरदार जय रु राधेय मिले जँहँ ॥
विरचत दुव२बल्ल बंधि तुमुल बल रंग जंग तँहँ ॥
सत्तन खलनिं खंचिय अरुन चुक्कि सैंकति फनिपंति चक्किय ॥ ११० ॥
दुव२जोम अधिक संजोग सुख तेदिन चक्क चक्किन तक्किय ॥
जिम द्रोणाचल लैन उठ्यो अंजनि सुत लासक ॥
अचवनैं जिम अंभोधि विदित आतापि विनासक ॥
चंडी जिम चंडपर खान मुष्टिक संकरखनैं ॥
पन्नगपर किं सुपर्ण गर्बि तेम हिंसकर प्रासन ॥

इम बैरिसल्ल कुन्त उद्धरन लरि समीप सारव स्थिपउ ॥
मानों कि भीम हठ पग्ग मुररि दुस्सासन उप्पर ठियउ ॥१११

भुजंगप्रयातम् ॥

मिले बंन्हिके भानुके वंस मज्झी, दुहूँ फौजमैं ओजतैं मोज रुज्झी
दुहूँ तोरकैं जोरतैं भुम्मि दब्बी, इतैं गोमुखा भेरि बज्जे अरब्बी ॥११२॥
भयो सेस रंकेसके वेस भिन्नों, किटी दंतुली टारिकैं तुंड छिन्नों ॥
कढ्यो कैपाल पाताल घाता नं कोऊ, रच्यो वैच्छ वीभैच्छ बीले-
मैं सोऊ ॥११३॥
हटी जूटतैं मेरुके कूँट हल्ले, चहूँ कोदँ म्पप्रोदके श्रोत चल्ले ॥
भजे लोक स्वर्गादि लोकेस भीनैं, लगैं इन्द्रकों सीसके लाग लीनैं
भये राग सिंधूनके लोग भिन्ने, नची जुग्गिनी ताल वेताल दिन्ने ॥
खिरैं हड्डपैं खग्ग लुट्ठे अखंडे, मनों फग्गमैं चच्चरी दंड मंडे ॥११५॥

उभैर मंडली धावें बाजी उडावैं, उभै बारकी मारमैं नाँहिं आवें ॥
इतैं लज्ज बुन्दीसकी ठोकि ठिल्लैं, उतैं ख्यालह जैसिंहके जोर खिल्लैं ॥ ११६ ॥

उभै जेठके भानके मार्न उग्गे, परैं फौजके ओजके अंसु पुग्गे ॥
बकीं डाकिनी डक्क डैरों बजाये, घने भेदके मेदँ भैरौं अघाये ११७

फिरैं फेकरी चंड फेरंड फुल्ले, भिरैं भूत के रंत्तमैं मत्त भुल्ले ॥
भ्रमैं गिद्धनी चिल्हनी मेद भक्खैं, रमैं पंकमैं कंक नाँ संक रक्खैं ११८

तपैं रंगी बाजीनके तंग तुट्टैं, छिपैं भीरु बिद्राव कैं चाव छुट्टैं ॥
उलट्टी नटीलौं गिरैं को उछट्टैं, फिरैं रीस कैं ईसके सीस फट्टैं ११९

कटी के पताका उडी अंभ कट्ठैं, चमू मेघके जोर ज्यौं मोर चट्ठैं ॥
झुकैं झंड बेतंडपैं बात झंपैं, किधौं सैलके सृंग खज्जूरि कंपैं १२०

बन्यौं संकुली सत्थ लै बैंत्थ बाँहीं, निभ्यो पोनपैं ठहाँ सैदागौन नांहीं

---

१ दौड़ में २ घोड़ों को उड़ाते हैं सो दोनों ओर के प्रहारों में नहीं आते इधर तो बुधसिंह की लज्जा के अर्थ (कि हमारे कारण से ही उसकी लज्जा रह जावै) शत्रुओं के ठोक कर ३ हटाते हैं और उधर जयसिंह के जोर से लड़ाई का खेल खेलते हैं ॥ ११६ ॥ दोनों ही ज्येष्ठ मास के सूर्य के ४ समान उदय हुए जिनकी ५ ताप की ६ किरणों के पहुंचने से सेना गिरती है उन फौजों के गिरने से डाकिनियें डैरव बजाकर बकने लगीं और बहुत प्रकार के ७ मांसों से भैरव ८ तृप्त हुए ॥ ११७ ॥ स्यालनियें फिरती हैं और भयंकर ९ स्याल फूलते हैं १० रुधिर में मस्त होकर भूले हुए भूत परस्पर भिड़ते हैं और उडती हुई ग्रीधनियें और चीलएं मांस खाती हैं उस लोही मांस के कीचड़ में कंक [ढींच] पक्षी निःशंक होकर क्रीड़ा करते हैं ॥ ११८ ॥ ११ युद्ध में तपे हुए घोड़ों के तंग टूटते हैं १२ कायर लोग भागकर उत्साह छोड़कर छिपते हैं और कितने ही उलटी हुई नटी के समान उछट कर गिरते हैं और क्रोध करके शिव की मुंडमाला में गए हुए मस्तक भी फटते हैं ॥ ११९ ॥ १५ सेना में कटी हुई १३ ध्वजा ऐसी दीखती है जैसे मेघ के जोर से १४ आकाश में मयूर चढ़ते हैं १७ पवन लगने से १६ हाथियों पर झंडे ऐसे दीखते हैं जैसे १८ पर्वत के शिखर पर खजूर का वृक्ष कांपता है ॥ १२० ॥ २० एक दूसरे को भुजाओं में भरकर यह सेना ऐसी १९ भरगई कि जिसमें होकर पवन का २१ सदागोन [निरंतर ग-

गहे कोर[1] कट्टार के पार[2] गोदैं, खुरौं बाजि के घुम्मिकैं भुम्मि खोदैं
फिरैं के गदा मारि गै[3] मत्थ फोरैं, चिरैं[4] कुंभ मुत्तीन[5]को रंगचोरैं ॥
कढैं हत्थि हौदेनके उद्ध[6] कच्छी[7], मुरैं तारकी वग्ग ज्यों वारमच्छी[8]
किते कुप्पि हौदेनमें सूर कुद्दैं, मरोरैं निसादीन[9]के कंठ मुद्दैं ॥
भिरैं त्यों गजाजीव[10] के जीव भुल्लैं, चढे मोहमैं के पदग्गत्त[11] बुल्लैं १२३
नदैं[12] भंभं[13]की फुट्टि भेरी[14] नगारे, बदैं के बिदारैं वृहा हाय हारे ॥
चढी आगि जंगी[15] चिनंगी चमंकी, सिकीं[16] झार संसारकी बुद्धि संकी
तपैं पक्खरी बाजि दज्झैं[17] तरक्कैं, जपैं राम के घुम्मिकैं भुम्मि जक्कैं[18]
खिरैं हड्ड के झुंड के खंड खंडी, मनो वुट्ठि ओरेन[19]की मेघ मंडी ।१२५।
चलैं रोप[20] त्यों चाप जीवा[21] चटक्कैं, नचैं खेचरी भूचरी प्रान नट्ठैं[22] ॥
बहैं बेगतैं तेग संनाह[23] बट्टैं, किधौं संबुकी[24] पंतिमैं तंति कट्टैं ॥

मन] नहीं होसका "पवन का नाम ही सदागति है वह सार्थक नहीं हुआ" कटार ग्रहण करके उसका १ कोना [नोक] मांस में २ पार करते हैं और कितने ही घोड़े फिर कर भूमि को खोदते हैं ॥ १२२ ॥ कितने ही गदाओं से ३ हाथियों के मस्तक फोड़ते फिरते हैं और चिरेहुए ४ कुंभस्थलों से ५ मोतियों का रंग चुराते हैं अर्थात् श्वेत रंग के मोतियों को रुधिर से लाल कर देते हैं ७ घोड़ों को हाथियों के हौदों से ६ ऊपर निकालते हैं वे घोड़े सूत के तार की वाग से ८ पानी में मच्छी मुड़े जैसे मुड़ते हैं कितने ही धीर क्रोध करके हौदे में कूदते हैं ९ हाथी के सवारों के कंठ मरोड़ कर प्रसन्न होते हैं १० कितने ही महावत भिड़ कर जीव भूलते हैं कितने ही हाथियों के ११ पैरों में दब कर मूर्छित होकर बोलते हैं ॥१२३॥ १३ भंभं [फूटे बाजे के शब्द का अनुकरण है) करके कितने ही १४ नौबत और नगारे १२ बजते हैं कितने ही फटेहुए हाय हाय करते हैं १५ युद्ध संबंधी अग्नि चढ कर उसकी चिनगारियें चमकीं जिन की ज्वाला से १६ जल कर संसार की बुद्धि शंकित हुई ॥ १२४ ॥ पाखरों वाले घोड़े तप कर १७ जलते हैं तड़फते हैं अथवा कूदते हैं और कितने ही राम राम करके घूम कर भूमि पर १८ गिरते हैं कितने ही हाडों के झुंड टुकड़े टुकड़े होकर खिरते हैं सो मानों मेघ ने १९ ओलों (गड़ों) की वृष्टि रची है ॥ १२५ ॥ ज्यों २० बाण चलते हैं त्यों धनुष की २१ प्रत्यंचा चटकती है खेचरी भूचरी [देवी की दासी विशेष] नचती है और प्राण २२ नष्ट होते हैं वेग से तरवारें पड़कर २३ कवच कटते हैं सो मानों २४ सायन की पंक्ति

कटैं सुंडि हत्थीनके झुंड झुक्कैं, कटैं प्रोथ[1] बाजीनके कंक[2] कुक्कैं
भई रुंधि[3] त्रैलोक्यकौं धुंधि भारी, छई स्वर्गकी सीमलौं भीम[4] छारी
तकैं बीर कायासँ[5] आयासँ[6] तंद्रा[7], चढी राति सोपै अमा[8] नष्टचंद्रा॥
सजी दैव[9] गैजामकै[10] पुव्व संझा, बनैं भानकैं[11] विष्फुरी चंद्र बंझा[12]॥
सबैं संकुली[13] ध्वांत[14] संग्राम सीमा, भैचक्री[15] फिरी ज्वार अंगार[16] भीमा[17]
दिपैं व्हाँ[18] कटारी उडी अंभ दीसी, सुही चंदकौं मोहिनी[19] रोहिनीसी
जरैं गैन गिद्धीनके नैन नक्की, सुही मैगकी तीन ३ तारा थरक्की
उडैं हीर जो कौंलिनी[22] इक्क१उग्गैं, प्रभा जासँ[23] अंधारपैं मारपुग्गैं
क्रमैं गैन के भऊ[24] ज्या जोर कढ्ढैं, गृहाकारि[25] आदित्य[26] जे च्यारि४चढ्ढैं
छुटयो कट्टि त्रैसूल उड्डीनँ[27] छोहैं, सुही तीन३तारीनतैं पुष्य सोहैं॥

में तांत निकलती है ॥ १२६ ॥ सुंडें कटने से हाथियों के समूह झुकते हैं और घोड़ों के १ फुरले [नासिका] कट कर २ मांसाहारी पक्षी विशेष कूकते हैं इसप्रकार तीनों लोकों को ३ रोक कर भारी धुंधि हुई और वह ४ भयंकर भस्मी स्वर्ग की सीमा तक छागई ॥ १२७ ॥ ५ शरीर के साथ ६ परिश्रम होने से वीर ७ आलस्य अथवा निद्रा को ताकते हैं उस समय नष्टचंद्रा ८ अमावास्या के समान दिन में ही रात्री होगई ९ रात्रि के पहिले ही दैव ने यह १० संध्या कर दी जो ११ सूर्य के विना और चंद्रमा से१२वांझ (संध्या) रात्री चढी ॥ १२८ ॥ संग्राम की सब सीमा १४ अंधेरे से १३ भरगई उस समय ज्वाला और १६ अंगारों की १७ भयंकर १५ नक्षत्र मंडली [तारा मंडल] फिरी. 'अब यहां नक्षत्रों का रूपक वर्णन करते हैं' यहां १८ आकाश में चढी हुई कटारी दीखती है सो ही चंद्रमा को १९ मोहनेवाली रोहिणी शोभा देती है 'रोहिणी चंद्रमा की स्त्री है इसकारण उसको चंद्रमा को मोहनेवाली कही है' आकाश में गीधनियों के नेत्र और२०नासिका जलते हैं सो ही २१ मृगसर नक्षत्र के तीन तारे ठहरे. वहां हीरा उडता है सोही२२आर्द्रा नक्षत्र का एक तारा उदय हुआ२३जिसकी कान्ति की मार अंधेरे पर पहुँचती है ॥ १३० ॥ कितने ही तीरों के भाले२४प्रत्यंचा के जोर से निकल कर आकाश में फिरते हैं सो२५घर के आकार२६पुनर्वसु के च्यार तारे चढे हैं छूटा हुआ त्रिशूल कट कर२७नक्षत्र शोभा देता है सोही२८पुष्य नक्षत्र के तीन तारे दीखते हैं [पुष्य नक्षत्र त्रिशूल के आकार है] १३१ ॥

छुटैं चक्र ट्हे वक्र आयास छाजैं, भुजंगी भ जो पंच५तारेन भ्राजैं
गृहाकार६हे पंच अंगार उड्डैं, मघा जो मनौं हंकि आई ६डुड्डैं ॥
जरंते उडैं कालिका पालिकापै, ति पुब्बोत्तराफग्गुनी रिच्छ द्वै२द्वै
उडैं यो जरैं हत्थ लग्गी अँगारी, मैं पंचौंल जो हस्त नक्खत्रभारी
चढैं व्योम मुत्ती बनैं इक्क १ चित्रा, प्रबालौं चढैं स्वाति इक्कैं १ पवित्रा ॥
धकंती कवी व्योमतैं व्योम धावैं, बिसाखा सु चा४रिच्छकालैान-नावैं ॥ १३४ ॥
उडैं त्यौं तिते सौनके के अँगारे. ति ज्यौं मित्रनक्खत्रके च्यारि४तारे
चली कानतैं कुंडली व्योम चानौं, सुनासीरके रिच्छके ते सैं तीनौं३
इली वक्रपैं रुद्र संख्या११अँगारे,ति ज्यौं सिंहलंगूल त्यौं मूलतारे

टेढे चलने के १परिश्रम से चक्र छूटता है सो ही २सर्प के आकार वाले [अश्लेषा]३ नक्षत्र के पांच तारे४शोभा देते हैं (मतांतर से अश्लेषा के ७ तारे भी मानते हैं] ५ घर के आकार होकर पांच तारे उडते हैं सो ही मानों मघा नक्षत्र चल कर ६ हुडुडा (गोलकुंडा] खेल विशेष पर आई है ॥ १३२ ॥ ७ कालिका देवी के ८ पलंग पर जलते हुए अंगारे उडते हैं ९ वे पलंग ही १० पूर्वाफाल्गुनि और उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रों के दो दो तारे बनते हैं [ये दोनों नक्षत्र दो दो तारों के होते हैं] कटे हुए ११ हाथों के अंगार लग कर उडते हैं सो १२ हस्त नक्षत्र के १३ पांच तारे होते हैं [हस्त नक्षत्र हाथ के आकार होता है ॥ १३३ ॥ १४ आकाश में मोती चढता है सो ही चित्रा नक्षत्र का एक तारा होता है आकाश में १५ मूंगा चढता है सो १६ पवित्र स्वाति नक्षत्र का एक तारा होता है १८ घोडे के मुख से जलती हुई १७ लगाम १९ आकाश में जाती है सो २० चार तारों के विशाखा नक्षत्र का २१ डौल(आकार) बनाती है ॥ १३४ ॥ २२ उतने ही प्रमाण के कितनेक अंगारे उडते हैं २३ वे २४ अनुराधा नक्षत्र के (चामर दंड के आकार) च्यार तारे होते हैं कान से चली हुई कुंडली २५ आकाश में दीखती है सो कुंडल के आकार २६ इंद्र के २७ नक्षत्र (ज्येष्टा) के तीन२८ तारे हैं "ज्योतिष में ज्येष्टा नक्षत्र का देवता इन्द्र है" ॥ १३५ ॥ २९ टेढी तरवार पर ग्यारह संख्या के अंगारे हैं सो ३० सिंहपुच्छ के आकारवाले ३१ मूल नक्षत्र के तारे हैं

जैं अब्भ* गैदंत दो† ओरसौंजो, दिपैं‡ पुव्वआखाढ सो§ रिच्छ द्वैरको ॥
अँगार[1] उभैं अब्भ काहू उछारी, कढे उत्तरा द्वैरभैं[2] मंचानुकारी[3] ॥
इतैं उडैं अब्भ औरैं अंगारे, त्रिकोणाभ[4] जे ते अभिजिं तीन[5] तारे ॥
भ[6] गोविंदको[7] ज्यौं कह्यो मग्ग त्यौं भो, मृदंगैं[8] लख्यो चो ४ धनिष्ठा भ ज्यौं भो ॥
उडैं चर्म[9] सो१००चंद माला[10] अरोह्यो, सुकी[11] वृत्त बारीसको रिच्छ[12] सोह्यो ॥ १३८ ॥
महारत्ति[13] अर्केंदुके[14] संग सन्ने, छह तारे रहे कृत्तिका अंत छन्ने[15] ॥
त्रिजामा[16] हि पुव्वा[17] भई यो त्रिजामा[18], परी फैलि ज्यौं अस्र[19] उद्भेद[20] पामा ॥
हठी वीर जैसिंहके घूक[21] हुक्के, कुहू[22] सालमी[23] सूर फेरंड[24] कुक्के ॥
फिरैं भग्गली[25] अंगुली[26] गिद्ध फुल्लैं, भ्रमैं पिंगला[27] सेन भा[28] लेन भुल्लैं ॥ १४० ॥

आकाश में * हाथी के दांतों † ओर के दंत जलते हैं सो (गज दंत के आकार) § दो तारों का ‡ पूर्वाषाढा नक्षत्र होता है ॥ १३६ ॥ १ आकाश में दो अंगार किसीने उछाले सो २ उत्तराषाढा नक्षत्र के दो तारे ३ मंच के आकार हुए आकाश में और अंगारे उडते हैं सो ४ त्रिकोण के आकार ५ अभिजित नक्षत्र के तीन तारे दीखते हैं ॥ १३७ ॥ ७ विष्णु भगवान् का ६ नक्षत्र "ज्योतिष में श्रवण नक्षत्र के देवता विष्णु हैं" मार्ग के आकार श्रवण नक्षत्र हुआ ८ मृदंग के आकार चार तारों का धनिष्ठा नक्षत्र हुआ ९ ढाल के ऊपर के चांद (फूल) १० चढ़ेहुए उडते हैं सो ही ११ गोलाकार सौ तारों का वरुण का १२ नक्षत्र शतभिषा शोभायमान है "ज्योतिष में शतभिषा नक्षत्र का स्वामी वरुण है" ॥ १३८ ॥ १३ उस काल रात्रि में १४ सूर्य चन्द्रमा के साथ मानेहुए इसकारण कृत्तिका नक्षत्र के अंत तक पूर्वाभाद्रपद १ उत्तराभाद्रपद २ रेवती ३ अश्विनी ४ भरणी ५ कृत्तिका ६ ये छः नक्षत्र १५ छुपे रहे अर्थात् नहीं दीखे "ये नक्षत्र वैशाख मास में सूर्य के आस पास रहते हैं और अमावास्या का दिन होने के कारण सूर्य चंद्रमा का साथ होना लिखा है" १६ रात्रि के १७ पहिले ही इसप्रकार की १८ रात्रि हुई वह ऐसी फैली कि जैसे १९ रुधिर में पामा रोग २० प्रकट हुआ ॥ १३९ ॥ जयसिंह के वीरों रूपी २१ उल्लू बोले २२ उस नष्टचंद्रा अमावास्या में २३ सालमसिंह सम्बन्धी २४ गीदड़ बोले २५ भागलों (भागनेवाले-कायरों) रूपी २६ कमल (कमलोदय) प्रफुल्लित हुए २७ वह सेना कोचर पक्षी की २८ कान्ति को लेना नहीं भूलकर भगती है ॥ १४० ॥

भन्यौं वैरिसल्लोत[1] भूतेस[2] भायो, जग्यो देवक्रव्याद[3] जो जैत[4] जायो।
नरूजात[5] सैं गात[6] यौं लीलि[7]लिन्नौं, नही ईस[8] जच्च्यो सु[9] पै सीस दिन्नौं ॥ १४१ ॥

[दोहा]

गिरत गिरत नांरव[10] गजब, द्रुत[11] मंडिग सिरदार ॥
देवसिंह किय छकित दै, असि[12] उपवीत उतार ॥ १४२ ॥
अब सु[13] देव हनि नारवहिं[14], खाय इक्क तस खग्ग ॥
धप्यो प्रबल[15] हरबल्ल धुंर, फिरत मचावत फग्ग ॥ १४३ ॥

(षट्पात्)

अग्गैं तच्छक[16] उरग बहुरि पय पुच्छ बिदब्बियं[17] ॥
अग्गैं बर[18] बारूद छोरि पावक[19] सिर छब्बिय ॥
अग्गैं दिनकर[20] असह मुररि उत्तर मग लिद्धो ॥
अग्गैं छुधित[21] मयंद[22] बहुरि बिच्छिय अंल[23] बिद्धो ॥
अग्गैं सु देव आहव[24] अडर अरू नांरव[25] अति उप्फन्यो ॥
जयसिंह मान भंजक[26] सजव[27] बेतालन रंजक[28] पन्यो॥१४४॥

[निःशाणी]

---

१ वैरीशाल के वंशवाला २ शिव के मन भाया ३ देवसिंह "क्रव्याद् सिंहे" इति शब्दार्थचिंतामणिः ॥ ४ जैतसिंह का पुत्र (देवसिंह) जगा ५ नरूका से ६ गात्र (शरीर) ७ लीला (खेल) से ८ शिव ने उसका मस्तक नहीं मांगा ९ परन्तु ॥ १४१ ॥ १० नरूके सरदारसिंह ने ११ शीघ्रता की १२ तरवार से जनेऊ दी (जनेऊ के आकार शरीर को काट देने को जनेऊ उतार कहते हैं) ॥ १४२ ॥ १३ वह देवसिंह १४ नरूके को १५ प्रथम ॥ १४३ ॥ पहिले ही १६ तक्षक सर्प था और फिर चरण से उस की पूंछ को १७ दबाई १८ पहिले ही श्रेष्ठ बारूद था और फिर १९ अग्नि के ऊपर डाला २० पहिले ही नहीं सहने योग्य सूर्य था और फिर मुड़कर उत्तर दिशा का मार्ग लिया, २१ पहिले ही भूखा २२ सिंह था और फिर बीछू के २३ डंक से बीधा गया इसप्रकार देवसिंह पहिले ही २४ युद्ध में निर्भय था और फिर २५ नरूका सरदारसिंह बहुत बढा इसकारण जयसिंह के मान को २६ मिटानेवाला होकर बेतालों को २७ शीघ्र २८ प्रसन्न करनेवाला हुआ ॥ १४४ ॥

नारवकौं देवा निगालि अग्गैं उफनाया ॥
इत नरउर न्रप के सचिव चालुक्क चँपाया ॥
प्रेमसिंहहू दै पलट द्रुत दाव दिखाया ॥
झल्लरिलौं झननंक ते तेगा तरकाया ॥ १४५ ॥
सूरौं हूरौं सत्थहै गलवत्थ मिलाया ॥
खंडेराय खिल्हारहू रन फग्ग रचाया ॥
पातैं गदा के पुट्टली फटक्कार फवाया ॥
घाय हब्बकैं रंग के जलजंत्र चलाया ॥ १४६ ॥
खेह गरद्दी मेहलौं अंध्धीर उडाया ॥
फूल कलेजे फिप्फरे फवि फाँक फुलाया ॥
गोली गोटैं गुल्लालके चहुओर चढाया ॥
डेरौं डिंडिम डाकिनी डफ डक्क बजाया ॥ १४७ ॥
गनिका ज्यौं नचि जुग्गिनी थेई थरकाया ॥
भैरौं गायक भायकैं आलाप उठाया ॥
नाथाउत प्रेमहु निडर खग खेल खिल्हाया ॥
दोऊ फग्ग उद्दग्गमैं इम कौतुक आया ॥ १४८ ॥

नरूके को खाकर देवसिंह आगे १ बढा २ सोलंकी को दबाया ३ शीघ्र ४ खड्ग विशेष ॥ १४५ ॥ वीरों और ५ अप्सराओं ने साथ होकर ६ उस फाग में कितनी गदाओं का पड़ना ही ७ पोटली का फटकारना ८ शोभायमान हुआ और कितने ही घाव उबकते हैं सो ही रंग के ९ फुहारे चलाये ॥१४६॥ मेघ के समान अंधेरा करके धूल उडती है सोही १० गुलाल उडाई उस युद्ध में कलेजे और फेंफरों की फांकें हैं सो ही फूले हुए फूल हैं और गोलियां रूपी ११ गुलाल गोटे चौतरफ चढाए और भैरव के वाद्य डैरव और डाकिनियों के वाद्य डिंडिमियें बजे सो ही उस फाग में डफ बजाये॥ १४७ ॥ और वेश्याओं के समान थेई थेई करके जोगिनियें नचीं और बावन ही भैरवों ने १२ कलावंतों की भांति आलाप ली, नाथावत प्रेमसिंह ने भी निर्भय होकर तरवार का खेल खिलाया १३ उदग्र (उछलते हुए शस्त्रों की अथवा निरंकुश फाग में इसप्रकार खेल पर आये ॥ १४८ ॥ इसप्रकार तीरों से घायलों को

छेदैं तीरन छत्ति यौं बीरन बिरमाया ॥
सेल धमाकौं संकुले छाकौं कि छकाया ॥
दोऊ२मारत दाव जे घन घाव घुमाया ॥
नरउर मंत्री प्रेमकौं बहु वार बचाया ॥ १४९ ॥
खंडे खंडेरायके द्रुत प्रेम दबाया ॥
चंचल चंड चमक्किकैं ग्रीवा गरकाया ॥
सिवकौं दै सिर प्रेमका गतप्रान गिराया ॥
चालुक्कौं नरउर सचिव हनि यौं रु हकाया ॥ १५० ॥
देखि निरंकुस देव इहिं राजिजन रहुहाया ॥
धर दोउन धमचक्कहै फनमाल फिराया ॥
हड्डन मंसँ निहारहीं हड्डा हठ आया ॥
जिम लग्गैं तिम लै चलैं खग पान पचाया ॥ १५१ ॥
कंकट टोपौं कट्टिकैं कढि जात अघाया ॥
ज्यौं सबनीगर सब्बुमैं चहि तंत्र चलाया ॥
यौं असि उच्छट देवकी रन चित्र रचाया ॥
खंडेराय खिलहारकौं खग्गौं बल खाया ॥ १५२ ॥

(दोहा)

नरउर पतिको सचिव हनि, खंडेराय सु नाम ॥
बहुरि देवसिंहह बढ्यो, कूरम दल जग काम ॥ १५३ ॥

(षट्पात्)

छेद कर वीरों को १ विलमाया (आनंद पूर्वक ठहराया) भालों के प्रहार २ भ-र गये (अवकाश रहित होगये) सो मानों नश के प्यालों से तृप्त किया है ३ प्रेमसिंह का ॥ १४९ ॥ प्रेमसिंह को खांडेराव ने ४ तरवार से शीघ्र दबाया ५ गरदन में घुस गया ६ सम्मुख आया ७ जहां हड्डे हठ पर आते हैं तहां ह-ड्डियों पर मांस नहीं रहता तरवार के पाण से पचाया हुआ मांस जहां ये तरवारें लगती हैं तहां से लेजाती हैं ॥ १५१ ॥ ये खड्ग८कवच और टोपों को काट कर ९ भूखे ही निकल जाते हैं जैसे कि१०साबुन देखनेवाला साबुन में तांत चलादै वह भूखी ही निकल जाती है ११ युद्ध में आश्चर्य किया॥ १५२ ॥

महाराम नृप *माम मुढ पहिलैं जु पलट्ट्यो ॥
सुत ताके संग्रामसिंह कूरम दल कट्ट्यो ॥
करनसिंह कछवाह चाहि तिहिं ओर चलायो ॥
पानी मानहु प्रलय[1] उदधि सत्तन उफनायो ॥
झमकात खग्ग झारत झपटि बाजि[2] दपटि[3] सम्मुह कढ्यो ॥
अपनैनं निरखि बयरेय[4] तद्दिन[5] पय पय प्रति जय जय पढ्यो ॥१५४

इत संग्राम असंक करन कूरम[6] उत उद्धत ॥
इत बुंदिप जय आस उत सु जैपुर जय इच्छत ॥
दोऊ जुरि जम दाव घाव खँग धाव[7] घुमाये ॥
बहुरि[8] मान अच्छरिन लुब्भि आयास[9] लुभाये ॥
वीर रु रउद्द बीभच्छ[10] बलि अति अविज्ज[11] रस उप्पज्यो ॥
नच्चत अनेक मुंडन निरखि भालचंद्र[12] तद्दिन भज्यो ॥१५५॥

करभन[13] ग्रीवा कट्टत उनहिं बेताल उठावत ॥
अंत्र तंत[14] आरोप बीन लय लीन बजावत ॥
मनुजन[15] रुंड मृदंग ढोल बज्जत हय ढड्ढर[16] ॥
गोमुख[17] गति गज सुंडि मचत संगीत मनोहर ॥

॥ १५३ ॥*राजा बुधसिंह का मामा. मानों सातों १ समुद्रों से प्रलय का पानी बढा २ घोड़े दौड़ा कर ५ उस दिन ३ शिव ने अवस्था का ४ वेग देख कर पग पग प्रति जय जय का शब्द पढा ॥ १५४ ॥ ६ कछवाहा करणसिंह ७ पाखियों की दौड़ से घूमे ८ फिर इन लोभियों (अप्सराओं से विवाह करने के लोभियों) ने ९ अपने युद्ध के परिश्रम पर चलमानवाली अप्सराओं को विवाह के लिये लोभ युक्त की यहां वीर रस, रौद्र रस, १० बीभत्स रस और ११ आश्चर्य (अद्भुत) रस उत्पन्न हुए और शिव की मुंडमाला में अनेक मस्तकों को नाचते हुए देख कर राहु से ग्रहण होने की शंका करके १२ शिव के ललाट का चन्द्रमा उस दिन भागा १५५ ॥ १३ ऊंटों की गरदनें कटती हैं जिनको उठाकर उनके आंतों की १४ तांत चढा कर पेनाकं छप मेंलीन होकर उस वीणा को बजाते हैं १५ मनुष्यों के रुंडों की मृदंगें और घोड़ों के १६ अस्थिपंजरों [हड्डियों के पींजरों] के ढोल बजाते हैं हाथियों की कटी हुई सूंडों को १७ गोमुखों

गावत पिसाच जुग्गिनि गहकि लहकि सुसिर[2] आनद्ध तत ॥
करि ताल खंड सीसक किलकि हल्लीसक डाकिनि हलत१५६

(दोहा)

रन दोऊ या बिधि रचत, सजि करन रु संग्राम ॥
आजि[6] न रुके लै अडर, ताजिन बग्ग तमाम ॥ १५७ ॥
कुप्पि हनिय कूरम करन, सोलंखी उर सांगि ॥
प्रतिभट पर अति भट यहहु, इततैं बढिय उमंगि ॥१५८॥
झारिय खग्ग चालुक झपटि, चंल हय दपटि अचूक॥
किय सिर कूरम करनको, टोप सहित द्वै टूक ॥ १५९ ॥
हनि याहि रु झल्ला हुकम, खिच्चिय सेर खपाय ॥
लिय अब गाम रसोर पति, घासीराम निराय[12] ॥ १६० ॥
कूरम घासीराम तब, सिर झारिय समसेर ॥
कट्टत खिन वह सिर कियउ, सिव निज मौल सुमेर १६१
समर पर्यो संग्रामकौं, देवसिंह द्रुत देखि ॥
कूरम घासीरामकौं, पूगो सम्मुह पेखि ॥ १६२ ॥
देवसिंहके उर दुसह, द्रुत कूरम खग दीन ॥
पैठो कटि नागोद पुनि, तरक्कि पंसुली तीन१ ॥ १६३ ॥
इहिं अंतर देवहु अतुल, तस सिर झारिय तेग ॥

(वाद्य विशेष) की भांति लेकर मनोहर संगीत मचाते हैं जहां १ प्रसन्नता की बोली से पिशाच और जोगनियें गाती हैं तहां २ फूंक से बजने वाले [बंशी आदि] ३ खाल से मढेहुए [ढोल आदि] बाजे बजा कर, कटेहुए मस्तकों के ४ ताल मजीरे करके ५ घूम के नाच से किलकारी करके डाकिनियें चलती हैं 'स्त्रियों के समूह के नाच का नाम हल्लीशक है' ॥ १५६ ॥ ६ युद्ध में नहीं रुके ७ घोड़ों की बागें ८ करड़ी, करके (घोड़ों की बागें करड़ी करना दौड़ाने का सूचक है) ९ कछवाह करणसिंह नें क्रोध करके १० बर्छी शत्रु पर वह अत्यन्त वीर इधर से बढा ॥ १५८ ॥ ११ चंचल घोड़े को दौड़ा कर ॥ १५९ ॥ १२ समीप ॥ १६० ॥ १३ खड्ग १४ समय १५ अपनी मुंडमाला का सुमेरु ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ १६ उदर का कवच [पेटी] काट कर ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

हनि रसोर पतिकौं हुलासि, बढ्यो बहुरि अति बेग॥१६४॥
हरियसिंह तौंवर हठी, पुनि जद्दव परताप ॥
करनसिंह रट्ठोर कुल, ये अरि पिक्खि असाप ॥ १६५ ॥
*लिखत इन्हैं मानहुँ †लिखे, खग ‡सिचान §खरकोन ॥
आयो देव सु उप्परहि, प्रलय माँहिं जिम पोन ॥ १६६ ॥
तबहि देवके खंध तकि, तौंवर भारिय तेग ॥
तीनन३इन हनिकैं तऊ, बीर न भो हत बेग ॥ १६७ ॥
जैतसुवन[1] के इस जबर, तीनउलगिय तरवारि ॥
अरु खटछभट आमेरके, मरद लये रन मारि ॥ १६८ ॥
अब सु देव अति लोह छकि, परयो मूरछित प्रान ॥
हूरनकौं[2] हौंसहि रही, यहँ आयुहिं बलवान ॥ १६९ ॥
सालम दल सागर[3] मथ्यो, अभय देव अति लाग ॥
तोउ न लद्धो जय रतन[4], यहँ बुंदीस अभाग ॥ १७० ॥
सठ सालम इक्क खाल[5] बिच, दुरयो रह्यो भय दाव ॥
बुंदिय दल सम्मुह बढे, आमैरे[6] उमराव ॥ १७१ ॥

(षट्पात्)

परसुराम परिहार जोध चालुक अति जुट्टिय ॥
साँवल गोर सजोर रूप चालुक्य अहुट्टिय ॥
जोरावर नरु बंस लरिय चालुक्य सुरत सह ॥
बलि हड्डा बखतेस उदय चालुक लिय अग्गह ॥
जगभानु हड्ड उद्धत जुरयो कूरम पृथ्वीसिंह सन ॥
सजि साँहिं[7] माँहिं[8] दुव दल सुभट लग्गे इम लग्गन खरन॥१७२॥

॥ १६५ ॥ * देख कर † देखे ‡ सिचाण (बाज, शिकरा) पक्षि ने § तीतर पक्षियों को ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १ जैतसिंह के पुत्र के ॥ १६८ ॥ २ अप्सराओं को इसके वरने की चाहना ही रही अर्थात् मरा नहीं ॥ १६९ ॥ ३ समुद्र को ४ जय रूपी रत्न नहीं मिला सो बुधसिंह का अभाग्य था ॥ १७० ॥ ५ नाले में छिपा रहा ६ आमेर के ॥ १७१ ॥ ७ लड़े ८ आगे ॥ १७२ ।

[निःशाणी]

दोऊ ओर दुबाह यों असि बाह अछक्कैं ॥
डेरौं डाहलं डिंडिमी डक्कौं डक डक्कैं ॥
सेल भचक्कैं संकुले अति घाय उचक्कैं ॥
सीस कपाली संग्रहैं काली सु किलक्कैं ॥ १७३ ॥
खूब बजाई खग्गनैं धारा धमचक्कैं ॥
कुक्कैं कोड़ करसहिकैं कमठेस मचक्कैं ॥
नीसासा नासानुगी आसाँगज तक्कैं ॥
भोगी भोग न झिल्लिसक्कैं भुम्मी अकबक्कैं ॥ १७४ ॥
चौहाँ दिस रोहाँ रुके छोहाँ भट छक्कैं ॥
जड्डे जंजीरिन जरे बड्डे गज बक्कैं ॥
ताजी तंगन तोरिकैं फालौं फरक्कैं ॥
मेह अडंबर मंडती रज अंबर ढक्कैं ॥ १७५ ॥
के सूरन थक्कैं कलह के हूरन तक्कैं ॥
गात नमावैं गिद्धनी गिलि गूद गजक्कै ॥
के घायक पायक कटैं सायकैं सकसक्कैं ॥
खंधे खेलह खिल्हारके भट सेल भचक्कैं ॥ १७६ ॥
खंड चटक्कैं खुप्परी लागि लुत्थि लटक्कैं ॥
सेलौं मार सुमार व्है असवार उचक्कैं ॥
धुकि हत्थी धीरन धरैं जंजीरन जंक्कैं ॥
लंकलक्कैं बरछी लगत छलि घाय छछक्कैं ॥ १७७ ॥
रीस बटक्के अगके के सीस पटक्कैं ॥

१वीर२घाव विशेष३अवकाश रहित४शिव॥१७३॥५वराह६नासिका के साथ चलनेवाले निश्वास से ७ दिशाओं के हस्ती ८ शेष नाग ९ व्याकुल होकर फणों पर भूमि नहीं झेल सका ॥ १७४ ॥१०चारों दिशा ११ रोक से १२ क्रोध १३जाडे [मोटे]१४घोड़े ॥ १७५ ॥ १५ खारभंजनें [टूंग] १६ बाण ॥ १७६ ॥ १७ जंजीरों से बांध कर पकड़ लेते हैं १८ कांपते हैं ॥ १७७ ॥

के कंकट[1] संकट कटैं के तेग तटक्कैं ॥
सिर फट्टैं धर उल्लटैं कढि नैंन फडक्कैं ॥
हय हट्टैं[2] पय उच्छटैं रथ भंग रैडक्कैं[3] ॥ १७८ ॥
लोही[4] बूंढनि लालकी धारा धकधक्कैं ॥
के डाकिनि खप्पर भरैं के साकिनि छक्कैं ॥
चंड[5] कृपानी[6] चंचला चढि अंभ[7] चमक्कैं ॥
यौं अंबर आयुध उडैं जिम नाग[8] लटक्कैं ॥१७९॥
वीरौं[9] वीर बरब्बरी तरवारि तरक्कैं ॥
दो हत्थन झारैं दपटि के बत्थन हक्कैं ॥
के त्रंबक[10] बंबंक बजैं के ढोल ढमक्कैं ॥
के जंबुक[11] मंडैं[12] कँवल के कंक किलक्कैं ॥ १८० ॥
के वंदी[13] बुल्लैं बिरुद रैसवीर[14] उमक्कैं ॥
सूर ढरक्कैं सम्मुही नभ हूर थरक्कैं ॥
तीर दुसारौं[15] निक्खसैं रनधीर रैटक्कैं[16] ॥
के मातर[17] मातर कहैं के कातर[18] चक्कैं ॥ १८१ ॥
सोर सलक्कैं संकुली[19] तपि घोर तुपक्कैं ॥
के कंकट[20] आटोपकैं के टोपें[21] चमक्कैं ॥
धाये बद्दल धूमके छाये [22]छिति ढक्कैं ॥
झपि वरक्कैं के झुक्कैं पय कंपि लरक्कैं ॥ १८२ ॥
घाय हबक्कैं के हकैं हत्थीन[23] हलक्कैं ॥

१ कवच से घिरे हुए २ वेगहत होकर ३ दौड़ते हैं ॥ १७८ ॥ ४ सावन की डोकरी (बीरबहूटी) के समान लाल रक्त की धारा निकलती है. ५ भयंकर खड्ग रूपी ६ विद्युत् [बिजुली] ७ आकाश में ८ सर्प ॥ १७९ ॥ ९ वीरों वीरों में ... १० नगारे ११ गीदड़ १२ ग्रास (कुवा, लुकमा) ॥ १८० ॥ १३ भाट १४ वीर रस ... है १५ दोनों ओर फूट कर १६ लड़ते हैं १७ माता माता १८ कायर ॥ १८१ ॥ १९ ... हुई कितने ही टोप कटते हैं तब कितनेक २० कवचों को २१ मस्तक पर ढक ... हैं धुएं के बादल दौड़ कर २२ भूमि को ढक देते हैं ॥ १८२ ॥ २३ हाथियों के हलके [सौ हाथियों के समूह को हलका कहते हैं]

गीत अलापाँ जुग्गिनी जै जात ललक्कैं ॥
ग्राम सुपे[1] गंधारमैं तीखे स्वर तक्कैं[2] ॥
ज्यौं नर त्यौं हैंवर[3] उडैं ज्यौं गैंवर[4] जक्कैं ॥ १८३ ॥
धातौं जग[5] निम्मानके[6] अभिमान असक्कैं ॥
पानी खुम्मि पताललौं जिम थाल थरक्कैं ॥
अग्घे अग्घे[8] होहु यौं बैंडे भट बक्कैं ॥
त्यौं त्यौं पय पच्छे लगैं छत्ती धक धक्कैं ॥ १८४ ॥
समय घोर संहारको[9] इहिंरीति उबक्कैं ॥
कौंन पिता को पुत्र यौं नांते सब थक्कैं ॥
उब्बेरिबेमैं[10] इक्कसे मन भीतैं[12] सुरक्कैं ॥
जिम तिम प्यारे जीवकौं तजनौं नन तक्कैं ॥ १८५ ॥
कलमंल्ली[13] बानी कढैं भ्रमि भीरु भटक्कैं ॥
पाय अटक्कैं पैंगडौं[14] लरि लुंथि[15] लटक्कैं ॥
अंत उलज्झै अंतसौं जिम फंद जरक्कैं ॥
इक झटक्कै इक्ककौं पखरैत पटक्कैं ॥ १८६ ॥
केते होदन कंगुराँ खुरताल खनक्कैं ॥
कांपि कलेजे के कढैं के ढंढ्ढर[16] ढक्कैं ॥
पिट्ठि सचक्कैं पंसुली[17] रीढक्क[17] करक्कैं ॥

---

१ गाती हैं २ सो भी गांधार ग्राम में तीखे स्वर से गाती हैं राग के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं, यथा

"षड्जग्रामो भवेदादौ मध्यमग्राम एव च ॥
गान्धारग्राम इत्येतत् ग्रामत्रयमुदाहृतम्" ॥

३ घोड़े ४ हाथी गिरते हैं ॥ १८३ ॥ ५ जगत संसार ६ ज्ञमाने के अभिमान में ७ अशक्त होता है अर्थात् जितने मनुष्य मारे जाते हैं इतने पीछे घ-लाये नहीं जाते ८ आगे बढो आगे बढो ॥ १८४ ॥ ९ नाश का १० लरबन्ध ११बचने में १२भय से ॥ १८५ ॥१३कलराई हुई१४घोड़ों के पागड़ां (रकाबों) में १५मृतक शरीर ॥ १८६ ॥१६शरीर का पिंजर १७ पीठ की बांसी हड्डी

केते हूल कृपानकी वौतुल बबक्कैं ॥ १८७ ॥
फट्टैं मुंडन फाँक ज्यों दारिम दरक्कैं ॥
कंध कफोणी कर कटैं करकोचैं करक्कैं ॥
कट्टे किंरत नितंब के जिम कच्छप जक्कैं ॥
कटि जंघा सत्थी कटैं हत्थी हनि हक्कैं ॥ १८८ ॥
व्यंजन प्रेत बनात के गहकात गटक्कैं ॥
केते टोप कटाहकैं पय लोहित पक्कैं ॥
उंबी सिंबी अंगुली बहु सेकि बटक्कैं ॥
खाजे पूँपी खल्लके ताजे करि तक्कैं ॥ १८९ ॥
खुरमा खंडी खुप्परी चक्खैं धमचक्कैं ॥
भेजा भात भरायकैं गिलि जात गँजक्कैं ॥
फैले घेवर पिप्फरन छैले बनि छक्कैं ॥
हुक्का ठोर बनायकैं हुक्का भरि हक्कैं ॥ १९० ॥
भुंजन ऐसे भूत गन करि केक किलक्कैं ॥
जिहिं बेलां संके जुरत बंके अकबक्कैं ॥

१तरवार की हूल से२घाबड़ा (घावला)॥१८७॥३कुहनी४हाथ का कवच (दस्ताना) ५ कटेहुए नितंब (हूंगे) गिरते हैं सो किधों कच्छप पड़े हैं ६ नितंबों के नीचे की जाडी जंघा को (जांघ) और उससे नीचे की ओर घुटनों से ऊपर की पतली जंघा को सक्थी (साथल) कहते हैं॥ १८८ ॥ प्रेत७ भोजन के पदार्थ बना कर ८ प्रसन्नता की बोली बोल कर खाते हैं सो कितने ही कटेहुए टोपों के ९ कड़ाह बना कर १० रक्त रूप पानी में पकाते हैं, उन में अंगुलियों रूपी ११ दांवी (जव, गेंहू का फल) और १२ फलियां सेक कर खाते हैं और खाल (चर्म) के ताजे ताजे खाजे १३ पुड़ियां बना कर देखते हैं ॥ १८९ ॥१४ उस युद्ध में कटी हुई खोपरियों के खुरमे करके खाते हैं और भेजा रूपी भात मिला कर १५ खारभंजना (गजक) निगलते हैं. फैलेहुए फीफरों के घेवर बना कर १६ रसिक होकर तृप्त होते हैं और हूकों (मुडदों) के ठोर बना कर उनसे १७ मुख भरकर चबाते हैं ॥ १९० ॥ १८ इस प्रकार के भोजन करके कितने ही भूतों के समूह किलकारियें करते हैं १९ उस समय टेढे वीर भी युद्ध

फाटि बक्तर निक्करैं के टोप चटक्कैं ॥
फीलं छटक्कैं फांदते खग रुद्ध खटक्कैं ॥ १९१ ॥
भुल्लैं के मग भौंरी पग पंक खचक्कैं ॥
घुम्मैं खेतरपाल लै घन रत्त घुटक्कैं ॥
चाहि रत्त चटक्कैं चउसठ्ठि चटक्कैं ॥
कोप उछक्कैं के कटैं झारि पाय झझक्कैं ॥१९२॥
लग्गैं अंबर लायसी के घाय टपक्कैं ॥
के चटके चटके करैं झटकेन झमक्कैं ॥
नाच न चुक्कैं डाकिनी लै डौंच डचक्कैं ॥
ज्वाल झरक्कैं के जरी गजढाल ढरक्कैं ॥ १९३ ॥
बीर बक्तर पारके दै तीर तमक्कैं ॥
दंत दमक्कैं हीरलौं चिनगी कि चमक्कैं ॥
सत्त लोक उप्पर सिकैं धर सत्त धमक्कैं ॥
परि अट्ठों दिकपालके कप्पाल कसक्कैं ॥ १९४ ॥
के झुक्कैं गाफिल कटैं लागि नैन पलक्कैं ॥
सेस करक्कैं संकुली फनपंति फरक्कैं ॥
घायन सत्थे स्वास के भरि फैन भभक्कैं ॥
छोह गरूरी छोरि के सिर फोरि ससक्कैं ॥ १९५ ॥
जुट्टि भटक्कैं के भिरैं कंलि खान कटक्कैं ॥
सद्दिलौं पय मंजीरलौं हिंजीर ठमक्कैं ॥
वंबैं ठहक्कैं बीर मैं के त्रंबं ग्रहक्कैं ॥

कायरन को संकल और घबराते हैं १ हाथी ॥ १९१ ॥ २ भँवर (चक्कर) खाकर ३ कीचड़ में धसते हैं ४ रक्त की घूंटें ५ पीकर ६ शरीर ॥ १९२ ॥ ७ आकाश में ८ घाव ९ तरवारों के १० युद्ध में बचा प्राण ११ हाथियों के नीलाक्ष गिरते हैं ॥ १९३ ॥ १२ तीरों को खैंच कर १३ हीरों की भांति १४ जवान हैं १५ नीचे के सातों लोक धूजते हैं १६ कपाल (खोपरी)॥ १९४ ॥ शेष नाग की शंखला (पीठ की हड्डी) टूटती है और १७ फणों की पंक्ति फुरकती है १८ झाग १९ घमंड ॥ १९५ ॥ २० युद्ध में २१ स्त्रियों के पगों के नूपुरों के समान २२ सांकलें बजती हैं २३ नगारे २४ वीर रस में २५ तासे बजते हैं

पिट्ठि कसकैं*कच्छपी धर धुज्जि धसक्कैं ॥ १९६ ॥
वे दंतुलि वाराहकी वहु भार वरक्कैं ॥
लै के घायल लेकलकी सँटि निछि सरक्कैं ॥
के रजपूतौं वल कढ्ढैं छूतौं परि धक्कैं ॥
पत्तं खरक्कैं जुग्गिनी के रत्त छरक्कैं ॥
तक्ष्यो जिन तैसो तुंमुल ते फेरि न लक्कैं ॥
तदिन पंचोलासपैं नर नास न थक्कैं ॥
यों बुंदी आमेरकी अति लाज अटक्कैं ॥
हट्ठे कूरम हक्कसौं हरवल्लन हक्कैं ॥ १९८ ॥

[दोहा]

इहिँ अंतर अवसेर अब, दुव२नोंड़ी दिवसंगैं ॥
बुंदी भट छिज्जत वढ्यो, विजय कूरमन वेसैं ॥१९९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहदलेलसिंहोभयभूपसेनासमरतद्भयप्रच्छन्नासीनबुधसिंहकुत्सारूपापन १ चाहुमानाभयसिंहसारसोपठक्कुरफतहसिंहसंहारठक्कुरजोजूरामगूढ़ापतिश्यामलदासकूर्मचत्रसिंहबुहानीपतिबहादुरसिंहमारणानन्तरमरणं २ बुन्दीजयपुरवीरद्वन्द्व

* पाठान्तर की ॥ १९६ ॥ १ दोनों २ केप ३ कांजन होकर ४ जूनों के ऊपर ५ पत्र ६ रक्त ॥ १९७ ॥ ७ मंगलाचन युत ८ उस दिन ॥ १९८ ॥ ९ साकी १० दो पक्षों ११ वर्ग रहते १२ भट ॥ १९९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, बुधसिंह और दलेलसिंह बुंदी के दोनों राजाओं की सेना का युद्ध होना और युद्ध के भय से छिप कर बैठे हुए बुधसिंह की निंदा की रचना १ चहुवाण अभयसिंह का सारसोप के ठाकुर फतेसिंह को मारना अभयसिंह का इन्दरगढ़ के ठाकुर जोजूराम को मारना अभयसिंह का गुढ़ा के पति श्यामलदास को मारना अभयसिंह का कछवाहे चत्रसिंह को मारना अभयसिंह का बुहानीपति बहादुरसिंह को मार कर मारा जाना २ बुंदी और जयपुर के वीरों का द्वंद्व युद्ध करना ३ पद्मपाद द्वं-

भवन ३ चाहुमानदेवसिंहस्य नरूकासरदारसिंहहनन ४ देवसिंहस्य प्रेमसिंहहन्तृनरउरसचिवखण्डेरावमारण ५ बुधसिंहमातुलपुत्रसंग्रामसिंहस्य कूर्मकरणसिंहासुहरण ६ रसोरपतिघासीरामस्य संग्रामसिंहहननदेवसिंहतन्मारण ७ हतपट्कूर्मदेवसिंहमूर्छासादन ८ दृष्टकुल्याप्रच्छन्नबुन्दीपतिसालमसिंहबुधसिंहसेनोपरिजयपुरसैन्यसमाक्रमण ९ मुहूर्तावशिष्टास्ताचलचुम्बिनि मरीचिमालिनि हतबुधसिंहसैन्यकूर्मकटकविजयवर्णनं त्रयस्त्रिंशो मयूखः ॥ ३३ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७१ ॥

[दोहा]

नृपके बरजत जे निडर, अभय देव जिम आय ॥
तिल तिल बुंदिय बीर ते, तुट्टे असिन अघाय ॥ १ ॥
तिनमैं इक१ जैतह तनय, देवा लरन उदार ॥
मिच्चु न तउ मूरछि मरद, सुत्तो लि३ असि समार ॥

(षट्पात्)

पर्यो अभयहरि प्रथम पारि पंच५हि राजाउत ॥
पुनि निज संगहि परिगे सुगत पूरन दोऊ२ सुत ॥
इह्ह देव पुनि हनिय नँरुव सिरदार स्वतंत्री ॥

पसिंह का नरूके सरदारसिंह को मारना ४ देवसिंह का प्रेमसिंह को मारनेवाले नरवर के सचिव खंडेराव को मारना ५ बुधसिंह के मामा के बेटे भाई संग्रामसिंह का कछवाहे करणसिंह को मारना ६ रसोर के पति घासीराम का संग्रामसिंह को और देवसिंह का घासीराम को मारना ७ देवसिंह के छै कछवाहों को मार कर मूर्छित होना ८ बूंदीवाले सालमसिंह को एक नाले में छिपा हुआ देख कर बुधसिंह की सेना पर जयपुर की सेना का चढना ९ बुधसिंह की सेना के मारेजाने पर दो घड़ी दिन बाकी रहने जयपुर की सेना के जय पाने का तेतीसवां ३३ मयूख हुआ और आदि से दोसौ इकहत्तर २७१ मयूख हुए ॥

१ तरवारों से तूट होकर ॥ १ ॥ २ मृत्यु नहीं थी तोभी ३ मूर्छित होकर ४ तीन तरवारों को मार सहित ॥ २ ॥ ५ अभयसिंह ६ पड़े ७ स्वतंत्री (अपने अधिकार में रहनेवाला, अथवा अपने अधिकार में होकर) नरूके सरदारसिंह को

खिजि पुनि खंडेराय मारि नरउर पति मंत्री ॥
हनि पुनि रसोर पति वह हुलसि कूरम घासीराम कलि ॥
जदव कबंध तौंवर जुरे वढ्ढे ते अरि तीन३बलि ॥ ३ ॥

(दोहा)

खग्गन इम उमराव खट६, मारि देव बसि मोहँ ॥
रिपु रुंडन मंचक रसिक, लरि सुत्तो छकि लोह ॥ ४ ॥
करन हुकम अरु सेर इन, तीनन३हनि बलि तेग ॥
नाथउत्त संग्राम नर, जिहु सिर नच्चयो वेग ॥ ५ ॥
बद्लेहू यह बप्पकैं, नामी बदलयो नाँहिं ॥
सीस अरध बुधसिंहकैं, दै पत्तो दिवँ माँहिं ॥ ६ ॥

(षट्पात्)

परसुराम परिहार परयो चालुक जोधहिं हनि ॥
चालुक रूपहिं चक्खि परयो सौंवल्ल गोरन सनि ॥
जोरावर नरु जात सुरत चालुक हनि सुत्तो ॥
उदयसिंह हनि परिग हड्ड बखतेस विरत्तो ॥
जगभानु हड्ड जुज्झत हन्यो कूरम पृथ्वीसिंह कँहँ ॥
लगि माँहि माँहि छिज्जे लरत तोउ न कोप समात तँहँ७

(दोहा)

बुंदीपतिको भट्ट बलि, नाम सु जहाँराय ॥
अति उद्धत हनि पंच५अरि, तुट्टयो आसिन अघाय ॥ ८ ॥
बारहसे१२००इत्यादि बढि, दुवरदिस परिग दुंवाह ॥
भट हजार१०००घायल भये, निडर देव तिन नाह ॥ ९ ॥

---

१ युद्ध में २ खड्गधारों का अथवा फिर ॥ ३ ॥ ४ मूर्छा के ३ वश होकर ५ शत्रुओं के धड़ों रूपी मंच (चारपाई) के ऊपर ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ पिता के बद-लने पर भी ७ स्वर्ग में गया ॥ ६ ॥ ८ गौड़ वंश के क्षत्रियों का साथि ९ बिना अवकाश पाकर चाखा (चुगन्ध होकर ॥ ७८ ॥ १० धीर ११ उन घायलों का निर्भय

(षट्पात्)

कुसथल पंचोलास भयउ इम जंगभयंकर ॥
चरम[1] अद्रि ढिग चपल[2] हंकि पहुँचत रवि हैवर ॥
विखम[3] रारि हुव बंध[4] बुत्थि पत्थरि बट उब्बट[5] ॥
उंवघाँ सों लखि दाव खेत खोजन भेजे भट ॥
कुणप[6] न कृसानु[7] चिति होम करि लाये डेरन घायलन ॥
जैपुर नरेस जयसिंह जय बुंदीपति अनजय[8] बिमन ॥१०॥

[दोहा]

बित्तो इम आहव विकट, जित्तो सालम जोर ॥
सोधत अब[9] घायल सुभट, आगम निसि दुहुँ ओर ॥
त्रि[10] असि घाय जैतह तनय, देख्यो घुम्मत[11] देव ॥
निज सिबिका पठवाय नृप, आन्यौ वह ढिग एव ॥१२॥
सुनत पराजय खग्ग सजि, खिजि तहँ भोप खवास ॥
पासवान रघु दुहुँन पुनि, बिरच्यो लरि दिव[12] बास ॥१३॥
बरजतहू तिल तिल बढ्यो, कढ्ढि असिन अति कोप ॥
स्वामि हारि सहि नहिं सक्यो, भलभल नापित[13] भोप॥१४॥
कछु अनीक[14] बुंदीसको, अभय[15] संग इम लग्गि ॥
यह रन करि अब हारि गिनि, पलटयो ढोहन पग्गि॥१५॥
समय घोर परखे सुभट, बदले सब नय बोय[16] ॥
घायहु सेके घायलन, सालम दल बिच सोय ॥ १६ ॥
रहे मनुज[17] बुंदीस ढिग, इक्क सहँस अनुकूल ॥

पति देवसिंह था ॥ ९ ॥ २ चपल घोड़ों को हांक कर सूर्य के १ अस्ताचल के समीप पहुंचते ही ४ मार्ग और विना मार्ग वूथे ३ फैल कर ५ दोनों तरफ से ६ मुरदों को ७ चिता की अग्नि में ८ विजय नहीं होने से उदास हूआ ॥१०॥ ९ रात्रि के आने पर॥११॥ १० जैतसिंह के पुत्र देवसिंह को तरवारों के तीन घावों से ११ इसप्रकार घूमते हुए को ॥१२॥१२ स्वर्ग में ॥१३॥१३ नाई ॥ १४ ॥ १४ सेना१५ अभयसिंह के साथ॥१५॥ १६ नीति को डुबो कर ॥१६॥ १७ मनुष्य

सालम बिच दल नव सहँस९०००, मुरयो बहुरि अघ मूल १७
इहिँ अंतर अंधार अति, कुहु[1] निस आगम कीन ॥
बुंदीपति मतिमंद बुध, नौंती[2] बिपति नवीन ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

जिहिँ बुंदिय हित देवसिंह मैंनन[3] रन मारिय ॥
जिहिँ बुंदिय हित समरसिंह बर दुर्ग[4] बिथारिय ॥
जिहिँ हित सूरजमल्ल रतन रानाँ खिजि खद्दो ॥
जिहिँ हित भोज सजोर लरि रु सूरति[5] जय लद्दो ॥
जिहिँ हित जयीस[6] संभर[7] सता साहजिहाँकौं सीस दिय ॥
बुध धर्वहिँ[8] छोरि जारन बिखय तद्दिन वह बुंदिय तकिय१९

(दोहा)

बुंदी पति बहुबिधि बिगरि, ऐसो भयउ असत्त[10] ॥
अचं[11] बिनु हल जिम अंधको, बरनी जाय न वत्त ॥ २० ॥
कूरम दल इत बिजय करि, सालम सहित सहास[12] ॥
अमल किन्न आमेरको, कुसथल पंचोलास ॥ २१ ॥
इमँ[13] कुसथल अनिरुद्ध सुव[14], पाय अनादर उच्च ॥
बिमँना रत्ति बितायकैं[15], कोटाकौं किय कुच्च ॥ २२ ॥
संभर देव सु जैतसुव, असि त्रय३घायल अंग ॥
छुट्टी जानि स्वकीय[16] [17]छिति, सिविका चढि हुव संग॥२३॥

॥ १७ ॥ १ नष्टचन्द्रा अमावास्या की रात्रि २ बुलाई ॥ १८ ॥ ३ मैनों को ४ श्रेष्ठ गढ का विस्तार किया ५ सूरत नामक शहर में ६ जय करनेवाले ७ चहुवान शत्रुशाल ने ८ पति बुधसिंह को छोड कर, जारों से रभोग करने को उस बुन्दी ने जारों को उस दिन देखा ॥ १९ ॥ १० अशक्त (नाताकत) ११ जिसप्रकार बिना स्वर की सहायता के हल् अक्षर नहीं बोला जाता तिस प्रकार उस अन्ध की वार्ता नहीं कही जाती ॥ २० ॥ १२ हास्य सहित ॥ २१ ॥ १३ इसकारण १४ बुधसिंह १५ उदास होकर रात्रि बिता कर ॥ २२ ॥ १६ अपनी १७ भूमि छूटी जानकर

(षट्पात)

चढि चल्लिय चहुवान छोरि बुंदिय छत्राधम ॥
कोटा निवसथ मंगरोल्ल किय तहँ मुकाम क्रम ॥
हो दुवरानिय संग पुर सु कोटा पठवाई ॥
पठयो सालक पास कुमर निज रु यह कहाई ॥
तुम देवसिंह जिहिं तिहिं तरह पाहि जिवावहु छत्र अब ॥
जयसिंह जोर पिक्खहु जबर गुमर तोर मंडत गजब ॥२४॥

[दोहा]

सेवा सु हरी ग्रामको, गुज्जर गैंदा गोत ॥
जिहिं निज धावर धाइ जुत, पलनाँ लिय धरि पोत ॥२५॥
चुंडाउत्त सीसोद भट, भारतनाम सुभाय ॥
कढ्ढन छत्र नृप कुमरकैं, सो दिय संग सहाय ॥ २६ ॥

[पादाकुलकम्]

धावर भारतसिंह पिधाये, चम्मलि उत्तरि सजव चलाये ॥
डब्भिय नाम बिंदुमति ग्रामह, आय उहाँ बिरचिय बिश्रामह॥२७॥
जहँ दलासिंह हड्ड भोजाउत, जतनन रक्खे गेह बिनय जुत ॥
कुमर उमेद रत्ति यहँ कट्टी, प्रात लगिय बेघम मग पट्टी ॥ २८ ॥
गिरिबर घंटिय लंघि बेग गति, पहुँच्यो बाल नैर बेघम प्रति ॥
देवसिंह मातुल बेघम हुत, जाय बधाय लयो उच्छव जुत ॥२९॥
इत सालम लागि पिट्ठि उडायउ, मंगरोल्ल बुद्धहिं पहुँचायउ ॥
पच्छो मुरि आयउ बुंदिय प्रति, अमल स्वकीय कियउ जय उन्नति ३०

॥२३ ॥ १ अधम (नीच) क्षत्रिय २ ग्राम ३ अपने साले बेघम के रावत देवसिंह के पास ४ घमंड और प्रताप से ॥ २४ ॥ ५ धाऊ ६ बालक [उम्मेदसिंह] को पलने में धर लिया ॥ २५ ॥ २६ ॥ ७ छिपेहुए अथवा दौड़े ८ बुन्दी का ग्राम ॥ २७ ॥ ९ यत्नों से १० नम्रता सहित ११ शीघ्रता की दौड़ से॥२८॥१२ श्रेष्ठ पर्वत (आडावला) की घाटी लांघ कर १३ मांमा ॥ २९ ॥ अपना अधिकार ॥ ३० ॥

दिन्नी मुलक्क दलेल दुहाई, सठ[1]कों नृप[2]ता अधिक सुहाई ॥
छत्रमहल बिच रहि छत्राधम[3], कियउ राजधानी भुग्गन क्रम ।३१।
भुल्लि[4] गुनहँ इम ऐस भुलायो, मनहु राज पीढिनतैं पायो ॥
झुल्लत कर दासिन[5] झकझोरन, कनक[6] पउत्त कनक[7] हिंडोरन।३२।
मंगरोलतैं इत मति मुड्ढ[8], बिनु सुधि चल्यो करभ[9] जिम बुड्ढ[10] ॥
स्यंदन[11] सत१००वाँरन[12] बत्तीसह, बद्दलदल[13] डेरा इकबीसह२१॥३३॥
पुनि सतसत्तरि१७०सँकट[14] प्रमानह, रुचिर[15] पालकी तखतरवानह[16]॥
इत्यादिक बहु रँखत[17] सुहाये, खरचहीन तत्थहि रखवाये ॥ ३४ ॥
अप्प चल्यो जित मुह[18] तित ऐसैं, [19]पै न बिचार कोन गृह पैसैं ॥
गहन लंघि तारज[20] गिरि घंटिय, भूखन भंजि बलहिं[21] जर बंटिय ३५
राजा इम पहुँच्यो प्रमाद रढ[22], ग्राम प्रेमपुर जहँ मधुकरगढ ॥
कछुदिन तत्थ रह्यो कउलेसह[23], देखन चह्यो रानको देसह ।३६।

(दोहा)

असित जेठ तेरसि१३दिवस, सिद्धियोग रविवार ॥
मधुकर गढतैं बुद्ध नृप, मुरि चल्ल्यो मेवार ॥ ३७ ॥
कुसलसिंह भट रानको, भैंसरोर गढ धाम ॥
तत्थ बंभनी[24] सरित तट, किन्ने जाय मुकाम ॥ ३८ ॥

पादाकुलकम् ॥

सगनाउत भट भैंसरोर पति, बहु[25]भँज कुसलसिंह रचि बिन्नति ॥

१ दुष्ट का २ राजा पन ३ अधम (नीच) क्षत्रिय ॥ ३१ ॥ ४ अपराध भूल कर ५ दासियों के हाथों के झोलों से ६ कनकसिंह का पोता ७ स्वर्ण के हिंगलाट पर ॥ ३२ ॥ ८ मतिमूढ ९ ऊंट के समान १० बुधसिंह ११ रथ १२ हाथी १३ दल बादल (यह बड़े डेरे का विशेषण है) ॥ ३३ ॥ १४ छकड़े (गाड़ियां) १५ सुन्दर १६ तखतरवाँ (खास) नरयान विशेष १७ सामग्री (सामान) ॥ ३४ ॥ १८ जिधर मुख हुआ उधर १९ परन्तु २० पर्वत का नाम है २१ सेना को ॥ ३५ ॥ २२ बावलापन के हठ से २३ वाममार्गियों का पति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ २४ बम्हणी नामक नदी के किनारे ॥ ३८ ॥ २५ बहुत सन्तान वाला

सम्मुह आय नजरि हय किन्नौं, अरु तिहिँ नृपहु बाजि इक¹दिन्नौं॥३९
रत्ति इक्क²पिच्छैं बेघम रहि, चाहुवान गो उदयनैर चहि ॥
आय रान संग्राम मन्नि सुहँ³, मोहिल्ला मगरी लग सम्मुह ॥ ४० ॥
मिलतहि मुद बुंदीस बढायो, चरन रान प्रति हत्थ चलायो ॥
रान सु हत्थ⁴ पक्करि अनुरत्तो, मुसक्कि⁶लाय छत्तिय मय मत्तो ।४१।
इहिँ विधि प्रकट किपो अति अद्दर, अरु विमना कूरम हित अंतर
प्रविस्यो पुनि बुद्धहिँ लै पत्तन, महिमानी पठई संकोचंन ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे संग्रामहतक्षतप्राप्तगणनया सह समराङ्गणान्वेषणात्पक्तबुधसिंहबुन्दीसुभटसालमसिंहमिलन १ सालमसिंहकुसथलाधिकारानन्तरमद्रुतबुधसिंहकोटादिग्गमन २ कोटामुक्तपत्नीद्वयबुधसिंहस्वकुमारोम्मेदसिंहबेघमप्रेषण ३ मंगरोलमुक्तगजरथादिपरिकरबुधसिंहोदयपुरगमनं चतुस्त्रिंशो मयूखः ॥ ३४ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७२ ॥

(दोहा)

---

१ घोड़ा॥३९॥२सुख मान कर ॥ ४० ॥ ३ मोद४राना के चरणों में हाथ बढाया ५प्रीति युक्त हुआ६हँसकर छाती के लगा कर७हृदय में मदमस्त हुआ ॥४१॥ ८ जयसिंह के कारण भीतर से उदास था ९ नगर में गया १० अपने घर पर आने के संकोच से महिमानी भेजी ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र में युद्ध में मरनेवाले और घायलों की गणना के साथ युद्धक्षेत्र को हेरने का वर्णन और बुन्दी के उमरावों का बुधसिंह को छोड कर सालमसिंह से मिलना १ कुसथल में सालमसिंह के अमल करने पर बुधसिंह का कोटा की ओर जाना २ बुधसिंह का अपनी दोनों राणियों को कोटे और कुमर उम्मेदसिंह को बेघम भेजना ३ बुधसिंह के हाथी रथ आदि सामान को मंगरोल में छोड कर उदयपुर जाने का चौतीसवां ३४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ बहत्तर २७२ मयूख हुए ॥

इत कूरम मालव अवनि, सुनि कुसथल संग्राम ॥
केदन[1] मन्नि निज भटनको, कुप्पि फिर्‌यो जयकाम ॥१॥

पादाकुलकम् ॥

मनहुँ बग्घ[2] बिच्छिय[3] चटकायो, जानि प्रलय भूतेस[4] जगायो ॥
कुच्च कलह[5] जयसिंह मानि किय, कोटा सीम मुकाम आनि किय२
हो दलेल संगहि सालम सुत, चहयो राज जिहिं स्वामि धरम च्युत[6]
वा जुत नृप कूरम उफनायो, इम द्रुत सरित[7] कुसक तट आयो॥३॥
कुसकहि गयो मिलन कोटापति, बिरचिय समय जानि अति बिन्नति
हय गज बसन नजरि करि हद्दा, तजि नृप[8] धरम खुच्यो अघ[9] हद्दा।४।

पज्झटिका ॥

उज्जैन अंनुग[10] नृप करि इकत्त, तनि मंत्र जाल जयसिंह तत्त ॥
लिय बुद्ध हिंतु[11] जो दल[12] लिखाय, दिय प्रकट बांचि सबहिन दिखाय५
कहि रानहु छप्प्यो लिखित एह, लिखवाय सक्खि[13] निज भटन लेह[14]
अब निजनिज छापन तुमहु अंकि, स्वी करहु हुकम दिल्लीस संकि६
कोटेस छाप तब प्रथम कीन, द्रुत और नृपन पुनि छापदीन ॥
सूबानुग[15] भूपन सबन सक्खि, राजा लिखाय लिय टेक रक्खि।७।
पुनि तिहिं मुकाम कूरम प्रबीन, क्रमजुत दलेल[16] अभिसेक कीन॥
कोटेस हत्थ पहिलैं कराय, वलि तिलक हत्थ अवरन बिधाय[17] ८
करि बहुरि अप्प कर तिलक कुम्म, सिर धरिय छत्र नग[18] ललित लुम्म
पुनि ढोरिय चामर अप्प पानि, बुन्दीस रावराजा बखानि ॥ ९ ॥

---

१ नाश ॥ १ ॥ २ बाघ (सिंह) को ३ बिच्छू ने काटा ४ शिव को ५ युद्ध होना मान कर जयसिंह ने कूच किया ॥ २ ॥ ६ स्वामि धर्म से गिर कर ७ नदी ॥ ३ ॥ ८ राजाओं का धर्म छोड कर ९ पाप के खड्डे में फसा (गड्ढा) ॥ ४ ॥ १० सेवक ११ बुधसिंह से १२ पत्र लिखवाया था वह ॥ ५ ॥ १३ साक्षि १४ लेख ॥ ६ ॥ १५ सूबा के साथ चलने वाले (सेवक) अर्थात् उज्जैन के सूबे के राजाओं ने ॥ ७ ॥ १६ दलेलसिंह के १७ कराके ॥ ८ ॥ नगों की १८ सुन्दर लूंबोंवाला ॥ ९ ॥

अरु कोटापतिसौं कहि अठेल[1], बुन्दीस गिनहु अब यह दलेल ॥
जो आवहिं बुंदिय[2] सुभट छुट्टि, तो ताहि न रक्खहु लेहु लुट्टि॥१०॥
हय अष्ट सप्त इक १७८७ अब्दै[3] मान, बनि बिसद[4] जेठ तेरसि १३ बिधान[5] ॥
इम करि दलेल अभिसेक अंक, समयानुकूल्य कूरम निसंक॥११
निज कृष्णा कुमरि तनया[6] सु नाम, लाँगलि[7] भिलाय ताके ललाम
मन्नि सु दलेल जामात[8] स्वीय, गज इक१ अरोहि[9] दोऊ२ गरीय१२
कोटेस पटालयं[10] किय प्रयान, थिर हुव त्रय३ इक्क१ हि तख्त थान॥
सिरुपाव बाजि दुव२ दुव२ नवीन, कोटेस दुहुनकी नजर कीन १३
तदनंतर कूरम तोरि[11] तिक्ख[12], कोटेसहिं कोटा दियउ सिक्ख ॥
उज्जैन अनुग अवरहु असेस, दै सिक्ख रु पठये स्वस्व देस।१४।
कूरम दलेल जुत बिरचि कुच्च, आयउ भुव कुसथल गुंमर[13] उच्च॥
संग्राम भुम्मि तँहँ लखि समस्त, आत्मीय[14] भटन बंटिय अत्रस्त[15]१५

[दोहा]

हठ्ठ अभय[16] पाहिलैं हरियँ[17], सारसोप पति स्वास ॥
वाके सुत रतनहिं दियउ, पैत्तन[18] पंचोलास ॥ १६ ॥
अजितसिंह कोजुव[19] तनय[20], ईसरदापुर ईस ॥
कुसथल पुर ताकौं दयो, हठि जयसिंह महीस[21] ॥ १७ ॥
साँवलदास सुहाड़पति, सुत सोभाग सनाम ॥
वाहि पलोधी पुर दियउ, कूरम नृप जय काम ॥ १८ ॥
नाह नगर नानेडिको, आहव[22] मृत अचलेस ॥

---

१ नहीं डिगै जैसा (यह दलेलसिंह का विशेषण है) २ बुन्दी के उमराव॥१०॥ ३ प्रमाण वाले सम्वत् में ४ शुक्ल पक्ष ५ विधि पूर्वक ॥ ११ ॥ ६ पुत्री ७ नारियल ८ अपना जमाई॥१२॥ ९ बडे हाथी पर दोनों राजा सवार होकर १० डेरों में ॥ १३ ॥ ११ जिस पीछे १२ प्रताप की तीक्ष्णता से ॥ १४ ॥ १३ बडे घमंड से १४ अपने उमरावों को १५ निर्भय होकर बांटी ॥ १५ ॥ १६ अभयसिंह ने १७ लिया १८ पुर ॥ १६ ॥ १९ कोजूराम का २० पुत्र २१ नृपति ने ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ २२ युद्ध

सुवन तास हरिसिंहकों, *बसु८ग्रामक दिय बेस ॥ १९ ॥
सुवन बहादुरसिंहको, पुर बुद्धानी †पाल ॥
दस१०ग्रामक तिहिं हित दये, ढुंढाहर गिनि ढाल ॥२०॥
घासीराम रसोर पति, पुत्तहिं ग्रामक पंच५ ॥
दिय १भूपति जयसिंह द्रुत, पेहु रचि नीति प्रपंच ॥ २१ ॥
कपंच १ प्रपंच २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अभयसिंह आत्मज अधम, नाथूरामह नाम ॥
पलटयो सठ रनके प्रथम, सालमसौं करि साम ॥ २२ ॥
यातैं नहिं बलवन्त लियउ, मिल्यो जानि इन माँहिं ॥
नाथूरामहिं मन्नि निज, विस्वास्यो गहि साँहिं ॥ २३ ॥
देवसिंहकी मेदिनी, इम बंटी कछवाह ॥
देवहु गिनि बुधहिं अधन, कोटा गयउ सचाह ॥ २४ ॥
पुनि तजि पंचोलासकों, किय जयसिंह पयान ॥
प्रबिस्यो जैपुर निज नयर, उद्धत विजय अमान ॥ २५ ॥
सोरठा ॥
स्वीय जननिके सत्थ, उदयनैर ही जो अबहि ॥
तनयाँ बुल्लिय तत्थ, कारन ब्याह दलेलके ॥ २६ ॥
दोहा ॥
सुत समेत जयसिंहसौं, रानाउति सु रिसाय ॥
वरख छिंयासी ८६ माघ बिच, पत्ती पीहर जाय ॥ २७ ॥
ही तबतैं तत्थहि सुन्यों, अब तनया आव्हान ॥
सालम सुतके ब्याहकों, यातैं पठई सा न ॥ २८ ॥

में मरा * आठ उत्तम ग्राम दिये ॥ १९ ॥ † पालन करनेवाला ॥ २० ॥
१ प्रभु (राजा) ने ॥ २१ ॥ २ पुत्र ॥ २२ ॥ २३ ॥ ३ भूमि ४ बुधसिंह को निर्धन जान कर ॥ २४ ॥ २५ ॥ ५ पुत्री को जयपुर बुलाई ॥ २६ ॥ ६ गई ॥ २७ ॥
७ पुत्री का बुलाना ८ उसको नहीं भेजी ॥ २८ ॥

कूरम पुनि कहि मुक्कलिय, नहिं यह सालम नंद ॥
है अब यह बुंदीस *सुव, अधिप दलेल अमंद ॥ २९ ॥
हुकम साह लिखवाय हम, दिय इहिं राज्य दिवाय ॥
जिहिं रक्खन हम रान जुत, सब कछवाह सहाय ॥ ३० ॥
यातैं कछु न बिचार अब, इहिं ललाट नृप अंक ॥
तनया देहु पठाय तुम, सोक बिहाय निसंक ॥ ३१ ॥
निज रानी प्रति पल इम, पठयो कूरम पाल ॥
पै कुमरी कछु रोग पगि, आय सकी नहिं हाल ॥ ३२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जयपुराधीशजयसिंहस्योज्जयनीतो बुन्दीदिग्गमन १ बुंदीराज्याभिषिक्तदलेलसिंहेन सह जयसिंहस्वसुतासम्बन्धकरण २ हष्टकुसस्थलयुद्धक्षेत्रमृतस्वभटतत्सूनुबुंदीग्रामावितरण ३ दत्तभूमिजयसिंहजयपुरगमनदर्शनं पञ्चत्रिंशो मयूखः ॥ ३५ ॥

आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७३ ॥

(दोहा)

इत नृप प्रविस्यो उदयपुर, स्वसुर हवेली पास ॥
औंधे छज्जनके महल, उतर्यो तत्थ उदास ॥ १ ॥
मोदक फल भोजन अमित, पुनि रुप्पय सत पंच ५०० ॥

---

* बुन्दी के पति का पुत्र है ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह का उज्जीण से बुन्दी की ओर आना १ दलेलसिंह के बुन्दी का राज्याभिषेक करके अपनी पुत्री का दलेलसिंह से संबंध करना २ राजा जयसिंह का कुशस्थल के मुकाम युद्ध क्षेत्र को देख कर अपने मरे हुए उमरावों के पुत्रों को बुन्दी के ग्राम जागीर में देना ३ जागीरें दिये पीछे जयसिंह के जयपुर जाने का पैंतीसवां ३५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तिहत्तर २७३ मयूख हुए ॥

१ बुधसिंह २ ससुर की हवेली [जहां पर अब रेजीडेंसी है] के पास ३ औंधे छाजों के महल (अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध हैं)॥१॥४लड्डू (मिठाई)५ पात्र

महिमानी इम मुक्कलिय, रान बिरचि हित रंचे[1] ॥ २ ॥
बिपति अतीव बिचारिकैं, इक्कत[2] करि उमराव ॥
कहिय रान बुधसिंहकैं, द्रुत धर आवन दाव ॥ ३ ॥
पंचन कहि तब रान प्रति, बिधि कोटेस बुलाय ॥
मंत्र रचहु नृप तीन[3]मिलि, पहुमी लैन उपाय ॥ ४ ॥

पादाकुलकम् ॥

पहु बिचारि इम रान मंत्र पन, कोटा पति बुल्लिय इहिं कारन ॥
पुनि गिनि बुद्धहिं जनक जामि[4] पति, अंतहपुर[5] बुल्लिय मंडिय मति५
रीति सु सुनि कूरमपति रानी, रान सहोदर[6] जामि रिसानी ॥
जनक[7] जामि मम भुश्रा जियत नन, अंतहपुर बुल्लहु जिहिं कारन६
बिनु कारन बुल्लहु नन बुद्धहिं, कछु मन्नहु कूरमपति क्रुद्धहिं ॥
जामि बचन सुनि रान सोचि जिय, बुद्धहिं[8] निज अवरोध न बुल्लिय७
इहिं अवरोध गमन अवरोधंहु, सुनि रु गमन चित्यो बिनु सोधहु ॥
बिष्णुसिंह पुर बंसवहाला, भगिनी तस गुन रूप सुभाला[11] ॥ ८ ॥
नाम गुमान कुमरि सुभ लच्छन, बहुरि सील गुन बिनय बिचच्छन[12]
वच्छर[13] दुवरके पुब्ब बिधाई, संभरपति सौं तास सगाई[14] ॥ ९ ॥
संपति बिनु पुनि व्याह सुहायो, पत्र दूत द्रुत अग्ग पठायो ॥
मंगिय सिक्ख रान प्रति सुद्धह[15], बरजिय तदपि रान नृप बुद्धह॥१०॥
पहुमी निज हित मंत्र प्रचारन, कोटापति बुल्लिय तुम कारन ॥
अरु मम भटहु घरन तजि आये, अप्पन हित हम मंत्र उपाये ।११।

---

१ थोड़ा सा स्नेह करके ॥ २ ॥ २ एकत्र ॥ ३ ॥ ३ उदयपुर, कोटा और बुन्दी के तीनों राजा मिल कर ॥ ४ ॥ ४ पिता की बहिन (भुत्रा) का पति ५ रावले (जनाने) में बुलाने की ॥ ५ ॥ ६ राना की सगी बहिन ७ पिता की बहिन ॥ ६ ॥ ८ बहिन के ९ अपने जनाने में नहीं बुलाया ॥ ७ ॥ १० जनाने में जाने का रोकना सुन कर उदयपुर से जाना विचारा ११ श्रेष्ठ भाग्य वाली ॥ ८ ॥ १२ विचक्षण १३ दो वर्ष पहिले १४ की थी ॥ ९ ॥ १५ शुद्ध ने ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥

तुमकों रुचत अनवसर उपनयं, मन्नहु तो इक बचन नीति मय ॥
मम सालिय पानिग्रह मंडहु, बंधुनकों ओरहु तनया बहु ॥ १२ ॥
जो हिय रुचहिं व्याहि तिहिं अत्थहि, सजहु भुम्मि उद्यम हम सत्थहि
संभरकहि यह पुब्ब सगाई, बलि छोरैं नन होत बडाई ॥ १३ ॥
हठि हठि रान बरजि पुनि हारयो, बुद्ध क्षुद्ध नयं तउ न बिचारयो।
पुनि कहि रान आत कोटा पति, आये तुम घर हमहिं लज्ज अति १४
यातैं कछु बिरचत उपाय अब, तुम इत जात कोन करिहैं तब ॥
यह जो दढ व्याहि रु हुत आवहु, जो बरं सचिव रक्खि तिहिं
जावहु ॥ १५ ॥
मयाराम तब अप्प पुरोहित, अवनि उपाय काज रक्खिय इत ॥
अप्प बिबाह हरख उफनायो, चहि दिस दक्खिन हुतहि चलायो १६
करहिं न व्याह बिपति बिच कोऊ, संभर पति अच्छो गिनि सोऊ
मही सरित उतरि प्रमत्त मन, पहुँचिय बंसबद्दाला पत्तनं ॥ १७ ॥
सावन असितं सत्त बसु८७संबत, सद्दि जगन एकादसि११संगत॥
व्याहिय बिष्णुसिंह भगिनी बत, राउल अजब सुता रमनी रत १८
बहु बिधि राउल हरख बधाये, स्वागत सबन अपुब्ब सधाये ॥
रुचि बरात आश्विन लग रक्खिय, अरु पुनि हू जावहु नन अक्खिय
धरिय बैरनि तत्थहि आधानह, यातैं तहँ रक्खिय चहुवानह ॥
अभयसिंह मरुधर नरेस इत, चहि दिल्लीस निदेसं करन चित २०
सूबापति गुज्जरंधर स्वामी, ग्राम सहँस सत्तरि७००००अनुगामी॥
प्रबल अहमदाबाद नगर पति, सरबिलंद जित्तन करि सम्मति२१
सक मुनि बसु अत्यष्टि१७८७मास ईसं, द्रुत हंकिय गुजरात पहु-

१ बिना समय २ बिवाह ३ बिवाह ४ हमारे भाइयों के ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ मूर्ख बुधसिंह ने सोभी ५ नीति नहीं बिचारी ॥ १४ ॥ ६ श्रेष्ठ ॥१५॥ ७ भूमि के ॥ १६ ॥ ८ मही नामक नदी ९ पुर में ॥१७॥१०बदि पक्ष ११सन्तोष युक्त ॥ १८ ॥१२हुलहा वा रुचि पूर्वक ॥१९॥१३दुलहिन ने१४ गर्भ१५ बादशाह की आज्ञा ॥ २० ॥१६गुजरात के१७सूबा के साथ॥२१॥१८आश्विन मास १९ शीघ्र

मि दिस ॥

सिद्दित विजय दसमी सनि बासर, बिंटि अहमदाबाद लयो बैर२२
अंग कछुक तोपन रचि जाहिर, झुल्ल्यो बहुरि डाक दे बाहिर ॥
लखि आवत रट्ठोर जरन हित, चढ्डि रन सब हंकिय प्रसन्न चित२३
ऊदाउत चंपाउत उद्धत, मेरतिया कुंपाउत दृढ मत ॥
जैताउत पुनि जैतमालाउत, बल्लुाउत करनोत जोरजुत ॥ २४ ॥
पालाउत रु कलाउत प्रतिभट, बढि धूहड़ रानाउत रन थट ॥
भद्दाउत रु अहेषे बिजु भय, रूपाउत रु सताउत अतिरय ॥२५॥
गोगाउत रु करमसीउत जँह, देवराज रनधीर बंसि तँह ॥
चाहड़देवउत रु पोकरनौं, चंडाउत हुमंड़ि हठ मरनौं ॥ २६ ॥
जोधे रतन केसरी कुल भव, धंधल अरु सिंधल अरि बन दव ॥
भूपतिउत रतनोत बडे भर, मंडनउत चुंडाउत असिकर ॥ २७ ॥
नरसिंहोत नराउत अति बल, सोहड़ रायपालउत अतिभल ॥
रनमल्लोत मंडलो रनरत, मुदित आसमल्लोत जरन मत ॥ २८ ॥
बहुरि चंद्रसेनोत महाबल, इत्यादिक संजुरि चित उज्जल ॥
नृप अभमल्लहिं हत्थ दिखावत, लगे जरन मुच्छन कर लावत २९
सरबुलंद सूरज कर सक्खियं, लिडर मिलेच्छ उतैं हय नाक्खियं

१ दिन २ अष्ट अहमदाबाद को घेर लिया ॥ २२ ॥ ३ क्रोध दिखाकर ॥ २३ ॥ (अब यहां राठोड़ों की शाखा गिनाते हैं) ॥ २४ ॥ ४ शत्रु से युद्ध करने वाले ५ उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह विपत्ता के दिनों में मारवाड़ में 'लोया-णा' के पर्वतों में रहे थे तब प्रसन्न होकर लोयाणा के ठाकुर को 'राणा' की पदवी दी थी जो अब भी राणा कहलाता है जिसके वंशवाले राणावत कहलाते हैं और राव रिड़मल के वंश में राणा नामक एक प्रसिद्ध पुरुष हुआ था उसके वं-श वाले राणावत कहलाते हैं सो अब भी विद्यमान हैं और इसी जाति से प्रसिद्ध हैं परन्तु इस समय इनके अधिकार में कोई ठिकाना नहीं है ६ वंश वाले ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ७ शत्रु रूपी वनों की अग्नि ८ हाथ में तरवार रखने वाले ॥ २७ ॥ ९ युद्ध में प्रीति करने वाले ॥ २८ ॥ १० साक्षी करके ११ म्लेच्छ ने

आकुल भोगि सहँस अकुलानैं, ढग नगि पव्वय कूट डुलानैं॥३०
घने घुमंड वग्ग इंचि घोरन, रारि मचिग मिच्छन रट्ठोरन ॥
किलक प्रेत डाकिनि गन किन्नी, लॉस्य क्येकि चउसट्ठि६४ न
लिन्नी ॥ ३१ ॥
डिगि वीचिन सिंधुन जल डोह्यो, अरुन अब्व सप्तक अवरोह्यो ॥
कटि कंकट निकसत वपु कैसैं, जिह्मग गन कंचुक तजि जैसैं॥३२॥
कटि कटि कुंभ तिरत सोनित किम, जल अगाध घट उडुप पुंथुल जिम ॥
अली-इमाम होत उत औरव, इत हरि अच्युत भूतनाथ भव॥३३॥
भूत किलकि कहुँ हय भॅरकावत, गो कि चोर लखि ग्वाल चलावत
कहुँ भट चरन रकाबन अटकत, मूढचित्त भोगन जिम दुर्मत॥३४॥
फट्टित केतु इभन फहरावत, रंभा तरु कि अद्रि लहरावत ॥
गुटिका भ्रमत रीति यह रक्खिय, मनहु क्रुद्ध सॅरघा भिध मक्खिय३५

निर्भय होकर घोड़े उठाये २ कर्तव्यता में मूढ (अब क्या करना चाहिए) होकर शेष नाग के हजार फण घबराये और पर्वत हिलकर उनके ३ शिखर झूके ॥ ३० ॥ बहुत घमंड से घोड़ों की बागें ३ खिंच कर (घोड़े दौड़ा कर) म्लेच्छों और राठोड़ों के युद्ध हुआ वहां प्रेतों ने और डाकिनियों ने किलकार करी ५ चौसठ शरीरों से योगिनियों ने ४ नृत्य किया ॥ ३१ ॥ ६ तरंगों ने चला कर समुद्र के जल को मथा और सूर्य के सारथि अरुण ने सूर्य के ७ सात घोड़ों के समूह को ८ रोका ९ कवच कट कर वीरों के अंग ऐसे निकलते हैं जैसे १० सर्पों का समूह कांचली छोड कर निकलता है ॥ ३२ ॥ जैसे १२ गहरे जल में घड़ा (कलश) तिरे अथवा १४ बड़ी १३ नाव तिरे तैसे ११ हाथियों के कुंभस्थल लटक कर रुधिर में तिरते हैं उधर (म्लेच्छों की ओर) तो अली और इमाम आदि पैगंबरों के १५ शब्द करते (नाम लेते) हैं और इधर (राठोड़ों) में विष्णु विष्णु और १६ शिव शिव करते हैं ॥ ३३ ॥ कहीं पर भूत मिल कर १७ घोड़ों को चमकाते हैं सो मानों चोरों को देख कर १८ गऊओं को ग्वाल भगाते हैं और कहीं मूर्ख चित्तवाला दुर्मति भोगों में पड़ा रहै तैसे १९ पागड़ों में चरण उलझ कर वीर लटकते हैं ॥ ३४ ॥ फटीहुई ध्वजा २० हाथियों पर फहराती है सो मानों २२ पर्वतों के ऊपर २१ केल का वृक्ष फोका खाता है और फोडित हुई २३ मधुमक्खियों के समान भिनभिनाती हुई गोलियां भ्रमती

निकसत*गोद कपाल हिंतु इम, मंजु†मदन‡मधुजाल हिंतु जिम
नहु आयुध आयुध पर बज्जत, लखि झल्लरि§देवालय लज्जत ३६
इम रन करि रट्ठोर बढे अति, मिच्छन हनत धन्वपति सम्मति॥
सरबुलंद लखि प्रबल भज्यो सठ, हारचो तजि गुजरात सहित हठ ॥ ३७ ॥
बँजि दिल्लीपति अमल बढायो, इम मरुभूप जित्ति रन आयो॥
मुदित भयो सुनि साह मुहुम्मद, सरबुलंद दक्खिन गय दुम्मद ३८
मुम्मद १ दुम्मद २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
बुंदिय पति इत स्वसुर गेह रहि, दुलहनि तत्थहिं रक्खि गमन चहि
कत्तिय मास कुच्च अप्पुन किय, दायज बसु बहुबिधि राउलदिय ३६
दंतिय गढेराव सु दँत्तह, मास रहत बारह १२ मयमत्तह २ ॥
नृपके इभपालन वह नाँयो, अँचत निगड जोर उफनायो ॥ ४० ॥
यह सुनि रान लयो वह हत्थी, सहँस१०००भेजि रुप्पय चँर सत्थी॥
इत कोटेस उदैपुर आयउ, अधिप रान सह मंत्र उपायउ॥ ४१ ॥
भयाराम बिप्राधर्म तत्थहि, बुल्ल्यो कुँबच कुनय अघ सत्थहि ॥
कहा रान पुच्छत कोटेसहिं, दब्यो इन पहिलैं नृप देसहिं॥४२॥
इनकी लखि अवरन मन चल्ल्यो, तबहू इत न मुच्छ कर घल्ल्यो
कग्गर लिखि जयसिंह कथित किय, इनहिं पुच्छि लहिहो किम बुंदिय ॥ ४३ ॥

ह ॥ ३५ ॥ ‡ मधु मक्खियों के छातों (मुधाल के छातों) से सुंदर † मेघ निकलने के समान मस्तकों से * भेजे (मस्तिष्क) निकलते हैं कितने ही श-स्त्र शस्त्रों पर बजते हैं जिनको देख कर § मंदिरों में बजती हुई झालरें लज्जित होती हैं ॥ ३६ ॥ १ मारवाड़ के राजा की सलाह से ॥ ३७ ॥ २ पुनि ३ मारवाड़ का राजा ४ दुर्मद (मान हीन होकर) ॥३८॥ ५ धन ॥ ९ ॥ ६ गाढेराव नामक हाथी ७ दिया ८ मदमस्त ९ बुधसिंह के महावतों से १० न-हीं आया ११ सांकलों को खैंचती हुआ ॥ ४० ॥ १२ हलकारे के साथ ॥४१॥ १३ नीच ब्राह्मण १४ अनीति और पाप के साथ १४ खोटे वचन बोला १६ बुधसिं-ह के देश का ॥ ४२ ॥ १७ पत्र १८ कहना

यह सुनि महाराव धंकि उठ्यो, रानहु बिप्र अधमपर रुठ्यो ॥
इम नृपकाज बिगार बिप्र यँहँ, पहुँच्यो मगहि मध्य संभर पँहँ४४
इम पुनि बुद्ध उदैपुर आयो, बिपति जोर सब गुमर बिहायो ॥
सम्मुह आय रान हित सज्जिय, लै प्रविस्यो पत्तन चहि लज्जिय४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुंदीहरणमन्त्रहेतुमहाराणासंग्रामसिंहस्य कोटामहारावदुर्जनशल्योदयपुराकारणं १ पाणिग्रहणहेतुबुधसिंहबांसवहालागमनबुधसिंहपुरोहितकटुवचनश्रवणादुर्जनशल्यक्रोधकरणं २ योधपुराधिशाभयसिंहाहमदाबादविजयनं ३ बुधसिंहोदयपुरप्रत्यागमनवर्णनं षट्त्रिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥

आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७४ ॥

(षट्पात्)

रान नगर बिच रहिय हड्ड भूपति इक १ हायन ॥
सर सत५००रुप्पय नित्य रान पहुँचात मान मन ॥
सभा समय संभरहु जात पहु रान निकट जब ॥
अदब रक्खि अति अग्घ तखत तजिदेत रान तब ॥
लैजात आय सम्मुह सरल इकासन बैठत उभय२ ॥
संभरहिं मन्नि पाहुन सँमुद बिनु बुंदिय धारत बिनय ॥१॥

१ क्रोध करके(भीतर से जल कर) २बुधसिंह के पास ॥४४॥ ३घमंड छोडा ॥४५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुंदी लेने की सलाह करने के अर्थ महाराणा संग्रामसिंह को कोटा के महाराव दुर्जनशाल का उदयपुर बुलाना १ बुधसिंह का विवाह करने के अर्थ बांसवहाले जाना और बुधसिंह के पुरोहित के कडुवे वचनों से दुर्जनशाल का क्रोधित होना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का अहमदाबाद को बिजय करना ३ बुधसिंह के पीछा उदयपुर आने के वर्णन का छत्तीसवां ३६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चोहत्तर२७४मयूख हुए ॥

४ एक वर्ष ५ प्रभु ६ एक गद्दी पर ७ हर्ष सहित ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

बुद्ध पुरोहित मंत्र बिगारयो, नृपति रान हित तदपि न टारयो ॥
अक्खिय पुनि बुंदिय जब ऐहैं, तुमहिं भूप जावन तब देहैं ॥ २ ॥
अवनि दैन कूरम प्रति अक्खहिं, रानापनको गव्व न रक्खहिं ॥
जव स्वाधीन राज निज जोवहिं, सुख सह निंद हमहु तब सोवहिं ॥३॥
तोलौं खरच स्वकीय मानं तत, दिन प्रति दम्म पंचसत ५०० पहुँचत ॥
कहि नृप कुम्मं खुसामदि कैहो, लगि हमरे हित बुंदिय लैहो ॥४॥
प्रनयं रावरे तैं कूरम पति, मम भुव जो देहैंन टेक मति ॥
तो रन करि लैहौं कि तँतक्खिन, प्रीति तथा करिहौं परपक्खिन ॥५॥
सुनियह रान सुजान नीति सम, कहिय आज दिल्ली कर कूरंम॥
अक्[११]बरपुर अजमेर अवंति[१२]यं, सूबा तीन३अधीन साह किय ॥६॥
मित्र खानदौराँ जिहिं मन्नत, से[१३]नानी जु जवन पति सम्मत ॥
साहहु जास कथितं सिर धारत, बलि अवरन जिहिं[१५] सम न बिचारत ॥ ७ ॥
पुनि निज बनिबनि स्वसुर साल प्रिय, अकबरतैं अबलौं धन संचिय॥
अरु बहु मुलक अप्पन न ऐसो, जास सचिव राजामल्ल जैसो॥८॥
राय कृपारामहु वकील र[१६]तं, जास कथि[१७]तं जवनेस न लुप्पत ॥
गृह जाके दिल्लिय उमीर गन, पहुँचत कर जोरत किंकरपन॥९॥
जिनकी अरज साहप्रति जंपत, ब[१८]सुं अधिकार मिलत तिनकौं बत॥

१तो भी॥२॥२भूमि पीछी देने का ३गर्व॥३॥४आप के खरच के प्रमाण माफिक) बुधसिंह ने कहा कि ५ जयसिंह की ॥ ४ ॥ ६ नम्रता ७ उसी समय ८ जयसिंह के शत्रुओं से प्रीति करूंगा ॥ ५ ॥ ९ से १० जयसिंह पर दिल्ली के हाथ हैं (यहां लक्षणा से दिल्ली के पति का ग्रहण है)११आगरा १२ उज्जैन ॥६ ॥ १३ सेनापति १४जिस जयसिंह का कहना १५जिसके बराबर ॥ ७ ॥ ८ ॥ १६ अनुकूल१७जिसका कहना ॥९ ॥ १८ धन और अधिकार सन्तोष दायक मिलते हैं

द्वै २ द्वै २ सत १०० *सिविका †जिहिं द्वारह, वढि पंतिन ढक्कि जात बजारह ॥ १० ॥

बैठक जाहि खास खिलवत्तिय, रमत साह सतरंज हुलसि हिय ॥
जिनके घर ऐसे वकील जन, थिरन उथप्पि स्वामि जय थप्पन ॥ ११ ॥
जंग बिरचि तिनतैं को जित्तहिं, बिनुहित काहि बिगारहि ‡बित्तहिं
इहिं कारन तिनतैं रन उचित न, अवर उपाय रचहिं बहु अप्पन १२
§भेद उपाय कोहु नहिं संभव, लग्गैं नहिं बिनु समय जास [1]लवं ॥
यातैं साम दान अनुसरिहैं, कूरमसौं तुमसौं हित करिहैं ॥ १३ ॥
बिनु [2]नय समय होत नहि चाही, [3]समर टेक नाहक तुम साही ॥
निज हठ तो मम राज्य नसैहौ, [4]प्रज्ञ तुमहु को फल तव पैहौ ॥ १४ ॥
सच्च कहत नृप बुद्ध[5] रिसायो, चलन हुकम सत्थहि पहुँचायो ॥
हे सब [6]अनुग मूढ हथ[7]जोरे, न चलहु इम काहू न निहोरे ॥ १५ ॥
सक बिक्रम अट्ठ रु बसु सत्रह १७८८, [8]बाहुल मास वृथा करि बिग्रह ॥
[9]अनखि चल्यो [10]संभर अज्ञानी, बरजत रह्यो रान हित बानी ॥ १६ ॥
ज[11]दपि सुरयो न रान तउ सज्जन, गज भूखन सिरुपाव बाजिगन ॥
पठये [12]मितैं दसतूर बुद्ध प्रति, इनआक्खिय हम करजदार अति १७
इनके दम्म पठावहु यातैं, [13]वनिकैंन दै हम करज बिघातैं ॥
तिनकी तीस सहँस ३०००० [14]मुद्रा तव, जानि बिपत्ति रान पठई जब ॥ १८ ॥
करज झारि तिनकारि [15]कउलेसह, बुद्ध चलिय [16]पंसुमति नरवेसह ॥

* पालकियें † जिसके द्वार पर ॥ १० ॥ ११ ॥ ‡ धन ॥ १२ ॥ § परस्पर द्वेष कराना (फोड़ तोड़) १ लेशमात्र ॥ १३ ॥ २ बिना नीति ३ युद्ध की ४ तुम बुद्धिमान हो ॥ १४ ॥ ५ मूढ ६ सेवक ७ हाथ जोड़नेवाले ॥ १५ ॥ ८ कार्तिक मास में ९ क्रोध करके १० बुधसिंह ॥ १६ ॥ ११ तो भी १२ दस्तूर के माफिक ॥ १७ ॥ १३ बनियों को देकर १४ रुप्ये ॥ १८ ॥ १५ वाममार्गियों का पति. १६ पशु की बुद्धि और मनुष्य के वेष से.

श्रुत*याहुल मेचक चउत्थि४दिन, आयउ चलि [श्रीद्वार]हड्डइन१९
इक सत१००दम्म भेट हरि अप्पिय, थाँवल गाम मुकाम सु थप्पिय
वसि तत्थ रु दुव२मास बिताये, लंघन पुनि चालीस लगाये॥२०॥
अधिक अफीम वढ्यो नृप अग्गैं, पैसे त्रि३मित नित्य हित पग्गैं॥
पुनि तिम मद्य अवर्यंहु पीवहिं, जड़ बिनु भूख आयुबल जीवहिं२१
असन लेत सत्तम७अट्ठम८दिन, तुच्छ बहुत सो पै न पचैं तिन॥
इहिं विधि अन्न अरुचि पर आये, लंघन तब चालीस४०लगाये२२
तबहि अफीम मद्य दुव त्यागे, लै पुनि पथ्य लाभ भुव लागे॥
बिरचि कुच्च वह ग्राम बिहायो, लुट्टन रानाँ मुलक लगायो ॥२३॥
सठ नृप नहिं परकरैं समुझायो, वहु बहु लूट प्रपंच बनायो॥
रानहु सुनि गिनि मुद्ध गिसानौं, बुद्ध सु कँउलन हत्थ बिकानौं २४
दुव२मिलानं कुंपासाग्गि किन्नैं, दुव२त्रय३पुर गंधेरहु दिन्नैं॥
पथ इहिं रुक्कन चलन प्रमत्तो, पुर बेघम स्वसुरालय पत्तो॥ २५ ॥
बसु बसु रत्त इक्क १७८८ मित संबत, गंउर चउतिथ ४ सहस्य
मास गत॥
मंजु गिन्यौं न जुद्ध करि मरनौं, स्वसुर अन्नजीवन लिप सरनौं२६
परदुख सँदय हृदय देवहु पुनि, सालक निज बुद्धहिं आवत सुनि
अभिमुख जाय निजालय आनैं, बिनय प्रीति कर जोरि बखानैं २७
बुद्ध मुख्ग महलन बसवायो, अप्प लालबारिय काढि आयो॥
रखतैं सुराजवाग खिल्ल रक्खिय, अब कैसैं निभिहोहु न अक्खिय२८

*काती वदि चौथ के दिन [नाथद्वारे में] हाडों का राजा आया॥१९॥१ विष्णुप्र-
भवान् के भेट किये २थांवला नामक ग्राम में॥२०॥३तीन पैसों भर ४ वह अधम
बुधसिंह मद्य भी पीता था॥२१॥२२॥२३॥ ५ परगह ने उस मूर्ख राजा को नहीं
समझाया; अथवा उस मूर्ख ने परगह को नहीं समझाई ६ मूर्ख जानकर ७ पा-
सियों के हाथ विकगया॥ २४ ॥ ८ मुकाम ९ ससुरे के घर में गया॥ २५ ॥ १०
शुक्ला ११ पौष मास १२ सुन्दर॥ २६ ॥१३दयावान् हृदयवाले देवसिंह ने१४
सामने१५अपने घर॥ २७ ॥१६सामग्री (सामान) १७ पाकी का॥ २८ ॥

बुंदिय लोक बिचार बिहीनों, क्रम लुट्टन तत्थहि अति कीनों ॥
राउत देव तिनहि बरजाये, पै[1] न रहे तब ग्रहन पठाये ॥२९॥
सठ बुद्धहु सुनि रोकि न रक्खिय, उपालंभ[2] देवहिं प्रति अक्खिय॥
धरनि बिपत्ति लोक मम धारत, बलि[3] अत्थहि आधार बिचारत३०
लुट्टन खान देहु तुम सालक[4], क्यों मोरन[5] पकरात कृपालक ॥
जो सुनि देव तबहु कर जोरे, माफकरहु ओगन कहि मोरे॥३१॥
अति सहनत्व[6] देव अब लीनों, बुद्ध हितु[7] बनि अधिक अधीनों ॥
पंचहजारि ५००० ग्राम दिय पंचक ५, रुप्पय अड्ढ ८ नित्य सु न रंचक[8] ॥ ३२ ॥
निबहनकों यह देव निबेदिय, जड़ संभर तोउ न धप्पत जिय ॥
करजहु करि रक्खैं नहिं कोऊ, समुझी तुच्छ मूढ नृप सोऊ॥३३॥
अग्ग त्रिलक्ख हजार अठारह ३१८०००, भुगते दम्म करज सह भारह ॥
वसु सत ८०० नित्य दये इक १ वच्छर[11], तीस सहँस ३०००० हय[12] हित उदारतर ॥ ३४ ॥
त्रिभव देव जिहिं करज बिलायो, तोऊ अब गृह नजरि बतायो॥
हो सब हेय[13] अधम नृप हड्डा, बिरचिय तदपि देव हित बड्डा॥३५॥

[मनोहरम्]

बुंदीके बिनामति[15] बिडारि देवेके जे,
तिन्हैं राखि बहु बेरन बिपत्ति बिकलायो नाँ ॥
याहीतैं रिसाय रान छीनि लीनी बेघम,
काहायो नाँहि रक्खहु तथापि नास तायो नाँ ॥

१ परंतु ॥ २९ ॥ २ (उरहना) ओलंभा ३ फिर ॥ ३० ॥ ४ हे साले ५ मेरे लोकों को ॥ ३१ ॥ ६ सहनशीलता ७ बुधसिंह से ८ पांच ग्राम पांच हजार रुपये सालाना आमद के ९ यह कमती नहीं थे ॥ ३२ ॥ १० बुधसिंह का ॥ ३३ ॥ ११ एक वर्ष पर्यन्त १२ घोड़े मोल लिये जिनके ॥ ३४ ॥ १३ सब प्रकार से त्याज्य था १४ बहुत ॥ ३५ ॥ १५ निर्बुद्धि १६ निकाल देने योग्य १७ महाराणा ने

पाघ पावलीनकी रु पैसेनकी पैनई,
मिली पै मजबूती मानि मन मुरझायो नाँ ॥
चौंडासों सपूत बप्प राउलके बंस कोऊ,
धर्म धुर धोरी धीर देवासो दिखायो नाँ ॥३६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुंदीपतिबुधसिंहचरित्रेमहाराणासत्योपदेशक्रुद्धत्यक्तोदयपुरमार्गप्राप्तनाथद्वारथाँवलाग्रामगतबुधसिंहचत्वारिंशल्लङ्घनोपायमद्याहिफेनन्हसन १ मेदपाटग्रामलुण्टाकबुधसिंहश्वसुरदेवसिंहगेहवेघमगमन २ सोढापरितव्ययस्वगृहरक्षितबुधसिंहराउतदेवसिंहप्रशंसनं सप्तत्रिंशो मयूखः ॥ ३७ ॥

आदितः पञ्चसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याहि वरस दुरभिच्छ भयो अति, नहिं तृन अन्न धनीहु धरैं नँति
इक १ रूप्पय उपधान्य जतन इत, मूल्य विक्यो द्वैसत२००टकेंन
मितँ ॥ १ ॥
अब नृप तजि जन जान लगे इम, तरु अपत्र अफलहिं पच्छिय तिम
मनहुँ तौंल सुक्कैं जल मच्छे, इम नहिं गये छुद्मातक७अच्छे॥२॥

१पगरखियां (जूतियां)२ चूँड़ा के बिना ३ बापा रावल के वंश में ॥ ३६ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुधसिंह के चरित्र में महाराणा के सत्य उपदेश करने पर क्रोधित होकर बुधसिंह का उदयपुर छोड़ कर नाथद्वारे होकर थांवला नामक ग्राम में चालीस लंघन करके अमल और मद्य को कम करना १ मेवाड़ के ग्रामों को लूटते हुए बुधसिंह का अपने ससुर देवसिंह के घर वेघम में जाना २ असह्य खरच भुगत कर बुधसिंह को अपने घर में रखने की राउत देवसिंह की प्रशंसा का सैंतीसवां ३७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पचहत्तर २७५ मयूख हुए ॥
४ दुर्भिक्ष (कहत) ५ धनवान भी नम्रता धारण करते थे ६ अहक धान्य (सांवां, मळीचा आदि) ७ एक रुपये का दोसौ टकों भर ॥ १ ॥ ८ मनुष्य ९ बिना पत्ते और बिना फलों के वृक्ष को पक्षी छोड़े जैसे१०सूखे तलाव में ॥ २ ॥

*यादि गजादि†खत अब आयो, मंगरोल रक्ख्यो सु मँगायो ॥
नृप कोटेस सोहु पठयो नन, खान खरच दै जाहु कह्यो घन ।३।
इम ‡ठाँठाँ बहु बिभव रह्यो अब, संभरकौँ निंदत जिहान सब ॥
पै अफीम आसव तजि पक्के, छुधा बढाय असन बहु छक्के ॥ ४ ॥
अग्गहि तजि कोटापति आहुति, आइ निज पीहर बुंडाउति ॥
हुति १ उति २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
कोटापुरहि रही कछवाहिय, अबसु नृपहु बेघन अवगाहिय ॥५॥
जैतसुवन उत देव जंग जय, गनि बुद्धहिँ अधन रु कोटा गय ॥
तत्थहि घाय अच्छ हुव तत्तो, पुनि कोटेस सभा वह पत्तो ॥ ६ ॥
महाराव तब कहिय दर्प मत, सारधलक्ख १५०००० पटा तुमरो गत ॥
हम दुवलक्ख२००००० पटा अबदेहैं, अरु अच्छवं तुमरे घर ऐहैं ७
अब बुंदीस नामहु न अक्खहु, रीति अदब दुगुनौं यह रक्खहु ॥
यहै सुनत देवा रिस आयो, दरबीकर जिम पुच्छ दबायो ॥ ८ ॥
उठ्यो भट भुज ठोकि अचानक, इत उत परिग सभा बिच ओदक
नक १ दक २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
अरु उत्तर बुल्ल्यो असंक उर, पति कूरम अग्गैं दिल्लिय पुर ॥ ९ ॥
बुद्ध रु भीम उभय करि इक्कत, त्रय ३ नृप इक्क१ थाल जिम्मिय तंत ॥
है मम जनक जैत तँहँ हाजरि, कह्यो तिनहिँ कूरमपति हितकरि
सुभट जैत तुम मिलहु भीम सन, अब न बिरोध सौंस हुव अप्पन

* स्मरण † हाथी आदि सामान ॥ ३ ॥ ‡ ठाम ठाम (जगह जगह) ॥ ४ ॥
१ बुधसिंह ने निर्धन पेघम का थाह लिया ॥५॥ २ ताता (चंचल) ३ गया ॥६॥
४ घमंड की बुद्धि से ५ गया ६ निर्मलता से; अथवा घायल हुआ उससे अच्छे होने के उत्सव में; अथवा तुमारे घर तक सन्मुख आयेंगे 'अच्छम् अभिमुखे' इति शब्दार्थचिंतामणिः ॥ ७ ॥ ७ सर्प ॥ ८ ॥ ८ भय ॥ ९ ॥ १ बुधसिंह और २ भीमसिंह को १० तहां ११ जयसिंह ने ॥ १० ॥ १२ मिलाप

सु सुनि भीम*अग्घो कर किन्नौं, द्रुतहि जैत उत्तर तब दिन्नौं ११
हहुनकी जननी रे अघहिय, भा[१]मिनि गिनि बुंदिय तैं भुग्गिय ॥
यातैं स्वामिहराम अधम अति, मिलहिं तोहि किम धरम स्वच्छ
मति ॥ १२ ॥
कहि इम दिय उठेलि ताको कर, [२]वाके सुतहिं कहत इमअक्खर
अप्पन स्वामि तोहिन सुहावहिं, तोनहमहिंतव आश्रयभावहिं ॥१३॥
देव न इम [३]परिखद बिच दट्ट्यो, फिरि धकि उठत घाय इकफट्ट्यो
महाराव कर जोरि मनायो, यह मन्न्यौं न मुररि तउ आयो ।१४।
फटत घाय [४]अंतक गद फैलिय, कतिक मास बिच त्रिदि[५]वबासाकिय
इम भट देव धरम अव[६]धारयो, बिपति सहि रु धन अनय बिडारयो १५
कलिजुग[७] काल भयो यह भीखम, है इक जीह कहँ कोलौं हम
होवत कुल सुहुकम्म हरामी, निकस्यो बैरिसल्ल कुल नामी १६
बुध[८] इत गरभ जानि नव[९] बाला, ठ्याहि जु रक्खिय बंसबहाला ॥
ताके उदर कुमर उँद्गम[१०] हुव, धरिय नाम जिहिं चंद्रसिंह ध्रुव ॥१७॥
मधुगतै[११] अमा सत्त बसु ८७ संवत, मातुलैं[१२] घरहि बाल यह भो बतैं[१३]
इहिं अँसु[१४] धारिय मास अठारहि१८, वेधम नाँ[१५]यसक्यो इक१बारहि
चुंडाउति रानिय इत वेधम, गर्भ धर्यो सु भयो पुनि उँद्गम[१६] ॥
संवत मान अंक बसु सत्रह १७८९, अरु सित बाँहुल[१७] भालचंद्र[१८]
अह १४ ॥ १९ ॥

---

*हाथ आगे किया (हाथ आगे बढाया)।जैतसिंह ने शीघ्र ही॥११॥१स्त्री जान कर॥१२॥२उस जैत्रसिंह के पुत्र को इसप्रकार कहते हो ॥ १३ ॥ ३ इसप्रकार सभा में देवसिंह नहीं दबा ॥ १४ ॥ ४ काल रोग ५ स्वर्ग में ६ धारण किया ॥ १५ ॥ ७ कलियुग के समय में यह देवसिंह भीष्म के समान हुआ ॥ १६ ॥ ८ बुधसिंह ने ९ नवीन स्त्री को १० जन्म ॥ १७ ॥ ११ चैत्र मास की अमावास्या को १२ मामा के घर में १३ संतोष दायक, अथवा बालक के होने की वार्ता हुई १४ प्राण १५ नहीं आ सका ॥ १८ ॥ १६जन्म [उत्पन्न] १७कार्तिक सुदि १८ शिव का दिन (ज्योतिष में चौदस तिथि के स्वामी शिव हैं) ॥ १९ ॥

भृगु[1] बासर इम हुव कुमार भव, दीपसिंह नामक अरि बन दव ॥
इत जैपुर साहस[2] अधिकाई, बलि[3] जयसिंह जु सुता बुलाई ॥ २० ॥
कृष्णाकुमारि नाम अति अग्गहँ[4], अभयसिंह मरुपति साली यह॥

गह१ यह२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

माधव[5] बहिनि बडी लहि मेलहिँ, दई सबिधि परिनाय दलेलहिँ२१
तब कूरम घर व्याह अनंतर[6], बसि जामात सुता[7] इक१ बच्छर[8] ॥
अंक अष्ट सत्रह१७८९सक आगम,सिक्ख पाय जयसिंह जनक[9] सम
आई अब बुंदिय कछवाही, बाहिर रहि यह टेक निबाही ॥
स्वसुर स्वकीयं[10] पापमति सालम, छत्रमहल रहत जु छत्राधम॥२३॥

लम१धम२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

जो यह राज्य हत्थ निज जानैं, काहूको न कथित[11] उर आनैं ॥
सुत तिय जानि रु मानि स्वसुर सुंह[12], सो तिहिँ बेर गोहु नहि सम्मुह२४
कछवाही इहिँ अनख रिसाई, कूर स्वसुर प्रति यहै कहाई ॥
मैं बुधसिंह तनयकी नारी, किंकर तुम मम भाखितकारी[13] ।२५।
स्वसुर मान्नि सम्मुह सठ नायउ[14], कर जोरि न पुनि बिनय कहायउ
नृप महलन रहिकैं अति उन्नति, भुग्गत राज्य अंध बनि भूपति२६
बसहु छोरि महलन पुर बाहिर, जो सुख चहत होहु कढि जाहिर
इम[15] ताहि निकारन चाही, बहु सिपाह पठये कछवाही ।२७।
पुनि सालम निकस्यो अति सोचत, निजन[16] सहित करजोरि अधिक नत[17] ॥

चत १ नत २ अंत्यानुप्रासः॥१॥

जान्यों अबहि प्रतिष्ठा जैहैं, कछवाही इच्छित अब कैहैं[18] ॥२८॥

१शुक्रवार २ हठ की अधिकाई से ३ फिर॥ २० ॥ ४ आग्रह(आदर)से५माधोसिंह की ॥ २१ ॥ ६ व्याह के पीछे ७ जमाई और बेटी ८ वर्ष ९ पिता से ॥ २२ ॥ १० अपना ॥ २३ ॥ ११ कहना १२ सुख ॥ २४ ॥ १३ मेरा कथन (कहा) करनेवाला ॥२५॥१४नहीं आया ॥ २६ ॥१५इसप्रकार कह कर ॥ २७ ॥१६अपने लोकों सहित१७नम्र होकर १८ करि हैं (अपना चाहा हुआ करैगी) ॥ २८ ॥

इम बिचारि पुर बाहिर आयो, बलि तत्थहि निज निलय बनायो
स्ववँसि राज्य इम करि हठ साहिय, अब महलन प्रविसी कछ-
वाहिय ॥ २९ ॥
प्रथमहि फल्ल सालम यह पायो, अब नव नव पैहैं अकुलायो ॥
इत मरुपति गुजरात बिजय करि, धर मारवँ पुनि आय गरब
धरि ॥ ३० ॥
बुद्ध उदँत सुनि रु लिखि कग्गरँ, पुर बेघम पठये चँर सँत्वर ॥
बेघम रहे मरुप चर मासन, तउ न जबाब लिख्यो जड़तासँन ३१
इम दस१०बेर मरुप दल आयउ, पै इक१दल न बुद्ध सन पायउ॥
यह सुनि भो मरुभूप उदासह, रहि इत बेघम नृपहु निरासह ३२
बुद्धि बिगारि उँदबेग बढ्यो अति, रहन लग्यो एकांत मंद मति ॥
स्वीयँ जनहु नहिँ निकट सुहावहिँ, काम परहिँ तब टेरि बुलावहिँ३३

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावोपरिपरिषत्क्रुद्धविदीर्णान्तबुन्दीसुभटदेवसिंहमरण १ बुधसिंहपुत्रद्वयप्रसव २ परिणीतजयसिंहकन्यबुन्दीनवनृपदलेलसिंहबुन्द्यागमन ३ बुधसिंहोन्मादगदवर्णनमष्टत्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥

आदितः षट्सप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७६ ॥

१मकान२अपने आधीन ॥ २९ ॥ ३ मारवाड़ में ॥ ३० ॥ ४ बुधसिंह का वृत्तान्त सुन कर ५ पत्र ६ हलकारा ७ शीघ्र भेजा ८ मूर्खता से ॥ ३१ ॥ ९ मारवाड़ के राजा के पत्र ॥ ३२ ॥ १० चित्तभ्रम११अपने लोक भी ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुंदीके राजाबुधसिंह के चरित्र में बुंदी के उमराव देवसिंह का सभा में कोटा के महाराव पर क्रोध करने के कारण घाव फटकर मरना१बुधसिंह के दो पुत्रोंका उत्पन्न होना२बुंदी के नवीन राजा दलेलसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करके बुंदी आना ३ बुधसिंह को चित्तभ्रम होने की बीमारी के वर्णन का अड़तीसवां ३८ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ छहत्तर २७६ मयूख हुए ॥

पादाकुलकम् ॥

इत जयसिंह प्रताप बढ्यो अति, *प्रथित कहैं सु करैं दिल्लिय पति॥
अदबहु लिखैं बिसेस साह अब, कग्गरमाँहिं लिख्योहु जो न कब१
जँहँ राजाधिराज उपपद जुत, लिखत राजराजेंद्र लग्यो द्रुत ॥
तिम तिम बढ्यो सबन सिर कूरम, तहाँ अवर कोउन हुव तासम२
किय रुप्पय कोसन कोटिन धन, सहँसन गज हय चतुर मंदुरन।

घन१ रन२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जो नहि साह वजीर सके करि, सो जयसिंह करैं बल संभँरि ३
स्मृतिनं सुधाय न्याय बिसतारैं, बिप्रन अग्घ बिसेस बढारैं ॥
बाहिर इम धरमानुग दीसैं, पै सु रच्यो न पिष्ट कँहँ पीसैं ॥ ४ ॥
जो निज धरम रच्यो कूरम हिय, क्यौं तब कर्म अधर्म इते किय ॥
हन्यौं प्रथम सिवसिंह स्वीयसुत, जोहु तास जननी निज तिय जुत५
पुनि जननी निज स्वर्ग पठाई, भट बर बिजयसिंह बलि भाई ॥
पुनि भानेज सत्य जो होतो, अरु असत्य सिसु हो तउ सोतो॥६॥
पुनि संग्राम रामपुर स्वामी, हन्यौं दग्ग रचि होय हरामी ॥

---

*प्रसिद्ध (एकान्त में कहना करना स्नेह का, और प्रसिद्ध में कहना करना दबाव का सूचक है)॥१॥१पदवी (खिताब) थी२शीघ्र॥२॥३गजशाला और हयशालाओं में हजारों हाथी घोड़े करदिये४बल से भरकर; अथवा अपने बल को संभाल कर ॥ ३ ॥ ५ धर्मशास्त्रों को दिखा कर ६ आघ (आदर) ७ ऊपर से इस प्रकार धर्म के साथ चलने वाला दीखता था, परन्तु ८ उस धर्म में रचा (रंगा) नहीं था ९ पिसे हुए को पीसता रहा ॥ ४ ॥ यदि १० जयसिंह का हृदय धर्म में रचाहुआ था तो इतने अधर्म के काम क्यों किये ११ अपने पुत्र शिवसिंह को मारा १२ उस शिवसिंह की माता और जयसिंह की स्त्री सहित ॥ ५ ॥ १३ जयसिंह की माता को मारी १४ श्रेष्ठ वीर १५ फिर अपने भाई विजयसिंह को मारा १६ अपने भानजे और बुंदी के कुमर भवानीसिंह को मारा १७ यदि वह कृत्रिम था तो भी बालक था ॥ ६ ॥१८संग्रामसिंह चंद्रावत को१९ अधर्मी होकर दगा से मारा

सत्त अठ्ठ सत्रह १७८८ * मित संवत, तेरह लक्ख १३०००००
साह रुप्पय †तत ॥ ७ ॥

लै अरु ‡कितव मिल्यो मरहट्ठन, सो मुरयो न अवलग अधर्म §सन
ठन १ रन२ अंत्यानुप्रासः ॥१॥

साह तास बिस्वासहि रक्खैं, यह तउ मंत्र[2] दक्खिनिन अक्खैं॥८॥
ऐसी लखि अक्खिय निंदा हम, अरु अच्छीहु करी वहु कूरम ॥
अब नव वसु सत्रह १७८९ मित संवत, आयो पुनि मालवधर
उद्धत ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

अब हायन[3] नव अठ्ठ ८९ बिसद बाहुल[4] दर्प्पक[5] १३ दिन ॥
आयउ पुर उज्जैन अवनि[6] दब्बत कूरम इँन[7] ॥
सत्तलक्ख ७००००० साह सन छपार्ज[8] रुप्पय मँगाय बलि[9]॥
मरहट्ठन किय मेल किय न हित साह मंडि कलि ॥
दल[10] लिखिय रान संग्राम प्रति तुमहु सेन भजहु अतुल[11] ॥
यह आय भुम्मि दब्बन समय मिलि मरहट्ठन बल बिपुल[12]१०

दोहा ॥

सुनत रान संग्राम यह, दल[13] पठयो सु दराज[14] ॥
सबन सिरोमनि निज सचिव, धाइभाँत[15] नगराज ॥ ११ ॥
दराज १ गराज २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
बिनु सादड़ि[16] अरु बेदला, सर्व सुभट दिय संग ॥
ते दसउर आये त्वरित[17], अवनी लोभ उमंग ॥ १२ ॥

---

* प्रमाणवाले † तहां ॥ ७ ॥ ‡ छली § से १ उस जयसिंह का २ सलाह ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३ संवत् ४ कार्तिक सुदि ५ कामदेव की तिथि (ज्योतिष में तेरस तिथि का स्वामी कामदेव है) ६ भूमि को ७ कछवाहों का पति ८ छल से ९ बादशाह का हित रच कर युद्ध नहीं किया १० पत्र ११ तुलना रहित १२ बहुत ॥ १० ॥ १३ सेना १४ बडी १५ धाय भाई ॥ ११ ॥ १६ सादड़ी के राजराणा और बेदला के राव विना १७ शीघ्र ॥ १२ ॥

दसउरतैं पुनि कुंच करि, आयउ पुर उज्जैन ॥
कूरमसौं हित मिलन करि, संग रहिय बस सैन ॥ १३ ॥

षट्पात् ॥

*बुल्ल्यो तब नगराज देवसिंहहु बेघम पति ॥
तबहि देव करि कुंच चल्यो सहसत्थ बेग गति ॥
तबहु मंद[1] बुंदीस चल्यो निज सालक संगहि ॥
सोधी[2] यह कुम्म[3] सन मिलि रु लैहैं स्वकीय[4] महि ॥
जयसिंह ब्याहि[5] तनया जु पै पट्ट दलेलहिं थप्पिदिय[6] ॥
पिक्खहु तथापि जड़बुद्ध मति लैन जात निज बसुमतियं ॥ १४ ॥

दोहा ॥

देवसिंह निज जामिपहिं[7], आत देखि अकुलाय ॥
नगर सलूमरि नाह प्रति, लिखि दल[8] अग्ग पठाय ॥ १५ ॥
जामिप आवत संग मम, निज हठ मन्नैं नाँहिं ॥
कूरमको आसय लिखहु, यातैं हम थित आँहिं[9] ॥ १६ ॥
जु सुनि केसरीसिंह जब, नगर सलूमरि नाह ॥
पुच्छिय यह जयसिंह प्रति, कहिय कुप्पि कछवाह ॥ १७ ॥
तुम सु रान घर सुरूप भटं[10], अरु छन्नैं नहि येहु ॥
चिंति सु बत्त रु रहहु चुप, श्रवनन[11] मुंदन देहु ॥ १८ ॥
सुं[12] सुनि सलूमरि पति लिखिय, देवसिंह प्रति पत्त ॥
आवन देहु न बुद्ध यहँ, रस नहिं कुम्म बिरत्तं[13] ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

॥ १३ ॥ नगराज ने बेघम के पति देवसिंह को * बुलाया १ मूर्ख २ सोची (विचारी) ३ जयसिंह से ४ मेरी भूमि लेदेगा ५ पुत्री ब्याह कर ६ अपनी भूमि लेने को जाता है (यह कवि की वक्रोक्ति का वचन है) ॥ १४ ॥ ७ बहिनोई को ८ पत्र लिखकर ॥ १५ ॥ ९ यहां ठहरे हुए हैं ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ १० उमराव ११ कानों को बंद करलो ॥ १८ ॥ १२ सो १३ जयसिंह प्रतिकूल है ॥ १९ ॥

देवसिंह तब यह*उदंत बुधहिंतु निवेदिय ॥
तबहु अंध बुन्दीस नाँहिं पच्छो प्रयान किय ॥
यह लिखि देव उदार कुंच बिरचिय बेघम प्रति ॥
ताहि बिगारन तबहि मुर्‌यो बुधसिंह हीन मति ॥
यह सुनत राम संग्राम धकि देवहिंतु बेघम लई ॥
सहत बिमूढ जामीस[1] सुख सालक बिच यह गति भई ।२०।

दोहा ॥

नगर फुरक्काबाद पति, नाम मुहुम्मद मिच्छ ॥
कूरमपति वासौं कियउ, अग्ग बइर रन इच्छ[2] ॥ २१ ॥
अब वुंदिय आमेरकौं, जवन वहै लखि जुद्ध ॥
भल कग्गर[3] भेजत भयो, बेघम पुर प्रति बुद्ध ॥ २२ ॥
सहजराम खत्रिय सचिव, ताको लै[4] दल तत्त ॥
बेघम आय रु बुद्धसौं, मिल्यो लख्यो सु प्रमत्त ॥ २३ ॥
वह तथापि[5] बहुदिन रह्यो, मंग्यो दल सु मिल्यो न ॥
व्है उदास निज गेह तब, गो खत्रिय करि गोन ॥ २४ ॥
सक नभ नव सत्तह १७९० समय, द्वादसि१२माघ वलच्छ[6] ॥
तजिय रान संग्राम तनु, दान समय नय दच्छ ॥ २५ ॥
तबहि उदैपुर पट्ट लहि, हुव रानाँ जगतेस[9] ॥
बुद्ध सु इत देवहिं बिपति, अदय[10] दई जड़ एस ॥ २६ ॥
सक नभ नव सत्रह१७९०समय, अब फग्गुन अवदात[11] ॥
मंगलवार चउत्थि ४ मिलि, प्रकटत समय प्रभात ॥२७॥
चुंडाउति रानी जठर[12], रहि नव ९ मास प्रमान ॥

*वृत्तांत १ बहिन के पति का ॥ २० ॥ २ युद्ध चाह कर ॥२१॥ ३ कागद (पत्र)॥२२॥ ४ तहां पत्र लेकर ॥ २३ ॥ ५ तोभी ॥ २४ ॥ ६ शुक्लपक्ष. दान में, समय में और नीति में ८ चतुर संग्रामसिंह ने ७ शरीर छोडा ॥ २५ ॥ ९ जगत्‌सिंह १० निर्दय ने ॥ २६ ॥ ११ शुक्लपक्ष ॥ २७ ॥ १२ उदर से

*दुहिता हुव बुंदीसकैं, दीपकुमरि अभिधान ॥ २८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जयपुरनृपजयसिंहस्तुतितदनुचितकर्मगणन १ सज्जसैन्यजयसिंहावन्तिगमनबुधसिंहप्रमदन २ उदयपुरमहाराणासंग्रामसिंहमरणानन्तरजगत्सिंहतत्पट्टाधिवेशनवर्णनमेकोनचत्वारिंशो मयूखः ॥ ३९ ॥

आदितः सप्तसप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७७ ॥

षट्पात् ॥

इत पहु हुव प्रतापसिंह सालम जिहिं सुव ॥
अनुजहिं गिनि अवनीस भूप सम्मलि कुसथल भुव ॥
आयो तव नृप पाहि नाहिं अद्दरि मुह लायो ॥
अब तिहिं कोटा आय रानि प्रति मंत्र रचायो ॥
विसवासि ताहि तिय बुद्धकी कछवाही यह मंत्र किय ॥
हम देत खरच तुम जाय हठि बल दक्खिन आनहु बलिय ॥१॥
तव प्रताप हठ तिक्ख मिल्यो दक्खिन मरहट्टन ॥
लखि श्रीमन्त अनीक अतुल आरंभ मुदित मन ॥
बाबा पंडित रामचंद १ संध्या राणाजिय १ ॥

---

*पुत्री १ नाम ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह की स्तुति और उनके अनुचित कामों की गणना १ जयसिंह का सेना सज कर उज्जैन जाना और बुधसिंह का प्रमाद २ उदयपुर में महाराणा संग्रामसिंह का देहान्त होकर महाराणा जगत्सिंह के पाट बैठने के वर्णन का उनचालीसवां ३९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सितत्तर २७७ मयूख हुए ॥

२ ज्येष्ठ (बड़ा) पुत्र ३ छोटेभाई को बुन्दी का राजा जानकर कुशस्थल की गुरु ४ भूमि में ५ बुधसिंह ने ६ बुधसिंह की स्त्री कछवाही ने ॥ १ ॥ ७ पूना के पति श्रीमन्त ने अतुल्य आरंभवाली सेना को देखकर मन प्रसन्न हुआ,

पुरणापति[1]के पासवान बलमैं[2] पति ए बिय२ ॥
इनतैंहु अधिक श्रीमंतके दल[3] मालिक उमराव दुव२ ॥
आनंदराव परमार१ अरु हुलकरराव मलार२ हुव ॥ २ ॥

दोहा ॥

इन च्यारि४न दल मुख्य लिखि, मिलि प्रताप अति मोद॥
दम्म लक्ख खट६००००० दैन किय, बुंदियपर स बिनोद॥३॥
इत कूरम[4] कछु कज्जे बसि, मालव अवनि[5] बिहाय ॥
सालम सुवन[6] दलेल सह, जैपुर पत्तो जाय ॥ ४ ॥
मरहट्ठन परताप मिलि, दै खट लक्ख६०००००सु दम्म[7] ॥
दल दुस्सह लायो लरन, कॅन्नल[8] बुंदिय कम्म[9] ॥ ५ ॥
सक इक नव सत्रह१७९१ समय, अमा[10] रु माधव[11] मास॥
बुंदी बिंटिय आनिकैं, गहत अरक[12] तमैं[13] ग्रास ॥ ६ ॥

भुजङ्गप्रयातम् ॥

बढे दक्खिनी त्यों लगे नेर बुंदी, खुरांपक्खरां घुम्मि है[14] भुम्मि खुंदी ॥
झगी[15] ज्वालिका[16] दीपकी मालिकासी, दगीं ना[17]लिका कालिका बालिकासी ॥ ७ ॥
हट्यो पोन झंडनमैं गोन हंक्यो, बढ्यो घोर अंधार संसार ढंक्यो ॥

१ पूना के पति के पास रहनेवाले २ सेना में ये दोनों पति थे ३ सेनापति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ कछवाहा जयसिंह कुछ कार्य वश होकर ५ मालवे की भूमि को छोडकर ६ सालमसिंह के पुत्र दलेलसिंह सहित ॥ ४ ॥ ७ रुपये ८ बुन्दी के युद्ध के ९ कार्य पर अर्थात् बुंदी में युद्ध करने को लाया ॥ ५ ॥ ११ वैशाख मास की १० अमावास्या के दिन १२ सूर्य को १३ राहु ने ग्रसा (ग्रहण हुआ) उस समय बुंदी के घेरा लगाया ॥ ६ ॥ दक्षिणी बढकर बुंदी नगर के लगे सो १४ घोडे घूमकर खुरों से और पाखरों से भूमि को खूंदी (कुचली) और दीपमाला के समान १६ ज्वाला १५ प्रज्वलित हुई और कालिका की पुत्रियों के समान १७ तोपें दगीं ॥ ७ ॥ झंडों में नहीं चल सकने के कारण पवन रुकगया और भयंकर अंधेरा बढकर संसार ढकगया.

चलै *लोल गोला झगैं अग्गि झारैं, दुबाजू छिकैं कोट दैदै दरारैं
परैं गोख[1] अट्टाल[2] तुट्टैं पताका, उडैं छद्दकै भद्दमैं ज्यौं बलाका[3] ॥
छिकैं त्यौं गिरैं थंभ प्रासाद[4] छत्री, पताका उडैं अभ्भ[5] व्है व्है पतत्री[6]॥९
उडैं गैन गिद्दी लगैं पच्छ अग्गी[7], लखैं चंग[8]के पुच्छ ज्यौं राललग्गी
डिगैं कोल[9] त्यौं व्याल[10] पाताल डोलैं, अकूपार[11]की भारसौं पिट्ठि
बोलैं ॥ १० ॥
चलैं तोप प्राकार[12]को लोप मंडैं, खिरैं खोम[13]के तोम[14] के खंड खंडैं ॥
जरैं हट्ट बाजार यौं हेति[15] जग्गी, मनौं राल[16] कौ तूल[17]मैं अग्गि लग्गी॥११
कहौं दंद्ध[18] पाटीर[19] कारी कँवारी, बुझावैं कहौं डारिकैं नीर नारी ॥
चिनंगी उडैं चित्रसारीन चंडैं, मनौं बाग खद्योत[20] प्रद्योत[21] मंडैं ॥१२॥
वडे पट्ट अट्टालिका पात[22] बज्जैं, घनी बालिका पालिका[23] छोरि भज्जैं
कहौं झारसौं धेनु हंभार[24] कढ्ढैं, बरैं द्वार आगार[25]पैं छार[26] बढ्ढैं ॥१३॥

---

*चपल गोले चलकर अग्नि की ज्वाला जगती है जिससे कोट दरारें देकर दोनों ओर फूटता है॥८॥उन गोलों से १झरोखे २छतें बुरजें गिरकर ध्वजायें गिरती हैं और जैसे भाद्रपद मास में ३ बक (बगुले) उडें तैसे छादित होकर उडती हैं, थंभे ४ महल और छतरियें छिककर गिरती हैं और५आकाश में ध्वजा ६ पत्ती होकर उडती है ॥ ९ ॥ पांखों में ७ अग्नि लगकर ग्रीधनियां आकाश में उड़ती हैं सो मानों ८ पतंग (कनकउवा) के पूंछ में राल लगी होवे वैसे दीखती हैं ९ वराह डिगता है १० पाताल में शेषनाग हिलता है और भार से११कमठ की पीठ बोलती है "अकूपारः कूर्मराजः" इति शब्दार्थचिन्तामणौ ॥ १० ॥ तोपें चलकर १२ कोट का नाश करती हैं और कितनी ही १३ बुरजों के १४ समूह के टुकड़े टुकड़े करती हैं, बाजार में दुकानें जलकर ऐसी १५ ज्वाला (झाल) उठी कि मानों राल में १६ किना १७ रूई में अग्नि लगी है ॥ ११ ॥ कहीं पर १९ चन्दन की की हुई कँवाड़ियें (कपाट विशेष) १८ जलती हैं, सो मानों बाग में २० जुगनू २१ प्रकाश करते हैं ॥१२॥छतों के बडे पाटों के २२ पड़ने का शब्द होता है जिससे बहुत स्त्रियें २३ पलंग लेले कर भागती हैं, कहीं पर ज्वाला से गउवें २४ करुणामई शब्द करके निकलती हैं २५ घरों के जलने से दरवाजों पर २६ भस्म (राख) बढती है; अथवा जलने से घरों के द्वार पर भस्मि बढती है ॥ १३ ॥

फरक्कैं कहीं गोख प्रासाद फुट्टैं, तरक्कैं ध्वजादंडके खंड तुट्टैं ॥
गिरैं दोहरे तेहरे गेह गोलैं, घने*पीठ†पल्लयंक बीथीन डोलैं१४
धुनैं धप्पि‡गोपानसी§खप्पराली, उडैं मेदपैं ‖इद्ध ज्यौं गिद्ध आली
हुते ज्यौं रहे त्यौं सबै लोक हारे, मिली ओट बुंदी परे कोटवारे१५
इतैं **दुग्गपैं बीर दैदै निसैंनी, बढे बंदरी सेन ज्यौं लंक लैनी ॥
भज्यो सालमौं सो गह्यो खूब ठोक्यो, जनानौं लुट्यो रारि थानौं
न रोक्यो ॥ १६ ॥
किते बीर जैसिंह जे अत्थ रक्खे, तके सम्मुहे रागपैं जानि तक्खे॥
हरामीनैं हड्डनकी हारि होतैं, जनी अप्पनी बिप्फुरे जंग जोतैं।१७।
मची मार बाजारमैं बाढ बज्ज्यो, लग्यो कंप भीरूनकौं नीर लज्ज्यो
मिले दक्खिनी कूरमी बीर मत्ते, कराकैं बजे हाडकी आड कत्ते१८
बढ्यो घंत्त आरत्त बीथी बजारैं, उडैं मुंड त्यौं रुंड नच्चैं अखारैं ॥
कढे नैन नच्चैं गिरैं भौंह काला, मनौं कंजके झौंरके भौंर माला१९
बढैं हत्थ केते बनैं लुत्थि बत्थी, बनैं अच्छरातैं घनैं लुत्थि बत्थी ॥
बजी चाप टंकार भंकार भेरी, घने दक्खिनी कूरमी सेन घेरी २०

---

*बहुत चोकियें (बाजोट) †पर्यङ्क (पलंग) गलियों में डोलते हैं॥१४॥‡मियाले "गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि" इत्यमरः॥जलकर उनके ऊपर से § छप्परों की पंक्तियें उडती हैं सो मानों मांस के ऊपर ग्रीधों की ‖बड़ी पंक्ति उडती है॥१५॥ **दुर्ग (गढ) पर लंका को लेने के लिये १ बंदरों की सेना बढी जैसे२ सालमसिंह भगा जिसको पकड़ कर खूब ठोका ॥ १६ ॥ ३ यहां रक्खे थे वे ४ राग के ऊपर तक्षक सर्प के समान सम्मुख हुए ५ अधर्मी हाडाओं की हार होते ही उस युद्ध को देखकर अपनी ६ उत्पत्ति को "जनिरुत्पत्तिरुद्भवः" इत्यमरः ॥ ७भूल गये अर्थात् हाडा चत्रियों में जन्म लेकर भागना नहीं चाहिये था सो भूलकर भाग गये॥१७॥८कछवाहे वीर मस्त होकर मिले, हड्डियों की आड पर ९ तलवारों के कड़ाके बजे ॥ १८ ॥ १२ गलियों और बाजारों में १० घावों से ११ रुधिर का समूह बढा (यहां आरत्त का आकार समुच्चय अर्थ में है) १३ मानों कमल के गुच्छे पर भ्रमरों की माला है ॥१९ ॥ १४ अप्सराओं से गाढ आलिंगन करके (अंग भिड़ाकर) मिलते हैं१५नोबत भयंकर शब्द से बजी ॥२०॥

झुकैं सत्थ द्वै[1]हत्थतैं मत्थ झारैं, कुलाली किधौं[2]चक्क भंडा उतारैं॥
कढैं पार लै लार अंतैं कटारी, मनौं गा[3]रुरू नागिनी हत्थ भारी२१
बहैं[4]नारि अच्छी कि अच्छी बरच्छी, मिलैं कोचकौं फारि ज्यौं
वारि मच्छी ॥
बजी रीठ बुंदी सु बैसाख अच्छे, सजे दक्खिनी तावके घाव सच्छे २२
घनौं[6]चक्कको देखनौं अंक चाह्यो, सु[7]पैं पर्बमैं गाहकी[8] राह साह्यो ॥
सक्यो देखि यौं नांहि स्वर्भानु सारैं, नतो तद्दिनाँ[11] जाम अट्ठौं ८
निहारैं ॥ २३ ॥
कहाँ मोह[12] आरोप कुक्कैं कंथा[13]सी, बकैं वारुनी मत्त ज्यौं ग्राम बासी।
किते उल्लटैं फाटि छत्ती कँवारे, मनौं द्वार भंडार ही[15]के उघारे॥२४॥
भरक्कैं कढैं खुप्परी[16] फुट्टि भेजे, फरक्कैं कहाँ पिप्फरे[17] के कलेजे ॥
भिरे दक्खिनी बुद्ध[18]के काज भारी, मिली जित्ति ओक्कूर[19]मी सेन मारी२५

॥ षट्पदी ॥

मिलि प्रताप मरहट्ठ जित्ति बुंदिय जस लिन्नौं ॥

दोनों सेना झुककर दोनों हाथों से मस्तक उतारती हैं सो मानों २ चाक के ऊपर १ से कुम्हारी भांडा (कलश) उतारती है और आंतों को साथ लेकर कटारी पार निकलती है सो मानों ३ गारडू (कालबेलिये) के हाथ में बड़ी सर्पिणी है ॥२१॥ ४ नाड़ियें (नसें) बहती हैं और कवचों को फाड़कर बरछियें बहती हैं सो मानों पानी में मच्छियें बहती हैं. (यहां बरछी के कवच को फोड़ने की उपमा के संबंध से मच्छी के जाल को तोड़कर निकलना समझना चाहिये; अथवा जैसे जल में मच्छी निकले तैसे कवचों को फोड़कर शरीर में बरछियें निकलती हैं) ५ताप देनेवाले॥२२॥ ७सूर्यने इस ६ सेना को बहुत देखना चाहा परन्तु उपराग में उस (सूर्य) के ८ ग्राहकी ९ राहु ने पकड़ लिया; अथवा युद्ध के ग्राहकी सूर्य को ग्रहण में राहु ने पकड़ लिया इसकारण १० राहु के वश में होकर नहीं देखसका नहीं तो उस दिन ११ आठ पहर देखता ॥२३॥ कहीं पर १२ मूर्छा में १३ कथा करने के समान कूकता है जैसे १४ मद्य में मस्त होकर गांवों में रहनेवाला (ग्रामीण) कूकता है १५ हृदय रूपी भंडार के कपाट खोले हैं॥२४॥ १६ खोपरी १७ और कहीं कहीं कई फेफरे और कलेजे फड़कते हैं, १८ बुधसिंह के अर्थ १९ कछवाहों की सेना को ॥२५॥

गहि सालम निज *जनक बंदि हुलकर वसि किन्नौं ॥
सालमको सरबस्व सज्ज निज करन सुहाई ॥
नगर नैनवा जाय दई निज नाम दुहाई ॥
बुंदिय छुराय मरहट्ठ इत रस ६ मुकाम तत्थहि रहिय ॥
दिस दिसन बत्त फुट्टिय †द्रुतहि कविन वाह दक्खिन कहिय२६

॥ दोहा ॥

सहर लुटिय सालम गहिय, फिरिय बुद्ध नृप आन ॥
अरु चउसत ४०० दुहुँ ओरके, परे सुभट गत मान ॥ २७ ॥
कछवाही कोटा नगर, यह सुनि बुंदिय आय ॥
दिय महिमानी दक्खिनिन, दुवरदिन सेन रखाय ॥ २८ ॥
कछवाही मल्लार कर, ‡रक्खी बंधिय रानि ॥
अरु ताकी तियकी [१]अतुल, किय भावज[२] समका[३]नि ॥ २९ ॥
तहँ हुलकर मल्लार तब, सँधा[४] लिय हित प्रग्गि ॥
बुंदिय जो जैहैं[५] बहुरि, लैहैं तो हठ लग्गि ॥ ३० ॥
अवरहु त्रय३ दलके अधिप[६], तिनहूकौं हित धारि ॥
दिन्ने हय सिरुपाव द्रुत, रानी सुनय[७] बिचारि ॥ ३१ ॥
कछवाहीप्रति सिक्खकरि, तदनंतर[८] जय तोर ॥
प्रबल बीर पच्छे पलटि, उमडिय[९] दक्खिन ओर ॥ ३२ ॥
कटक सु डभिय ग्राम कढि, रहि बिंझोलिय रैन ॥
बेघम कँग्गर बुद्ध प्रति, लिखे मिलन जस लै[१०]न ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

मिलन न आयउ तबहु बंचि कग्गर बुंदिय पति ॥
तब उप्परि मरहट्ठ गये दक्खिन सवेग गति ॥

---

*प्रतापसिंह के पिता सालमसिंह को ॥ †शीघ्र॥२६॥२७॥२८॥ ‡राखी (रक्षा) बांधी १बहुत २ भोजाई के समान ३ अदब ॥२९॥४प्रतिज्ञा ५ फिर जावेगी तो ॥३०॥ ६सेनापति ७ श्रेष्ठ नीति विचार कर॥३१॥८जिसपीछे ९ चढे॥३२॥१०पत्र॥३३॥

इत बेधम तजि महल्ल बुद्ध आराम[1] बास किय ॥
रान कटक[2] तिन दिनन आनि तत्थहि मिलानें[3] दिय ॥
हत्ति[4] जानि रान संग्रामकी नृपहु सोक अक्खन गयउ ॥
मिलि धाइभ्रात नगराज नमि करन जोरि हाजरि भयउ।३४।
दुव[5]दुवर हय सिरूपाव नृपहि नगराज निवेदिय ॥
आय रान मृत जानि नृपति यह अक्खि नाँहि लिय ॥
तदनु[6] साहिपुर ईस नाम उम्मेद[7] जंग जय ॥
ताँस[8] जनक तिन दिनन मरिप यातें तत्थहु गय ॥
केसरीसिंह डेरन तदनु[9] गिनि सल्लमरि पं[?] ताहि गय ॥
इम रान भटन सनमानि अब नृप निज उपबनें[10] आहि गय ।३५।

॥ दोहा ॥

धाइभ्रात जिम नजरि किय, इनहु दुहुँन तिन किन्न ॥
नाँहि सु लिय बुंदिय नृपति, दुवरतिन हित हय दिन्न॥३६॥
इत बुंदिय लिन्नी सुनत, कुप्पि नृपति कछवाह ॥
बीससहँस२००००चतुरंग[11] बलि[12], पठये सज्जि सिपाह ॥३७॥
सालम सुवन प्रताप तब, चतुरंगह सुनि चास[13] ॥
नैननगर[14] तजि भज्जिगो, पुनि मरहट्ठन पास॥ ३८ ॥
अरु कछवाही सुनत यह, आवत भ्रात अनीक[15] ॥
बुंदिय तजि बेधम गई, रही न टेक रतीक ॥ ३९ ॥

नीक१ तीक२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥

॥ सोरठा ॥

कछवाही निज किन्न, इक१मास बुंदिय अमल ॥

१बाग में २ महाराणा की सेना ने ३ मुकाम किये ४ राणा संग्रामसिंह का देहांत जानकर ५ बुधसिंह ॥ ३४ ॥ ६ जिस पीछे ७ उम्मेदसिंह का पिता (भारतसिंह) ८ जिस पीछे ९ पति१०अपना बाग है वहां गया ॥३५॥३६॥ ११ सेना १२ फिर ॥ ३७ ॥ १३ सेना आने की खबर सुनकर १४ नैणवा नगर को छोड़ कर ॥ ३८ ॥ १५ भाई जयसिंह की सेना ॥३९॥

लरैं बिनुहि पुनि लिन्न, द्रुतहि आय जयसिंह दल ॥ ४० ॥
कूरम कोट कराय, याहि बरस पुर टौंक इत ॥
*दोसा दुग्ग बनाय, † प्रथित निवाई दुग्ग पुनि ॥ ४१ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

इतको उदैपुर रान नृप जगतेस ‡ कालहि जानिकैं ॥
ब्रजकुमरि नामक§जामि निज तिहिं व्याहजोग्य प्रमानिकैं॥
कोटेस दुरजनसल्लकौं बरि ताहि व्याहन बुल्लयो ॥
इन लिखिय कूरम[1] उग्रहै अवकास उद्वहको[2] गयो ॥ ४२ ॥
यह जानि रान पठाय प्रतिवच[3] कुम्म जो अत्र कुप्पिकैं ॥
हम गेह व्याहन आत तुम भुव लौंहिं लज्जहिं लुप्पिकैं ॥
इकलिंग[4] आन हमैंहु तो तुममाँहिं व्है रन रोरिहै ॥
जोपै भुवापति जैपुरेस तथापि तेगन तोरिहै ॥ ४३ ॥
कोटेस यह सुनि कुंच करि पहुँच्यो उदैपुर प्रीतिसौं ॥
जगतेस तिहिं निज जामि[5] दिय परिनाय हित रस रीतिसौं ॥
यह व्याह चंद्र रु अंक सत्त रु इक१७९१संबतमैं भयो ॥
आषाढ मेचक[6] पक्ख नवमिय[7]लग्न उच्छव उन्नयो ॥४४॥
कोटेस नृप इम व्याहि दुलहनि स्वीय पत्तन संचरयो[8] ॥
इक जानि रानहिं पाहि इत जयसिंह जालम व्है जरयो ॥
इत रान भेट जयसिंह सगताउत्त[9] बग्घेह[10] पुत्तहो ॥
जिहिं ग्राम पिप्पलिया जु स्वामिय काम स्पंदन[11] जुत्तहो ४५
दुवरपुस्त हिंतु[12] वकील उत्तम हो उदैपुरको वहै ॥

॥ ४० ॥ * नगरका नाम है † प्रसिद्ध ॥ ४१ ॥ ‡ समय § अपनी बहिन १ जयसिंह २ विवाह का समय॥४२॥ ३ उत्तर ४ उदयपुर के इष्टदेव एकलिंग नाम के शिव हैं ॥ ४३ ॥ ५ बहिन ६ कृष्णपक्ष ७ छठा (छाया) ॥ ४४ ॥ ८ अपने घर को चला ९ उमराव १० बाघसिंह पुत्र था जो स्वामि के कार्य में ११ शीघ्रता करनेवाला था (स्पन्दनं जवने" इति शब्दार्थचिन्तामणिः॥ १२ दो पीढी से

साहू सितारधीसपैं जु*अनीस † अब्दनतैं रहै ॥
तिहिं तत्थ ‡ साहुव छत्रपति आदाब अति करि अद्दरैं ॥
वइठारि गद्दिय कोनपैं काका कहैं रु कही करैं ॥ ४६ ॥
संग्राम रान § निपात सुनि तिहि सिक्ख साहू सों चही ॥
जयसिंहसौं यह जानि बाजेराय मंत्रियहू कही ॥
मम मात पूरब[1] जात जात जु न्हान तित्थ[2] बिधान सौं ॥
तिहिं लै उदैपुर जाहु एह उदंत[3] अक्खहु रान सौं ॥ ४७ ॥
तुम रान कूरम सौं कहाय यहै कहावहु साहसौं ॥
मम मात कासिय जात जो दैहै न कर रहि राहसौं ॥
स्वच्छंद मग्गहुँमैं[4] कहौं रुकिहै न दैलजुत[5] जायहै ॥
पुनि फल्गुगय सिर पारि पिंडन [6]अध्व इच्छित आयहै ॥४८॥
जयसिंह बग्घहनंद यौं सुनि तास मातहिं संगलै ॥
आयो उदैपुर औ मिल्यो वह रान हिंतु[7] उमंगलै ॥
करजोरि अक्खिय पेसवा नृप साहु मंत्रिय [8]आहि जो ॥
तसमात[9] आवत रावरे घर पुंब्ब[10] तीरथ चाहि जो ॥ ४९ ॥
सुनि एह सम्मुह जाय रान अतीव अद्दर[11] अद्दरी ॥
महिमानि मंडि दिवाय डेरन मानि मातहिलौं[12] करी ॥
[13]अवरोधमाँहिं बुलाय प्रीति बढाय बिन्नति अक्खई ॥
सुनि रान बिन्नति बात मंत्रिय मात मोदमई भई ॥ ५० ॥
गज बाजि बस्त्र बिसेस रान निवेदि[14] ताहि घनौं नयो ॥

---

* निरन्तर † वर्षों से ‡ छत्रपति पदवी वाला राजा साहू ॥ ४६॥ § पतन (देहान्त) १ पूर्व दिशा की जात्रा को जाती है २ विधि पूर्वक तीर्थ स्नान करने को ३ वृत्तान्त ॥४७॥ ४ मार्ग में स्वतन्त्र ५ सेना सहित. फल्गु गया में पिंड करके चाहे हुए ६ मार्ग से आवेगी ॥४८॥ ७ से ८ है ९ इसकारण से अर्थात् साहू आप के वंश में है और यह उसके मंत्री की माता है इसकारण आपके घर आती है १० पूर्व दिशा के तीर्थ ॥४९॥ ११ बहुत आदर से १२ माता के समान १३ जनाने में ॥ ५० ॥ १४ भेट करके

पुनि जाय डेरन सिक्खदै सँग स्वीय सेनहुकों दयो ॥
नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह मुख्य सु संगभो ॥
जयसिंह पुनि वह बग्घ नंदन संग उच्च उमंग भो ॥ ५१ ॥
खुरतार मारन भुम्मि देत दरार दारिम[1] पक्कज्यों ॥
नवलक्ख९००००० दलपति मंत्रि जननी चंड[2] संगहि चक्कज्यों ॥
[3]बेहरक्क दंति बडेनपैं फहरक्कि फैलतसी फिरैं ॥
झिलि फेट झंड झपेटपैं पवमान[4] चंचलहू चिरैं ॥ ५२ ॥
श्रियमंत मात सुखेन[6] यों सह सेन जेपुर संचगी[7] ॥
कछवाह रायँहु[8] आय सम्मुह कानि रानहि[9] लों कगी ॥
जयसिंह प्रीति बढाय तास दिवाय डेरन मोदसों ॥
बेतंड[10] बाजि उदंड दुवरक्किय भेट वंदि[11] बिनोदसों ॥ ५३ ॥
महिमानि दै अति अग्घसों अवरोध[12] मध्य बुलायकें ॥
सकुटुंब सम्मुह जाय मंदिर[13] लाय मत्थहिं नायकें[14] ॥
बइठारि गद्दिय ताहि अप्पुन अल्प[15] आसनपैं रह्यो ॥
नग बस्त्र नव्य[16] निवेदिकें हम दास कूरम यों कह्यो ॥ ५४ ॥
[17]तनया सु कृष्णाकुमारि अप्पन जो दलेलहिं[18] अप्पई ॥
गहि ताहि हत्थन कुम्म यों थिर तास अंकहि[19] थप्पई ॥
कहि मोर पुत्रिय बुंदि भूप दलेल रानिय है यहै ॥
तस लज्ज भुम्मि सुहागकी तुमको सु अज्ज अभै यहै ॥ ५५ ॥
हैयहै१ भैयहै२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
तिहि लाय हिय श्रियमंत मातहु अक्खि प्रीति परा पगैं ॥

॥ ५१ ॥ १ पकी हुई दाड़िम के समान २ भयंकर सेना ३ झंडे बडे हाथियों पर ४ पवन चंचल है तो भी प्रवेश करता है अर्थात् उन झंडों में हो कर शीघ्रता से निकल नहीं सक्ता ॥५२॥ ६ सुख से ७ गई ८ राजा ९ राना की जैसी १० हाथी ११ नमस्कार करके ॥५३॥ १२ जनाने में १३ घर (महल) में १४ मस्तक नमाकर १५ आप छोटे आसन पर बैठा १६ नवीन ॥५४॥ १७ पुत्री १८ दलेलसिंह को विवाही १९ उस की गोदी में बिठाई ॥ ५५ ॥ २० प्रेम

रुपये पचीस हजार२५००० छोरिय जे न बुंदियकों लगैं ॥
जब कुम्म मालव पत्त[1] तत्त सु साह[2] छन्नहिं मेलकैं ॥
निऽवैहजार९०००० लिखायलियठहराय[3] दम्म दलेलकैं॥५६॥
तब दक्खिनिन नृप साहुसौं अरजी कराय निदेसलै[4] ॥
यह अंक[5] थप्पिय बुंदिपैं कहि कोउ नाँहिं बिसेस लै ॥
तिनमाँहिंसौं श्रिपमंत मात ब[6] छोरि दम्म इते दये ॥
पुनि अक्खि पुत्तिंय[7] लाय च्छत्तिय[8] नेह बीज बये नये ॥५७॥
श्रिपमंत मातहि रक्खि यों जयसिंह जैपुर मासलों[9] ॥
पुनि साह हिंतु लिखाय मग कर माफ तास प्रवासलौं ॥
बलि तास डेरन जाय कूरम राय बंदनकैं[10] बली ॥
साजि स्वीय सेनहु संग दै वह पंथ पूरब मुक्कली ॥ ५८ ॥
भट रान केसरिसिंह ओ जयसिंह तत्थहि ए रहे ॥
दल ओर संगहि तास दै पुनि मास जैपुर जे रहे ॥
एरहे१,जेरहे२ अंत्यानुप्रासः १ ॥
नगगी सलूमरि नाह केसरिसिंह धुत्त[11] अधीर ज्यों ॥
जयसिंह बग्घहनंद हो यह बेदपाठक[12] वीर त्यों ॥ ५९ ॥
सनमान दोउनको कियो कछवाह डेरन जायकैं ॥
हय हत्थि कूरमसौं ति[13] लै पहुँचे उदैपुर आयकैं ॥
मल्लार अरु परमार ए करि कैद सालमकौं इतैं ॥
तजि नैर बुंदिय कुंच कैं पहुँचे ति मालवमैं तितैं ॥ ६० ॥
परमार दौलतसिंह इक१सु सेन दक्खिन संगही ॥

---

१ जयसिंह मालवे में गया २ तहां बादशाह ने छांने ३ दलेलसिंह से रुपये ठहरा लिये ॥ ५६ ॥ ४ आज्ञा लेकर ५ इसको बूंदी पर गोद रक्खा है; अथवा रुपयों का यह अंक बुंदी पर स्थापन किया ६ अब ७ पुत्री कहकर ८ छाती से लगा कर ॥ ५७ ॥ ९ विदेश में रहने तक का १० नमस्कार करके ॥५८॥ ११ धूर्त १२ वेद का पाठ करने वाला अर्थात् वेद के मतानुसार चलनेवाला ॥ ५९ ॥ १३ ते (वे) ॥ ६० ॥

यह रान को उमरावहो अरु नीति जंग अभंगहो ॥
तिहिँ अक्खि सालमसिंह मो कहँ[1] लेहु जामिन उहे अबैं ॥
दुवलक्ख२०००००रुप्पय लेहु सो इन्ह[2] देहु जावहुँ मैं तबैं ६१
जितनैं उदैपुरमैं रहों अरु रानको जस[4]वत्थरैं ॥
मम पत्र लेहु लिखाय ओ लिखिदेहु[3] तुम इनके करैं ॥
इनको अमात्यहु इक्क१ रुप्पय लैन संगहि लीजिये ॥
तिहिँ ग्राम पंचहजार ५०००को हम दैहिँ सत्य[5] पतीजिये ६२
तुमकोहु बुंदिपको पटा मिलिहै हजारपचीस२५०००को ॥
सुनि एह दोलतसिंह पत्र लिखाय सालम हीसको[6] ॥
अरु अप्प रांव मलारसोँ परमारसोँ इम अक्खई ॥
दुवलक्ख२०००००रुप्पय देहिँपै गृह लैहिँ तो लिखि सो दई ॥६३॥
हम रान जामिन बीच जो नहिँ देहिँ तो हम देहिँगे ॥
बलि रान भूप बलिष्ठ जे इनतैं निवेरिहु लैहिँगे ॥
परमार यों लिखि पत्र जो परमार हुलकरको दयो ॥
निज संग हुलकर दास भट्ट महादिदेवे सु पै लयो ॥६४॥
पुनि[7] जे उदैपुर आय दक्खिन सेन सोँ इम सिक्खकैं ॥
सुनि रान चाहि सिराहि दोलतसिंहको तब तिक्खकैं[8] ॥
लिखि पत्त[10] बुंदि दलेलको दम[11] दम्म सालम मंगये ॥
बदल्यो दलेलहु बप्प[12] हिंतु कपर्द[13] दोयहु नाँ दये ॥ ६५ ॥
तब सुभट दोलतसिंह जुत करि सिक्ख सालम रानसोँ ॥

---

१ सालमसिंह ने दौलतसिंह से कहा २ मरहठों को ॥ ६१ ॥ ३ तुम तो मुझसे लिखवा लो और मरहठों को तुम लिखदो ४ कामदार ५ विश्वास करो ॥ ६२ ॥ ६ उस दुःख वाले सालमसिंह का "ही विषादे" इति शब्दार्थचिन्तामणौ ॥ और स सहित अर्थात् विषाद सहित जो सालमसिंह था उस का पत्र लिखा गया ॥ ६३ ॥ ७ फिर ८ बलवान् है सो ९ महादेव ॥ ६४ ॥ १० पत्र ११ दंड के रुपये १२ बाप से दो १३ कौड़ी भी नहीं ॥ ६५ ॥

चलि नैनवा निज नैर आयउ भीरु उब्बरि प्रानसौं ॥
निज कोसतैं दुव लक्ख२००००० रुप्पय देस दक्खिन मुक्कले ॥
पुनि कुंम्म आयस पाय[1] दोउनकौंहि दिन्न पटा भले ॥६६॥
ससि अंक सत्त रु इक्क१७९१ संबत मास कत्तिय गोर[2]मैं ॥
कछवाह किंय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोरमैं ॥
मेवारमैं आगौं[3]च नामक ग्राम सर्ब मिले तहाँ ॥
अरजी लिखाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहुगे यहाँ ॥ ६७ ॥
सुनि साह सेन समस्त संजुत खानदौरह मुक्कल्यो ॥
यह मास अगहन कृष्ण पंचमि५ चंड[4] चक्क[5]हिं लै चल्यो ॥
इत आय मालव देसमैं बुलवाय कूरमहू लयो ॥
बिनु रान तब सब भूप संजुत[6] सोहु मालवमैं गयो ॥ ६८ ॥
तिहिं साल बिच इत नैर[7] बेघम पोस मास अमा[8] जहाँ ॥
कछवाह रानिय देह हानिय दान कैं रु करी तहाँ ॥
इत कों नवाब रु कुंम्म मालवमैं मिले[9] अति प्रीति सों ॥
सब हिंदु भूपन सत्थ लै रन मंत्र मंडिय रीतिसौं ॥ ६९ ॥
अभमल्ल नृप मरुईस बीकानैर भूपति सत्थही ॥
कोटेस दुरजनसल्ल सोपुर भूप गोर समत्थही ॥
रतलाम झब्बुवके रु ईडरके कबंधहु संजुरे ॥
बुंदेल नृप दतियादि भूप भदोर भंड पै[11] बिप्फुरे[10] ॥ ७० ॥
रचि मेल बीर बघेल बंधुव भूप सम्मिलि सज्जयो ॥
नगरी करोलिय भूप जद्दव सेन संजुत सो ठयो[12] ॥
पुनि रूपनैर[13] कबंध भूप जु पाय लग्गिय आनिकैं ॥

१ जयसिंह की आज्ञा पाकर॥६५॥२ शुक्ल पक्ष में ३ आगोंचा के पास ही हुरड़ा नामक पुर में इकट्ठे हुए थे॥६७॥४ भयंकर ५ सेना ६ साथ ॥ ६८ ॥ ७ बेघमपुर ८ अमावास्या ९ जयसिंह मालवा देश में मिले ॥ ६९ ॥ १० एकत्र हुए ११ पति ॥ ७० ॥ १२ खड़ा हुआ १३ रूपनगर का ॥ ७१ ॥

पुनि आय नेर मनाय भूपति जोर मिच्छन जानिकैं ॥ ७१ ॥
बजरंग राघव दुग्गको महिपाल खिचियहू मिल्यो ॥
नगरी सिरोहिय देवरा नृप आनि आयसकों झिल्यो ॥
रचि चक्क टट्टिय आय भट्टिय नेर जैसलमेरको ॥
बलि नेर पट्टिनि भूप उम्मट आय आतहि बेरको ॥ ७२ ॥
कछवाह नरउर नाह मिच्छ नबाबहू कितने कहाँ ॥
मिलि खानदोरह सों सबै परि तत्थ रुंधि दिसा चहाँ ॥
सबकों सिराहि रु खानदोरह सेन दक्खिनपैं सज्यो ॥
मरहट्ठ सेनहु पिक्खिकैं चहि रट्ठ सम्मुह ह्वै गज्यो ॥ ७३ ॥
रचि मंत्र मंडित रामचंद्र मलार औ परमार त्यों ॥
राणांजि सम्भलि संधिया बढि जंग जीत बिचार ज्यों ॥
दलमाँहिंसों पक्खरैत अट्ठ हजार८०००कढि रु यों कही ॥
तुम जाय जैपुर देस लुट्टहु त्यौंहि मिच्छनकी मही ॥ ७४ ॥
असवार अट्ठ हजार८०००वे तब सीम जैपुर जायकैं॥
टोडा रु टोंक बिगारि लुट्टिय कुम्भ आन उठाय कैं ॥
नगरी निवाइय लुट्टिकैं पुनि लुट्टि मालपुरा लयो ॥
लंवा रु डागिय लुट्टि पट्टलि दाव ढुंढ्वपैं दयो ॥ ७५ ॥
तिहिं माहि जारि नराननैर रु जाय सांलिय लुट्टई ॥
मोजाद पत्तन लुट्टिकैं हलसूरि घंत्तन दै लई ॥
इम रारि खग्गन झारि मारि बिगारि जैपुर देसमें ॥
पुनि नैर संभर आदि लुट्टिय साहके अवसेसमें ॥ ७६ ॥

१बजरंगगढ और राघोगढका २हुकम को झेला ३सेना की टाटी(थोर्डासीआड) रच कर४आते समय ॥७२॥५म्लेच्छ (यवन)६चारों दिशा रोक कर७राष्ट्र(राज्य) की चाहना करके ॥७३॥८ पाखरों वाले ९ म्लेच्छों की भूमि को ॥ ७४॥ १० पुरका नाम है॥ ७५ ॥नराना नामक नगर को जलाकर ११ साली पुर को लूटा १२घातें १३ बाकी में ॥ ७६ ॥

जिम कुम्भ भो यहँ साह[1]को मरहट्ठ नाँहिँ गिने[2] मिल्ले ॥
तिम तेहु दक्खिन बीर मन्नि रु ग्राम जैपुरके गिले ॥
असवार मान[3] हजार अट्ठन लूट यों इत मंडई ॥
उत रामचंद्र मलार औ परमार बग्गनकों[4] लई ॥ ७७ ॥
निज सुत्त[5] साह अनीकपैं पबिपात[6] पब्बय ज्यों परैं ॥
बजि बंब[7] आँनक त्यों अचानक कूटि बिब्भक्क ए करैं ।
तब ज्यों हुते तिम साहके उमराव भीरुक[9] भग्गये ॥
लखि कुम्भमौरँह[10] खानदौरह लज्जि मग्गहि[11] लग्गये ॥ ७८ ॥
तब सेन भज्जत साहको दखिनीन[12] खग्गन खंडयो ॥
उडि खेह अंबरैं[13] यों छई जिम मेह संबर[14] मंडयो ॥
अंचला[15]हु लक्खनैं[16] फौजकी धमचक्क धक्कनतैं धुकी ॥
बढि व्यॉधि[17] दिग्गज दंत तुट्टि समाधि संकरकी चुकी॥७९॥
फररक्कि फीलन[18] केतु त्यों थररक्कि अंबर अंच्छरी[19] ॥
बररक्कि दड्ढ बराह भूं[20] दररक्कि कच्छप भो दरी[21] ॥
तरवारि दक्खिन सेनकी दल मारि दिल्लियको दयो ॥
दृग[22] मीचि भज्जत साहके दल राह बुंदियको लयो ॥ ८० ॥
लगि पिट्ठि दक्खिनके अनीकन[23] लाग चम्मलिलों[24] करी ॥
इत अग्ग आय रु साहकी पृतना[25] धुनी[26] वह उत्तरी ॥

१ जिसप्रकार जयसिंहको बादशाह का ही हुआ समझें २ मरहठों से मिलाहुआ नहीं समझें इसप्रकार दक्षिणियों ने जयपुर के देश को लूटा ३ प्रमाण ४ घोड़ों की बागें उठाई ॥ ७७ ॥ ५ बादशाह की सोतीहुई सेना पर ६ पर्वत पर वज्र पड़ै जैसे ७ नगारे और ढोल ८ ठोक कर ९ कायर १० कछवाहों का मुकुट जयसिंह (यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो सब जगह ऐसा ही जानो) ११ लज्जित होकर मार्ग ही लगे ॥७८॥ १२ मरहठों ने १३ आकाश में १४ जलधारा १५ भूमि भी १६ लाखों सेना की १७ पीड़ा ॥ ७९ ॥ १८ हस्तियों पर १९ अप्सरा २० भूमि २१ भय युक्त हुआ; अथवा गुफा रूप होकर अपने अंगों को भीतर समेट लिये २२ नेत्र बन्द करके ॥ ८० ॥ २३ सेना ने २४ चामल नदी तक पीछा किया २५ सेना २६ वह नदी (चामल)

दुव अंक सत्रह१७९२मान संबत पक्ख *उज्जल पोसमैं ॥
निज बंधु भूप †अमान मन्नि रु रान उप्फानि रोसमैं ॥
[1]दल पंति दुद्धर बंधिकैं जगतेस साहिपुरा लग्यो ॥
चहुँ ओर सोर सजोर ह्वाँ घनघोर तोपनमैं दग्यो ॥ ९२ ॥
तब रान सम्मलि होनकौं जयसिंह जैपुरसौं चढ्यो ॥
सुनि एह साहिपुरेसकौं [2]अति सोक कूरमकौं बढ्यो ॥
तब दंड रुप्पय लक्ख१०००००साहिपुरेस अप्पिय रानकौं ॥
करि कुंच रानहु गो उदैपुर रक्खि बंधुव मानकौं ॥ ९३ ॥
इहिं साल मेचक[3] माघमैं दबि रोग दुस्सहतैं गरयो ॥
निज नैनवापुर माँहिं अंध सु मंद सालमहू मरयो ॥
मरुभूप दिल्लिय आय इत गुजरात जित्ति उछाहसौं ॥
अरजी करी कर जोरि बुद्धहिं[4] दैन बुंदिय साहसौं ॥ ९४ ॥
तँहँ खानदौरह जो नबाब जबाब पेस न होनदै ॥
जयसिंहको मति मित्र[5] यौं अरजी सु लग्गन जो न दै ॥
नव९मास बुंदिय काज यौं मरुभूप दिल्लियमैं रह्यो ॥
बखसीस किन्न बिसेस पै यहतो न साह करयो कह्यो ।९५।
तब कुप्पिकैं बिनु साह आयस[6] सेन धन्वप[7] सज्जयो ॥
सब देस लुट्टत साहको मरुदेस गर्बित ह्वै गयो ॥
दुव अंक सत्रह१७९२ साक यौं सितपक्ख फग्गुनमैं[8] भई ॥
इत साह दक्खिनमैं मिल्यो यह जानि कूरमकी लई ।९६।

*पौष सुदि पक्ष में †नहीं मानने वाला (निरंकुश) १ सेना की पंक्ति, दुर्धर्ष (दुःख से धर्षण करने में आवै ऐसी) बांधकर ॥ ९२ ॥ २ जयसिंह के आने का ॥९३॥ ३ माघ वदि पक्ष में ४ बुधसिंह को बुन्दी देने की ॥ ९४ ॥ ५ इच्छा मित्र (अपनी इच्छा से मित्र था जयसिंह का किया हुआ मित्र नहीं था) अथवा बुद्धि से मित्र था ॥ ९५ ॥ ६ बादशाह की बिना आज्ञा ७ मारवाड़ का पति ८ फाल्गुन शुक्ल पक्ष में ॥ ९६ ॥

तबही नबाब उमीरखाँ चुगली सु दोउनकी करी ॥
प्रभु[1] खानदोरह कुम्भ[2]मोरह यौं हरामिय अहरी ॥
मिलि सत्रु सेननसौं गये अरु लाभ दक्खिनतैं लयो ॥
दुव कोटि२००००००० रुप्पय देस मालव मंडि साहुवकों दयो ९७
चुगली सु जानि रु कुम्भहू पुनि पत्त दक्खिन मुक्कल्यो ॥
श्रियमंत आवहु बेग ह्याँ हम दौरैं[3] दिल्लियको दल्यो ॥
श्रियमंतहू नृप साह[4] मंत्रिय बंचि पत्र सु बेगलै ॥
दलैं[5] दर्प दुद्धर[6] बंधिक्कैं गति काल कीलिय[7] तेगलै ॥ ९८ ॥

दोहा ॥

नृप साहुव नवलक्ख९०००००दल, नगर सितारा नाह ॥
सज्जित भो ताको सचिव, बाजेराय दुबाह[8] ॥ ९९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बाबा पंडित रामचंद्र हुलकर मल्लारह ॥
राणांजिय संधया रु प्रथित आनंद पमारह ॥
अबहु मुख्य करि इनहिं चढि रु श्रियमंत चलायउ ॥
सालम सुवन[9] प्रताप सोहु संगहि भट आयउ ॥
कूरमहिं जानि आव्हानकर[10] इम दक्खिन सन उप्परिय ॥
तहिँनैं[11] अपार दल[12] भार तकि फनपति[13] फेनन फुंकरिय १००

परिय१ करिय२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

गरद गैन[14] बित्थरिय जरद[15] जम[16] जनक[17] रंग किय ॥

---

१ हे प्रभु २ जयसिंह ॥ ९७ ॥ ३ फैलाव ४ बादशाह के मंत्री राजा (जयसिंह) का ५ सेना, घमंड से, अथवा सेना के घमंड से ६ दुःख से धर्षणा की जावे ऐसी ७ समय की गति को खड्ग से कीली ॥ ९८ ॥ ८ वीर ॥ ९९ ॥ ९ पुत्र १० जयसिंह को बुलाने वाला जानकर ११ उस दिन १२ सेना का अपार भार देखकर १३ शेषनाग फणों से फूत्कार करने लगा ॥ १०० ॥ १४ आकाश में गरद फैलकर १५ शनैश्चर के १६ पिता (सूर्य) का रंग १७ पीला करदिया

मरद मंत्रि उम्माहिय दरद भूदार दह्न दिय ॥
पंच अयुत५००००पक्खरिय सहँस१०००दंतावलँ साज्जिय॥
दल पदाति दक्खिनिय गरबि दुवलक्ख२०००००गराज्जिय॥
बहुबिधि निसाँन भेरिय बजिय बंल नकीब हंकत बढिय ॥
पेसवा प्रुथितँ बिप्र सु बलिय चामर बेर बित्तर चढिय॥१०१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपत्नीकूर्मीसंमतिमहाराष्ट्रपत्तपव्ययुतमुद्रकीलितसालमसिंहतदात्मजप्रतापसिंहबुन्दीहरणं १ कूर्मीमल्लाररक्षाबन्धन २प्रेपितायुतद्वयसैन्यजयसिंहस्य युद्धमन्तरापि पुनर्दलेलसिंहबुन्द्यधिकारप्रापणं ३ कोटामहारावदुर्जनशल्यस्य राणाजगत्सिंहजामिपाणिग्रहणं ४ तीर्थयात्राप्रस्थितसिताराधीशसाहूमन्त्रिबाजेरायजनन्या मार्गागतोदयपुरजयपुरसत्कारस्वीकरणं ५महाराणासुभटदौलतसिंहस्य माहाराष्ट्रकीलितहड्डसालमसिंहमोचन ६ जयपुराधीशजयसिंहस्य खारीनदीसमीपराजस्थानान्तर्वर्तिराजपुत्रे-

१ बीर साहू का मंत्री उत्साहित हुआ २ बाराह की दाढ में पीड़ा की ३ पाखरों वाले सवार ४ हाथी ५ पैदल सेना ६ गर्व करके ७ नगारे ८ नौबत ९ सेना को १० पेसवा पदवी वाला प्रसिद्ध ब्राह्मण ११ श्रेष्ठ चमरों को १२ बिस्तर (फैला) कर चढा ॥ १०१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, सालमसिंह के बडे पुत्र प्रतापसिंह का बुधसिंह की राणी कछवाही से मिल कर मरहटों को छ लाख रुपये देकर सालमसिंह को कैद करवा कर बुन्दी छुडाना १ राणी कछवाही का मल्लार के राखी बांधना २ जयसिंह का बीस हजार सेना भेज कर बिना ही युद्ध किये बुन्दी पर दलेलसिंह का पीछा अधिकार कराना ३ राणा जगत्सिंह का कोटा के महाराव दुर्जनशाल के साथ अपनी बहिन का विवाह करना ४ सितारा के अधीश साहू के मंत्री बाजेराव पेसवा की माता का तीर्थयात्रा जाते समय उदयपुर और जयपुर में अत्यन्त आदर सत्कार होना५महाराणाके उमराव दौलतसिंह का हाडा सालमसिंह को मरहटों की कैद से छुडाना ६ राजा जयसिंह का राजपूताना के राजाओं को मेवाड़ में खारी नदी के समीप एकत्र करना ७

कलीकरण ७ उदयपुराधीशमृतेराजस्थानाशेषक्ष्मापालसहितदिल्लीसे नापतिखानदोरांरव्यस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिग्गमन ८ महाराष्ट्रगात्रिरणापराजितससैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्लीन्द्रान्महाराष्ट्रमालवदेशदापन १० महाराणाजगत्सिंहस्य शाहपुरेशवेष्टनलक्षमुद्रादण्डादान ११ आहूतजयसिंहमहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थान वर्णनं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटक बिमद्दर कुंच करि, आयउ लौनाघाड़ ॥
सु सब रान जगतेस सुनि, लग्गि बधावन लाड ॥ १ ॥
जब काका निज जनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥
बहुरि सलूमरि नाह बियर, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥
मिलन गये श्रीमंतसौं, तब वह सम्मुह आय ॥
मुख्य रान भट मन्निकैं, बिधि लिय अग्ग बढाय ॥ ३ ॥
प्रथम लिखिय श्रीमंत प्रति, जैपुर नृप बरजोर ॥
सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम ओर ॥ ४ ॥
यातैं उप्परि पेसवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

---

७ उदयपुर के महाराणा के बिना राजपूताना के सब राजाओं को साथ लेकर दिल्ली के सेनापति खानदौरां का मरहठों पर दक्षिण में जाना ८ मरहठों के रतिवाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदौरां का भागना ९ खानदौरां और राजा जयसिंह का बादशाह से मरहठों को मालवा देश दिलाना १० महाराणा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना ११ जयसिंह के बुलाने से मरहठों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्णन का चालीसवां ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठहत्तर २७८ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (संग्रामसिंह) का २ तखतसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों को ॥ ३ ॥ ४ जयपुर के बलवान् राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुरत्त ॥ ५ ॥
आसिरबादहि अग्ग यह, लिखतो गुमर लसंत ॥
पै नमिकैं यहँ रान प्रति, किय सलाम श्रियमंत॥ ।६॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु बिरंचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसौं,
बाजेरायहिं लाय बधाय बिनोदसौं ॥
आहड़ ग्राम समीप सिबिर दलको कर्‌यो,
हो जँहँ चंपकबाग अप्प तँहँ उत्तर्‌यो ॥ ७ ॥
पुनि पठई महिमानि रान बहु रीतिसौं,
रुप्यय पंचहजार५०००बसन गज बीति सौं ॥
दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,
बिप्रहु गो तब बेग नेह बिथर्‌यो नयो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

तबहु द्वार प्रछन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥
दूजी गद्दिय बिप्र हित, बिछवाई सु बिधान ॥ ९ ॥
तिहिं उठवाय रु पेसवा, बिनु गद्दिय गय बैठि ॥
रच्यो अदब यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥
गद्दिय पर रानाँ रह्यो, सिर दुव२ चमर ढराय ॥
चमर इक१हुव बिप्र सिर, बलि हित बत्त बढाय ॥ ११ ॥
रान कहिय नमनीय तुम, तब द्विज कहिय सचाव ॥
मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥
रान तबहि जर जीन जुत हय चउ४हत्थिय एक१ ॥

१घमंड से शोभित होकर२बड़ा होवै सो आशीर्वाद देता है और छोटा होवै सो सलाम करता है तथा लिखता है॥६॥३करके४डेरा (पड़ाव) ५ चंपाबाग ॥ ७ ॥ ६ वस्त्र ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (डोढी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ९ नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

कलीकरण ७ उदयपुराधीशमृतेराजस्थानाशेषक्ष्मापालसहितदिल्लीसेनापतिखानदोराख्यस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिग्गमन ८ महाराष्ट्रशात्रिरणापराजितससैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्लीन्द्रान्महाराष्ट्रमालवदेशदापन १० महाराणाजगत्सिंहस्य शाहपुरेशवेष्टनलक्षमुद्रादण्डादान ११ आहूतजयसिंहमहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थानवर्णनं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटक विपद्दर कुंच करि, आयउ लोंनावाड़ ॥
सु सब रान जगतेस सुनि, लग्गि बधावन लाड ॥ १ ॥
जब काका निज जनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥
बहुरि सलूमरि नाह बियर, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥
मिलन गये श्रीमंतसौं, तब वह सम्मुह आय ॥
मुख्य रान भट मन्त्रिकैं, बिंपरलिय अग्ग बढाय ॥ ३ ॥
प्रथम लिखिय श्रीमंत प्रति, जैपुर नृप बरजोर ॥
सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम ओर ॥ ४ ॥
यातैं उप्परि पेसवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

उदयपुर के महाराणा के बिना राजपूताना के सब राजाओं को साथ लेकर दिल्ली के सेनापति खानदोरां का मरहटों पर दक्षिण में जाना ८ मरहटों के रतिवाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदोरां का भागना ९ खानदोरां और राजा जयसिंह का बादशाह से मरहटों को मालवा देश दिलाना १० महाराणा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना ११ जयसिंह के बुलाने से मरहठों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्णन का चालीसवां ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठहत्तर २७८ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (संग्रामसिंह) का २ तख्तसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों को ॥ ३ । ४ जयपुर के बलवान् राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुरत्त ॥ ५ ॥
आसिरबादहि अग्ग यह, लिखतो गुमर लसंत ॥
पै नमिकैं यहँ रान प्रति, किय सलाम श्रियमंत॥ ।६॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु बिरंचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसौं,
बाजरायहिं लाय बधाय बिनोदसौं ॥
आहड़ ग्राम समीप सिबिर दलको करयो,
हो जँहँ चंपकबागं अप्प तँहँ उत्तरयो ॥ ७ ॥
पुनि पठई महिमानि रान बहु रीतिसौं,
रुप्यय पंचहजार५०००वसन गज बीति सौं ॥
दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,
बिप्रहु गो तब बेग नेह बिथरयो नयो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

तबहु द्वार प्रच्छन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥
दूजी गद्दिय बिप्र हित, बिछवाई सु बिधान ॥ ९ ॥
तिहिं उठवाय रु पेसवा, बिनु गद्दिय गय बैठि ॥
रच्यो अदब यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥
गद्दिय पर रानाँ रह्यो, सिर दुव२ चमर ढराय ॥
चमर इक्क१हुव बिप्र सिर, बलि हित बत्त बढाय ॥ ११ ॥
रान कहिय नमनीय तुम, तब द्विज कहिय सचाव ॥
मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥
रान तबहि जर जीन जुत हय चउ४हत्थिय एक१ ॥

१घमंड से शोभित होकर२बड़ा होवै सो आशीर्वाद देता है और छोटा होय सो सलाम करता है तथा लिखता है॥६॥३करके४डेरा (पड़ाव) ५ चंपाबाग ॥ ७ ॥ ६ वस्त्र ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (डोढी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ९ नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

नग जराय भूखन नवल[1], बिप्रहिँ[2] दिय सबिबेक ॥ १३ ॥
सड्ढ लक्ख१५०००० इक१ साल प्रति, स्वीकरि दक्खिन दम्म[3]॥
दियउ परग्गन बनहड़ा, तिनमैं लिखि हित कम्म[4] ॥ १४ ॥
ताल मध्य इक रानकैं, जगमंदिर प्रासाद[6] ॥
ताहि दिखावनकी कही, बाँसर दूजे बाँद ॥ १५ ॥
रान पिसुन बनि कोउ तब, बाजेरावहिँ अक्खि ॥
लै जावत मारन तुमहिँ, रान कपट हिय रक्खि ॥ १६ ॥
दक्खिन मंत्रियँ[10] एह द्विज, हो तथाँपि[11] सुनि एह ॥
मूरख सच्ची मन्निकैं, किय रोखारुन[12] देह ॥ १७ ॥
पठई यौं कहि रान प्रति, मैं छलघात मरौं न ॥
कोलिहि[13] मंड सज्जहु कटक, करहिँ साम अब कौन ।१८।

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनत रान हुव सोक लीन, पठये पुनि दुव२ भट[14] वे प्रबीन॥
तखतेस रु केसरिसिंह तत्थ, जाय रु द्विज बंदियँ[15] जोरि हत्थ ॥१९॥
कहि रान अधिक सनमान कीन, अप्पन न होहु[16] अमरख अधीन ॥
किहिँ मूढ कहिय यह द्रोह कत्थ[17],सोकहहु अप्प सब बिधि समत्थ[18]२०
जो कहहु नाँहिँ तजि देहु रोस, नाहक न देहु अभिसाप[19] दोस ॥
श्रियमंत तदपि भो नहिँ प्रसन्न, तब सत्त लक्ख७००००दिय दम्म[20]
छन्न ॥२१॥
संग्रामरानकी मात अग्गै[21], चहुवानि मरी निज भुग्गि भँग्ग[22] ॥

१नवीन२ब्राह्मण बाजेराव पेसवा को विचार पूर्वक दिये॥३१॥३डेढ लाख रुपये ४ हित के कार्य के लिये॥१४॥५पीछोला नामक तालाव में६महल७दूसरे दिन ८ वचन ॥ १५ ॥ पहले ९ राणा का चुगली करने वाला बनकर ॥ १६ ॥ १० यह ब्राह्मण दक्षिण का सलाहकार था११तोभी १२ क्रोध में लाल शरीर किया ॥ १७ ॥१३युद्ध रच कर ॥ १८ ॥१४ऊपर के कहेहुए१५ब्राह्मण को नमस्कार किया ॥ १९ ॥ १६ क्रोध के १७ वचन१८समर्थ ॥ २० ॥१९ मिथ्या दोष २० रुपये ॥ २१ ॥ २१ आगे २२ भाग (पंट)

तब हुव तिलक्ख३०००००मित*कनक दान, सो रान दयो बिप्रहिं सयान ॥ २२ ॥
दल कुंच कियउ लै बिप्र दाम, श्रियद्वार आय किय प्रभु प्रनाम ॥
सतपंच५००दम्म किय भेट तत्थ, बल्लभ कुल वंदिय पुनि समत्थ२३
गोस्वामि नाम गोवर्द्धनेस, बिरचिय तिन अग्गहु †नति बिसेस ॥
तिनकौंहु‡दम्म सतपंच५००अप्पि, मरहट्ठ चलिय दलकुंच मप्पि२४
पुनि होय जाजपुर नगरपास, बल कियउ केकड़िय द्रंग² बास ॥
उततैं सुनि कूरम भूप आय, चतुरंग चक्क दुव्वर चलाय ॥ २५ ॥
धमि नैर कृष्णगढ निकट धाम, भिंटिय दुव २ भंभोलाव ग्राम ॥
पठई तब कूरम राह अक्खि, हम मिलहि रानघर रीति रक्खि ।२६।
पठई कहि बिप्रहु नहि प्रमान, है रान सुपहु साहू समान ॥
जे कबहु मिच्छ अनुचर बनैंन, अनुचर सदाहि तुम लोभ ऐंनं ॥२७॥
जिहिं हेतु मोहुकौं अधिक जानि, पै मिलहिं अज्ज समता प्रमानि ॥
तुम जानत गादिय दै उठाय, पै बैठहिं दुव२ इक१पीठपाय ॥२८॥
हम तत्थहु दक्खिन ओर होय, दै बाम तुमहिं इम मिलहिं दोय ॥
जयसिंहहु यह सुनि प्रबलजानि, इक आसन स्वीकरि मिलिय आनि
चढि उभय२ चक्क हुव सज्ज आय, तिन बीच इक्क पटगेह तनाय ॥
तामाँहिं मिले दुव२ गजन छोरि, बैठे इक१ आसन जाँनु जोरि ३०
द्विज किय तहँ हुक्काजंत्र पान, लगि धुम्म कुम्म मनबिच रिसान ॥

---

* सुवर्ण दान ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ † नम्रता ‡ रुपये ॥ २४ ॥ १ सेना का २ नगर दुःख से धर्षणा की जावै ऐसी ३ चार प्रकार (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल) की सेना ॥२५॥ २६ ॥ ४ यह तुम्हारा कहना प्रमाण नहीं है ५ श्रेष्ठ राजा ६ सितारा के पति साहू के समान है ७ यवनों के ८ लोभ के घर ॥२७॥ ९ इस कारण मुझ को वडा मानो परंतु आज १० बराबर के मान कर मिलेंगे ११ एक आसन (गद्दी) पर ॥ २८ ॥ १२ तहां हम दक्षिनी ओर रहकर १३ एक गद्दी पर बैठना स्वीकार करके ॥ २९ ॥ १४ मिलाप के स्थान पर दोनों सेना सज्ज हो कर रहीं १५ डेरा १६ हाथियों से उतर कर १७ घुटने मिला कर॥३०॥ १८ धूम

पुनि सुभट मुख्य निज निज बुलाय, बैठारि मिसल*आयत बनाय ३१
दक्खिन भट हाजरि सबहि तत्थ, इक्क१ न मलार आयउ समत्थ२॥
संधा३ जिहिँ बुंदिय लैन लिन्न, द्विज बाजेरावहु बचन दिन्न ॥३२॥
श्रिपमंत यहाँ मिलि पलटि पोन, कछवाह बुंदि छोरहु कह्यो न ॥
पोन१ ह्योन २अन्त्यानुप्रासः १ ॥
सालम सुत संजुत आसु उट्ठि, इहिँ कारन हुलकर चलिय रुट्ठि३३
श्रिपमंत कुम्म इम मिलि सुभाय, अब निज निज डेरन उभय आय
यँहँ सुनिय बिप्र रुट्ठिय मलार, गय तबहि निहोरन प्रकटि प्यार३४
अक्खिय तब हुलकर अत्थ आय, तुम बुंदिय लैन न किय उपाय
करि सपथ लैन पुनि देहु बैन, तुम संग न तो अब हम चलैँ ना३५।
नृप साहु सपथ तब बिप्र बुल्लि, लैहौं अब बुंदिय तेग तुल्लि ॥
बिचमैं कछु बासर जान देहु, दोउन मनाय लिय अक्खि एहु ३६
कूरम रु बिप्र पुनि मिलन कीन, लहि कूर्म हार्द रचि मंत्र लीन॥
उततैं दल लक्खन तुम बनाय, आवहु इत जैपुर है सहाय ॥३७॥
अब हौ न लरन अवकास अच्छ, दक्खिन अमात्य तुम नीति दच्छ
मिलि बहुरि देहिँ मिच्छन मिटाय, जँव करि दल सज्जहु गेह जाय
कूरम गय जैपुर अक्खि एह, श्रिपमंत मुरयो दक्खिन सनेह ॥
दुव अंक सत्त इक १७९२ सक दुरंत, यह भयउ मास फग्गुन
उदंत ॥ ३९ ॥
दरकुंच तदनु करि द्विज पयान, बेध्रम ढिग आय रु दिय मिलान

(धूंआं) लगने से जयसिंह मन में रिसाया * बड़ा ॥ ३१ ॥ १ तहां २ समर्थ ३ प्रतिज्ञा ॥ ३२ ॥ ४ शीघ्र उठकर ५ रोष (क्रोध) करके ॥ ३३ ॥ ६ ब्राह्मण (बाजेराव) ने ॥ ३४ ॥ ७ यहां आकर फिर बुंदी लेने का ८ सौगन ॥ ३५ ॥ राजा साहू का (सौगन) १० दिन ॥ ३६ ॥ ११ मिलाप १२ जयसिंह का अभिप्राय ॥ ३७ ॥ १३ अच्छा १४ हे दक्षिण के मंत्री १५ दक्ष (चतुर) १६ शीघ्रता करके सेना सजो ॥ ३८ ॥ १७ दूर है अन्त जिसका; अथवा बुरा है अन्त जिसका १८ वृत्तांत ॥ ३९ ॥ १९ जिस पीछे २० मुकाम

यँहँ भट प्रताप हड्ड सु अभंग, श्रियमंत चेरहु[1] लै इक्क संग ॥४०॥
बुन्दीस निकट गय नमिय वीर, सब यह उदंत[2] जंपिय सधीर ॥
कथ पेसवाहु यह तव कहाय, तुमतैं न जुदे हम बुंदिराय ॥ ४१ ॥
अबतो हम आये लोभ ठानि, लैहैं पुनि बुंदिय लेहु मानि ॥
बुंदीस मिलन हित कछु कहाय, टारी सु बिप्र इम दल[3] लिखाय४२
तदनंतर[4] दक्खिन द्विज प्रपत्त[5], गो हड्ड प्रतापहु संग तत्त[6] ॥
इत दिल्लिय कूरम कुजस उट्ठि, श्रियमंत मिलन सुनि साह रुट्ठि ४३
तब साँह निजामनमुल्क बुल्लि, आयउ नबाब सुनि तेग तुल्लि ॥
हो यह कलीजखाँ नाँम बीर, गाजुद्दीखाँ सुत रन गँभीर ॥ ४४ ॥
वह भट द्रुत[9] दिल्लियनैर आय, बलि[10] साह हिंतु सिजदा बिधाय[11] ॥
जवनेसहिं कूरम कुपित जानि, पुनि लिखिय पत्र दक्खिनप्रमानि४५
अवसर अब आयउ भुम्मि लैन, श्रियमंत बेग आवहु ससैन[12] ॥
यह सुनत बज्जि जिततित निसान[13], उमडिय अनीक[14] सागर उफान४६
फहराय झंड हत्थिन फरक्कि, भहराय भज्जि भीरुक[15] भरक्कि ॥
सज्जत भट बाहुल[16] कवच टोप, अतिकाय चरक्खन[17] चढत तोप ॥४७॥
खुरसान धार आयुध खनंकि, पावक्क प्रचंड झारत झनंकि ॥
दक्खिन अनीक[19] गज्जिय दुरंत[20], इहिं रीति वीर सज्जिय अनंत४८
संबत त्रि अंक हय इक्क१७९३मान,इसमास[21] बिजयदसमी१०उफान
संक्रमिय[22] सितारधीस सैन, श्रियमंत मुख्य लगि भुम्मि लैन॥४९॥
अतिकाय वाजि फाँदत अकास, मिटिजात दुग्ग[23] पद्धर मँवास[24] ॥

१ श्रीमंत के हलकारे को ॥ ४० ॥ २ वृत्तान्त कहा ॥ ४१ ॥ ३ पत्र ॥ ४२ ॥ ४ जिस पीछे ५ गया ६ तहां ॥ ४३ ॥ ७ बादशाह ने निजामुल्मुल्क को (यह खिताब है. जिसका मतलब है मुल्क का इन्तजाम करने वाला) बुलाया ८ युद्ध में गंभीर ॥ ४४ ॥ ९ शीघ्र १० सलाम ११ करके ॥ ४५ ॥ १२ सेना सहित १३ नगारे १४ सेना ॥ ४६ ॥ १५ कायर १६ दस्ताने १७ घडी तोपें चरखों पर चढीं ॥ ४७ ॥ १८ अग्नि १९ सेना २० दूर है अन्त जिसका ऐसी ॥ ४८ ॥ २१ आश्विन मास २२ चली ॥४९॥ २३ दुर्ग २४ लुटेरों के रहने के स्थान सीधे होगये

रवि लिपउ ढंकि खुरतार खेह, मंडिय कि भद्द आसार मेह ।५०।
किलकिलत[2] संग कालिय कराल, खिलखिलत[3] मलंगत खेत्रपाल॥
जुगिगनि जमाति जय जयति जंपि[4], झपटत झुकंत बेताल झंपि।५१।
बकबकत[5] संग बावन ५२ प्रमत्त, सकसकत[6] गिद्ध सिर होत छत्त॥
डमरूक डक्क डाँहल डमंकि, ठहनाय हूर नूपुर ठमंकि ॥ ५२ ॥
सजि चलिय संग भैरव त्रिसूल, फरकिय सिचान हिय असनं[10] फूल॥
आतापि[11] ओघ ढंकत अकास, फेरंडे[12] फलंगत गिलन ग्रास॥ ५३ ॥
इम चलिय संग पलचरं[13] अनेक, कटकट बिरॉव प्रेतन कितेक ॥
लगि अतल बितल सुतलन लचक्क, मुरकत बराह दंतुलि मचक्क ५४
ग्रावनं[15] खुरतालन झरत आगि, जिहिं रवं[16] समाधि प्रमथेस[17] जग्गि ॥
अकबकत सेतु[18] सागर उमंगि, भुल्लत दिसान नर मद कि [19]भंगि ।५५।
तररक्कि भुम्मि छेकत तुंखार[20], दररक्कि देत पॆब्बय[21] दरार ॥
रननंकि रॉव[22] कंकटं[23] करीन, छननंकि होत जल नंदन[24] छीन ।५६।
उडिजात उँपल[25] चूरन अनंत, गडिजात तिमिर पूरन दिगंत ॥

---

१ जलधारा ॥ ५० ॥ २ कोलाहल करके ३ हंसताहुआ ४ 'जय हो, जय हो, यह कहकर ॥ ५१ ॥ ५ बहुत बोलते हुए (बकवाद करते हुए) बावन वीर (जहां जहां बावन की संख्या आवै तहां तहां बावन वीर जानना चाहिये) ६ पंखों के शब्द का अनुकरण (नकल) है ७ बाघ विशेष ८ अप्सराओं के ९ पायजेब (पदभूषण) बजे ॥ ५२ ॥ १० भोजन के कारण हृदय फूलकर सिचाण पक्षी उडे ११ चील्हों के समूह से आकाश ढकगया और निवाले गिटने को १२ गीदड़ कूदने लगे ॥ ५३ ॥ इसप्रकार १३ मांस खानेवाले अनेक पशु पक्षी साथ चले और कितने ही प्रेतों के दंतों का कटकट १४ शब्द हुआ ॥ ५४ ॥ १५ पत्थरों से और घोड़ों की खुरतालों से अग्नि झड़ने लगी जिसके १६ शब्द से १७ शिव की समाधि छूट गई. घबरा कर समुद्र १८ मर्यादा भूलकर ऐसा बढा जैसे १९ भांग के नशे में मनुष्य दिशा भूलजाता है ॥ ५५ ॥ तरारें ले कर २० घोड़े भूमि को फांदते हैं और २१ पर्वत फटकर दरारें (तेड़ें) देते हैं, रणंकार करके २३ कवच की कड़ियों का २२ शब्द होता है २४ बड़े जलाशयों का पानी क्षीण होता है ॥ ५६ ॥ २५ अनेक पत्थर चूर्ण होकर उडजाते हैं

इभराज अंदु[२] अँचत अभंग, रज्जू[३] कि खेत्र[४]फल मपन रंग ॥ ५७ ॥
वहिचलिय धातु अद्रिन[६] अनेक, सलसलिय[९] पंथ गज दाँन सेंक ॥
इम हल्लिय सेन दक्खिन अनंत, दिल्लीस मुलक दब्बत दुरंत ।५८।
सुनि साह सेन सज्जिय सिताब, बल मुख्य उभय रक्खिय नबाब
इक खांनकमरदी निजवजीर, बलि संग निजामनमुल्क बीर ।५९।
दुवर् चल्लिय सेन हरवल्ल हंकि, घनघोर घंट पक्खर घमंकि ॥
कुलटा कनीनि[१२] विधि तरल बाजि, उद्धत मलंगि आगामि आजि६०
मनके रु पवनके जे सुमित्र, चलत रस[१४] धाव[१५] मंडन विचित्र ॥
खंधन विनम्र[१६] चट्टत खलीन[१७], मखतूल[१८] वग्ग जर[१९] जिलह लीन ।६१।
विरचत निकम्म नमि जरबंध, खेह जात झंपि तउ सदस[२२] खंध ॥
दल[२३] मध्य उलटपलटन दिखात, तिमि[२४] मच्छ मनहु अर्नव[२५] तिरात ६२
भुवको[२६] ति प्रबल बत्थन[२७] भरंत, कामिनि गर लग्गत जानि कंत[२९]॥
सादिन[३०] सुख साधित सहज सब्व[३१], फिरिजात छत्रकी छाँह मब्व६३
असवार चहत जिहिँ रूप द्रव्य[३२], नव्य[३३] रु दिखात सुहि रूप नव्य ॥

और अंधेरे से पूर्ण होकर दिशा दिगा गडजाती (अदृश्य होजाती) है १ बडे हाथी नहीं तूटनेवाले २ जंजीरों को खैंचते हैं सो मानों ४ खेतों को मापने को ३ डोरी (जरीब) खैंचते हैं ॥ ५७ ॥ ६ अनेक पर्वतों से ७ हाथियों के मद के ८ सींचने से मार्ग ९ गीले होगये ॥ ५८ ॥ ९ सेना में १० कमरदीखां ११ फिर ॥ ५९ ॥ कुलटा के १२ नेत्रों की पुतली के समान चपल घोडे १३ आगे आनेवाले युद्ध के अर्थ चलते हैं ॥ ६० ॥ १४ चलने में रस (स्वाद) उत्पन्न करते हैं और १५ दौडने में आश्चर्य करते हैं १६ विशेष झुके कंधों वाले १७ लगामों को चाटते हैं वे घोडे १८ रेसम की बागें और १९ जरी की शोभा में लीन हैं ॥ ६१ ॥ स्वाभाविक झुके हुए कंधों से २० जरबंद को निकम्मा करते हैं २१ आकाश में उडकर जाते हैं तो भी कंधा २२ वैसा का वैसा ही झुका हुआ रहता है वे घोडे २३ सेना में उलट पलट दिखाते हैं सो मानों २५ समुद्र में २४ बडे मच्छ तिरते हैं ॥ ६२ ॥ २६ वे घोडे भूमि को अपनी २७ बाथों (भुजाओं) में भरते हैं सो मानों २९ पति २८ स्त्री के गले लगता है ३१ सहज साधन से ३० सवारों के सुख को साधते हैं और छत्र की छाया में फिर जाते हैं ॥ ६३ ॥ सवार जिस ३२ भव्य; अथवा विशेष नम्र रूप को देखना चाहे वसी ३३ नवीन

रन आजिरें वज्र जिनके रकाव, हरखान पैठाकन मन हिसाव ६४
इम चलिय अव्व थेइन थरक्क, हंकिग अनेक हत्थिन हलक्क ॥
चंचल फाखि पच्छिन करत चोट, जिन अग्ग अंडु इक्खत अगोट ६५
अनि चीनँ पाय गेपत अडोल, लगि वहुरि डाक बढिजात लोल ॥
जंजीर लंब खैंचत सजोर, सिर रचत मोर गुंजार सोर ॥ ६६ ॥
आधोरँन रक्खत बहु विभासि, हंकत तथापि उद्धत हुलासि ॥
इम हलिय साह पृतँना अभंग, दक्खिन दल सम्मुह रचनढंग ॥६७॥
सुनि इनहि आत दक्खिन दलेसँ, हुन वाढिय विगारत साह देस ॥
खटमास बहु आवत बिताय, चक्कँ सु अब दिल्लिय गिर चलाय ।६८।
ग्वालेर लुट्टि बहु अरिन गंजि, अव चलिय अग्ग रसवीर रंजि ॥
मग चुक्कि अग्ग कढिगयउ मिच्छँ, इन आनि लई दिल्लिय रवइच्छ ।६९।
सक चंद अंक सत्रह१७९४सुभाय, अष्टमि८ बलच्छ मधुमास आय
दिल्लीपुर बाहिर पृथुल दौर, अति रुचिर सिलपविधि ओरओर ७०

थित इक्क कालिया देवि थान, मेला तँहँ तद्दिन हो महान ॥
चढि रहिय तत्थ लक्खन बनिज्ज, जिन्ह लखैत होत धनदहिँ अचिज्ज
दक्खिन दल आय रु खगन खंडि, मेला वह लुट्टिय जुलम मंडि ॥
कढि कढि तब विब्भल बनिजकार, तजि दव्य भजिग कालिँदि पार
कोटिन धन दिल्लिय कहर कुप्पि, लुट्टिय मरहट्ठन कानि लुप्पि ॥
वहु जलज हीर मानिक बिथार, प्रतिमुल्ल लाल मरकंत अपार ७३
इम महुर हून रुप्पय अनंत, भूखन जराय कुंडल सुभंत ॥
कौटीर तिलक आपीड़ केक, अरु तौडपत्र नूपुर अनेक ॥ ७४ ॥
सिरपेच हार केयूर स्वच्छ, ऊर्मिक ग्रैवाप कटिसूत्र अच्छ ॥
वहु मारि हट्ट लुट्टिय बिजाज, सन सूत्रमय रु रांकव समाज ।७५।
कौसेय पग्घ साटिन कलाप, नीसार नव्य थुरमा अमाप ॥
अत्तार विपनि लुट्टिय अनेक, करटी रु बीति पुनि भक्ष्य केक ७६
हारव हुव दिल्लिय हंत हंत, दल कढिय तत्थ पुरतैं दुरंत ॥
इत रचत लूट दक्खिन अनीक, श्रियमंत सज्ज चाहत समीक।७७।

१उस दिन बडा मेला था२लाखों व्यापारी, अथवा लाखों का व्यापार बढ रहा था ३ जिनको देखने से ४ कुबेर को भी ५ आश्चर्य होता था ॥ ७१ ॥ ६ व्यापारी ७ यमुना नदी के परले किनारे भाग गये ॥ ॥ ७२ ॥८ जुल्म करनेवाला क्रोध करके ९ बहुत मोती हीरे और माणिकों का विस्तार, अत्यन्त मूल्य वाले लाल १० पन्ना ॥ ७३ ॥ ११ सुवर्ण की मोहरें और अनंत रुपये, जडाव के भूषण १२श्रेष्ठ रीति के कर्ण भूषण१३किरीट (मुकुट) कितने ही शिवातिलक और १४चूडामणि (मस्तक भूषण विशेष)१५कर्णफूल (स्त्रियों के कानों का भूषण) अनेक नूपुर (चरणभूषणविशेष) ॥ ७४ ॥१६ भुजबंध १७ अंगूठियां १९ कटिमेखला अर्थात् करधनी (कणगाति) १८ प्राप्त की (लूटी) फिर बजाजों की २० दुकानें लूटीं जिनमें सण के, सूत के और२१ऊन वस्त्रों के समूह थे ॥ ७५ ॥ २२ रेसमी पगडियें और साडियों के २३ समूह २४ ठंढ को मिटानेवाले २५ नवीन अपार थुरमे (दुशाले) अनेक अत्तारों के २६ बजार लूटे फिर २७ हाथी २८ घोड़े और कितने ही २९ खाने के पदार्थ लूटे ॥ ७६ ॥ दिल्ली में खेदकारक ३० हाहाकार शब्द हुआ तहां पुरसे ३२ दूर है अन्त जिसका ऐसी ३१ सेना निकली, इधर दक्षिण की ३३ सेना तो लूट कर रही थी और श्रीमन्त (दक्षिण का वजीर) सज्जित होकर ३४ युद्ध चाहता था ॥ ७७ ॥

यहँ सुनिय कमरदीखाँ वजीर, बोलि कहिय निजामनमुल्क बीर॥
अप्पन मग चुक्कि रु अग्ग आय, दिल्ली खल पत्ते लौंन दाय ७८
यह अक्खि सुर लै दल अभंग, पहुँचे अंधारहिं जिम पतंग ॥
उततैं दल पत्तनसौंहु आय, इततैं नबाब दुवरहय उडाय ॥ ७९ ॥
मरहट्ठ लये लुट्टत प्रमत्त, प्रतिमल्ल मिच्छ दुहुँ ओर पत्त ॥
मचि समर घोर समसेर मार, बजि निनंद बंब त्रंबक बिथार।८०।
धर धुकत धुज्जिय धावन धसक्कि, कुंडलि कपाल दरकिय कसक्कि ॥
कटि परत भौंह रद अधर कंध, किलकिलत मुंड नच्चत कबंध८१
डमरूक मैंड डाहल डमंकि, घहरात ढोल पक्खर घमंकि ॥
बबकारि करत बावन५२बिलास, रच्चत जँह जुग्गिनि केलि रास८२
जिततितहि मत्थ उडि परत जत्थ, तुंबा कि तरल अवधूत हत्थ ॥
चढि गगन टोप चमकहिं अनेक, तुटि जँगर जात तननंकि तेक।८३।
सपे गिरत भिन्न बाहुलं सम्रेत, अहि पंच५फन कि कंचुक उपेत ॥
जिरहन बिच कढि दृग फरकि जाँहिं, मानहुँ झख दासन जालि माँहिं
कटि कढि गिरंत कहुँ मुच्छ कंद, रंगे मृगनाभि कि दोजरचंद ॥

१पुनि २दिल्ली में प्राप्त हुए (गये)३दिल्ली को लेने की रीति से॥७८॥जैसे अंधेरे पर ४सूर्य पहुंचे तैसे पहुंचे ५ उधर दिल्ली शहर से भी सेना आई ॥ ७९ ॥ मरहठों को लूट में ६ असावधान (गाफिल) पाये और दोनों ओर से यवन ७शत्रु ८ प्राप्त हुए ९ तरवारों की मार से घोर युद्ध हुआ और नगारे व तासे बजकर १० शब्द का विस्तार हुआ ॥ ८० ॥ ११ घोड़ों आदि की दौड़ से नीची बैठकर भूमि धुजी १२ शेषनाग का मस्तक हटकर फटा १३ विना मस्तक के क्रियावान धड़ नाचते हैं ॥ ८१ ॥ १४ कापालिकों का वाद्य विशेष १५योगिनियें रासक्रीड़ा करती हैं ॥ ८२ ॥१६चपल अवधूत के हाथ से तूंबा गिरै तैसे१७कवचों के ऊपर तणंकार शब्द करके१८तरवारें तूटती हैं ॥ ८३ ॥ २०बाहुत्राण (दस्ताना) सहित१९हाथ कटकर गिरते हैं सो मानों कांचली २१सहित पांच फण के सर्प हैं२२लोहे की जालीवाले टोपों में नेत्र निकस कर फदकने हैं सो मानों२३धीमरों की जाल में से मच्छी जाती है ॥ ८४ ॥ फटी पर टेढी मूछों के २४ समूह कट कर गिरते हैं सो मानों २५ कस्तूरी में रंगेहुए द्वितीया के चन्द्रमा हैं

नागोद[1] कट्टि कहुँ कढत गत्त, मोचातरुतैं[2] जिम गर्भ पत्त ॥ ८५ ॥
कंकट[3] बिदारि प्रबिसत कटार, बिल बीच पन्नग कि मच्छ बार[4] ॥
खंजर कढि पंजर[5] पार जात, सोनित[6] सँन्यो[7] सु अति छबि सुहात ८६
मानहुँ गवाक्ष[8] रंजादिन[9] दिखान, कर पटु[10] क्रिया कि जावक चुवान[11]
दिपि गुरज मत्थ पारत दरार, कीर कि तरबूजन मुट्ठि मार ॥ ८७ ॥
चलि[12] असिन होत गज कुंभ चीर, जगदीस भत्त[13] जुत्त कि करीर[14] ॥
सोनित तिरात धमनिनि[15] समूह, जल अरुन[16] जानि अलगर्द[17] जूह ८८
सरघा[18] सम छुट्टत बिसिख ब्रात[19], मधु जाल छत्त मत्थन[20] बनात ॥
खिचिजात सरासन[21] करन कानि, जमराज लपन[22] जमुहात[23] जानि ८९
मिलिजात कोटि लस्तकैं[24] मचक्कि, सुकुमार नारि लंक कि लचक्कि ॥
तुरयौंधीर[25] तुट्टि उड्डत अमाप, केकीनके[26] कि चंदक कलाप ॥ ९० ॥

---

१ पेट का कवच (पेटी) कटकर शरीर निकला है सो मानों २ केळ के वृक्ष से भीतर का पत्ता निकलता है ॥ ८२ ॥ ३ कवच फाड़ कर कटार प्रवेश करते हैं सो मानों बिल में सर्प घुसता है किंवा ४ पानी में मच्छ घुसता है ६ रुधिर से ७ भीगाहुआ खंजर (छुरीविशेष) ५ अस्थिपंजर (धड़) के पार जाता है सो ऐसी अत्यन्त शोभा देता है ॥ ८६ ॥ जैसे कि १० क्रियाचतुर नायिका अपना ९ रजस्वला होना दिखाने के लिये जावक (लाल रंग विशेष) से ११ टपकता हुआ हाथ ८ झरोखे से दिखाती है अर्थात् अपने जार को जावक का टपकता हुआ हाथ दिखाकर व्यंग्य से अपना रजस्वला होने का संकेत करके उस जार के आने का निषेध करती (रोकती) है ॥ ८७ ॥ १२ चपल तरवारों से हाथियों के कुंभस्थलों की चीरें हो-ती हैं सो मानों जगदीश के १३ भात सहित १४ कलश की चीरें होती हैं १५ नाड़ियों (नसों) का समूह रक्त में तिरता है सो मानों १६ लाल पानी में १७ पानी के सर्पों का समूह तिरता है ॥ ८८ ॥ १८ मधुमक्खियों के समान तीरों के १९ समूह छूटते हैं सो मानों २० मस्तकों को मुचाल के छाते बनाते हैं २१ धनुष कानों पर्यन्त खिंचता है सो मानों यमराज २२ मुख से २३ जंभाई (उबासी) लेता है ॥ ८९ ॥ धनुष की २४ मूठ मचक कर दोनों गोशे (नोकें) मिलजाती हैं सो मानों सुकुमार स्त्री की कमर लचकती है २५ आधा टूटकर अमाप बाण उड़ते हैं सो मानों कितने ही २६ मयूरों के चंद्रों (चंदवों) के समूह

संधत सर धनु बिच यों सुहात, दड्ढा कि काल आनन दिखात ॥
खग झरत फूल धारन खनंकि, तुटिपरत चाप चिल्लन तनंकि ९१
ढालनपर पय कटि ठहरि जात, कच्छप पर मंदर सम सुहात ॥
छलिजात रुहिर घायन छछकि, छुटिजात प्रान कहुँ लोह छकि ९२
जिन बदन इक्कनारिन उछिट्ट, चुंबत शृगाल तिन उदित इट्ठ ॥
मनि कनक मंच निंदक अमान, ते सूर धूर सज्जां सयान ॥ ९३ ॥
बहु बीर बैठि अच्छरि बिमान, तांडव उपेत सुनि गान तान ॥
चित मुदित डारि गलबाँह चाहि, स्व कबंध लरत पिक्खत सिराहि ९४
हिय तिरत अंत्र जुत निकसि हाल, मानहुँ सनाल लोहित मृनाल
उर गिद्ध बपा हित धसत आय, बैठे गृही कि बलभी बनाय ॥९५॥
भट गिरत पाय अटकत रकाब, घुम्मत घने कि उद्धत सराव ॥
तुटिजात तंग प्रंजरत पलान, कटि परत बाँजि गल प्रोथ कान ।९६।
कढिजात कुंत पक्खर बिदारि, बढिजात रुहिर जिमि जंत्र बारि ॥

उडते हैं ॥ ९० ॥ धनुष के बीच में संधान किया हुआ १ बाण ऐसी शोभा देता है मानों यमराज के २ मुख में दाढ दीखती है, तरवारों की धारों पर धारें खणंक कर अग्नि कण उडते हैं ३ प्रत्यंचा तणंक कर धनुष तूटते हैं ॥ ९१ ॥ कितने ही चरण कट कर ढालों के ऊपर ठहर जाते हैं सो कमठपर ४ मंदराचल के समान शोभा देते हैं ५ रुधिर ॥ ९२ ॥ जिनके ६ मुख ७ एक स्त्री के ८ उच्छिष्ट थे उनके मुख ९ भाग्य उदय होने से गीदड़ चाटते हैं "यह इष्ट उदय होना शृगाल का विशेषण है" मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के मंचों (पलंगों) की निन्दा करनेवाले थे वे वीर मान रहित १० धूल की शय्या पर सोते हैं॥९३॥ ११नृत्य सहित १२प्रसन्न चित्त से १३अपने धड़ को लड़ता हुआ देख कर प्रशंसा करते हैं ॥९४॥ तुरत का निकला हुआ हृदय आंत सहित गिरता है सो मानों नाल सहित १४लाल कमल तिरता है १५चरबी के लिये गीध पेट में घुसते हैं सो मानों गृहस्थी १६सबसे ऊपर का मकान बनाकर बैठा है "बलभीकूटागारे" इति शब्दार्थचिंतामणिः॥९५॥ तिरते हुए वीरों के चरण १७पागड़ों में अटक जाते हैं सो मानों मंदिरों में थंभों के ऊपर १८ श्रावकों (सरावगियों) के देवता ऊंधे झूकते हैं १९ जलते हैं २० घोड़ों के २१ गले २२ फुरणे और कान गिरते हैं ॥९६॥ पाखरों को फोड़कर २३भाले निकल जाते हैं और २४जैसे फूहारे से पानी

कटि असिन केतु उड्डत अकास, मानहुँ मयूर गन भद्द मास ।९७।
इम परत खग्ग बहु भटन अंग, भ्रमत कि पटीरै तरु पर भुजंग ॥
इम मचिय घोर आहवँ अनूप, बहु कटि दक्खिन भट हुव विरूप९८
उड्डि चलिय अग्गि बढि ओर ओर, जमुना जल सुक्किय ताप जोर॥
संकुलिय मच्छ खलभलि सुमार, पन्नग कि आँहिं तुंडिक टिपार९९
यँहँ भयउ देव दिल्लीस ओर, घन कटिय जंग मरहट्ठ घोर ॥
लूटहु समस्त लिन्नी छुराय, दक्खिन बिहाल किय प्रबल दाय १००
श्रियमंत भीत गति मति बिसारि, भज्ज्यो सु क्यौंन बंभन भिखारि
इहिँ भजत भज्यो दक्खिन अनीकै, घनबिकलकट्ठा कहिं पेघ नीक१०१
मूरखन मिच्चु सोध्यो न मैत्थ, बनि कांदिसीक भरि जियन बत्थ ।
उड्डाव ताँव बिव्भल अनेक, खुँचि मरिय भानुजा गलनि केक१०२

॥ दोहा ॥

मनतैं मूढ जुदे नहे, जियन मरन ऋत जानि ॥
सैघन पंक गडि मरिय सब, अँक्कसुता बिच आनि ।१०३।

निकले तैसे रुधिर निकलता है ? तरवारों से उड़कर ध्वजा आकाश में उड़ती है सो मानों भाद्रपद मास में मयूर उड़ते हैं ॥ ९७ ॥ वीरों के शरीरों पर तरवारें ऐसी पड़ती हैं जैसे २ चन्दन के वृक्ष पर सर्प पड़े ३ उपमा रहित युद्ध ॥ ९८ ॥ ४ अग्नि ५ भरगये ७ मानों ट्टिपारों में सर्पों के फण ६ हैं ॥ ९९ ॥ ८ प्रबल रीति से ॥ १०० ॥ ९ भय से युद्ध की गति और बुद्धि को १० भूलकर भागा सो ११ क्यों नहीं भागे १२ भिक्षा मांगने वाला ब्राह्मण था अर्थात् उसका भगना यथार्थ था १३ सेना ॥१०१॥ उन मूर्खों ने यह नहीं सोचा कि मृत्यु तो १४ मस्तक पर है जिससे भगकर कहां जावेंगे परन्तु १५ भयद्रुत होकर भागे (भयभीत होकर; अथवा क्या करूं, कहां जाऊं इसप्रकार घबराकर भागे) और १६ जीने को बाथ (भुजों) में भरा १७ उस भागने में अनेक विव्हल होकर कितने ही १९ जमुना नदी की गलथा में (दल दल में) १८ गड़कर मरगये ॥ १०२ ॥ वे मूर्ख मन से जुदे नहीं थे अर्थात् मन साथ चलने वाले थे और मन का धर्म डरने का है २० मरने जीने को सत्य जानकर (वेदान्त के मत से मरना जीना स्वप्नवत् है) सब २२ जमुना नदी के २१ गहरे कीचड़ में आकर गड़ मरे ॥ १०३ ॥ हे बुद्धिमानो! सुनो, यह

मनोहरम् ॥

सुनौंरे सयानैं त्रिभुवनको तमासो जाहि,
वस्तुतैं बिचारैं ज्ञान ज्वलन प्रचारैं हैं ॥
सिद्धको न साधन कहौं मैं कोन रीति वहै,
कारनन काज ओ दुहूँ १मैं धुर धारैं हैं ॥
वाहि जे नजानैं याहि सत्य करि मानैं यातैं,
झूठे सुख दुक्ख मानि वेद्यकौं बिसारैं हैं ॥
जानैं अनजानैं की परिच्छा पारबेकी जानि,
डारिबेकी ठोर धीर बीर देह डारैं हैं ॥ १०४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम सेनहिं मरवाय भेरकि भज्जिग द्विज कातर ॥
अवसेसैंन सजि संत्थ सुरिग प्रतिमुख भय माछर ॥
तर १ बर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
पिक्खि सिंहकौं स्यार पटकि उच्चार पलायउ ॥
किंखिसौं गब्बँन काज अनखि कोटापर आयउ ॥
चालीस४०दिवस तोपन तगकि लरिरूप्पय दसलक्ख१००००००लिय

संसार सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण का तमाशा है जिसको वेदान्त से विचारैं तो ज्ञान की अग्नि इस को जलाता है, और सिद्ध जो परमेश्वर है उसका कोई साधन नहीं है अर्थात् जैसे इस जगत् का साधन तीनों गुण है जिस को मैं कैसे कहूँ. इस में गीता का भी प्रमाण है कि "यो बुद्धेः परतस्तु सः" यह किसी का न तो कारण है और न कार्य है और इन दोनों की धुर वो ही धारण करता है उस परमात्मा को जो नहीं जानते हैं वे इस संसार को सत्य मानते हैं इस कारण झूठे सुख और दुःख को मानकर जानने योग्य (परमात्मा) को भूलते हैं उस परमात्मा को जानने और नहीं जानने की परीक्षा करने की पहिचान यही है कि जहां शरीर डालने का स्थान होता है वहीं धीर और वीर डालते हैं ॥ १०४ ॥ १ चमक कर २ कायर ब्राह्मण भागा ३ बाकी के लोगों का साथ ४ पीछा मुड़ा ५ विष्टा डालकर भागा ("लींड पटक कर भागा" यह राजपूताना की लोकोक्ति है) और ६ लोमड़ी (लुंगती) से ७ गर्व करने के काम पर क्रोध करके

डरपात अलप सत्वर दुमति द्विज वह दक्खिन संचरिय॥१०५॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे उदयपुरागतसिताराधीशच्छत्रपतिसाहूमन्त्रिबाजेरावपेसवाख्यस्य महाराणासनाधस्तादुपवेशन१बाजेरायस्य महाराणादण्डादान २ भंभोलावग्रामान्तिकबाजेरायजयसिंहमिलनोभयैकासनाधिवेशन ३ ज्ञातदिल्लीयुद्धसमयाभावजयसिंहमन्त्रबाजेरायपुनर्दक्षिणदेशगमन ४ श्रीमंतपेसवामिलनहेतुपरिज्ञातयवनेन्द्राप्रसादजयसिंहस्य दिल्लीं प्रति ससैन्यबाजेरायपुनराकारण५दिल्लीबहिःप्रदेशसमराङ्गणयवनजयमहाराष्ट्रपराजयकथन ६ अवशिष्टसैन्यसहितप्रत्यावृत्तदण्डितकोटामहारावबाजेरावस्यदक्षिणागमनवर्णनमेकचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४१ ॥

आदित एकोनाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २७९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत दिल्लीस वजीर जित्ति संगर[1] मरहट्ठन ॥

---

१ छोटों को शीघ्र डराता हुआ वह दुर्मति २ गया ॥ १०५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, सितारा के राजा छत्रपति साहू के मंत्रि बाजेराव पेसवा का उदयपुर आकर महाराणा की गद्दी नीचे बैठना १ महाराणा से बाजेराव का दंड लेना २ भंभोलाव नामक ग्राम के समीप महाराणा जयसिंह से मिलना और दोनों का एक गद्दी पर बैठना ३ दिल्ली से युद्ध करने का समय नहीं जान कर जयसिंह की सलाह से बाजेराव का पीछा दक्षिण में जाना ४ श्रीमन्त बाजेराव पेसवा से मिलने के कारण बादशाह को अपने पर अप्रसन्न जानकर राजा जयसिंह का बाजेराव पेसवा को सेना सहित फिर दिल्ली पर बुलाना ५ दिल्ली शहर से बाहिर युद्ध होकर यवनों का जय और मरहठों का पराजय होना ६ बचीहुई सेना से पीछे आने बाजेराव का कोटा के महाराव से दंड लेकर दक्षिण में जाने के वर्णन का इकतालीसवां ४१ मयूख हुआ और आदि से दो सौ उनासी २७९ मयूख हुए ॥

१ युद्ध में

हरखित गयउ हजूर साह बहु दियउ रीझ रन ॥
इक इक प्रति आदाब उचित सब लिय सलाम करि ॥
दूजे दिवस कलीजखान हुव त्यौं तँहँ हाजरि ॥
याकौंहु दत्त बैभव अतुल लिय सब पृथक सलाम नँत ॥
हसि ताहि खानदोराँ कहिय बुड्ढा बंदर बेर नचत ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि साह रु परिखद सकल, मुसकिँय आसँव मत्त ॥
अट्टाट्टहु कतिकन करिय, त्रेपा न रक्खिय तँत्त ॥ २ ॥
खानकलीज नबाब यह, जथा यौंवनी जीमँ ॥
जिहिँ अग्गैं गजसिंह जुत, भखे दॅलावर भीमँ ॥ ३ ॥
जिहिँ अक्खिय यह बुद्धि जो, रहिहै साह तिहाँर ॥
बेगहि बंदर नच्चिहै, पुर दिल्लिय प्राकार ॥ ४ ॥
यह सुनि साह सिराहि कछु, पच्छो पारिय रोस ॥
पै पापिनँ बिगरयो समय, सो न लखैं अपसोसँ ॥
मोजदीनसौं इकसे, भये पंच५ दिल्लीस ॥
मत्त कापिसायनँ मुदित, हिय इच्छित रँतही सँ ॥ ६ ॥

---

१ अदब के साथ (सलाम) २ दिया. तुलना रहित (बहुत) बैभव ३ जुदा जुदा ४ झुककर सलाम करके ५ श्रेष्ठ (अच्छा) नाचता है ॥ १ ॥ ६ सब सभा ७ मुसकराये (मंद हास्य से हसे) ८ मद्य में मस्त ९ कितनों ने उच्च स्वर से भी हास्य किया १० लज्जा ११ तहां ॥ २ ॥ १२ जिस प्रकार यावनी (फारसी) भाषा में १३ जीम अक्षर होवे तिस प्रकार अर्थात् बडे पेटवाला (फारसी में जीम अक्षर ऐसा होता है) जिसने पहिले नरवर के राजा और कोटा के महाराव गजसिंह सहित १४ दिलावरखां और १५ कोटा के महाराव भीमसिंह को मारे थे ॥ ३ ॥ १६ जिसने कहा कि १७ तेरा बादशाह इस बुद्धि से रहैगा तो दिल्ली नगर के १८ कोट पर शीघ्र ही बंदर नचेंगे ॥ ४ ॥ १९ उन पापियों का २० गिना है ॥ ५ ॥ २१ मद्य में मस्त होकर प्रसन्न रहते थे २३ वे (बादशाह) हृदय में २२ मैथुन ही चाहते थे. अथवा 'हीस' शब्द यावनी भाषा के 'हिर्स' का अपभ्रंश है तो इसका अर्थ चाहना है सो मैथुन की अधिकता बताने के अर्थ वीप्सार्थ में एकार्थवाची दो शब्द दिये हैं ॥ ६ ॥

मनोहरम् ॥

घालनमैं[1] गडे जे बालकानमैं[2] बहे जे बौरु-

नीके बहकायैं तैं घुमंडन घनैं लगे ॥

रय्यतकी रमनि रजीली जो निहारैं ताहि,

बलन बुलाय ख्यात ठहे ठहे चाखनैं लगे ॥

कथित[3] कुरानको बिसारि बैठे बालिसैं[4],

भनैं[5] जो रीतिकी तो चुप मूढ भाखनैं लगे ॥

दिल्लीके घरानैं उलटी करि इलाहसौं[6] बे[7],

बुलिके ठिकानैं पंड[8] पायु[9] राखनैं लगे ॥ ॥७॥

दोहा-जुमाँ[10] महज्जत जात नन, सुरा[11] मत्त सठ साह ॥

रहैं सुधि न दिन रत्ति[12] की, लहैं सुरत रस लाह ॥ ८ ॥

इक दिन काजिय दिय अरज, उचित महज्जत आन ॥

कोऊ बिधि बैठी सु चित, जत्थ[13] बिचारिय जान ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

तहिंन[14] रचि आपान[15] अधिक आसव वनि उद्धत ॥

संगहि लै संड[16] गन मत्त सब पत्त[17] महज्जत ॥

बिरचि बिरचि गलबाँह साह[18] जुत रबहिं[19] नमैं सब ॥

यह को रीति अपुव्व[20] तरकि[21] जंपिय काजी तब ॥

सुनि हसि रु एह अक्खिय सबन रे नहिं तू जानत रुचिर[22] ॥

१ घालकों (मूर्खों) में २ मद्य के बहकाये हुए ३ कुरान का कहना (उपदेश भूलगये) ४ मूर्ख ५ मूर्ख कहने लगे कि चुप रहो ६ अब आप परमेश्वर की आज्ञा से विरुद्ध करके ७ वे योनि के स्थान में ८ नपुंसकों की ९ गुदा को रखने लगे अर्थात् स्त्रियों के स्थान में नाजरों से गुदा मैथुन करने लगे ॥ ७ ॥ १० शुक्र वार के दिन; अथवा बड़ी महजत में ११ मद्य में मत्त १२ दिन रात्रि की ॥ ८ ॥ १३ जहां (मसजिद में) जाना विचारा ॥ ९ ॥ १४ उस दिन १५ पानगोष्टी (मतवाल) रचकर १६ नाजरों अथवा हींजड़ों के समूह को साथ लेकर मस्त होकर मसजिद में १७ गये १८ बादशाह सहित सब १९ खुदा को झुके वहां २१ क्रोध करके काजी ने कहा कि यह कौनसी २० अपूर्व रीति है २२ सुन्दर

माशूक[1] जनन आसिक मिलन आदि रीति सुनियत उचित[2]॥१०॥

दोहा ॥

काजी तबहि कुरानकी, अपनैं सिर दिय उट्ठि ॥
आयउ आलय[3] सबन सह, रंचक साहहु रूँठि[4] ॥ ११ ॥
नीति रहित दिल्लिय नयर[5], इम मच्चिग[6] अंधेर ॥
कोऊ सुनत न काहुकी, घर घर हा रव[7] घेर ॥ १२ ॥
कट्टुक्क[8] खानदोराँ कहिय, साह धुनिय हसि सीस ॥
यातैं खानकलीज[9] अब, रचत दुहुँनपर रीस ॥ १३ ॥
तिहिँ वजीर पलटाय लिय, खानकमरदी[10] तत्त ॥
बहुरि सहादतखान प्रति, पठयो पूरव पत्त[11] ॥ १४ ॥
खानसहादत हो यहै, दुद्धर पूरव देस ॥
हाजरि सूबा च्यारि४है, पूरबके जिहिँ पेसँ[12] ॥ १५ ॥
ता प्रति खानकलीजके, पत्ते सत्वर[13] पत्त ॥
इहाँ समय कछु ओरभो, आवहु कोउ न अत्त[14] ॥ १६ ॥

॥ सोरठा ॥

लियउ वजीर मिलाय, अप्पन तीन३हि इक्कहैं ॥
सेन सम्हारहु आय, हनहिँ खानदोरहिँ सहज ॥ १७ ॥
रहैं निरंकुस होय, पटकि जोर कछु साह पर ॥
सेनापति तुम सोय, हम वजीर अब इक्क हुव ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

हम तुम सम्मलि[15] हनहिँ[16] खानदोराँ कपटी खल ॥
तब सेनापति तुमहिँ साह करिहै गिनि सब्बल ॥

१माशूक लोगों से आशिकों का मिलना (प्रीति करनेवाले को आशक और जिस पर प्रीति की जावे उसको फारसी में माशूक कहते हैं) २योग्य॥१०॥३घर में४क्रोध करके॥११॥५नगर६मचा (हुआ) ७ हाहाकार शब्द ॥ १२ ॥ ८ कडुए बचन ९ कलीजखां ॥ १३ ॥ १० कमरदीखां को ११ पत्र ॥ १४ ॥ १२ जिसके आधीन ॥१५॥१३शीघ्र पत्र गये१४यहां ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १५सामिल होकर १६मारेंगे

सु सुनि सहादतखान सेन सज्जित पूरब सन ॥
लगि सेनापति लोभ आय दिल्लिय चहि अप्पन ॥
अट्ठ सत८००तोप जिहिं बसि अतुल दगतबेर कोसन दहत॥
लहि एह हेतु ताकहँ खलक केहर भाड़भुंजक कहत॥१९॥

॥ दोहा ॥

आय सहादतखान वह, मिलि कलीज सह मोद ॥
इक्क वजीर रु अप्प व्है, बिरच्यो कपट बिनोद ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

नादरसाह सु नाम तपत ईरान जवन इत ॥
प्रबल सबहि म्लेच्छ जाहि मन्नत जित ही तित ॥
गाजुद्दीज कलीज भाड़भुंजक जुत भाये ॥
बुल्लन नादरसाह पत्त ईरान पठाये ॥
आवहु निसंक सुरतान इत तिय दिल्लिय तुमको चहत ॥
सम्मुह चलाक कोउन सुभट मचत दंद दिन दिन महत२१

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनिय वत्त पुर इस्पहान, अति बढिय सोर जनपद इरान ॥
म्लेच्छ मुख्य बुलवाय पंच, पहु रचिय साह नादर प्रपंच ॥ २२ ॥
तामाचकुली नामक वजीर, बलि मिलिय अंलीनिसुरुत प्रवीर ॥
सम्मन पुनि कम्मन कुतब सूर, गाजी हुसैन हाजी गरूर ॥ २३ ॥
रुस्तम सलेम सेरन रहीम, कालन कमाल रोसन करीम ॥
मारूफ मलिकमहमूद मीर, आतमतअली सय्यद सधीर ॥ २४ ॥

---

१ इस कारण से उसको २ संसार ३ जुल्म करनेवाला भड़भुंज्या कहता है ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ म्लेच्छ देशों में (इस ग्रन्थ में आर्यावर्त के सिवाय सब देशों को म्लेच्छ देश माने हैं और अन्य आर्ष ग्रंथों का भी यही मत है) ५ नादिरशाह को बुलाने के लिये ६ पत्र ७ हे सुलतान (बादशाह) ८ उपद्रव वा युद्ध ॥ २१ ॥ ९ ईरान देश में १० म्लेच्छ देश के ११ उस प्रभु नादिरशाह ने ॥ २२ ॥ १२ पुनि १३ निसुरुतअली ॥ २३ ॥ २४ ॥

दाऊद सेख इसहाकदीन, मँहँदी रु मुहुम्मद मौंनदीन ॥
कदीन १ नदीन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अहमद नियाज मसुऊद आय, सादी कुरेस मीरन सुभाय ॥२५॥
गालिब हबीब लानन गुमान, पीरोज फतैनसियब पठान ॥
आरास हसन यूसफअलीहु, दरियावखान सुनि मोजदीहु ॥ २६ ॥
याकुबअली रु अम्मन इमाम, नाँसेर असद पुनि नूर नाम ॥
इत्यादि साह भट बर अत्रस्त, सह सचिव किन्न इक्कत समस्त २७
सब भटन साह नादर सुभाय, दिय तव कलीज कग्गर दिखाय ॥
कहि अब न जोर मुगलन निकेत, दिल्लिय कटाच्छ मँम ओर देत२८
अवरंगजेब मिरजा मरंत, धर हिंदु धव न धारक धरंत ॥
सचिवन नबाब भट सानुकूल, मिटि गय रसूल मजहब ससूल २९
गायक्क हन्यौंहि आलम अजान, पुनि मोजदीन अति मद्य पान ॥
मिलि बहुरि हिंदु सय्यद बिमंद, फूरुक गहि मार्यो पासि फंद३०
मुगलेस दोय २ पुनि साल मद्ध्य, जोहल्लन हने जे इन अवद्ध्य ॥
सय्यद अधीन पुनि तप नसाय, मिरजा समुहुम्मद पट्ट पाय ॥३१॥
सय्येदहिं मारि पुनि लोभ सीर, तूरानि मुहुम्मद भो वजीर ॥
जासौं इक बंभन पटकि जोर, हिंदुन कर बोर्यो नद हिलोर ३२
जिततित गिनीम दब्बत जमीन, कटकन बढि रेवाँ अमल कीन॥

॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ १ निर्भय २ वजीर सहित ॥ २७ ॥ ३ कलीजखाँ का पत्र ४ मुगलों के घर में ५ मेरी तरफ नजारे मारती है ॥ २८ ॥ ६ हिंदुस्थान की भूमि नहीं धारण करने योग्य पति को धारती है; अथवा वह धरा किसी हिंदु को पति बनाना चाहती है ७ पैगंबर का नाम है ॥ २९ ॥ ८ कलावंत ने ९ बहुत मूर्ख १० फुरुकशियर बादशाह को, पासी का फंद डालकर ॥ ३० ॥ ११ मूर्खों ने मारडाले १२ इनसे नहीं मारे जाने योग्य थे; अथवा वे बादशाह को मारने वाले इन पिछलों से नहीं मारे गये ॥ ३१ ॥ १३ हुसन अली नामक सय्यद को मारकर १४ दया बहादुर नामक ब्राह्मण ने ॥ ३२ ॥ १५ फौजों ने १६ नर्मदा नदी तक

अब तत्थ कमरदी हुव वजीर, सम्मलि कलीज नय विन सरीर ३३
रक्खैं न खबरि सठ रत्ति दीह, लुप्पिय सम्हारि नय लज्ज लीह
चाकर चहंत मालिक मिटान, हठि इच्छत मालिक अनुगं हान३४
मिरजा सु मुहुम्मद तिन समेत, जो कहत जाहिकी मन्त्रि लेत ॥
नहिं लखत अंध किम बद रु नेक, कहिये प्रमाद असे कितेक ३५
गनिकान गुमर आसिक अनंत, हीसेन जिनाँ सु रत हंत हंत ॥
अधिकार गायकन दिय अनीति, पटु नरनसौं वं नहिं नेक प्रीति ३६

यावनीभाषा ॥

मस्तदिलाँ अज्जामैं शराब दिल्ली च्यकुनद् बस् बे रुवाब ॥
सुहबत् बदाँ वदाना दिलाँन ताजीम तहम्मुल् मुकाबिलाँन ३७
गहदरून गुजारद् शहर बाब शैतांश नबीनद् रह सवाब ॥
अफवाजि दखन् आमद् बजोर बुजराय कलाँ गरदीद कोर३८
किश् मुल्ककसाँरापासबाँन मरदम् बजमानैंदर् कमाँन॥
इन्साफ अदल रफ्तह बज्योर अज खासु आम आमद् बशोर ३९

प्रायोदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

---

१ विना नीति का बदमाश ॥ ३३ ॥ २ चाकर का मारना ॥ ३४ ॥ ३ बुरा ॥ ३५ ॥ ४ घमंड ५ हृदय (दिल) से ६ मैथुन में ७ प्रीति युक्त है सो खेद की बात है ८ कलावंतों को ९ चतुर मनुष्यों से १० अब ॥ ३६ ॥

शराब (मद्य) के प्यालों से दिल मस्त हैं, दिल्ली क्या करै बहुत वेरोब है, बुरे लोगों की सोबत (संगति) अकलमंदों (बुद्धिमानों) के साथ है, भले मनुष्य भी उस बुरी सोबत का आदर करते हैं और उस सोबत को सहन करते हैं ॥ ३७ ॥ शैतान जो नेकी का रस्ता नहीं देखता है वह शहर के दरवाजे को नहीं छोडता है दक्षिण (मरहठों) की सेना (फौजें) जोर से आगई हैं और बडे बडे वजीर अंधे होगये हैं ॥ ३८ ॥ मुल्क का और मनुष्यों का कोई रखवाला (रक्षा करनेवाला) नहीं है और जमाने में कोई अमन (चैन) में नहीं है न्याय जुल्म से जाता रहा है "यहां अदल और इनसाफ, दोनों एकार्थवाची शब्द न्याय चलेजाने की अधिकता दिखाने के अर्थ लिखे हैं" और बडे व छोटे सब पुकार (त्राहि त्राहि) कर रहे हैं ॥ ३९ ॥

गोजा निमाज कलमाँन रत्त, महरीन संग जड़ सतत मत्त ॥
रेवा रु अटक बिच प्रथुल राज, सब नय बिहीन बिगरत समाज ।४०।
मालव लिय दक्खिन दलन आय, दिल्लीलग लुट्टिय दुसह दाय ॥
बिनु चेत मुगल वासर बितात, दल सजहु उहाँ न रोधक दिखात ४१
तामाचकुली यह सुनि वजीर, बुल्लिय सिराहि भुज ठोंकि बीर ॥
जुलिकरन सिकंदर अग्गं जाय, जित्तिय जमीन हिंदुनहराय॥४२॥
तैमूर बहुरि गोरी पठान, इत्थन सब जित्तिय हिंदवान ॥
बहु पुस्त पठानन रहिय राज, सो लिय बहोरि मुगलन समाज४३
अग्गैं गुमाय दिल्लिय अनीति, भज्ज्यो जु हमायौं मुगल भीति ॥
आयो सु इहाँ पुर इस्पहान, सुरतान सदाति दिन्नी समान ॥ ४४ ॥
ईरान कटक तब जाय संग, लै दियउ राज जुरि जीति जंग ॥
सुरतान हिंदु इम कैरन जोरि, दिल्ली सु हमायौं लिय बहोरि ४५
पुनि ता सुत अकबर पट्ट पाय, सो गिनत रह्यो सिरपर सहाय ॥
ताके सुत सुतके सुत बहोरि, अवरंग पट्ट लिय जंग जोरि ॥ ४६ ॥
ताकैहु तनय अकबर सनाम, आयो सु सरन इत्थहि अधाम ॥
पुनि मरिय अत्थ कछु रोग पाय, दिल्लीहि न तो देते मिलाय॥४७॥
यों मुगल याहि घरके गुलाम, दिन्नौं सु रक्खि नहि सकत धाम
तो अब जमीन अप्पन सम्हारि, बंधहि प्रपंच औरस बिथारि।४८।
गोगन सकै न जो ग्वाल रक्खि, अवरहिं तब अप्पत स्वामि अक्खि
कृखि गन सेकादिक जो करै न, तो भू क्रिया पटुन उचित दैन।४९।

१प्रीति नहीं है २चंद्रमुखी नायिकाओं के साथ (फारसी में चन्द्रमाका नाम महर है) ३निरंतर ४नर्मदा ५बड़ा ६नीति बिना ॥४०॥ ७दिन ८रोकनेवाला वहां नहीं दीखता ॥४१॥ ९ आगे ॥ ४२ ॥ १०अपने हाथों से ११ पीढ़ियों तक १२ समूह ने॥४३॥ १३ मान सहित ॥ ४४ ॥ १४ सेना ईरान के बादशाह १५से १६हाथ जोड़ कर ॥४५॥ ॥ ४६ ॥ उस ओरंगजेब का १७पुत्र १८बिना स्थान होकर १९ यहां ॥ ४७ ॥ २० दिया हुआ घर नहीं रखसकते हैं तो २१हुक्म फैलाकर ॥४८॥ २२गउओं के समूह को २३किसी अन्य को सौंपता है २४कृषक लोग सींचने आदि खेती का कार्य नहीं करे तो २५ भूमि की क्रिया में चतुर होवे उन कास्तकारों को देना उचित है

जो रक्खि सकहिं तुम हुकम जोरि, औ हैं तो दिल्लिय दे बहोरि ॥
तामाचकुली यह कहिय*तत्थ, सुनि सजिय साह नादर †समत्थ५०

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे खानदोरांकटुवचनहेतुयवनेन्द्रविरुद्धकलीजखाँखानदोरांमरणोपायकरणं १ मद्यपयवनेन्द्रमुहम्मदशाहनपुंसकासक्त्यादिनिमित्तनिन्दनदिल्लीप्रतीरानाधीशनादरशाहाव्हानार्थकलीजखांपत्रप्रेषणं ३ उक्तपत्रपठननादरशाहदिल्लीसमाक्रमणसैन्यसज्जनवर्णनं द्वाचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४२ ॥

आदितोऽशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८० ॥

॥ निःशाणी ॥

नादरसाह इरानके अब सेन सजाया ॥
लग्गा घाय निसानपैं[1] घन जानि घुगाया ॥
उर अट्ठौं दिक्पालकैं नैटसाल[2] खुभाया ॥
हाक नकीबों हल्लकौं दरकुंच सुनाया ॥ १ ॥
जंगी डैरु डमंकिया त्रंबक[3] त्रहकाया ॥
ईरानी भट उप्फने वपु[4] सज्ज बनाया ॥
टोप बकत्तर जालिका[5] रन ओप रचाया ॥
वेवे[6] तुग्गस[7] बंधिकैं कटि खग्ग कसाया ॥ २ ॥

॥४९॥ * तहां † समर्थ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में खानदोरां के कटुवचन के कारण कलीजखां का बादशाह के विरुद्ध होकर खानदोरां को मरवाने का उपाय करना १ मद्यपी बादशाह मुहम्मद शाह की नपुंसकों से आसक्त होने आदि की निन्दा २ ईरान के बादशाह नादरशाह को दिल्ली पर बुलाने का कलीजखां का पत्र भेजना ३ उक्त पत्र को पढ़कर नादरशाह के दिल्ली पर सेना सजने के वर्णन का बियालीसवां ४२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अस्सी २८० मयूख हुए॥

१ नगारों पर २ नहीं निकलै ऐसा साल चुभा ॥ १ ॥ तासे ३ बजे ४ शरीर को ५ जाली (पाखर) ६ दो दो बांधे ७ कमर पर खड्ग बांधे ॥ २ ॥

वे बे चाप बहादुरौं फटकारि बजाया ॥
तद्दिन[1] देस इरानमैं नग बाजि नमाया ॥
के अफगान पठानके मुगलान[2] मिलाया ॥
बलखी[3] कज्जलबास के छां हैं छक छाया ॥ ३ ॥
अरबी रूसी उजबकी हरखाय हकाया ॥
खबसी खूमी खूबही रन सज्ज सुहाया ॥
आतसबाजी अफससी क्रम वाह[4] कहाया ॥
आरमनी सीधा इतै आदेन उम्हाया ॥ ४ ॥
फ्रांस इतालिहु[5] उप्फने समसेर सजाया ॥
खंधारी जारी खरे बहलीम बुलाया ॥
ओलंदेजी उज्जले कर मुच्छ मिलाया ॥
रन तिब्बत तातारके दातार दिखाया ॥ ५ ॥
बीर बुखारी कात्रिसी रसबीर रचाया ॥
कायेनी अरु कासिदी लरने ति[6] लुभाया ॥
यूनानी रु यहूदिया सब संग सिधाया ॥
गालीली अरु गिंगिनी धर लेन धकाया ॥ ६ ॥
जद्दाके अरबी जिते मक्का मन लाया ॥
काजिदके अरु काबली सह सेन सजाया ॥
तूरान रु हीरातके मीरात मिलाया ॥
तिगरीके रु तिदोरके छक जोर छलाया ॥ ७ ॥
तत्ते[8] तुरक त्रिपोलिके कँचे कसिआया ॥
हल्ले[10] इम लक्खौं जवन दिल्ली करि जाया ॥

---

१ उस दिन २ मुगल ३ बलख देश के (यहां से लेकर सात के अन्द तक कहीं देशों और कहीं शहरों के नामों से वहां बसनेवालों के नाम हैं) ॥ ३ ॥ ४ प्रशंसा के वचन ॥ ४ ॥ ५ इटलीवाले ॥ ५ ॥ ६ ते (वे) ॥ ६ ॥ ७ यवनों के तीर्थ स्थान का नाम है=मीर सय्यद का खिताब है॥७॥८ताते (चपल) १० लड़ ११ रूमी यनाकर

पंच निमाजी पूत जे बल धर्म बढाया॥
केन मुहम्मद निजनबी रब्बं केन रटाया ॥ ८ ॥
के बुल्ले इसहाक्क श्रो दायूद दिपाया ॥
के याकुब हि सरोनकों अक्खैं वल्ल आया ॥
अम्मीनादबके अरम मतमैं बतलाया ॥
के पोथम आहस कहैं सलमान सुहाया ॥ ९ ॥
के बोपस ओबेदकों चिंतैं चित लाया ॥
सुलेमान मतके किते हिंदवान हकाया ॥
इत्यादिक अति गंव्वके चढि मिच्छ चलाया ॥
नादरसाह सनाहके विनु देह दिपाया ॥ १० ॥
चोला काल बनातका सुहि टोप सुहाया ॥
कर दोऊन २ कुगानलै मन नैन लगाया ॥
बेसरके स्पंदन बडे चढि बेग चलाया ॥
हाक नकीबाँ हल्लकैं दल डाँकडगाया ॥ ११ ॥
उग्र बिडाली अंखिके बहु मिच्छ बढाया ॥
केंक अरव्वी फारसी बुल्लैं बिकसाया ॥
पंचक५ टंकी चाप जे रक्खैं भुज भाया,
चक्खैं वक्कर एक१ जे मगरूर न माया ॥ १२ ॥
ताजी पक्खर सज्जके बाजी बल्ल छाया ॥
ईरानी अरबी किते जर जीन सजाया ॥

१ दिन में पांच वार निमाज पढने से २ पवित्र ३ कितने ही ४ खुदा को ॥८॥ ५ कितने ही (यहां से दस के छन्द तक यवनों के पैगंबरों के अथवा कहीं कहीं तीर्थ स्थानों के नाम हैं जिनके मजहब पर वे यवन चलते) थे ॥९॥ ६ गर्व वाले ७ बिना कवच ॥ १० ॥ ८ खच्चरों के ९ बडे रथ पर १० सेना को क्रोध दिलाकर चलाया ॥ ११ ॥ ११ बिल्ली जैसा आंख नेत्र) वाले १२ कितने ही १३ प्रसन्न होकर (फूलेहुए) १४ यह कमान की ताकत देखने का एक प्रकार का तोल है, औ धनुष का बल परावधि अठारह टंक का माना जाता है॥१२॥ १५ नवीन १६ घोड़ों

बैंडे हत्थिन झुंडकै धुजदंड झुकाया ॥
नादरसाह उछाह कैँ सहसेन[1] चलाया ॥ १३ ॥
सत्यलोक लग याँ[2] रु याँ पाताल पचाया ॥
फट्टा रीढक[3] सेसका फनमाल फिराया ॥
हल्ली जुग्गिनि संगही थेई थरकाया ॥
फाँल[4] फलंगी डाकिनी कर ताल बजाया ॥ १४ ॥
काबल सीमा व्है कटक[5] अब अटक[6] निराया[7] ॥
हाक परी हिंदवानमैं सब सोक अघाया ॥
लंघि अटक पंजाबका थाँनाँ घन घाया ॥
सूबा नायक साहका सब फोरि मिलाया ॥ १५ ॥
आन चलाया अप्पनाँ मुगलान मिटाया ॥
सूर इरानी संचरे मगरूर मचाया ॥
याँ नादर अति बेगसौँ दिल्ली सिर आया ॥
पानीपथ किरनालपैँ झंडाल[8] झुकाया ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

सोर[9] मचिगो दिल्ली सहर, जोर इरानिन जानि ॥
साह मुहम्मद अब सुनी, मद्यप सच्ची[10] मानि ॥ १७ ॥

॥ सोरठा ॥

ईरानपैँ[11] सुनि आत, सठ प्रसन्न सबही सचिव ॥
सोक न तदपि सम्रात, इक्क खानदोराँ उदर ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

कूरम प्रति जैंपनेर[12] खानदोराँ पठये दल[13] ॥

---

१ सेना सहित ॥ १३ ॥ २ इधर ३ पीठ की हड्डी ४ छलांगें भर कर कूदी ॥ १४ ॥ ५ सेना ६ अटक नदी को समीप की ७ तृप्त हुए (अरगये) ॥ १५ ॥ ८ झंडे खड़े किये "डिंगल भाषा में अत्यन्त ऊँचा करने को झुकाना कहते हैं" ॥१६॥ ९ हाक १० सच्ची ॥ १७ ॥ ११ ईरान के पति को ॥ १८ ॥१२जयपुर१३पत्र

तू दुद्धर कछवाह साह तोहीसौं सब्बल ॥
आवत दल[1] ईरान रचहु दिल्लिय सहाय रन ॥
हम तुम इक्कत होय भुम्मि करिहैं[2] बास भुग्गन ॥
मम सीस भार आयउ अमित[3] सो तो मन अब उत्तरहिं ॥
सिर धरि कुरान करियत सपथ[4] जो उपकृत[5] यह बीसरहिं॥१९॥

॥ दोहा ॥

तेरोही यह बेरहै, आवहु सदल[6] उछाह ॥
तोहि दुरग रनथंभ अब, रीझि समप्पहिं साह ॥ २० ॥
इम अनेक कग्गर[7] लिखे, शाह चमूपति[8] सूर ॥
सच्चे करिकैं सपथ[9] सो, कुम्म गिनैं नहिं कूर ॥ २१ ॥
मैं आवत तुम साह जुत, बाहिर करहु मुकाम ॥
यौं लिखि लिखि दल[10] मुक्कले, कूरम कलुख[11] दुकाम ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

इम जवनन बिस्वासदै रु कूरम छल किन्नौं ॥
अंतहपुर[12] निज अखिल[13] उदयपुर मुक्कलि दिन्नौं ॥
सावधान सह सत्थ रह्यो जैपुर कूरम पति ॥
यह आचैरज[14] लिखि आंत हाँ रु मरन न किन्नी मति ॥
अवरहु नरेस हिंदुव अखिल यह जयसिंह उदंत[16] लखि ॥
कोऊ न गयउ दिल्लिय कलह[17] प्रबल काल[18] भाविय परखि२३

॥ दोहा ॥

टारी इम कूरम कितव[19], इत दिल्लीस अनीक[20] ॥
सबल खानदौरां सजिय, सम्मुह चहत मरीक[21] ॥ २४ ॥

---

१ सेना २ श्रम या रहित (अमाप) ३ तुमसे हो ४ सौगन ५ उपकार ॥ १९ ॥ ६ सेना सहित ॥ २० ॥ ७ पत्र ८ बादशाह के सेनापति के ९ शपथ (सौगन) ॥ २१ ॥ ११ पाप के बुरे कार्य से १० पत्र भेजे ॥ २२ ॥ अपने १३ सब १२ जनाने को १४ आश्चर्य १५ लिखे हुए पत्र आते थे सो भी १६ वृत्तान्त देख कर १७ युद्ध में १८ समय ॥ २३ ॥ १९ छली २० सेना २१ युद्ध में चाहता

इहिँ अंतर[1] परताप[2] वह, जेठो सालम नंद ॥
दिल्ली आय रु दासभो, छल्लो जवनपति छंद[3] ॥ २५ ॥
पानीपथ आयो समुक्कि, संडन[4] तजि अब साह ॥
सेनापतिके कथित[5] सैंम, रचिय कुंच रन राह ॥ २६ ॥

तोटकम् ॥

कटके[6]स चँमू[7] सब सज्ज करी, प्रतिहार[8] नकीबन हाक परी ॥
बल पाय निसानन[9] घाय बजे, लखि जे घन भद्दव नद्द लजे ॥२७॥
खुरसानन फुल्ल कृपान[10] खिरे, चमकात चिनंगिन बाढ चिरे ॥
झननंकि हुतासन[11] धारझरी, घननंकि बजी गज घंट घरी[12] ॥ २८॥
पखरैत[13] पटैत घने उमहे, कमनैत[14] कटैत[15] न जात कहे ॥
बहु बाजिय ताजिय[16] सज्ज बने, जँव[17] जान मनों पवमान[18] जने ।२९।
ककचच्छद[19] कन्न मनों कलिका, कच याल[20] लखैं भुजगावलिका ॥
सहनाइ[21]मुखे जिन प्रोथ[22] सदा, पँय[23] लोल[24] मनों गनिका प्रमदा[25] ॥३०॥
कैलि[26] जित्तिन कंध[27] बंक कसैं, कुलटा कि क्रियापटु[28] लंक कसैं

हुआ ॥ २४ ॥ १ इसी समय के भीतर २ प्रतापसिंह ३ अधिकार में ॥ २५ ॥ ४ नपुंसकों को छोड़कर ५ कहने से ॥ २६ ॥ इधर ६ सेनापति (खानदौरां) ने ७ सेना सज्जित करी जहां ८ द्वारपालों की और छड़ीदारों की हाक पड़ी, सेना को प्राप्त होकर; अथवा यत्न पूर्वक ९ नगारों पर घाई बजी जिसको देखकर भादवे के मेघ का शब्द लज्जित हुआ ॥ २७ ॥ खुरसाणों पर १० तरवारों के अग्निकण उड़े और उन चिनगारियों के चमकते हुए बाढ चिरे और झणकार करती हुई धाराओं से ११ अग्नि झड़ी और हाथियों की घंटा रूप १२ घड़ियां बजीं ॥ २८ ॥ बहुत से पाखरोंवाले और १३ पटा फेंकनेवाले उत्साह युक्त हुए १४ धनुष धारण करनेवाले और १५ तरवारों से काट करने वाले कहे नहीं जासकते १६ ताजिक देश के बहुत घोड़े सज्जित हुए जो १७ वेग में मानों १८ पवन के पुत्र (हनुमान) हैं ॥ २९ ॥ जिनके कान मानों १९ केवड़ा की वा केतकी की कली है और केसवाली के केस २० सर्पों की पंक्ति के समान शोभायमान हैं २१ जिनके फुरणे सदैव २२ सहनाई के मुख के समान फूले रहते हैं २३ जिनके पगों की २४ चपलता मानों गणिका २५ स्त्री के समान है ॥ ३० ॥ २६ युद्ध जीतने को २७ कंधों को टेढ कसते हैं सो मानों २८ क्रिया

टरिजात उडात करी टकरी, सकरी बिसिखान[2] बनैं चकरी ॥३१॥
बिथुरे गजगाहन बीजित[3] जे, जवके बल राहन बीजित[4] जे ॥
पखर[5] जर जीन सजे सखरे[6], नचि मंडत चेरिनके[7] नखरे ॥ ३२ ॥
धरि धोरित वल्गित[8] धाव धपैं[9], मनकी[10] गति जे छिन माँहि मपैं ॥
छलि गात चलात धुनात छिती[11], किल[12] कोट पटी बिच वत्त किती ॥३३॥
भटके मन भाय फिरे लटके, धटके[13] निपजे कि बैंटा[14] नटके ॥
हुलसैं करि बिज्जुलिकी हसैंना[15], रयमैं[16] मनु तक्किपकी[17] रसना ॥३४॥
खुर राजत रंजत[18] पत्त खरे, जिन पक्क मेंहायस[19] नाल जरे ॥
लगि यों खुरसों खुरताल लसैं, गहिकैं स्वरभानु[20] कि चंद ग्रसैं ३५
चलैं[21] बोधितरुच्छद[22]से चमकैं, झपटात कनीनियँ[23] ज्यों झमकैं ॥
असवार चढ़ैं सु करैं[24] अनुठी, मलपैं बनि फाल गुलाल मुठी ॥३६॥

विदग्धा कुलटा नायिका कमर कसती है जिनके उडान की टक्कर में १ हाथी टलजाते हैं और सकड़ी २ गलियों में चकरी के समान पलटते हैं ॥ ३१ ॥ फैले हुए गजगाहों से जिनको ३ पवन (पंखा) होता है और वेग के बल से मार्गों में ४ पक्षियों को जीतते हैं ५ पाखरें और जरी के जीनों से ६ सुंदर सजे हुए; अथवा फैले हुए जरी के जीनों से सुंदर सजे हुए जो नृत्य करके ७ लौंडियों के समान नखरे करते हैं ॥ ३२॥ ८ धोरित और वल्गित आदि घोड़े की पांचों गतियों में ९ दौड़ते हैं जो क्षण मात्र में १० मन के चलने की गति को माप लेते हैं, शरीर को फुला कर ११ भूमि को धुजा कर चलते हैं जिनकी पट्टी (शीघ्र दौड़) में १२ निश्चय ही कोट क्या बात है अर्थात् जिसके आगे कोट कुछ चीज नहीं है ॥ ३३ ॥ १३ धाट देश के निपजे हुए घोड़े वीरों के मन माफिक झुक कर फिरते हैं सो मानों नट का १४ छोकरा (पट्ठा) फिरता है, बिजुली की १५ हसी करके प्रसन्न होते हैं और १६ वेग में मानों १७ तार्किक (न्याय शास्त्र पढे हुए) की जिव्हा है ॥ ३४ ॥ जिनके खुर १८ चांदी के पत्रों से शोभायमान हैं जिनमें १९ पक्के पक्के लोहे (भजवेल तथा फोलाद) के नाल जड़े हैं वे खुरताल खुरों से लग कर ऐसी शोभा पाते हैं जैसे चंद्रमा को पकड़कर २० राहु खाता है ॥ ३५ ॥ २१ चपलता में २२ पीपल वृक्ष के पत्ते के समान चपल हैं और दौड़ाने में २३ नेत्र की पुतली के समान चमकते हैं २४ अनूठी (अपूर्व) ॥ ३६ ॥

परि संग कुरंगन[1] जे पकरैं, छिति[2] चौ४कर[3]मैं पलटा छ६करैं ॥
बपु[4] जोर उभ्भ[5]कत प्रोथ बजैं, सफरी[6] पलटान उडान सजैं ॥ ३७ ॥
रस लेह खलीन[7] अधीन रहैं, गतिमैं भरि बत्थन भुम्मि गहैं ॥
करि भ्रंप बढै नटकी न कला, चलिजात दिखात मनौं चपला[8] ३८
प्रतिमल्ल बनैं नभ पच्छिनपैं, बहुरैं उडि दोय२ बरच्छिनपैं ॥
कुल जाति बनायुज[12] आदि किते, जवमैं[13] पवमान[14] उडान जिते।३९।
कुलटैं[15] उलटैं उछटात करी, पलटैं मनु पातुरिकी[16] पुतरी ॥
इक लक्ख१००००० तुरंगन या गतिके, करटी[18] सु हजार१००० भली भंतिके ॥ ४० ॥
झरनी तल डानन दान झरैं, कुपितारुन[20] पच्छिन चोट करैं ॥
अप लंगर[21] ऐंचत ऐंड[22] भरे, खिजि खूँन भरे रुकिजात खरे ॥ ४१ ॥
डगं[23] देत डरावत डाकनतैं, पलटैं खिजि छाँहिं[24] पताकनतैं[25] ॥
त्रिपदी[26] पथ बद्ध तऊ तरकैं, बमथून[27] लगावत बद्दरकैं ॥ ४२ ॥

साथ होकर जो १हरिणों को पकड़ते हैं ३चार हाथ के विस्तार वाली २भूमि में छः प-लटे करते हैं ४शरीर के जोर से ५चमकने में ६फुरणे बजते हैं ७मच्छी के पलटने के स-मान उडान सजते हैं॥३७॥ ८लगाम के चाटने के रस में आधीन होकर रहते हैं और चलने में भूमि को बाथों में पकड़ते हैं ९ जिनके झंप लेने में नट की भी कला नहीं बढती; अथवा हाथियों को फांदने में नट की कला भी नहीं बढती (नट के फांदने की पूर्ण अवधि हाथी को फांदने की समझी जाती है) चले जाने में मानों १० बिजुली दीखते हैं ॥ ३८ ॥ आकाश में पच्छियों के ११ शत्रु (मुकाब-ला करनेवाले) बनते हैं और दो बरछियों पर उड कर पीछे फिरते हैं, कुल में कितने ही १२ बनायुज आदि देशों के उत्पन्न १३ वेग में १४ पवन के समान उडनेवाले ॥ ३९ ॥ ११ हाथियों को उडा कर १५ कुलांट लेकर उलटते हैं अ-थवा कु (पृथ्वी) को लाटते हैं और हाथियों को उडा कर उलटते हैं और पलट-ने में मानों वेश्या के १७ नेत्र की पुतली पलटती है; अथवा नृत्य करते समय वेश्या की पुत्री (लड़की) पलटती है १८ हाथी १९ भली भांति के ॥ ४० ॥२० क्रोध में लाल होकर पच्छियों पर चोट करते हैं २१ लोहे के जंजीर २२ घमंड से भर कर ॥ ४१ ॥ २४ सांटमारों के क्रोध दिलानेवाले छोटे धावों से डराने वाले २३ पैंड देते हैं २५ ध्वजा की छाया से खिजकर पलटते हैं २६ डगबेडी (पग बंधन) से पग बंधे हैं तो भी तड़कते हैं २७ सुंड के जलकणों को बादलों -

घन *बीत घुमावत मत्थ मुरैं, फहरात निसानन जेब फुरैं ॥
फटकारत सुंडिनतैं नभकौं, सिर भौंर भनंकत सोरभकौं ॥ ४३ ॥
बहु खावन रावतभ्रात बनैं, जल ऐंचन काज अगास्ति जनैं ॥
मखतूल कलापक कंध कसे, लगि गत्त बरत्तन नद्ध लसे ॥४४ ॥
मल जंगिय होदन सज्ज भये, बलमैं चर पौंनहिं पैं पठये ॥
कट सुंडि कलापक रंगि रचे, बहु चित्र चितेरनके बिरचे ॥ ४५ ॥
गिरचे१ बिरचे२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १
बहु अद्रिन निंदत उच्चपनौं, मजबूत रुपैं जमदूत मनौं ॥
बलके सिरताज महाबलजे, सनि राहु तमोगुन सौंमलजे ॥ ४६ ॥
मदझाकन घुम्मत पैंड मते, बल बाद हिमाचलसौं बदते ॥
मते१ दते२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
तृन मान बडे तरु तोरत जे, मनतैं रवि केतु मरोरत जे ॥ ४७ ॥
कनकौंचल लड्डुव गोट गिनैं, रवि चंद मलीदैंन रोट गिनैं ॥

के लगाते हैं ॥ ४२ ॥ * बहुत अंकुश लगाने और हूलने से मस्तक घुमा कर मुड़ते हैं जिन पर ध्वजा उड़ती शोभा देती है वे (हाथी) सुंडों से आकाश को फटकारते हैं जिनके मस्तक पर १ सुगंध के लिये भ्रमर उड़ते हैं ॥ ४३ ॥ बहुत खाने में रावण के भाई (कुम्भकर्ण) २ जल पीने में अगस्ति के पुत्र (अगस्त्य) बनते हैं, कंधे में ३ रेसम के ४ कलावे कसे हुए शरीर में लगेहुए ५ रस्सों से ६ बंधे हुए शोभायमान ॥ ४४ ॥ बल में मानों पवन पर ७ हलकारे भेजे हैं जिनके ८ कपोल और सुंड रंग के समूह से रचे हुए ॥ ४५ ॥ कितने ही हाथी ऊंचेपन में ९ पर्वतों की निंदा करते हैं और दृढ़ता में मानों यमदूत रुपते हैं वे हाथी १० सेना के शिरताज और बड़े बलवान जो शनैश्चर, राहु और तमोगुण के समान ११ काले हैं "तमोगुण का रंग काला है" ॥ ४६ ॥ घमंड के भरे हुए पैंड पैंड पर मद की झाकों से घूमते हैं और बलवान पन का बाद हिमालय से करते हैं, बड़े वृक्षों को तृण के १२ समान तोड़ते हैं और मन से सूर्य की ध्वजा को मरोड़ते हैं ॥ ४७ ॥ १३ सुमेरु पर्वत को लड्डुओं के गोले गिनते हैं और सूर्य चन्द्रमा को १४ अपने भोजन के रोट गिनते हैं "हाथी के भोजन का नाम डिंगल भाषा में मलीदा है" तारों पर कठिन किलकारी करके

किलकारत तारनपैं करेरे, चल सुंडि चलात घनैं चेरेरे ॥ ४८ ॥
कटपैं कुरुबिंद प्रकासकरैं, मनि भौम भिरे जनु लग्गि गरैं ॥
करँ त्यौं हरिताल सुढाल कर्यो, गुरु जानि बिधुंतुद पासि पर्यो ४९
चरखीनैं चिकैं न चटाहटपैं, उडिजात अचानक आहटपैं ॥
कति बीरन कुंतैं लगैं कटसौं, बलि निठ्ठि बहोरत उब्बटसौं ॥५०॥
जनकौं नियराय रचैं जबरी, बढि अँचत बग्घन की बकरी ॥
जिन लंगर पाय धरैं जितनैं, जमकी इक रज्जुव बद्धनैं ॥ ५१ ॥
सिरपैं मनि हाटक जात सिरी, भरमाचलसौं भ ततीकि भिरी ॥
इम इक हजार१०००बडे इभजे, निकसे सजि बद्दल के निभ जे ५२
तुरकान तयार भयो रनपैं, फरके भुव खंड फनी फनपैं ॥
खग उद्धत सय्यद सेख खिले, मिरजा मुगलान पठान मिले॥५३॥
भुजदंड कमानन केक धरैं, स लुलायँ परवालन वेध करैं ॥
बहु बीर बँदूकन दाव रचैं, बर सिस्त जुरैं अग्गु नाँहि बचैं ॥ ५४ ॥

घनको पकड़ने के लिये १ चपल सुंड को चला कर बहुत २ घिरते हैं ॥ ४८ ॥ ३ कपोलों पर ४ हींगलू प्रकाश करता है सो ६ मानों गल से लग कर शनैश्चर और ५ मंगल भिड़े हैं "शनैश्चर का रंग काला और मंगल का रंग लाल है" इसीप्रकार ७ सुंडको हरताल से श्रेष्ठ किया (रंगा) है सो मानों ८ बृहस्पति ९ राहु की पासी में पड़ा है "बृहस्पति का रंग पीला और राहु का रंग काला है" ॥ ४९ ॥ १० चरखियों (अग्नि क्रीड़ा विशेष) की चटाहट पर डिगते हो नहीं हैं और कभी आहट (चरण आदि लगने का सूक्ष्म शब्द) पर उड़जाते हैं, कितने ही वीरों के ११ भाले १२ कपोलों पर लगते हैं और१३बिना मार्ग जाते हुओं को फिर कठिनाई से फेरते हैं ॥ ५० ॥ मनुष्यों को१४समीप लेकर जबरी करते हैं और आगे बढ़कर खैंच लेते हैं सो मानों बकरी को १५ सिंह खैंचता है इन हाथियों के लंगरों (जंजीरों) पर चरण धरते हैं उतने ही यमराज की एक १६ रस्सी में बंधते हैं ॥ ५१ ॥ मस्तक के ऊपर मणियों की जड़ी हुई १७ सुवर्ण की सिरि (मस्तक भूषण) है सो मानों १८ सुमेरु पर्वत से १९ नक्षत्रों की पंक्ति भिड़ी है २० सदृश ॥ ५२ ॥ २१ शेषनाग के फणों पर ॥ ५३ ॥ २२ महिष (भैंस) सहित २३ श्रेष्ठ सीध

करि केक[1] त्रिभागनतैं खुरली, बढि धावन दाव बचातबली ॥
तरवारिन वार करैं कितने, घमकावत संगिन[2] लच्छ[3]य घनें ॥ ५५ ॥
सब दिल्लिय मीर उमीरसजे, रनमैं भट भीम रहीम रजे ॥
प्रति[4]बासर पंच ५ निमाज पढैं, कलमाँ बिच गुप्त[5] बयान कढैं ॥ ५६ ॥
बिरचैं बहुनेक तजैं बदकौं, मन चिंति रसूल[6] मुहम्मदकौं ॥
रँसि[7] कंठ कुरानसिरीफ रहैं, बल उच्च रु डाढ्ढि[8] कुच्च बहैं ॥ ५७ ॥
लखि मुच्छ न लंब सिखी जिनकी, बिधिछिन्निय[9] रीति प्रतीपनकी ॥
छबिके बपु[10] मुद्गर दंड छटे, प्रतिमल्ल[11] घुमावत फैंकि पटे ॥ ५८ ॥
बद[12] केक कितेक तजैं कपटैं[13], रब[14] पीर बलीन[15] अलीन रटैं ॥
असि ढल्लन मल्ल अपुव्व अरैं, कति बान बिहंगन[16] बेध करैं ॥ ५९ ॥
खट६ टंक कमानन खैंचतजे, अतुली[17] पय लंगर अंचत जे ॥
बद[18] खानकलीज सहादतसे, बलि[19] मूढ वजीर मुहब्बतसे ॥ ६० ॥

जुड़ने पर ॥ ५४ ॥ १ कितने ही भालों से शस्त्राभ्यास करते हैं २ बरछियों से ३ निसानों को ॥ ५५ ॥ ४ प्रतिदिन कलमा में "लाइलाह इल्लिल्लाह मुहुम्मद रसू लिल्लाह" यह यवनों का कलमा है जिसके ५ छिपे हुए आशय निकालते हैं ॥ ५६ ॥ ६ यवनों के पैगंबर का नाम है ७ डोरी में लटकी हुई कुरान शरीफ जिनके कंठों में रहती है वे बड़े बल और ८ डाढी के बड़े केशों को धारण करते हैं अर्थात् डाढी के बाल नहीं कटवाते ॥ ५७ ॥ जिनके चोटी नहीं है और मूछँ लंबी नहीं हैं ९ मानों आर्यों से विरुद्धता की रीति को विधि पूर्वक छीन ली है अर्थात् जिन रीतियों को आर्य लोग प्रतिकूल मानते हैं उनको यवन अपने अनुकूल मानते हैं, मुद्गर फेरने और दंड करने से शोभायमान जिनके १० शरीर ११ सन्मुख होकर युद्ध करने वाले मल्ल को ॥ ५८ ॥ उन यवनों में कितने ही १२ दुष्ट और कितने ही कपट को छोड़ने वाले १३ खुदा को गुरु (उपदेशक) को १४ खुदा (ईश्वर) के भक्त और १५ अली "यह यवनों के पैगंबर का भाई और जमाई था जिसको खलीफा (उत्तराधिकारी) भी कहते हैं" को रटते हैं. कितने ही तरवार और ढाल से अपूर्व मल्ल युद्ध करते हैं और कितने ही बाणों से १६ पक्षियों का वेधन करते हैं ॥ ५९ ॥ १७ अपने समान दूसरे को नहीं समझनेवाला पैर में प्रतिज्ञा का लंगर पहनता है सो जब उसको विजय करनेवाला मिलता है तब खोलता है १८ दुष्ट १९ पुनि, वजीर

भट रुस्तुमखान चमूप भले, सजिकैं दल दिल्लियतैं निकले ॥
चढि फील मुहम्मदसाह चढयो, बजि हक्क निसानन ध्वान बढयो॥६१॥
दल के हरवल्लनके घढतैं, करटी पुरतोरनके कढतैं ॥
गजढाल प्रलंब सु तुट्टिपरी, कमि मंडल मंडल कूक करी ॥६२॥
दिन मूक उलूकन हूक दई, छिति व्योम भयानक खेह छई ॥
अपसौंन उपश्रुति पिट्ठि पढी, कचमुक्त रजोवति दिट्ठि कढी ६३
उनमत्त क्रमेलक आत लख्यो, रु दिगंबर दंत दिखात लख्यो ॥
चिरमेहि लुलाय मिले समुहे, छुटि व्याल कराल बिडाल छुहे॥६४॥
इम गौंन कुसौंन अनेक बनैं, मन उद्धत बीरन जे न मनैं ॥
जिम वेद विरंचनके मुखतैं, गन ज्यौं गिरिजेसे जटा रुखतैं ॥६५॥
जिम जान्हवि अंडकटाहकतैं, बरखा कि उदीचि बलाहकतैं ॥

टाहकतैं१ लाहकतैं२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

रचना कि गुनै त्रयतैं बिकसी, पृतना इम दिल्लियतैं निकसी ६६
हुव हाक नकीब हजारनकी, हलकार बढी प्रतिहारनकी ॥
मग डोरिनैं मप्पत फोज चली, उरमी जिम सागरतैं उफली ।६७।

कमरदीखां जैसे मूर्ख ॥ ६० ॥ १ सेनापति (खानदौरां) २ हाथी पर ३ नगारों का ४ शब्द ॥ ६१ ॥ ५ हाथियों के ६ शहर के द्वार से निकलते ही ७ हाथी का लंबा निसान टूट पड़ा ८ चक्राकार (गोलकुंडा) फिर कर ९ कूके ने ॥ ६२ ॥ १० दिन में मूक (गूंगे) रहने वाले ११ भूमि और आकाश में १२ पीठ पर आकाश वाणी हुई कि शकुन बुरे होते हैं १३ खुलेहुए केसों वाली १४ रजस्वला स्त्री को देखी ॥ ६३ ॥ १५ मस्त ऊंट को सन्मुख आता देखा१६नग्न पुरुष को हँसता हुआ देखा१७गधा और१८महिष (भैंसा) सामने आते मिले१९भयंकर सर्प छूटा और उस पर बिल्ली कोपित हुई ॥६४॥ २०ब्रह्मा के मुख से वेद कढे जैसे २१ शिव की जटा से गण निकले जैसे॥६५॥ २२ब्रह्मांड से गंगा निकली जैसे२३उत्तर दिशा के२४मेघ से वर्षा निकले जैसे २५सत- रज- तम- इन तीनों गुणों से संसार की रचना निकली जैसे २६ तैसे दिल्ली से सेना निकसी ॥ ६६ ॥२७द्वारपालों का२८बडे राजाओं की सवारी निकलती है तब मार्ग के दोनों किनारों पर डोरियें लगाई जाती हैं २९ लहरें

उमडात डगात बली बलकों, धमकात धुजात रसातलकों ॥
इक अक्खहिं नादरकों गहिहैं, इक अक्खहिं हूरनमैं रहि हैं॥६८॥
इक अक्खहिं जित्ति इरान लई, इक अक्खहिं मंत्रि न साहमई।
इक अक्खहिं खानकलीज फटयो, रु वजीर सहादत पै पलटयो६६
इक अक्खहिं अप्पन सेनपती, सब जित्तहिं तोरि इरान तती ॥
इक अक्खहिं जित्तहिं नादरही, पति दिल्लिय बुद्धि प्रमादरही॥७०
इम चंड चल्यो दल दिल्लिपको, हठ जानि हरामिनके हियको ॥
क्रँमि मारग सत्त७ मुकाम करे, पंथपानियसौं वं समीप परे॥७१॥
खट६ कोस इरान अनीकँ रह्यो, क्रम तत्थ चमूप मुकाम क०
असवार हजार असी ८०००० उतरे, अरु बीस २०००० छबीनै
सज्ज अरे ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

दिल्लियपति अब उत्तरिय, परिय अनीक प्रसाप्त ॥
रहसि खानदोरां रचिय, बदन इरानिन बात ॥ ७३ ॥

॥ निःशाणी ॥

दलईसै खानदोरां लिखि पत्त पठाया,
ईरान ईस अग्गैं मुनसीन सुनाया ॥
तुम तोरके तरारे चतुरंग चलाया,
लाहोर आदि सूबा बदफैल फटाया ॥७४॥
पंजाब पेसं थानां निज आन नमाया,

॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १ वजीर बादशाह के अनुकूल नहीं है २ जुदा (भिन्न) होगया है ३ सहादतखां भी "वै" का अर्थ कहीं 'परंतु' और कहीं 'भी' होता है, ॥ ६६ ॥ ४ पंक्ति. दिल्ली के पति की बुद्धि ५ पागलपन (भूल) में रही ॥ ७० ॥ ६ भयंकर ७ चलकर ८ पानीपथ से ९ अब ॥ ७१ ॥ १० सेना ११ सेनापति (खानदोरां) ने १२ सेना की रात्रि समय की चोकी पर ॥ ७२ ॥ १३ सेना का पड़ाव पड़ा १४ एकान्त में (गुप्त) १५ दुष्ट ईरानियों से वार्ता रची ॥ ७३ ॥ १६ सेनापति खानदोरां ने १७ प्रताप के ताप के उफान से १८ चलाई ॥ ७४ ॥ १९ आधीन

हिंदू सबै हरामी सीनै[1] सुलगाया ॥
दिल दौरै[2] और औरैं बरजोर बनाया ॥
गिनि इस्पहान बुद्धी पैर[3] लोभ लुभाया ॥ ७५ ॥
औरत अनूप[4] दिल्ली लखि दाव चलाया,
जानी यह न कोऊ बर तास[5] बनाया ॥
सैतानके सिखायैं मगरूर[6] मचाया,
दिल्लीससौं न संके दिल मस्त दिखाया ॥ ७६ ॥
सुलताँनकी[7] जमीपैं समसेर[8] सजाया ॥
कसमीरकी फते कैं[9] मुलतान लुटाया ॥
दरियावकों[10] दगासौं लहि नाव लँघाया ॥
पाया एकार सो[11] पै सुलतान पचाया ॥ ७७ ॥
चाहो सुलाह जो तो करिजाहु पैंयानौं[12] ॥
जो जंगकी जरूरी तो देर नजानौं ॥
दिल्लीसकी गुलामी प्रतिरोज प्रमानौं ॥
सुलतान दौरजमानैं[13] बर नायब[14] मानौं ॥ ७८ ॥
इम पत्र खानदौरां पठये ति[15] पैंठाये[16] ॥
ईरान साह मंत्री उमराव बुलाये ॥
एकांत लै ईंजाँके[17] अहवाल[18] सुनाये ॥
भेजे ति खानदौरां दैल[19] खालि दिखाये ॥ ७९ ॥

---

१ छाती से २ दिल बढ़ाकर ३ पराई ॥ ७५ ॥ ४ उपमा रहित ५ उस (दिल्ली) ने नादरशाह को पति बनाया है ६ घमंड ॥ ७६ ॥ ७ बादशाह को ८ तरवार ९ करके १० नदी (अटक) को ११ परन्तु ॥ ७७ ॥ १२ प्रयाण (गमन) १३ जमाने (समय) में १४ श्रेष्ठ अथवा ऊपर हाकिम समझो नायब लफ्ज सामान्य रीतिसे तो मातहत का है परन्तु विशेष रीति से वह अन्य लोगों का हाकिम होने के कारण हाकिम के अर्थ में लिखागया है ॥ ७८ ॥ १५ वे १६ पठाये १७ उस जगह के, अथवा इनके; और यदि 'ज' पर अनुस्वार नहीं होवे तो तकलीफ (दुःख) का अर्थ होता है अर्थात् दुःख के हाल सुनाए १८ वृत्तान्त हाल) १९ खानदौरां ने भेजा वह पत्र ॥ ७९ ॥

ईरान साह अकखी तामच कुलीसौं ॥
तैंहाँ वजारें आनैं अफवाजि खुलीसौं ॥
एतो नहीं निहारे ततवीरें डुलीसौं ॥
आलाऽ बजोरें आये समसेर तुलीसौं ॥ ८० ॥
हिंदू न एक आया सब सोरँ डरानैं ॥
तोहू ब लाख१००००० ताजी पखरैत पलानैं ॥
हाथी हजार१०००मत्ते घनरूप घुमानैं ॥
लक्खौं सवार अच्छे बैर हूर लुभानैं ॥ ८१ ॥
तोपैं हजार दो २०००पैं नीसान फिरानैं ॥
छोहैं लगे छबीनौं भट भीर भिरानैं ॥
लक्खौं पयाद जंगी समसेर सजानैं ॥
खुदमोजैं खानदौरौं वर फोज खजानैं ॥ ८२ ॥
एतो कलीजखाँका नाहक फरेबहै ॥
गाफिल जरा न दिल्ली जेर जोर जेबहै ॥
सबही सुलाह मंढे करनौं कि जंग नौं ॥
उनतो यहै कहाई हमकौं दिरंगँ नाँ ॥ ८३ ॥
ईरानसाह अकखी सबकौं सुनायकैं ॥
उमराव बीर बोले मन मंत्र लायकैं ॥
निसुरत अली रु हाजी काजी करीमसे ॥
गाजीहुसैन रुस्तुम रोसन रहीमसे ॥ ८४ ॥
बुल्ले कलीजखाँपैं अहवाल पठावैं ॥
पाँजी सु क्यौं बुलाये बैरजोर सुनावैं ॥

१ हे वजीर! २ प्रसिद्ध फौज (सेना) से ३ देखे ४ उपाय ५ बड़े ६ जोर के (बल के) साथ ॥ ८० ॥ ७ कोलाहल सुन कर ८ अब ९ घोड़े, पाखरोंवाले १० श्रेष्ठ अप्सराओं पर लोभित हुए ॥ ८१ ॥ ११ ध्वजा १२ स्वेच्छाचारी (स्वतंत्र)॥८२॥ १३ झूठ १४ धन और बल से १५ शोभायमान है १६ सलाह (मंत्र) रचो १७ देर (विलंब) नहीं है॥८३॥८४॥ १८ यह हाल १९ हे नीच २० जबरी (बलात्कार) से

ओहिल[1] दगाजना[2] यो नाकिसू[3] न नाकहै[4] ॥
हमहू हराम[5] तोपै कातिलू[6] कजाकहै[7] ॥ ८५ ॥
ईरानसाह[8] ऐसैं लिखि पत्र पठाया ॥
आया कलीजखाँपैं इन मंत्र उपाया ॥
जुरि मल्ल खाँकमरूँ[9] दिल्ली वजीर जो ॥
दूजो सु भाइभुंजा जालमू[10] सरीर जो ॥ ८६ ॥
मिलि तीन३ मंत्र कीनों अपनी जमीनहै ॥
अरु साह पैं मुहम्मद अपनैं अधीनहै ॥
इनसौं[11] व खानदोराँ दुसमनू सरापकैं ॥
कछु दंडदै रुपैये देहैं पठायकैं ॥ ८७ ॥
इम मंत्र मंडि पच्छो तँहँ पत्र पठायो ॥
डरिये हजूर नाँही हम काम बनायो ॥
सब रावरे रंजूहैं[12] तुमसौं न रारिहैं ॥
इक नाँ जु[13] खानदोराँ फर्दाहि मारिहैं ॥ ८८ ॥
तुम जंगकी कहावो न कबूल मामलै[14] ॥
तब सज्ज खानदोराँ ऐहैं तमामलै[15] ॥
लमामलै १ तमामलै २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
हम रावरे भटोंसैं मिलि ताहि मारिहैं ॥
ईरानकी दुहाई बजमाँ[16] बिथारिहैं ॥ ८९ ॥
सुनि एह साह नादर बरजोर कहाई ॥

१ हे सूर्य २ दगा करनेवाला ३ निकम्मा ४ तेरे नाक है कि नहीं है ५ हे अधर्मी ६ कतल करनेवाले ७ लुटेरे हैं अथवा 'कजा' शब्द के साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्यय किया है तो मृत्यु का नाम है ॥८५॥ ८ नादिरशाह ने ९ कमरुदीखां १० दुष्ट ॥ ८६ ॥ ११ अब ईरानियों से ॥ ८७ ॥ १२ आधीन है १३ एक खानदोरां आधीन नहीं है सो उसको कल ही मार डालेंगे (फारसी में आगामि दिन को फरदा और दीरोज कहते हैं) ॥ ८८ ॥ १४ मामला (दंड) अर्थात् फौज खरच लेना मंजूर मत करो १५ सब को लेकर आवेगा १६ जमाने के साथ (जमाने में ॥ ८९ ॥

*फदाँहि †खानदोराँ तुमसौं ब लगाई ॥
सुनि एह खानदोराँ सब सेन सजाई ॥
दुहुँओर होत ऐसैं वह रत्ति बिताई ॥ ९० ॥
जाई१ ताई२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
अब प्रातकाल आया ‡कृकवाकु कुकानैं ॥
§अरविंदतैं उडे के अलि रत्ति रुकानैं ॥
परदार छोरि छाती नर जार पलाया ॥
गिरिराजकी गुफामैं तम तोम चलाया ॥ ९१ ॥
दर घंट देहरोमैं बर नाद बजाया ॥
चहि भोग चक्क चक्की सुख मेल सजाया ॥
तारेन मंद तेजी दधिबिंब दुराया ॥
मंथार्न ग्वाल गेहों घनघोर घुराया ॥ ९२ ॥
तजि पंथ चोर तक्के छिपनौं दरीनैंमैं ॥
गहि मौन घूक बैठे तरु कोटरीनैंमैं ॥
उदयाद्रिपैं अनूठी इक रोचि लखाई ॥
चल चाँटकेर चौंके चहकानि मचाई ॥ ९३ ॥

॥ दोहा ॥

सेन खानदोराँ सजिय, स्वामिधरम धरि सीस ॥
अनय सहादत मंडि इत, रचिग साहपर रीस ॥ ९४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहिय सहादत कजलबास बेभव मम लुट्टत ॥
देहु साह आदेसैं नरन नाहक सिर तुट्टन ॥

---

† हे खानदोराँ अब * कल ही तुम से लड़ाई है ॥ ९० ॥ ‡ मुरगे बाले §कमलों से २ रात्रि के रुके हुए १ भ्रमर ३ पर स्त्रियों की छाती को छोड़ कर जार पुरुष ४ भगा ५ पर्वतों के राजा [सुमेरु] की गुफा में अंधेरे का समूह गया ॥ ९१ ॥ ७ शंख ८ बिलोना (दधिमंथना) ॥ ९२ ॥ ९ गुफाओं में १० वृक्षों के कोटरों में ११ कान्ति १२ चपल चिड़ियां बोलीं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ १३ कजलक के रहनेवाले; अथवा काले कपड़ों वाले (ईरानी) १४ हुकम

तब नैय अक्खिय साह पृथक[2] लरनौं न उचित अब ॥
इक्क होय अंकुरहि सजहिं तुम हम कज्जिजै सब ॥
कहि तदपि भाड़भुंजक कुटिल सब कातरं दिल्लीस दल ॥
पिक्ख्यो न जात हमतैं प्रबल बिरचत लूट इरान बल ।९५।
यह सुनि अक्खिय साह पृथक लरि मग्हु सहादत ॥
अधम सुनत द्रुत उट्ठि भाड़भुंजक अति उद्धत ॥
चढि निज दल लै चलिय खानदौराँ प्रति यौं कहि ॥
दीजै हमहि सहाय चमूअधिराज बिजय चहि ॥
इम अक्खि जाय ईरान दल मिल्यो मूढ लवहु न लग्यो ॥
सब भेद साह नादर समुझि अधम सहादत उच्चर्यो ।९६।

॥ दोहा ॥

मूढ सहादत जो मिल्यो, चहि ईरान अधीस ॥
घच्छी यौं कहि मुक्कली, अतुल भार मम सीस ॥ ९७ ॥

॥ निःशानी ॥

सुनि एह खानदौराँ चढि बेग चलाया ॥
वाँकौं सहाय देबे छक छोहैं छकाया ॥
दिल्लीसकी चमूको अधिराज बीर जो ॥
हरवल्ल व्है रु हंक्यो धमचक्क धीर जो ॥ ९८ ॥
अच्छे सिपाहलैकैं अब अब्भ उडाये ॥
मानौं घटा उँडींचो आसार मचाये ॥
धरनी धमंकि धूजी सिर फूटि सेसका ॥

---

१ रीति के वचन कहे २ जुदा ३ खड़े होकर ४ कर्तव्य ५ जल्दी ६ कायर ॥ ९५ ॥ ७ शीघ्र उठ कर ८ अपनी सेना ९ हे सेनापति १० यह कहकर ११ क्षणभर भी नहीं लड़ा १२ सहादतखां को नीच कहा ॥ ९६ ॥ १३ पहुंच १४ सहादतखां को १५ क्रोध के छक [मद] में १६ सेना का पति युद्ध में धैर्य रखनेवाला ॥ ९८ ॥ १७ बख्तर की घटा ने १८ जलधारा

द्दिनै चंदमा दिखानौं दिपनौं दिनेसका ॥ ९९ ॥
दल भार मार दह्ला वरकी वराहकी ॥
कमठस पिट्ठि फट्टी वंत आह आह की ॥
काली तथा कपाली आये उछाहसों ॥
वेताल प्रेत नच्चे चतुरंग चाहसों ॥ १०० ॥
गन भेन कंक गिद्धी गोमायु गहक्के ॥
जंजीर तोप जाली गज घंट ठहक्के ॥
वैंडे हजार हत्थी बढि लैंन विथौरे ॥
तोजी तुरंग तत्ते नभ लेन तगारे ॥ १०१ ॥
चढि वीर खानदौरा इम सेन चलाई ॥
ईरानकी अनीपैं अव वग्ग उठाई ॥
उततैं हु सेन आयो सुनि याहि आतही ॥
पाताललौं पुकारैं पहुँचो प्रभातही ॥ १०२ ॥
सक बान अक मत्रह १७९६ वदि फग्गुन मासे ॥
रवि देखनैं रुकानौं तरवारि तमासे ॥

तमासे १ तमासे २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १

दुहुँओर तोप दग्गी धपि धम धोरनी ॥
कीनें विमान कारे अति गाज उप्फनी ॥ १०३ ॥
डगमग्गि मेदिनीके गिरि कूट गिरानें ॥
सरिनौं तड़ाग छिज्जे पसु पच्छि पिरानें ॥
आकास अच्छरीके गन गान मचायो ॥
डौंरू सु डाकिनीके रस राम रचायो ॥ १०४ ॥

---

१ दिन के चन्द्रमा के समान २ सूर्य दीपने लगा ॥ ९९ ॥ ३ नाना ४ शिर ५ सेना में ॥ १०० ॥ ६ गीदड़ ७ प्रसन्न होकर बोले ८ पंक्ति फैलाई ९ ताजिक देश के घोड़े ॥ १०१ ॥ १० सेना पर ११ घोड़ों की पागें उठाईं १२ गर्जना चढ़ी ॥ १०२ ॥ १३ भूमि धूज कर गिरने लगी १४ पर्वतों का शिखर गिरे १५ नदी १६ तालाब १७ पक्षि

गोले गरूर[1] गंजैं हत्थी न हल्लकैं[2] ॥
बारूद झार झग्गैं[3] संपा कि सल्लक्कैं ॥
आवाज तोप उट्टैं जिम सैंल[4] सौनुगौं[5] ॥
ज्वाला कराल जग्गैं बढि चंद्र भानुसौं ॥ १०५ ॥
आकास तूटि झंडे उडिजात ओरसे ॥
समसेरैं[6] मेहैं[7] नच्चैं नभ मत्त मोरसे ॥
कर्ट[8] कूट काटि डारैं गोले अरातिकी[9] ॥
मानौं पिछानि पारैं गज भद्रजातिकी ॥ १०६ ॥
हुसियार खानदौराँ समसेर चलाई ॥
पहुमी[10] सु रंगैं[11] पिक्खी लागि रत्त ललाई ॥
फूटैं कपाल भंजे तरवारि तरक्कैं ॥
के कुंतैं[12] कंकटौं[13]मैं गत सौल[14] गरक्कैं ॥ १०७ ॥
केते तुखारैं[15] कट्टैं असवार उलट्टैं ॥
कहुँ कटार भुक्खे हिय कालिकै[16] चट्टैं ॥
नौंगोद[17] बान फुट्टैं नर कातर[18] नट्टैं ॥
टंकार चाप वज्जैं चिल्ला[19] सु चटट्टैं ॥ १०८ ॥
घायल अचेत घुम्मैं लटके रकाबसौं ॥
मानौं गमार मत्ते सरसे सराबसौं ॥
कटि पिप्फरे कलेजे फैंबि फाँक फुल्लावैं ॥
बैसाख माँहिं[20] केसूं[21] जिम जेबैं[22] बनावैं ॥ १०९ ॥

---

१ घमंड मिटाते हैं २ हाथियों के हलकों के ३ बिना बिजली चमकती है. ४ पर्वतों के शिखरों से ५ वज्र की आवाज होवे ऐसे ॥ १०५ ॥ ६ तरवार से झंडे टूट कर आकाश में उडते हैं सो मानों ७ वर्षा में मत्त मयूर आकाश में नाचते हैं ८ हाथियों के गंडस्थल और कुंभस्थल ९ शत्रु की तोपें ॥ १०६ ॥ १० उस युद्ध की भूमि ११ रुधिर लग कर लाल रंग की दीखी १२ भाले १३ कवचों में जाकर १४ साल सहित घुसते हैं ॥ १०७ ॥ १५ घोड़े १६ कलेजा १७ पेट के कवचों (पेटियों) में तीर फूटते हैं १८ कायर मनुष्य भागते हैं १९ प्रत्यंचा खैंचते हैं ॥ १०८ ॥ २० शोभित २१ ढाक वृक्ष के फूल (केसूले) २२ शोभा ॥ १०९ ॥

सुंडा करीन कट्टैं जिम पन्नग कारे ॥
भंभं भयानं बज्जैं भट भिन्न नगारे ॥
आकास अग्गि पत्ते सुरलोक उजारे ॥
महरादि लोक वारे जनलोक सिधारे ॥ ११० ॥
बिनु चेत बीर बक्कैं बहु दंत बजावैं ॥
घोरं अनेक घुम्मैं मुख झग्ग हलावैं ॥
धाराल बाढ बज्जैं अति बीर बकारैं ॥
समसेरकों सिराहैं मुख मार उचारैं ॥ १११ ॥
पंचासद्वोय ५२ भैरूँ ललकार लगावैं ॥
लैलै ललाम लोहा चउसट्ठि६४ चढावैं ॥
के सीस ईस लैकैं गल भेट भिरावैं ॥
के अच्छरी अनूठी बरमाल गिरावैं ॥ ११२ ॥

षट्पात् ॥

तीन३ पहर तरवारि खानदौरौं बेर बज्जिय ॥
अनिय मोरि ईरान सबल दिल्लिय जय सज्जिय ॥
रवि अत्थतें रन रुकिय घाय लग्गिय अट्ठारह१८ ॥
खेत सहादत खान लखन हेरिय बहु बारह ॥
पापिय कहौं न पायो तदपि देख्यो सब ईरान दल ॥
यह जानि भाड़भुंजक अधम दूत पठायउ छुद्र छल ॥११३॥

॥ दोहा ॥

खानमहादन दूत दल, पठयो चमुपति पास ॥
मोहि इरानिन जित्तिकैं, गहि दिय कारावास ॥ ११४ ॥
अब प्रदोस आगम अधिक, अरु तुम घायल अंग ॥

---

१ भयंकर २ बीरों के फोड़हुए नगारे ३ अग्नि ४ पूग कर ५ जन लोक में गये ॥ ११० ॥ ६ तरवारों के ॥ १११ ॥ ७ सुन्दर ८ शिव ॥ ११२ ॥ ९ श्रेष्ठ १० सूर्य अस्त होने ११ सहादतखां को देखने के लिये १२ लोभी१३ इस नीच ने छल से दूत भेजा ॥ ११३ ॥१४कैदखाने म ॥ ११४ ॥ १५ सन्ध्या समय का

कल्हि छुरावहु मदति करि, जानहु दुर्गम जंग ॥ ११५ ॥
बदलि मूढ ईरान बिच, खल सु सहादतखान ॥
यह फरेब कहि मुकल्यो, बनि सठ बंदीवान ॥ ११६ ॥
सेनापति यह सुनि फिर्‌यो, जय जस कछुक उबारि ॥
सोधि समर घायल भटन, चल्यो नृजानन डारि ॥ ११७ ॥

षट्पात ॥

इत दिल्लीस वजीर खानदौरहिं सुनि आवत ॥
मारन ताकहँ मूढ ईष्ट बहु ब्याज उपावत ॥
कहिय साहसौं जाय भजिग कातर सेनापति ॥
कजलबास लगि पिट्ठि आत डारन इन आपति ॥
मैं अबहि दैन दलपति मदति तोपन बल रोकन तिनहिं ॥
यह अनृत आखिय गोलन गजब गैजर त्रिथारिय को गिनहिं ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥

यह वजीर अति घोर किय, खैंता कमरदी खान ॥
सेनसहित सेनेसकों, पिन्नों तोपन प्रान ॥ ११९ ॥
दुव २ हि खानदौरह चरन, गोलन उड्डिग गैन ॥
अति घायल हुव तदपि दुन आयउ डेरन ऐन ॥ १२० ॥

॥ निःशाणी ॥

अति घाय खानदौराँ डम डेरन आया ॥
खूनी कलीजखाँकों सँवर्जार बुलाया ॥
मन मंत्र नीति मंडी सबकोंहि सुनाया ॥
होनाँ सु तो हुवा ज्यों हम ज्यान गुमाया ॥ १२१ ॥

१दुर्गम ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ २ अनकूल ३ मिस (छल) ४ भागा ५ ईरानी ६ सेनापति (खानदौराँ) को ७ झूठ बोल कर ८ निरंतर प्रहार ॥ ११८ ॥ ९अपराध (कसूर) ॥ ११९ ॥ १०गोलों से आकाश में उड़गये ११स्थान में ॥ १२० ॥ १२खून करने वाला (घातक) १३वर्जार सहित १४नीति की सलाह ॥ १२१ ॥

अब तीन ३ मंत्र अक्खैं हम सो तुम कीजे ॥
ईरानसौं लराई इक १ होन न दीजे ॥
दिल्लीस हिंतु[2] दूजैं २ नादर न मिलावो ॥
तीजै ३ न ताहि दिल्ली तुम जाय दिखावो ॥ १२२ ॥
मंगैं सु दै रुपैये प्रतिगौन[3] करावो ॥
कीनी तुम्है जु मोसौं क्यौं सो बै[4] कहावो ॥
यौं अक्खि खानदौराँ बपु सद्य बिहायो ॥
सुनि साह पै[6] मुहुम्मद अति सोक अघायो ॥ १२३ ॥
अब खाँकलीजकौंही सेनापति कीनौं ॥
अर्थ भाइसुंजकके [9]अत्थ न दीनौं ॥
इतकौंहु साह नादर अकुलाय[10] बिचारी ॥
उमराव इक्क किन्नी मम सेन दुखारी ॥ १२४ ॥
तबही कलीजखाँपैं लिखि पत्र पठाया ॥
लै दंडके रुपैये हम गौन[11] उपाया ॥
सुनि सो कलीजखाँहू अति मोद बढाया ॥
एकांत साह अग्गैं अब मंत्र बनाया ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

कहैं कलीज रु कमरदी साह अग्ग कर जोरि ॥
सेनापति मार्‍यो समुझि, देहु लग्न अब छोरि ॥ १२६ ॥
इक्क कोटि १०००००००० दम दम्मलै[12], नादर पच्छो जात ॥
सोहे बत्त अब स्वीकरहु[13], लरैं न पुग्गहिं तांत[14] ॥ १२७ ॥
मन्नि साह यह मंत्र तब, नादर प्रति लिखवाय ॥
दम्म कोटि लैजाहु घर, अरु नन मिलन उपाय ॥ १२८ ॥

१तीन सलाह कहता हूं २ मे ॥१२२॥ ३ उलटा गमन ४ अब ५ शीघ्र शरीर छोड़ा. बादशाह मुहम्मद६भी ७ मर गया ॥ १२३ ॥ ८ यहां ९ सहादतखां के अर्थ सेनापति पन नहीं दिया १० घबरा कर ॥ १२४ ॥ ११ जाना विचारा है ॥ १२५ ॥ १२६ ॥१२दंड के रुपये लेकर१३स्वीकार करो१४हे स्वामी! ॥१२७॥

इक १ भाग अबही लहहु, इक १ जाय लाहोर ॥
इक १ गिनहु लंघत अटक¹, इम लीजे दम² मोर ॥ १२९ ॥
यह सुनि नादरसाह अब, करन विचारिय कुच्च ॥
खानसहादत जानि यह, अधम जऱ्यो अघ उच्च ॥ १३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

खानसहादत एह विचारी, नाँहिं अवर कोऊ भटभारी ॥
प्रान खानदोराँ जब देहैं, सेनापति तब मोहि बनै हैं ॥ १३१ ॥
यहै विचारि वजीर मिलायो, मूढ सु व्रथा चमूप मरायो ॥
साह कलीज क्रियउ सेनापति, यातैं जऱ्यो सहादत अबआनि॥१३२॥
नादरप्रति इम बैन सुनाये, ब्रथा कलीज तुमहिं बहकाये ॥
दिल्लिय राज दयो तुमकौं गर्व³, क्यों नहिं लेत रु जान कहत अब१३३
खान कलीज मिलन मिस बुल्लहु⁴, पुनि करि कैद खीज⁵ सिरखुल्लहु
तब तुमरे बसि साह मुहम्मद, व्हैहैं दुतहि⁶ तजहिं साँहस हद⁷१३४
तब इन खानकलीज⁸ बुलायउ, करन मंत्र⁹ वह सठ दुतं¹⁰ आयउ ॥
तबहि पकरि कारा¹¹बिच डाऱ्यो, अब नादर प्रति गैर्व¹² सम्हाऱ्यो १३५
अक्खिय सुनहु कलीज कहावहु, दिल्लीमहिं यहँ मिलन बुलावहु॥
सिर कुरान धरि सपथ¹³ उचारत, एकासन¹⁴ बैठहिं हित सम्मत १३६

रत १ मत २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

तबहि कलीज पत्र लिखि प्रेरिय, आवहु मिलन इनहु हित हेरिय॥
यह सुनि तखत खान आरोहिय¹⁵, चलत साह बहु बीरन रोहिय¹⁶१३७

अरोहिय १ नरोहिय २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

कोऊ कहत जाहु नन हजरत, कोऊ कहत अबहु दल बलवैंत¹⁷ ॥

॥ १२८ ॥ १ अटक नदी उतरा तब २ इस प्रकार मुझसे दंड लो ॥१२९॥१३०॥ ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ ३ खुदा ने ॥ १३३ ॥ ४ बुलाओ ५ क्रोध ६ शीघ्र ही ७ हद की सीमा छोड देवेंगा ॥ १३४ ॥ ८ कलीजखाँ को ९ सलाह करने को १० शीघ्र ११ कैद में १२ गर्व ॥ १३५ ॥ १३ सौगन १४ एक गद्दी पर ॥ १३६ ॥ १५ तख्तरवां पर १६ चढ कर १६ रोका ॥ १३७ ॥ १७ सेना बलवान् है

है हाजरि भट लक्ख१०००००कंटारे, पैहो मिलि न भली फलप्पारे
काहूकी न साह श्रुति कीनी, चल्यो मिलन सेनहु नहिं लीनी॥
संग सु लये पंचसत ५००सादी, पानीपथ इम गयउ प्रमादी॥१३९॥
पावक्कोस लग नादर पुत्तह, गय सम्मुह बेसर रथ जुत्तह ॥
इम ईरान अनीकं गयो यह, डोढी लग आयउ सम्मुह वँह १४०
जाय सभा बैठे इकआसन, भाई कहि हुव दुव २संभासन ॥
तब नादर दिल्लीसहिं अक्खहिं, सचिवहु सचिव मिले हित रक्खहिं१४१
तुम वजीर बुल्लहु यँहँ यातैं, हँम वजीर रक्खहिं हित तातैं ॥
तब दिल्लीस पत्र लिखि निज कर, बुल्ल्यो स्वीयँ वजीर पापपर१४२
यह कग्गर नादर कर अप्पिय, नादर ताहि बुलावन अप्पिय ॥
तब पचीस२५ असवार पाठाये, चंड ति कग्गर लै रु चलाये १४३
ते उद्धत आये दिल्लिय दल, बदत वजीर वजीर कुंजे बल ॥
यह सुनि खानकमरदी कंपिगं,तिन सह चल्यो नाँहि कछु जंपिगं१४४
तबहि मंत्र अक्खिय उमरावन, जंग वजीर रचहु जावहु नन ॥
वन१ न्नन२ अन्त्यानुप्रासः ॥
पापी जन न सुलाँह पिछानैं, विपरीतहिं अनुकूल बखानैं ।१४५।
कहिय वजीर लरहु जिन कोऊ, करिहैं साम साह हम दोऊ२ ॥
इम कहि लै द्वै सत२००असवारन, गो वजीर चित मंत्र विचारन १४६
सोहु नजरिकैदी किय नादर, दिल्लिय दल सुनि भजिग महा दर ॥
नादर१ हादर२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

१कटा (कतल) करनेवाले मिल कर भला फल नहीं२पाओगे॥१३८॥३सवार।१३९।
४पुत्र (यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है) ५ खच्चरों के रथ जुताकर ६ सेना में ७ नादिरशाह ॥ १४० ॥ ८ एक गद्दी पर ९ वार्तालाप १० कहा, वजीर से वजीर मिलकर ॥ १४१ ॥ ११ तुम्हारे वजीर को बुलाओ १२ हमारा वजीर उससे स्नेह रक्खेगा१३अपने हाथ से१४अपने पापी वजीर को बुलाया ॥ १४२ ॥१५पत्र ॥१४३ ॥१६सेना में घुसे१७धूजा१८कुछ नहीं कह कर ॥ १४४ ॥
१९ सलाह को नहीं पहचानते २० प्रतिकूल को अनुकूल कहते हैं ॥ १४५ ॥
॥ १४६ ॥ २१ बड़े भय से

अब प्रयान ईरान साह करि, आयउ पुर दिल्लिय उद्धत अरि १४७
सक सर अंक सत्त इक १७९५ *हायन, परि फग्गुन †सित दस-
मि १० ‡पलायन ॥
इम नादर दिल्लिय पुर आयउ, होय निरंकुस तोर[1] चलायउ ॥१४८॥
साह मुहम्मद खानसहादत[2], बहुरि बजीर रु खाँकलीज वंत[3] ॥
ए च्यारि४हि कैदी करिआनैं, ईरानी दिल्लिय प्रविसानैं[4] ॥ १४९ ॥
अप्प मुख्य महलन निवास किय, दल मिलान[5] नगरी अंतर[6] दिय॥
तत्थँ[7] रहत निस दोय२ बिताई, पै सेना अनसन[8] अकुलाई ॥ १५० ॥
कोउ न बनिक हट्ट पट खोलैं, बैठे दुरि गेहन नन बोलैं ॥
दल[9] नादर प्रति अरज दई तब, अत्थ बनिक बेचैंन अन्न अब १५१
तँहँ क्रिय अरज भट्ट बंदीजन, राजा जुगलकिसोर प्रीति पन ॥
दल इरान दहसति[10] मन डोलत, यातैं बनिक बजार न खोलत १५२
तब नादर पठई कहि जाहिर, बसहु जाइ मम दल पुर बाहिर ॥
तब आदेस[11] अधीन कटक चढि, बाहिर पुरके जान लग्यो बढि१५३
तिहिं खिन पुर उद्घोस[12] बिथार्‌यो, महलनमैं नादर[13] हनि डार्‌यो॥
वाको कटक भजत अब यातैं, पथ रुक्कहु इन सबन निपातैं[14] १५४
यह सुनि जनन जरे दरवाजे, बहु बंदूक रु पत्थर बाजे ॥
पहर दोय२ तैंस[15] सेन पचाई, अब नादर प्रति अरज रचाई ॥१५५॥
हुकम अधीन जात बाहिर हम, पुरजन जान न देत कुटिल क्रम ॥
बंदूकन ग्रावन[16] पुनि मारत, हम सु रावरो[17] कथिन निहारत॥१५६॥

॥ १४७ ॥ * संवत में † शुक्ल पच्च ‡ भगे १ प्रताप ॥ १४८ ॥ २ सहादतखाँ ३ इन चारों को सन्तोषदायक कैदी करके ४ प्रवेश हुए (घुसे) ॥१४९॥ ५ सेना का मुकाम ६ शहर के भीतर ७ तहाँ ८ भूख से ॥ १५० ॥ ९ सेना नें ॥ १५१ ॥ १० भय से ॥ १५२ ॥ ११ हुकम के आधीन ॥ १५३ ॥ १२ हाका फैलाया १३ नादरशाह को मारडाला १४ मारैं ॥ १५४ ॥ १५ उस (नादर) की सेना ने ॥१५५॥ १६ पत्थरों से १७ आपका हुकम देखते हैं ॥ १५६ ॥

निज दल[2] आरज न मन्नी नादर, अप्पहि[1] लखन[3] चल्यो अन[4] आदर
संके तदपि[5] नाँहिँ जन सागे, याहू पर पत्थर बहु मारे ॥ १५७ ॥
नादर कोँहु सत्थ तब भासी, कठ्ठ[6] मुठ्ठि निज किरचि निकासी ॥
[7]उच्चनँ ताहि उच्ची करि बुल्ल्यो, ईरानिन यह सुनि खग तुल्ल्यो १५८
भयो कतल दिल्लियपुर भारी, लक्खन कटे बाल नर नारी ॥
स्वान[8] बिडाल[9] धेनु हय[10] कुंजर[11], ऐंडक[12] अंज रु महिख खर[13] बेसर १५९
कटे कँहर[14] को गिनै अनंतन, प्रलय मच्यो त्रय जाम[15] घोर पन ॥
यह सुनि खानकल्लीज अरज किय, तब नादर यह[16] रुक्कि अभय दिय ॥ १६० ॥
फग्गुन मास बिसद[17] द्वादसि१२ दिन, इम पुर कतल कियउ ईरानिन
नादर दत्त[18] अभय अब जानिय, तब तस भंटन कोस[19] असि ठानिय १६१
रहि नादर दुव २ मास बितायउ, दिल्लिय पति[20] सन लिखित लिखायउ ॥
हो मैं साह जु हिंदवान पति, सो जित्यो नादर इरान पति ॥१६२॥
वानपति१ रानपति२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
ज्यान माल बख्खसीस कियउ सब, सो मैं लियउ अधीन उभय अब
इम लिखाय नादर दल[21] लिन्नों, कछु न मुहुम्मद आदर किन्नों॥१६३॥
छिन्नि बिभूति लई सब बर[22] बर, सत्रह१७ मन अनमोल जवाहर ॥
हीरा इक आयत[23] चतुरंगुल, जो बुंदीस भोज किय बाहुल[24] ॥१६४॥

१ अपनी २ सेना की ३ देखने को ४ बादशाही लवाजमा लिये विना ५ तो भी नहीं डरे ॥ १५७ ॥ ६ काष्ठ (लकड़ी) की मूठ की तरवार को निकाल कर, उसको ऊँची करके ७ कतल बोला ॥ १५८ ॥ ८ कुत्ते ९ बिल्ली, गाय, घोड़े १० हाथी ११ मैंढे १२ बकरे, भैंसे, गधे १३ खच्चर ॥ १५९ ॥ १४ उस जुल्म में १५ तीन पहर तक १६ इस (कतल) को रोक कर ॥ १६० ॥ १७ सुदि १८ नादर का दिया हुआ १९ तरवारों को म्यानों में कीं ॥ १६१ ॥ २० दिल्ली के बादशाह से ॥ १६२ ॥ २१ पत्र ॥ १६३ ॥ २२ श्रेष्ठ श्रेष्ठ ऐश्वर्य छीन लिया २३ चार अंगुल मोटा बुंदी के पति भोज ने २४ भुजबंध किया था ॥ १६४ ॥

गुल १ हुल२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

सोहीराहु छिन्नि लियनादर, तखत दम्म नवकोटि९००००००० मुल्लबर
आयुध अतुल बसन भूखन प्रिय, अच्छेसब इत्यादि छिन्नि लिय॥१६५॥
रहि दुर मास दिल्लिय इम नादर, करिगय कुच्च सेन सह सादर
अब इत खानसहादत जानी, मैं हराम यह साह पिछानी ॥१६६॥
जियत नाँहिं छोरहिं हजरत हठ, यह बिचारि बिस खाय मर्यो सठ॥
साह मुहुम्मद तेज नसायो, लगि कुमग्ग सब बिभव लुटायो१६७
दिल्लिय निबल सबन अब जानिय, पुनि मरहट्ठन हल्ल प्रमानिय॥
इत बुधसिंह देह अब छोर्यो, बुंदिय राज उदधि बिच बोर्यो१६८

॥ दोहा ॥

पुरबेघम सनैं कोसत्रय ३, नाम बाघपुर ग्राम ॥
जत्थ देह संभर तजिय, निज बिथारि बदनाम ॥ १६९ ॥
संबत खट नव सत्त इक १७९६, अर्मा३०रु माधव मास ॥
इम सु बुद्ध अनिरुद्ध सुवं, किय परलोक निवास ॥ १७० ॥
प्रेत करम सब बिधि सधिय, भो न भूमि गजदान ॥
बसुधा बिनु किहिं घर बनैं, बैदिकैं मृतक बिधान ॥१७१॥
रम्य महल१ सर२ बाग३ रचि, करन नाम बय काल ॥
सेवन आलम साह४१।१ कौं, प्रबिस्यो बुद्ध१९७१ नृपाल १७२
कछवाही १९७१२ रानी कियउ, पुर बिरचन प्रारंभ ॥ ॥
जयनिवास१ अभिधान धारि, थप्पन भुव जस थंभ ॥१७३ ॥
बिच अच्युत मंदिर बिरचि, पुर ताके चहुँ४ पास ॥

१ श्रेष्ठ तख्त.(यह तख्त बादशाह शाहजहां ने बनाया था और 'तख्तताऊस' उस का नाम था)२वस्त्र ॥ १६५॥१६६॥३कुमार्ग॥१६७॥४समुद्र में डुबोया॥१६८॥ ५से ६ जहां ७ बुधसिंह ने शरीर छोड़ा ॥ १६९ ॥ ८ अमावास्या ९ चैत्र मास १० अनिरुद्धसिंह के पुत्र ने ॥ १७० ॥११भूमि और हाथी का दान नहीं हुआ १२बिना भूमि के१३वेद बिहित कर्म॥१७१॥१४सुन्दर१५प्रवेश किया॥१७२॥१६ नगर बसाने का कार्य प्रारंभ किया१७नाम रख कर॥१७३॥१८बिष्णु भगवान् का

रानी रचन बिचार किय, जैपुर उपमिति जास[१] ॥ १७४ ॥
है गनेस[२] घटी बिहित, ताके बाहिर तत्थ ॥
दिस उत्तर ४।७ केदारतैं, लग्गो बमन[३] अति अंत्थ ॥ १७५॥
बिच चत्वर[४] तहँ बांन रुक्यो, पहु[५] पहु आलय पाढ[६] ॥
बिनु बुंदिय लक्किमा बहुरि, तुंग[७] न भो नभ लाढ[८] ॥ १७६ ॥
निलय जोधं१९७।२ रहि नृप अनुज[९], व्यय बिस्तारि बसु[१०] वार॥
पुरतैं पच्छिम३।५ कोस१ पर, कमनैं[११] रच्यो कासार[१२] ॥१७७॥
नाम जोधसागर १।२ मर१६ निबसथैं[१३] रचित नवीन ॥
बाग३ महल४ सर सेतुंबिच[१४], प्रभु[१५] मंदिर५ ढिग पीनैं[१६] ॥१७८॥
भूपति धावर गंग भो, जिहिं पुर पूरब जत्थ ॥
बिरचे उपबन[१७]१ वापिका[१८]२, अप्पि हजारन अंत्थ[१९] ॥ १७९ ॥
कोटवाल नृपको कथित, रामचंद अभिधान[२०] ॥
बिरचे वापी१ बाग२ जिहिं, पुरबिच पच्छिम३।५थान॥१८०॥
गजमुख भूप पुरोहितहु, पच्छिम३।५दिस पुर पास ॥
दधिमति देवीको सदन१, बिरच्यो बिभव बिलास ॥१८१॥
तत्थहि बेल्ल[२१]१९ बापिका३, छत्री४ किय तिहिं छीवं[२२] ॥
पुरके दक्खिन३।३भांत पुनि, ऊँचे महल५अतीव ॥ १८२ ॥
नृपदासी राधा तनैंय, गंग नाम इक दास ॥
नाल[२४] तान नैंवलक्खके[२५], सबिध महल१ तिम तास ॥१८३॥
समग्र भूप बुधसिंह१९७।१के, परिकर[२६] जनन जितेक ॥

१जिस को जयपुर का उपमान बनाने का विचार किया॥१७४॥२वांछित गणेश धारी है३धन॥१७५॥४बीच का चौक५हे प्रभु रामसिंह, प्रभु (विष्णु) के मंदिर का६पाला ही बन सका७ऊँचा नहीं हुआ ८ आकाश को चाटने वाला ॥१७६॥ ९. बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह ने घर (बुन्दी) में रह कर१०धन के समूह का खरच फैला कर११सुन्दर१२तालाव रचा ॥ १७७ ॥१३आम१४पाल के ऊपर १५विष्णु भगवान् का१६बडामंदिर॥१७८॥१७बाग१८बावडी १९धन देकर॥१७९॥ २०नाम॥१८०॥ १८१॥२१बाग२२क्षीव (मत्त, पागल) ने ॥ १८२ ॥२३पुत्र २४ नले में तलाव २५ नौलख के नाम से बनाया ॥ १८३ ॥ २६ पास के मनुष्यों ने

बिरचे आउट्ठान बहु, न बनैं कबहु तितेक ॥ १८४ ॥
पिक्खहु नियति उदर्क पहु, ऐसे बिभव अपेत ॥
सो बेघम तजि संहनन, गो इम निःस्व निकेत ॥ १८५ ॥
अंतहपुरके जननमैं, हित पति संगति होन ॥
काहूनैं कुलरीति करि, सह्यो नहिं सहगोन ॥ १८६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे ससैन्यनादरशाहार्यावर्तपानीपथकरनालागमन १ खानदोरांस्वसहायजयपुरराजजयसिंहाकारणाठ्याजदर्शनतदनागमन २ जयसिंहागमननिराशखानदोरांनादरशाहसंमुखसैन्यसज्जन ३ पवनेन्द्रमुहुम्मदसहितसंमुखप्रस्थितखानदोरांनादरशाहान्तिकपत्रप्रेषणद्वारासंधिविग्रहाभिप्रायचोदन ४ भयभीतनादरशाहान्तिककलीजखांप्रभृतिप्रेषणद्वारायुद्धसन्नद्धीकरण ५ समरसमयमुहुम्मदविरुद्धशहादतखांनादरशाहसंमिश्रण ६ विजितेरानसैन्यागच्छत्खानदोरांविरोधदिल्लीमहामात्यकमरदीखांतन्मारण ७ गृहीतदशडरूप्य-

१आइठाण स्थान)॥१८४॥२भाग्य३राजा के आगे आनेवाले कर्मों का फल४ऐसे वैभव को छोड कर५बेघम नामकपुर में शरीर छोडकर६दरिद्री होकर घर ले गया ।१८५।७जनाने के लोकों में ८ पति के साथ स्नेह नहीं था९सती नहीं हुई॥१८६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, नादरशाह का सेना लेकर हिन्दुस्थान में पानीपथ, करनाल में आना १ खानदोरां का अपनी सहायता पर जयपुर के राजा जयसिंह को बुलाना और जयसिंह का बहाना करके नहीं जाना २ जयसिंह के आने की आशा छोड कर खानदोरां का नादर के सम्मुख सेना सजना ३ बादशाह मुहम्मद को लेकर गये हुए सेनापति खानदोरां का नादरशाह के समीप पत्र भेज कर युद्ध करने अथवा सुलह (सन्धि) करने का अभिप्राय पूछना ४ डरे हुए नादरशाह के समीप कलीजखां आदि का पत्र भेज कर उसको युद्ध पर सन्नद्ध करना ५ युद्ध के समय शहादतखां का मुहम्मद से विरुद्ध होकर नादरशाह से मिलना ६ ईरान की सेना को विजय करके आनेहुए खानदोरां को दिल्ली के वजीर कमरदीखां का परस्पर के विरोध के कारण मारना ७ दंड के रुपये लेकर जाने की इच्छावाले नादरशाह को समझा कर सहादतखां का सलाह

कजिगमिषुनादरशाहप्रबोधपूर्वकशहादतखांमन्त्रव्याजाहूतकलीज-खांकीलन ८ संधिव्याजाहूतयवनेन्द्रमुहम्मदमहामात्यकमरदीखां कीलनानन्तरनादरदिल्ल्यागमन ९ विहितदिल्लीहत्याकोषितमास-द्वयकारितमुहम्मदविजयपत्रगृहीतदिल्लीसर्ववैभवनादरशाहेरानप्रति-गमन १० दिल्लीशहादतखांविषभक्षणमरणदिल्लीराज्यनिर्बलीभवन ११ बुन्दीपतिबुधसिंहपरासुतावर्णनं त्रिचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४३ ॥

आदित एकाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे श्रीमत्परमधार्मिक-सकलशुभगुणान्वित-शोदा बारहठशाखाक-चारणकुलावतंसशाहपुराप्रतोलीपात्राऽनम्रसिंहपुत्रेण, उदयपुरमहाराणासज्जनसिंह-तदुत्तराधिकारिमहाराणाफतहसिंह-योधपुराधीशमहाराजयशवन्तसिंह-ईडरमहाराजप्रतापसिंहकृपापात्रशाहपुरानिवासि-योधपुरमहाराजाश्रितसुकविबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीनामटीकायां सप्तमराश्यन्तर्गतबुधसिंह-चरित्रस्य टीका समाप्तिमिता ॥

के मिस से बुलाकर कलीजखां को नादर की कैद में कराना ८ सन्धि के मिस से बादशाह मुहम्मदशाह और वजीर कमरदीखां को बुलाकर कैद किये पीछे नादरशाह का दिल्ली आना ९ दिल्ली में कतल किये पीछे दो मास पर्यंत रहकर मुहम्मदशाह से विजय पत्र लिखा कर दिल्ली का सब वैभव लेकर नादरशाह का पीछा ईरान में जाना १० दिल्ली में शहादतखां का विष खाकर मरना और दिल्ली की बादशाहत का निर्बल होना ११ बुंदी के राजा बुधसिंह के मरने के वर्णन का तियालीसवां ४३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इक्यासी २८१ मयूख हुए ॥

इतिश्री श्रीमान् परमधार्मिक, सकलशुभगुणान्वित, शोदा बारहठ शाखा के चारणकुलावंतस शाहपुरा के पोळपात ऐसे अनग्रासिंह के पुत्र उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह और उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह, तथा जोधपुर के महाराजा यशवंतसिंह और ईडर के महाराजा प्रतापसिंह के कृपापात्र शाहपुरा निवासी और जोधपुर के महाराज के आश्रित सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की कीहुई उदधिमंथिनी नामक टीका में वंशभास्कर के सप्तम राशि के अंतर्गत बुधसिंह चरित्र की टीका समाप्त हुई ॥